



डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र

मसाल

पा० युन्शानदाग

साहित्य प्रकाशन दिल्ली-110006

संस्करण 1975

सूच्य 38 पृष्ठा मात्र

प्रकाशक मान्य प्रकाशन, मानावाड़ा, निम्ना

मुद्रक अजय ना कानून आर्ट प्रिन्स, मयुरा

---

Dr VASUDEO SHARAN AGGARWAL KE PATRA

Edited by Babu Vrindawandass - Price Rs 38-00

---

## शुभाशसा

( कविवर श्री अमृतलाल चतुर्वेदी )

जामें मेंह न ठहुर गुहाती ।

प्रिय बहारसोदास सहो है निधि निधि पाती दयाती ॥

नीतम नाथ नवीन योजना लिखति न बलम धरती ।

गुदर स्वच्छ लिखावट इनकी पढ़ि छाती उमगाती ॥

हिंदी श्री अंगरेजी भाषा रचाही हूँ मैं भाती ।

रत्न पचासक प्रति महीना मैं यह बोलारी छाती ॥

बिछ लेंचियो दूजी रचाया जेऊ सब सराती ।

जब देखी तब लिखत रहत हैं इनके नौ दिन राती ॥

जानें कसों यह सब इनकी सहज भाव पुतिपाती ।

नय लेखक नवीन कवियन की सदा बड़ावत छाती ॥

एक गद्या के बीस डीक इन नित प्रति आती जानी ।

इनके पत्रन की सग्रह लखि तबियत सुख है जानी ॥

वैसमक्त, नेता, कवि, कोविद, लेखक, ऊंचे पाती ।

सदके पत्र मरे दृक् न मे सुखि मुरच्छित भाती ॥

अमृत इनके जीवन भर की जई बमाई पाती ।

विद्राघन जू पात्र बघाई छापी सग्रह पाती ॥



श्रीयुत ५० बनारसीदास जी चतुर्वेदी दीर्घजीवी हों ।

[ श्री भगवानदत्त चतुर्वेदी, गजापादमा मधुग ]

कलाकार पत्रकार साहित्यिक सत्रकार,

संवाचार सङ्घिकार पात्रक महान हैं ।

गाद्योभी रवीन्द्र अरविन्द के उपासक हैं

मित्र गैरकृत्रक, स्वयं चरित्रवान हैं ॥

गुणी गतिशील गुण प्राहक निवाहक हैं

धीहिनों के परम सहायक प्रधान हैं ।

विश्व धृष्ट्य भाव प्रेरक बनारसी जी

विप्र चतुर्वेदियों के गौरव के गान हैं ॥

दोहा—हिंदी भाषा का बिधा, तुमने अधिक बिकाश ।

जन-जन के हित बिंद सियो । श्री बनारसीदास ॥

स्वस्थ रहो सज्जी कहो, गंगा-यात्र की राह ।

कहां न समय प्रवाह में रहिय उर उरमाह ॥

शिखाविध शिखा प्रवर, सप्ताहक सिर मोर ।

प्रवचनारिता में नहीं तुमसा काई और ॥

जन-मेवक तुमको सदा, है दुखियों में प्यार ।

किया सतत श्रीमान ने, दीनों का उपकार ॥

बिबिध बना साहित्य रस, हो तुम निष्ठावान ।

सत्य अहिंसा का तुम्हें प्रिय सिद्धान्त महान ॥

मिता केन्द्र में आपका, राजकीय सनमान ।

जनपद के साहित्य का, किया अधिक उत्थान ॥

सना मुखद जावन रहे जन-मेवा में प्यार ।

‘मगधनु’ मन वचन बम मे, करा लोक उपकार ॥



बाबू धुन्दावनदास



डा० बनारसीदास चतुर्वेदी तथा



## अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं०

प्राक्कथन

वृंदावनदास

७-८

भूमिका

वृंदावनदास

६-४०

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र श्री वृंदावनदास के नाम

४१-१६८

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र

कुछ अन्य साहित्यिक व्यष्टियों के नाम

१६८ २७२

- |   |                                       |
|---|---------------------------------------|
| ( १ ) श्री श्रीनारायण जी चतुर्वेदी                          | ( २ ) डा० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी     |
| ( ३ ) श्री रामधारीसिंह दिनकर                                | ( ४ ) श्री अक्षयकुमार जन              |
| ( ५ ) श्री गोविंदप्रसाद नेजडीवाल                            | ( ६ ) श्री अटलबिहारी बाजपयी           |
| ( ७ ) श्री भमृतलाल चतुर्वेदी                                | ( ८ ) श्री मधुसूदन चतुर्वेदी          |
| ( ९ ) श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी                              | ( १० ) श्री प्रभुदयाल मीतल            |
| ( ११ ) डा० सत्येन्द्र                                       | ( १२ ) श्री बैकटलाल आश्रा             |
| ( १३ ) श्री रमशचन्द्र दुबे                                  | ( १४ ) श्री राधेश्याम रावत            |
| ( १५ ) श्री मललानसिंह सिसोदिया                              | ( १६ ) श्री रामशङ्कर द्विवेदी         |
| ( १७ ) डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी                         | ( १८ ) डा० भगवानसहाय पचौरी            |
| ( १९ ) श्री गौरीशंकर द्विवेदी शर्मा                         | ( २० ) श्री गणेश चौबे                 |
| ( २१ ) श्री राजेन्द्र रजन                                   | ( २२ ) साहित्याचार्य श्यामसुन्दर बादल |
| ( २३ ) डा० विष्णुलाल पाठक                                   | ( २४ ) श्री क्षितिकीनाथ ब्रजवाल       |
| ( २५ ) श्री उमाशंकर दीक्षित                                 | ( २६ ) श्री कृष्णगोपाल चौधरी          |
| ( २७ ) डा० प्रभाकर माचवे                                    | ( २८ ) प० शावरमल्ल शर्मा              |
| ( २९ ) श्रीमती सरयवती मलिक                                  | ( ३० ) डा० वाराणिकोव                  |
| ( ३१ ) बाबा पृथ्वीसिंह आजाद                                 | ( ३२ ) श्री जगन्नाथप्रसाद मित्तल      |
| ( ३३ ) श्री काशीनाथ त्रिवेणी                                | ( ३४ ) श्री गोपालदास                  |
| ( ३५ ) चतुर्वेदी जी का पत्र अपने पाठकों के नाम              |                                       |
| ( ३६ ) सनिव मे प्रकाशित श्री श्रीराम शर्मा को लिखा हुआ पत्र |                                       |

परिशिष्ट अ

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी और उनके पत्र (श्री वृंदावनदास) २७३-२८५

परिशिष्ट ब

ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण चतुर्वेदी जी की दृष्टि में (श्री वृंदावनदास) २८५-२९६





## पुस्तक परिचय

पत्रों में जगज्ज का व्यक्तित्व बनाया गया है। प्रतिबिम्बित है। वाता है-  
ग्रामजो म उन बिट्टिया म जो कभी छान क आस म न लिखा गई है।  
बिन्नी मवषा स्वाभाविक दृष्टि पर ही विनम हृदय भाव प्रकट कर स्थि  
गय हैं।

वरीन टाकटर जानमन बिना लगव की आत्मा का नमन रूप  
आप उमर पत्रा म हा रूप मकन है।

धनुर्वेणी जी का पत्र विमन का व्यक्तित्व है और वाक्य काई एमा  
निन बातना है। जब रूप वाक्य पत्र व न लिखन है और यह रूप पचाम  
पचपन रूप म निरंतर चलना रहा है।

आज भी ४० ६५ ७० महान व इसी व्यक्तित्व पर मर कर रूप रह है। पर  
यह मोन पात्र का नम रहा। परिणाम स्वकप उनक मप्रहास्य म महत्ता है।  
उनयागी पत्र दृष्टि है रूप हैं मौमाय्य म विनका मुख्य भाग निना क राष्ट्रीय  
बिनिनेतागार ( National archives ) जनपद न रूप निना म मुग्गिन  
हा गया है।

जर स्वय धनुर्वेणी जी क महत्ता है पत्र पत्र-नत्र विमर पर हैं। उनम  
मे कुछ का ही मप्रद इन पुस्तक म कर स्थि गया है। धनुर्वेणी जी का अरना  
ब्रज भूमि क प्रति अनय मनि है। जमक पत्र, पती वृत्त वन, जयवन, नम  
नम, मगवर मानव रूपानि म और उनक जनपद प्रम का एक मनादर मजका  
पात्रकों का इस पत्र-मगठ म मित जायगी।

—प्रकाशक

## प्राक्कथन

एक अंग्रेज लेखक का कथन है कि वे ही पत्र वास्तव में सुरक्षित रहने योग्य हैं जो कभी न लिखे जाने चाहिये थे और जिन्हें तुरन्त नष्ट कर दिया जाना चाहिये। ए. जी. माडनर ने अपने एक निबन्ध में पत्र-लेखन कला की सफलता का रहस्य बताते हुए कहा था कि वह घरेलूपन से भरी छोटी छोटी बातों में ही छिपा हुआ है। डा० बनारसीदास चतुर्वेदी ने पत्रों की उत्कृष्टता का रहस्य उनके पत्रों की सहज स्वाभाविकता में निहित है।

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी पत्र लेखन कला के जाचाय हैं। उनका विद्वान् मुक्त कण्ठ से स्वीकार कर चुके हैं कि चतुर्वेदी जी पत्र लिखन में अग्रगण्य एवं अद्वितीय हैं। चतुर्वेदी जी का महान व्यक्तित्व की शक्त उनको पत्रों में स्पष्ट दिखाई देती है वास्तव में चतुर्वेदी जी के पत्र उनका शुभ विचारा के दमण हैं। चतुर्वेदी जी ने अपने पत्रों की सततधारा से साहित्योद्धान का अविरल सिंचन किया है।

चतुर्वेदी जी के पत्र उनके शुद्ध मनोभावों की सात्त्विकता के प्रतिबिम्ब हैं। समाज में शुभ सत्कारों और सद्गुणों की स्थापना एवं विकास के लिए चतुर्वेदी जी के पत्र सहायक हो सकते हैं। साहित्यिक महत्व तो इन पत्रों का है ही।

चतुर्वेदी जी ने अपना सात्त्विक जीवन बड़े उन्मुक्त भाव से बिताया है। उनके मनमौजीपन की प्रकृति ने हास्य व्यंग की मूर्त अपनाया है। पाठकों को इन पत्रों में मनोरंजन की भी प्रचुर सामग्री उपलब्ध होगी।

चतुर्वेदी जी के पत्रों की पक्ति-पक्ति में उनकी उत्कट देशभक्ति उद्भासित होती है। विदेशों में की गई चतुर्वेदी जी की प्रवासी सेवा से प्रभावित होकर एक बार राइट आनरेबल श्रीनिवास जी शास्त्री जी ने जो स्वयं एक विश्वविख्यात महान पत्र लेखक थे चतुर्वेदी जी का लिखा था, जीवन में आप सहस्र देशभक्त मुझे कोई विरला ही मिला होगा, यह बात बाबत तोल पाव रती सही है, इसे मैं आपकी खुशामद करने के लिये नहीं लिख रहा हूँ।”

एक ग्रन्थ का मुद्रण छोटे पैमाने पर एक भवन के निर्माण के समान है। जिस प्रकार एक भवन के निर्माण होने पर ही उसका स्वरूप दिखाई देता उसी प्रकार एक ग्रन्थ के छप चुकने पर ही उसके विषय में पाठकों को वातव्य

जानकारी भी ना मचना है। स्थिति व इस सम्बन्ध में पाठका व लिय निम्न।  
गया प्राक्कथन वास्तव ॥ पुष्पक का मुद्रणावगमन कथन है।

इस पुष्पक में हमने १५० पत्रों का बड़ा स्थि है जिन्हें चतुर्वेदी जी ने हमका समय-समय पर भेजने की कृपा की है। इसमें अनिष्टित इस पुष्पक में ७१ उन पत्रों का स्थान प्राप्त हुआ है जो चतुर्वेदी जी ने अथ मासिक वार्षिक का भेज है। चतुर्वेदी जी व मित्रों में अनेक ऐसे मौमार्थ शाली हैं जिनका जन्म जीवन में चतुर्वेदी जी से इनमें भी सुगम आदित्य पत्र प्राप्त हुए हैं। यदि इन वार्षिकों में से कियों का लक्षण मध्य और भा प्रकाशित हो तो हिन्दी व स्थि का बान होगी। मानवीय मूल्यों व प्रतिष्ठापना का स्थि में भी चतुर्वेदी जी व पत्रों का उपयोगिता अनुभव है।

पत्र मध्य की पुष्पक में स्थि और स्थित मासिक की पत्र विज्ञान पर विज्ञान न अथन विचार प्रकट स्थि हैं। हमने उही बातों की पुनरावृत्ति कर पिप्पय का उचित न समझा और अपनी २० पृथिवी भूमिका में चतुर्वेदी जी व स्थिति व और उनमें पत्र माहित्य का कृपिया पर ही अपना ध्यान कद्रित किया है।

जैसा कि भूमिका में लिखा है पत्रों हमारा विचार पुष्पक में उन्हीं पत्रों का दन का था जो हम प्राप्त हुए हैं परन्तु वस्मत्र कवनाथा भवति कवनानी ( जो अकला श्राना है पाप श्राना है ) व यामानुमार हमने कुछ पृष्ठ अथ माहित्य वार्षिकों का प्राप्त पत्रों का भी स्थि है। जैसा कि दम्भ में ज्ञात होगा इन वार्षिकों में हिन्दी के निम्नस्थ विद्वान् सम्मिलित हैं।

इन स्थिति प्राक्कथन का हम आचार्य विनोयदास बाजपया व स्म छन्द व साथ समाप्त करत हैं—

अति दुरुह विस्तृत जीवन जो ग्रंथों में है नहीं समझा।

वही किसी व एक पत्र में, ज्यों का त्यों पूरा बंध जाता ॥

आशा है प्रस्तुत पत्र-मध्य का स्थि जगत् का स्मृति दिवस।

मपुरा

दि० १५-५-७१

—बृदावनदास





गुरु उदावनदाम  
मपादम

## भूमिका

**आ**जकल कुष्ठाना का युग है। सामाजिक, राजनीतिक, शान्तिव्य और साहित्यिक सभी क्षेत्रों में कुष्ठानें बतमान हैं। समाज ही कुष्ठान्नास्त है। चारित्रिक हानि युद्धात्तर समस्याओं में मगने उड़ी समस्या है। हम नैतिक अधःपतन और क्षुद्र स्वायत्तता के गहर गत में गिर हुए हैं। पारम्परिक सौहार्द की अत्यन्त कमी है। देश तथा जाति के प्रति प्रेम का अभाव है। राष्ट्र, देश, समाज की चाहे जितनी हानि हो जाय, हमारा पड़ोसी, भाई मित्र भन ही नष्ट हो जाय पर हमारे स्वायत्त की सिद्धि होनी चाहिये। जिस समाज में स्वतन्त्रता की चर्चवेदी पर इतनी प्राणाहुतियाँ दीं उमीम आज स्वायत्तता का यह नम्र नृत्य देखत हुए दुःख और विस्मय दाना ही हात हैं।

आज देश-सत्ता का नाम लेकर केवल स्वायत्त सिद्धि ही हमारा ध्येय रह गया है। आज हम जनता को अनवर प्रलोभन देकर अनवर वायदे करके विधान सभाओं और लोक सभा में जाते हैं किन्तु वहाँ जाकर किस प्रकार अपना सारा समय और ध्यान केवल पदप्राप्ति और निजी स्वार्थों का साधन में लगा दन है यह सब किसी से छिपा नहीं रह गया है। हमारा न कोई मिद्धान्त है और न हमारी कोई आत्मा। हमारी आत्मा की आवाज स्वायत्तसिद्धि के लिए केवल दल-बल कर्त रहन का ही प्रेरित करती रहती है। आजकल किसी पद के लिए योग्यता का कोई माप नहीं है। आजकल केवल दल-बल और धमकी ही मन्त्रिपद तक के लिए सबसे बड़ी योग्यता है। हम यह भी नहीं देखत कि एक राज्य में कितने मन्त्री बनने चाहियें सभी मन्त्री पद प्राप्त करने का आतुर हो जात हैं। परिणाम में मन्त्रियों का तालन की सी स्थिति हो जाती है और सत्तुलन के अभाव में अक्सर विघटन ही हाता नजर आता है। इस प्रवृत्ति में राजनीतिक क्षेत्र में कितनी जव्यवस्था और अस्थिरता उत्पन्न कर दी है यह किसी से छिपा नहीं है।

क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति के लिए मिद्धान्तविहीन दौड़ के परिणाम स्वरूप ही देश में अनवर दला का विभाजन हो गया है। एक कांग्रेस की दो कांग्रेस, एक समाजवादी दल के दो समाजवादी दल तथा इसी प्रकार कई अन्य दलों के भी टुकड़ा हो गये हैं। झूठे नारे देकर जनता को भुतावे में डालते रहने के अतिरिक्त इन दलों के अनेक प्रतिनिधियाँ न कोई काम ऐसा नहीं किया जिससे देश की पांडित मानवता का कोई राहत पहुँचती अथवा दश जनन के पथ पर अग्रसर हाता।



देशभक्ति, साहित्य सेवा आदि पर गौरवमय पृष्ठ ही गम्भिरित हो गये हैं। बहुत लोगो को इस बात का आभास भी नहीं कि चतुर्वेदी जी के अथवा प्रयासों से ऐसा साहित्य निर्मित हो गया है जिसने न केवल हिन्दी की ही वृद्धि की है अपितु अनेक मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना भी कर दी है और देश के वर्तमान और भावी साहित्यकारों को एक दिशावाचक दान किया है।

योजनाएँ बनाकर उनका कार्यान्वित करने हुए आगे बढ़ने की क्षमता कुछ प्रखर मस्तिष्क वाले व्यक्तियों में होती है। समार में सदैव कुछ ऐसे व्यक्ति होते आये हैं जिन्होंने अपने प्रखर मस्तिष्क की विलक्षण सामर्थ्य से जीवन में यथेष्ट कार्य किया है। ईश्वर प्रदत्त इस गुण के बल पर अपने जीवन में कोई व्यक्ति बड़ा उद्योगपति बन जाता है तो कोई महान साहित्यिक कोई महान नेता अथवा कोई महान भक्ताधीश। परन्तु चतुर्वेदी जी तो योजनाएँ बना बनाकर प्रवामिया शहीदा, उपसिता अथवा छुटभइयों को ही ससार के सम्मुख लाये हैं उनका इस ध्यानाकर्षण प्रयास से उनके इन प्रियभावनों का कितना कल्याण हुआ है वह वर्णनानीत है।

चतुर्वेदी जी को इन योजनाओं के प्रति श्रद्धाबलित होकर एक बार बाबू शिवपूजन सहाय ने उन्हें लिखा था, “आज पढ़ता है आपका मस्तिष्क अमर्य योजनाओं का भाण्डार है और आपका हृदय उनका कार्यान्वित करने के लिए व्यर्थ है। अपनी भाषा और साहित्य की मज्जी उन्नति के लिए इसी तरह दस बीस व हृदय में भी लगन और व्यग्रता लाती तो कितना बड़ा काम होता। मगर मैं देखता हूँ कि आजकल लोग साहित्य और कला की परिभाषा तथा व्याख्या एक विरहण करने में ही व्यस्त हैं ठास काम करने की प्रवृत्ति बहुत ही कम लिखाई देती है। मैं आपके कार्य क्रम का श्रद्धापूर्ण दृष्टि से देखता हूँ। हिन्दी का भविष्य मंगलमय है क्योंकि आप जसा अनन्य संवक उस मिल गया। परमात्मा आपको दीर्घायु करे कि हिन्दी का उपकार हो, यही कामना है।” चतुर्वेदी जी की योजनाओं द्वारा हिन्दी की किस प्रकार ठोस सेवा होती है इसका वर्णन जिन अधुर शब्दों में बाबू शिवपूजनसहाय ने किया है उससे अधिक कुछ कहने की हमारे भीतर सामर्थ्य नहीं है।

**प्रेरक साधक—**

जब चतुर्वेदी जी ने प्रशसना, मित्रा और साहित्यिक बाधुआ ने उनके सम्मान में उनका एक ग्रंथ समर्पण करने का निश्चय किया तब बाधुवर यशपाल जन ने हमसे लिखकर पूछा कि ग्रंथ का क्या नाम रखवा जाय। हमने सीधे





जाय और हमारे महाविद्यालय की पत्रिका का विशेषांक उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर निरूपे। यद्यपि यह सुभाव बहुत अच्छा है वधुवर बालकृष्ण जी गुप्त तथा हम इस विक्षेप पर अभी सहमत नहीं हो रहे हैं, हम लोगो को आशा है कि देर-सबर ग्रंथ का प्रकाशन ही सम्भव हो मनेगा।

चतुर्वेदी जी के पत्रों में अनेक ऐसी योजनाएँ विद्यमान हैं जिनमें मैं अनेक का कार्यान्वयन तो वे अपने जीवन में ही कर चुके हैं। ऐसी आय भी बहुत सी है जिनका यदि क्रियान्वित किया जाय तो हिन्दी के हित की बात होगी। चतुर्वेदी जी का मस्तिष्क योजनाओं की उबराभूमि है। चतुर्वेदी जी न संख्यातीत मौलिक विचार दिये हैं। परन्तु ये विचार उही सागा के पास जाते हैं जिनके पास उनके पत्र सुरक्षित हैं। हम चाहते हैं कि वे विचार जाता की सम्पत्ति बन और उन पर काम हो। कोई तो उसीही कमठ व्यक्ति सभी भदान में आवेंगे ही जो उन विचारों के कार्यान्वयन की जिज्ञास अपना योगदान देंगे।

स्वयं चतुर्वेदी जी न अनेक विद्वानों के पत्र छपाये हैं। उन्होंने स्वर्गीय प० पद्मसिंह शर्मा के पत्रों का पुस्तक के रूप में तथा स्वर्गीय डा० बासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रों की सम्मेलन पत्रिका के रूप में प्रकाशित कराया है। आनू शिवपूजनसहाय के लगभग ३० पत्र भी चतुर्वेदी जी ने 'व पत्र दग्नि' के शीर्षक से छपाये हैं। आज ही चतुर्वेदी जी का एक लेख सम्मेलन पत्रिका के नवीनतम अंक में देखा जिसमें स्वर्गीय प० माखनलाल जी चतुर्वेदी के २६ पत्र संकलित हैं। इनके अतिरिक्त चतुर्वेदी जी (१) सम्यद अमीर मीर (२) पीर मुहम्मद ग़ालिब (३) मुन्शी अजमेरी जी (४) रामनरेश त्रिपाठी (५) नवीन जी आदि के पत्रों को मुद्रित करा चुके हैं।

### पत्रों के प्रकाशन की आवश्यकता

चतुर्वेदी जी ने मुझसे लिखा कि उनके पत्रों के मुद्रण और प्रकाशन का समय अभी नहीं आया है। परन्तु मेरी भावना यह है कि चतुर्वेदी जी का पत्र-साहित्य तो एक महोदधि के समान है (चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में ६०-७० हजार पत्र तो लिखे ही होंगे) उनके सब पत्रों को एक दम एक ही संग्रह में छपा जाना तो एक असम्भव कार्य है। चतुर्वेदी जी के पत्रों पर तो बड़ा ग्रंथ निरूपित सकत है। ऐसी दशा में इस साहित्य पर भिन्न भिन्न व्यक्तियों द्वारा अनेक संग्रहों के प्रकाशन की आवश्यकता है। स्थिति के इस सदम में एकाग्र संग्रह यदि अभी प्रकाशित हो जाय तो कोई हानि नहीं अपितु जसा कि हमारा कुछ वरिष्ठ मित्रों का मत है अग्रगामी यह संग्रह अन्य संग्रहों का एक

सदाहरण प्रस्तुत करेगा। आवश्यकता तो साहित्यिक बंधुता में वाछिण भावपण उत्पन्न करने का है और इसकी पूर्ति इस संग्रह से हागी ऐसी भाशा है।

मैं भी जानता तो नहीं है कि चतुर्वेदी जी के पत्रों का प्रकाशन अद्यतन हुआ ही न था। स्वयं प्रत्यक्ष साधन में उनका लगभग १५० पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इन पत्रों के प्रकाशन के सम्बन्ध में मुझे जानकारी उम्र समय ही हो पाई जब कि ग्रन्थ मरे हाथ में आ गया। उससे पूर्व मुझे पता ही न था कि ग्रन्थ में चतुर्वेदी जी का कुछ पत्र भी प्रकाशित हो रहे हैं।

यद्यपि श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ की योजना में पत्र हमारे ही द्वारा हुई थी और बंधुवर यशपाल जी चित्र में उम्र समय आय जब कि मैं भी प्रस्ताव का लेकर उनके पास पहुँचे थे तथापि जब एक बार काम हाथ में ले लिया गया और ग्रन्थ निर्माण का काम आरम्भ हो गया तब यह बंधुवर यशपाल जी की वायकुशता और प्रवचनपटुता को ही श्रेय है कि उन्होंने हमारे ऊपर तो बचन ब्रजभूमि खण्ड का भार ही रखवा और शेष काय का व्यवस्था स्वयं ही की जैसा अन्य साहित्यिक बंधुता में बर्ग है। ब्रजभूमि खण्ड व अनिर्दिष्ट अन्य खण्डों का संग्रह के रूप में जो सामग्री हमारे पास आई हमें तो बसल उम्र उनके पास भजन रह। ब्रजभूमि खण्ड का मारा काम बहसियत सम्पादन हमारे ही द्वारा हुआ था। ऐसी दशा में अभिनन्दन ग्रन्थ में पत्रों का भी प्रकाशन हो रहा है यह हमें पता था न था अन्यथा हम भी अपने पास आय चतुर्वेदी जी के महत्वपूर्ण पत्रों का समावेश करा दते। प्रसिद्ध साहित्य मर्म डा० रामविलास शर्मा का भी अभिमत यह था कि यदि अभिनन्दन ग्रन्थ में चतुर्वेदी जी के पत्र ही अधिकांश रूप में रहें तो ग्रन्थ अद्वितीय बनता।

अभिन्दन ग्रन्थ में चतुर्वेदी जी के जो भी पत्र प्रकाशित हुए हैं उनका विषय उन पत्रों में कुछ भिन्न हो है जिनका कि पान का सोभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। हमारा निष्पत्ती में चतुर्वेदी जी ने अन्य विषयों के अनिर्दिष्ट ब्रजभूमि संग्रहों में सामग्री और अन्य मनीषी विराम पर अधिन प्रकाश दिला है। पौष्प ग्रन्थ का शून्य क्रिया के साथ उन्होंने अपना यह सत्य लगभग धारित ही कर दिया था कि ग्रन्थ आवन में व ब्रजभूमि का सेवा में ही अपना विनय व सन्धन अर्पित करेंगे।

चतुर्वेदी जी के पत्रों का विषय में विमा विमी विद्वान् का मत है कि उन्होंने लाख सवा लाख में भी छपर पत्र लिख दिये। श्री शिवनागयण जी आवास्तव का मत है कि चतुर्वेदी जी ५५ वर्ष से पत्र लिखते रहे हैं तथा महीन

में २५ दिन के पत्र-लेखन पर व्यय करत हैं। इस हिसाब से उन्होंने जीवन में लगभग सवा दो लाख पत्र लिखे होंगे। साधारणतया लोग का भ्याल है कि उनके पत्रों की संख्या ६० ७० हजार तक अवश्य पहुँचेगी। बहरहाल पत्रों की संख्या बहुत बड़ी है। ऐसे भी अनक व्यक्ति है जिनको चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में तीन-तीन सौ चार चार सौ पत्र लिखे हैं। हम भी उन मोभाग्य शालिया में एक हैं। भाइ विद्याशंकर जी ने एक म्यान पर लिखा है कि उनके पिता जी ( स्व० डा० हरिशंकर जी शर्मा ) ने ४५ वर्ष की अवधि में चतुर्वेदी जी को लगभग ३०० पत्र लिखे होंगे परन्तु चतुर्वेदी जी ने उनको इससे ब्यौढ़े ता लिखे ही होंगे।

हमारी धारणा है कि चतुर्वेदी जी के पत्रों के मुद्रण और प्रकाशन की प्रक्रिया चलती ही रहेगी। उनके पत्र साहित्य पर अनवरत प्रकाश का निर्माण हो सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ से यदि अर्थ वापुआ का भी एतन्त्र प्रेरणा मिली तो हम अपने प्रयास को धन्य समझेंगे। हिंदी में पत्र-साहित्य का अभाव हृदय को घटकन वाली चीज है। चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में जितने पत्र लिखे हैं उतने शायद ही अन्य किसी साहित्यिक ने लिखे हों। ऐसी दशा में चतुर्वेदी जी के पत्रों के कई संग्रह प्रकाशित कर क्या न इस अभाव की पूर्ति का निश्चय एक ठोस कदम उठाया जाय।

चतुर्वेदी जी परस्पर कातरता, सौहार्द और सदाशयता की प्रतिभूति हैं। उनकी लेखनी से निकले हुए उनके उच्चभाव जन साधारण में अधिकाधिक प्रचलित हों और शुभ सत्कारों का निर्माण हो इसी कारण से उनका पत्रों के प्रकाशन की आवश्यकता है।

आज परांपरार और त्याग की भावना का अभाव है, आज तो शुद्ध स्वाध्याय का मंग नाश है, आज स्वाध्याय की पूर्ति के लिए हम कितने निम्न स्तर पर उतर आते हैं कि देश और जाति का हित किसमें है इसकी हम कतई परवाह ही नहीं है। जिन शुद्ध विचारों से प्रेरित होकर चतुर्वेदी जी ने अपने मित्रों की अग्रणीत पत्र लिखे उन्ने प्रचार प्रसार की आज महती आवश्यकता है। चतुर्वेदी जी ने अपने हित की कामना से तो कभी-कई काम किया ही नहीं यहाँ तक कि परांपरार की धुन में लगे हुए चतुर्वेदी जी ने अपनी तिछी कई पुस्तिकाओं को भी अमूरी छोड़ रखा है। लाग यह ना जान कि विश्व में ऐसे प्राणी हैं जो अनवरत कष्ट सहकर भी अपने स्वाध्याय की कमा काई बात न माचकर पराहितचित्तन में ही रत रहते हैं। हमारी तो यही



चन्द्रगुप्त और यशपाल जी के आग्रह पर आत्म चरित लिखना स्वीकार कर लिया। यह आत्म-चरित उस अभिनन्दन ग्रन्थ का एक विशिष्ट अंग है।

## कविरत्न सत्यनारायण

सत्यनारायण कविरत्न के प्रति चतुर्वेदी जी का विशेष लगाव रहा है। कविरत्न ब्रजकोविल के नाम से विख्यात थे तथा अपने समय के ब्रजभाषा के सर्वोत्कृष्ट कवि थे। उद्धान बड़ी सरस एवं हृदयग्राही कविताओं की रचना की। चतुर्वेदी जी ने सत्यनारायण जी की जीवनी के रूप में एक अमूल्य साहित्यिक कृति हिन्दी ससार का भेंट की है। चतुर्वेदी जी की लेखनी से यह कृति बड़ी ही सुन्दर बन पड़ी है। चतुर्वेदी जी रेखा चित्र सस्मरण और जीवनी लेखन में द्वितीयह अतः यह स्वाभाविक ही है कि कविरत्न की जीवनी साहित्यतिहास की एक अनुपम निधि है। सत्यनारायण के ग्राम धाघूपुर में उनकी स्मृतिरक्षाय उनके घर का जीर्णोद्धार हो जाय और उस भूमि का सत्यनारायण जी के स्मारक के रूप में विकास हो यह चतुर्वेदी जी की हार्दिक इच्छा है। उद्धान सत्त्व रूप से अपने उद्गार अनक पत्रों में व्यक्त किए हैं। देखिये, उनकी यह धमिलाया कब पूरा होती है ?

चतुर्वेदी जी ने सत्यनारायण जी के जीवन संबंधी महत्वपूर्ण सामग्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मुर्तकन रखने के हेतु भेंट कर दी थी। वह सामग्री बहाल पुस्तक है। चतुर्वेदी जी का इससे मार्मिक कह हुआ और उद्धान अपनी यह वदना अनेक पत्रों में व्यक्त की है।

चतुर्वेदी जी की अथक प्रयत्ना से हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्राङ्गण में एक विशाल भवन का निर्माण हुआ जिसका नाम सत्यनारायण कुटीर रखा गया। सत्यनारायण जी की हिन्दी-भवा के प्रति इसमें अच्छी श्रद्धाजलि बसा है मकती थी कि उनकी स्मृति में एक भव्य भवन सम्मेलन के कार्यालय से बना कर ही बना दिया जाय, सम्मेलन अनिवार्य हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिनिधि मस्या है।

चतुर्वेदी जी ने कविरत्न सत्यनारायण की स्मृति रक्षाय तीन काम और माचे (१) कविरत्न की कविताओं का संग्रह (२) भारतीय भवन पीरोजाबाद में उनके चित्र का उद्घाटन (३) उनके ममस्त ग्रन्थों का एक साथ प्रकाशन। उनके सान हुए यह काम किसी हद तक पूरे भी हुए।

## गृहीतों तथा क्रांतिकारियों की सेवा

गरीबों का श्राद्ध चतुर्वेदी जी का अत्यन्त प्रिय व्यसन है। अनेक गृहीतों के परिवाराजन चतुर्वेदी जी के द्वारा सामाजिक हुए हैं। यह तो छान की ही घटना है कि चतुर्वेदी जी के जाग्रत पर उनकी मरकार के तत्कालीन वित्तमन्त्री श्री नर्मदागंगा आचार्य ने गरीब आचार्य अन्तर्गत के भद्राजी का ५०) मासिक का पेंशन दिया भी था।

चतुर्वेदी जी साहित्यमन्त्रियों का सहायता मिलने से बात के ता पक्षपात हैं परन्तु स्वाभिमान के विपरीत अपमानजनक तरीके से सहायता प्राप्त करने के सवैया बिगड़ते हैं। स्वाभिमान का बलिदान करके साहित्यमन्त्री मन्त्रालय मरकार के आगे भोज्य माँगे यह उन्हें स्वीकार नग है। वे उस प्रभावशाली का घृणा की दृष्टि से लक्ष्य हैं जिस साधनजन साहित्यमन्त्रियों का अपन जावन निवारण के निमित्त सहायता मन के हेतु मरकार को भ्रष्ट भजना पड़ता है। उन्होंने अपन पत्रा में उस प्रभावशाली में आवेदन परिलक्षित करने के हेतु अनेक बार लिखा है।

यह चतुर्वेदी जी के अग्रणी पत्रा का एक श्रेय है कि वे अनेक क्रांतिकारियों और उनके सम्बन्धियों का पेंशन आर्थिक रूप से मरकारी प्रश्रय निदान में समय हुए। उन कार्य में चतुर्वेदी जी का सहयोग अपन अनवरत पत्र-व्यवहार के कारण ही प्राप्त हुए। जिन क्रांतिकारियों अथवा उनके सम्बन्धियों का चतुर्वेदी जी पेंशन निदान में समय हुए उनकी नामावली इस प्रकार है —

- १ अमर गरीब चन्द्रगुरु आचार्य की माताजी का पचस रुपये मासिक का पेंशन निदान और वे द्वारा पक्षीय मो गया भी।
- २ गौरी विमलिन की बहन का चालीस रुपये मासिक तथा कई महस्र का सहायता।
- ३ बाबा लक्ष्मणराम का पचस रुपये का पेंशन तथा एक हजार की सहायता।
- ४ बबिलर गानक फलक को दैद सो रुपये मजान की पेंशन तथा कुछ आर्थिक सहायता भी।
- ५ श्रीमती कृष्णाजी गोपबिका-नराम रुपये मासिक पेंशन।
- ६ श्री सदाशिव-नन्दन रुपये मासिक पेंशन।
- ७ श्री ग्यामनुज-नन्दन रुपये मासिक पेंशन तथा साप्ताहिक रूप पर चाय की टुकान।

- ८ राजस्थान के एक साम्यवादी कायकर्ता को ७५) मासिक पेंशन ।
- ९ काशीराम जी की पेंशन ४०) से ७५ २० करादी गई ।
- १० शहीद मवागम की पत्नी कूनवती की पेंशन ३०) से ४५) कराई  
उपयुक्त पेंशना को चतुर्वेदी जी अपन जीवन की सबसे बड़ी कमाई मानते  
हैं । राज्यमन्त्रा की अपनी मददस्यता के बाल में किये गये कामों में चतुर्वेदी  
जी क्रांतिकारिया की इस सेवा को ही सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं ।

### पत्रिकाओं के विशेषाङ्क

आगरा तथा बुन्देलखण्ड के क्षेत्र की अनेक शिक्षा संस्थाओं के प्रधाना-  
चार्य चतुर्वेदी जी से सम्पर्क बनाए रखने हैं । वे अपनी संस्थाओं की पत्रिकाओं  
के लिए चतुर्वेदी जी से मार्गदर्शन प्राप्त करते रहते हैं । चतुर्वेदी जी से सदैव  
उन लोगों को उत्तम परामर्श प्राप्त होता है । चतुर्वेदी जी ने शिक्षा संस्थाओं  
के माध्यम से अनेक शहीदों और साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व  
मन्त्रा की विशेषाङ्क ही प्रकाशित करा स्थि । हिंदी साहित्य का चतुर्वेदी जी  
का यह अप्रतिम योगदान है । सामान्यतया स्मृति की पत्रिकाएँ बचकाने ढङ्ग  
की कहानियाँ कविताओं और निबंधों में भरा रहती हैं और छोट विद्यापिया  
के लक्षिक मनोरंजन के अतिरिक्त उनकी उपयोगिता ही संश्लिप्त होती है ।  
परन्तु चतुर्वेदी जी ने इस दिशा में एक क्रांति ही उपस्थित कर ली है । उन्होंने  
अनेक क्रांतिकारियों, साहित्यकारों आदि की ऐतिहासिक महत्वपूर्ण जीवनियाँ  
इन पत्रिकाओं के विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशित करा दी हैं । कई विशेषाङ्कों  
के सम्पादक स्वयं चतुर्वेदी जी ही रहें हैं । इन महत्वपूर्ण साहित्योद्योगों का  
सिंचन चतुर्वेदी जी की अविश्व पत्र धारा द्वारा ही सम्भव हुआ है ।

चतुर्वेदी जी अनेक सम्पादकों को विशेष रूप से साप्ताहिक एवं मासिक  
पत्रों के सम्पादकों को अपने पत्रों के जनपदीय अंक निकालने के लिए प्रेरित  
करते रहते हैं परिणाम स्वरूप कई महत्वपूर्ण विशेषाङ्क निकले भी हैं । उन्होंने  
कई पत्रों से बुन्देला लोक सभृति अंक निकलवाए हैं । वे बुन्देला लोक सभृति  
को प्रज सभृति का पूरक मानते हैं ।

शहीदों पर अब तक जितने ग्रन्थ तथा विशेषाङ्क छप चुके हैं उनका  
स्रोत इस प्रकार है ।

शहीद ग्रन्थमाला (आत्माराम एण्ड सन्स) ६ किताबें

विशेषाङ्क नमदा— शहीद अंक, आज्ञा अंक, गणेशशंकर स्मृति अंक



मीनवी अष्टावह्न मासिक क ४० पत्र

आनाय महावीर प्रमाण द्विवर्षी क ३० पत्र

नवान जो क ८ पत्र

प्रसन्न जो क २० पत्र

आपरा पाठक क जीवन चरित्र की सामग्री

स्व० गुप्त बापुसा क स्तवना पत्र

डा० अमरनाथ झा क ३०० पत्र

बागीधर झा क २०० पत्र

डा० अनामिका प्रमाण द्विवर्षी क समी पत्र

स्व० कामेश्वर झा का भाग अज्ञानी जो सम्मनदान जो पौर  
मुहम्मद पुनिम विद्वत्पूजनमणाय जो मरुत अमीर अना मोर प्रभृति क पत्र  
मुद्रित न चुर है। अथ उक्तता क महत्त्वा पत्र है। चतुर्वेदी जो क निवास  
स्थान क / कर्म पत्रादि म भर पत्र है। चतुर्वेदी का र भवन म स्थिती  
उक्तता क ६० वर्ष तक की अवधि का हृदयस्पन्दन उक्त भवन क कर्मका म  
सुगम है।

चतुर्वेदी का क दृष्ट का अधिकांश भाग उस साहित्य एक मात्र म भरा  
पत्र है किम चतुर्वेदी जो न अपन जीवन भर का कमाई क रूप म एकत्रित  
किया है। चतुर्वेदी का क संप्रदाय का एका विरुद्धात् प्रवृत्त जना वांछि  
त्रिमम भविष्य में गद्य का एक निरि त्र न जान पाय तथा उनकी सामान्य  
जनता क लिए उपयुक्तता बना रू।

चतुर्वेदी जान गहरा म निश्चय किया है कि उनके नाम सुगम महत्त्व  
पूर्ण पत्रा का राष्ट्रीय संग्रहालय National archives का समर्पित कर दिया  
जाय। इसके लिए आवश्यक पत्रव्यवहार का क्रम चल रहा है और आगे का  
जाना है कि क पत्र संग्रहालय राष्ट्रीय संग्रहालय की भेंट कर दिया जाये।

### चतुर्वेदी जी का स्थापक प्रभाव

वर्षाग्रेष्ठ पर छापी पुस्तिका निकाल कर साहित्यकार को स्मृति रत्ना  
का पदवि भी हिला में चतुर्वेदी जो न बना। ता० १० / ११ का बारू  
विद्वत्पूजन मृत्यु न चतुर्वेदी जी का दिना—

५० पद्यवि जो का वर्ग गाँठ पर जा यात्राकार क और पर एक  
छापी मा पुस्तिका निकला है इसकी एक प्रति मुम्बई भा आपन भवन की कृपा  
का है। उस दशक मन म दृष्टा कि हर मान का जयन्ती या निधन निधि

पर यदि स्वर्गीय साहित्यकारकी स्मृति में ऐसी छोटी पुस्तक माला भी निवृत्त करे तो कुछ दिना बाद सब मिलाकर एक सजिल्द ग्रन्थ तैयार हो जाय। थोड़ा थोड़ा काम भी हर साल होता चले ता बहुत सा काम हो सकता है। विशाल ग्रन्थ में अधिक समय, परिश्रम और द्रव्य लगने की सम्भावना है, परन्तु प्रतिवर्ष पुस्तकमाला का एक गुच्छ तैयार करने में विशेष प्रयास और खर्च नहीं है। आपने यद्वाजलि पुस्तिका निकाल कर माग दशन कर हो दिया। अब आगे बराबर उसका क्रम जारी रखना है। जिस प्रकाशक से आपने वह पुस्तिका छपवाई है उससे आप साहित्यिका के स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित करा सकते हैं और प्रतिवर्ष की तिथि पर पुस्तकमाला के क्रमशः खण्ड निवृत्तवा सकते हैं। आपका भरोसा और प्रभाव बहुत व्यापक हैं। आप ही यह कर और करा सकते हैं। अब ऐसे ग्रन्थों अथवा पुस्तकमालाओं के एक दो हजार ग्राहक थोड़े ही प्रयास से मिल सकते हैं। इनकी विक्री का क्षेत्र अब धीरे धीरे उबर हाता जा रहा है।”

बाबू शिवपूजन सहाय ने इस पत्र में एक बात बड़े मार्फ की लिखी और वह यह है आपका सरोकार और प्रभाव बड़ा व्यापक है आप ही यह कर और करा सकते हैं।” वास्तव में चतुर्वेदी जी ने अपने शील सौजन्य सद्व्यवहार और सपन से एक प्रभाव अर्जित किया है जो बड़ा व्यापक है और अपने प्रभाव की इस व्यापकता का उन्होंने सावजनिक हित में भरपूर उपयोग किया है। अपने इस व्यापक प्रभाव के कारण ही वे शक्ति निकेतन में हिंदी भवन, कुण्डेश्वर में गांधी भवन प्रमाण में सत्यनारायण कुटीर और निली में हिंदी भवन बनवा सके। चतुर्वेदी जी इन महान् संस्थाओं के निर्माण का समस्त श्रेय अपने ऊपर नहीं लेते परन्तु तथ्य यह है कि इनका अस्तित्व चतुर्वेदी जी के अथवा प्रयासों के फल स्वरूप ही सम्भव हुआ। ये चारों ही संस्थाएँ निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर हैं। राजसाहित्य मण्डल की स्थापना भी चतुर्वेदी जी के आंदोलन का शुभ परिणाम थी।

चतुर्वेदी जी ने यशों द्वारा अपने प्रभाव को काम में लाकर एक और महान् काम किया और उसे श्री भगवानसिंह जिलाधीश रायबरेली की जुवानी सुनिये, ‘द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद सेना से मुक्त होकर मैं भारतीय प्रशासन सेवा में चला आया। सन् १९५०-५१ के दौरान जब मैं रायबरेली के जिलाधीश पद पर काम कर रहा था तब चतुर्वेदी जी के साथ अनेक वर्षों के बाद फिर से मेरा सम्बन्ध स्थापित हुआ। चतुर्वेदी जी के बारे में एक

बान प्रमिद्ध है और वह यह कि उन्होंने स्वर्गीय माहिरबाग का बानिरगा, कानिकागिया और अनक रंग मक्का के आदिबम पर एकाधियम बायम कर रखी है। गववरगी म आचाय मन्वीर प्रमाण द्विवर्ग के स्मारक के निर्माण के लिए चतुर्वेदी जा कर व्यग्र थे। वह द्विवर्ग जा के गाँव में एक पचायन घर भा बनवाना चाहते थे। यह बान रंग कम जागा का ज्ञान ज्ञान कि आचाय द्विवर्ग जा अपनी गाँव के पचायन के मन्वीर थे और इस हैमियन में उन्होंने जा फमन निव थे वह एतिहासिक दृष्टि में महत्वपूर्ण है। द्विवर्ग जा के अतिरिक्त का नया पहलू उनका निव इन फमना में प्रकट होता है। चतुर्वेदी जा की इच्छा थी कि इन फमना का एकत्र करके उस पचायन घर में रखा जाय। मुझे उन्होंने अनक बार इस बात में पत्र निव। मैंने यह गौरव का बात है कि मैं माहिरबाग के म जा कुछ सुन ममव था मैंने अपना माग लिया। मैंने परिणाम स्वरूप रायगंगा में आचाय मन्वीरप्रमाण द्विवर्ग के स्मारक के रूप में एक पुनर्वाचन का स्थापना दूँ और उनका गाँव में पचायन घर का त्रिगम द्विवर्ग जा के निव फमन मूर्तिमान है।

जब इन्हीं मन्वीर का जुवाना एक दूसरी बगनी भा मुनिय। इसमें लिखा भवन लिखा के निर्माण का सम्पादन हुआ है। श्री भगवानसिंह सिन्हा हैं मन् १९४२ में बगनी द्रवट मगहन का अध्यापक हाकर मैं लिखी भा गया था। मैंने लिखा चतुर्वेदी जी गव्यमभा के मन्वीर हाकर लिखी में विगजमान थे। लिखी आकर उन्हें यह बात सूझी कि गजगाना में बाग एना स्थान नहीं है जहाँ माहिरबागों का स्वागत-गतरार किया जा सके। इस उद्देश्य में उन्होंने लिखा भवन की स्थापना की चेष्टा की। मैं मन्वीर में ममव पहला घटक बनाए ममव में आसना मन्वीर मतिर के यहाँ दूँ त्रिगम मुन जी निर्मात्रन किया था। गजगति गजगप्रमाण जा न चतुर्वेदी जी के मैं काम में पूरा महत्वाग लिया और उनका कृता में लिखी भवन का स्थापना का स्वप्न साकार होन लगा। फिर मन्वीर में बियटर कम्प्यूनिंग विधि में लिखी भवन के लिए कमर तन का मन्वीर नामन आया। मन्वीर न लिखा गहन के लिए जमानन माँगी। चतुर्वेदी जा न उस काम के लिए मुझे जा आ कर लिया। वह ना अब लिखा गजग फागजावा जा बन विन्दु लिखा भवन के जमानना के रूप में मग नाम एना पक्का दिवा नय है कि काट न कट।

श्री भगवानसिंह जी दिनाग्रह के मुन्वीर गन्ध में जायन पत्र कि चतुर्वेदी जा किस प्रकार गववरगी में आचाय मन्वीर प्रमाण द्विवर्ग के नाम

पर पुस्तकालय और द्विवेदी जी के गाँव में पचासतघर बनवाने में समय हुए । हिंदी भवन दिल्ली की भीतरी कहानी भी कुछ इससे ज्ञात हो जाती है ।

## चतुर्वेदी जी की आत्मीयता

प्रस्तुत पत्र संग्रह के अनेक पत्रों में आपका विदित होगा कि चतुर्वेदी जी ने मेरा परिचय अनेक महानुभावा से कराया है । ब्रजभारती की प्रति अनेक सज्जन को भिजवाने में चतुर्वेदी जी का उद्देश्य केवल उनसे मेरा साहित्यिक परिचय कराना है ।

ब्रजसाहित्य मण्डल का एक विनम्र कार्यकर्ता और ब्रजभारती के सम्पादन की हैसियत से जो कुछ सवा मुँस बन पड़ा है चतुर्वेदी जी ने मुझे उसका बड़ा भारी पुरस्कार दे डाला है । उ होन मुझे साहित्यिक कमिश्नर की उपाधि से विभूषित किया है जसा कि उनका अनन्त पत्रों में तद्विषयक उल्लेख से विदित हो जाता है । चतुर्वेदी जी के पत्रों में आप ब्रजभूमि की अनेक नवादिष्ट प्रतिभाओं, पुरातन साहित्यिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और हिन्दी सेवियों के नामों की सूची देखेंगे, अनेक संस्थाओं, विद्यालयों, बनो, उपवनों का उल्लेख पाएँगे और उनका लिए क्या करना चाहिये इसके लिए बड़े बहुमूल्य सुझाव भी । ब्रज की अनेक संस्थाओं के प्रति चतुर्वेदी जी का समस्त दशनीय है । चतुर्वेदी जी का मत है कि ब्रजभूमि में जहाँ वही कुछ अच्छा काम हो रहा हो उसका नेखा जाया रहना चाहिये और उसकी चर्चा हानी चाहिये । चतुर्वेदी जी काटला इन्टर कालेज जिसका प्रबंधक श्री बालकृष्ण गुप्त हैं और हालीपुरा के दामोदर इन्टर कालेज जिसके प्रबंधक श्री शम्भुनाथ जी चतुर्वेदी हैं से बड़े प्रभावित हैं और अपने पत्रों में अक्सर उनकी चर्चा करते रहते हैं । वे आगरा के सेकसूरिया कालेज और रत्नमुनि जन कानेज के भी प्रशंसक हैं । आचार्य जीवतदत्त शर्मा नरहर के संस्कृत महाविद्यालय के संस्थापक थे । चतुर्वेदी जी ने उनके स्मृतिग्रंथ प्रकाशित करने का विचार संस्कृत भाषा के विद्वानों के समक्ष रक्खा है । उस दिशा में कुछ सफल प्रयत्न भी हो रहे दिखाई पड़ते हैं । मेरे माध्यम से उन्होंने स्व० डा० धामुदेव शरण जी अग्रवाल के पत्रों का संग्रह भी किसी हद तक करा ही दिया है । चतुर्वेदी जी इटोरा के उद्यान की भी अपने पत्रों में अक्सर चर्चा करते हैं । इस समुन्नत उद्यान के स्वामी या० प्रतापनारायण अग्रवाल (राजाबाबू हैं) ।

चतुर्वेदी जी सर निजी संग्रहालय में भी बड़ी रचि रखते हैं । उन्होंने कई पत्रों में एक उपयोगी और महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं जिनको यदि कार्यान्वित

कर दिया जाय ता मरणापर निम्न ७ अंगरु मृत्यु बन गयता है । बनुरेरी  
जा १ पुत्र पत्रा मे ५४ अभिनन्दन पत्र का ५१ वर्षी बनार है । इस विषय  
मे ता मरा उनमे ११ नम्र निरन्तर है श्रीमान् ! ३१ ३२ पत्रका । मे  
इस योग्य नरा ।

### बनुरेरी जो का सम्मान

बनुरेरी जा मे आश्रम बनन गौरव और मरुमरार मे बनार  
हूना १२ अंगरु बन पूरा अभिनन्दन जमा दिया है । उनमे प्रथम और प्राणमन  
प्राप्त कर मरुमरार गौरविक बनुरेरी मे बनन जावन का मरुम बनार है ।  
जा माग जावन मे बनुरेरी जा मे उरुह हू है उरुह मरुम बन बन है ।  
बनुरेरी जा मे बने श्रीम काय लर बरा आश्रमावता मे मरुम बन दिवस है ।  
काई आश्रम नरा कि बनुरेरी श्री का दीप कामान मरुमा मे उरुह ज्ञान  
हजतता ज्ञान मे एक माय मरुम ही उठ और बनुरेरी जा मे अनुम कायी  
का मरुम मरुमता ज्ञान मरुम । मरुम १२ उरुह अभिनन्दन पत्र मरुम  
हूमा । पत्र मे मरुम १२ मे मरुम मे बन थडा और मरुमान का जा  
त्रिणी प्रकाशित का है बर अपत्र मरुम है । फिर एक बर मे मरुम हा मरुम  
मरुम मरुमा मे उरुह अंगरु-अंगरु मरुम १२ मरुम मे विभूति दिया ।  
त्रिणी मरुम मरुमन मे मरुम १२ मरुम १२, उरुम मरुम १२ मरुम १२  
मरुमन मे मरुम १२ मरुम १२ और आश्रम विरुम १२ मरुम १२  
उरुम १२ बनुरेरी जा का मरुम दिया । बनुरेरी जा का मरुम १२  
है बर इमे मरुम १२ मे हा प्रकाशित ज्ञान हा मरुम बन नरा है । मरुम हा  
पत्रका है कि मे मरुम १२ हा बनुरेरी जा मे मरुम १२ मरुम १२  
ज्ञान है ।

### बनुरेरी जो को सवेदनगीलता

अभिनन्दन पत्र का आश्रमावता पत्र मे उरुम १२ मुम उम थड पत्र  
मे एक मरुम बरा मरुम । बनुरेरी जो मे आश्रम पत्र मे प्राणमरुम १२  
उरुम श्रीमान का बही मे उरुम १२ मे । मरुम मे मरुम १२ कि बनुरेरी जा  
का मरुम मरुम उम मरुम १२ महिला मे मरुम १२ मरुम १२ मे बिना मरुम १२  
हा हाती बनुरेरी जा का मरुम कि आश्रम १२ मे मरुम १२ मुम उरुम १२  
पत्रा हाती है । बनुरेरी जा मे मुम १२ मरुम कि मरुम मरुम १२ मरुम १२  
या मरुम निम्न १२ मरुम १२ मरुम १२ मरुम १२ मरुम १२ मरुम १२  
मरुम १२ मरुम १२ पत्र मरुम जा कि इमे मरुम मे मरुम १२ और मरुम १२

संग्रह में सम्मिलित करने की उन्होंने मुझे अनुमति भी दी है। वास्तव में वे निर्दोष हैं परन्तु सवर्गशील हान के कारण उनका निश्चल व्यक्तित्व दूसरों के दाप भी अपने ऊपर ओटन को तयार रहता है।

## ब्रजभारती में प्रकाशित लेख

हमने ब्रजभारती के अंक ३ सम्बत् २०२४ में प्रकाशित अपने एक लेख में जिसका शीर्षक था '५० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र' चतुर्वेदी जी के कुछ पत्रों पर विचार प्रस्तुत करते हुए उनके अनेक पत्रों को उद्धृत कर दिया है। पुनरावृत्ति के भय है उन पत्रों को अब हम इस संग्रह में स्थान नहीं दे रहे हैं। हाँ इस पुस्तक में हम परिशिष्ट में उस लेख को ज्यादा लम्बी मुद्रित कर रहे हैं।

हमारे इस संग्रह में सामान्यतया उही पत्रों की विद्यमानता है जिन्हें चतुर्वेदी जी ने हमारे पास भेजने की कृपा की है। कुछ अन्य पत्र भी जिनकी प्रतिलिपियाँ चतुर्वेदी जी ने हमारे पास भेज दी हैं इस संग्रह में सम्मिलित कर लिये हैं। जैसा कि पहले बताया जा चुका है चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में लगभग एक लाख पत्र लिखे हैं। अपने वर्तमान प्रयास में हमारा लगभग व्यापक रूप से अनेक श्रोतों से पत्र इकट्ठा करने का नया। चतुर्वेदी जी के सभी पत्रों को जो पत्र तब तक खिंचे पड़े हैं एकत्रित करना एक कठिन कार्य है। हाँ, यदि कोई महानुभाव अथवा संस्था इन महान कामों का अपने हाथ में ले तो हम उन्हें अपने सक्रिय सहयोग के प्रति आश्वस्त करते हैं।

## ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण

ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण चतुर्वेदी जी का मुख्य स्वप्न है। उन्होंने हम अनेक पत्र इस सम्बन्ध में लिखे हैं और उन पत्रों में ब्रजभूमि की उत्पत्ति और विकास से सम्बन्धित अनेक सुज्ञाव विद्यमान हैं। उनके अभिनन्दन में हम इस विषय पर एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है 'ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण चतुर्वेदी जी की दृष्टि में।' वस्तुतः वह लेख उनके उन पत्रों पर ही आधारित सामग्री का प्रस्तुतीकरण करता है जो चतुर्वेदी जी ने हमें समय-समय पर लिखे हैं। हम उन लेख में उनके तत्त्वपरक अनेक पत्रों का उल्लेख किया है तथा उनमें से प्रचुर उद्धरण भी दिये हैं। हम उस लेख को अक्षरशः इस ग्रन्थ के परिशिष्ट में छाप रहे हैं। उस लेख में चतुर्वेदी जी के जिन पत्रों का उल्लेख हो चुका है उन्हें हम पुनरावृत्ति के भय से इस ग्रन्थ में नहीं दे रहे हैं।

कर लिया जाय तो मशरूमय निम्नस्थ अयन समृद्ध बन सकता है। चतुर्वेदी जी ने कुछ पत्रों में मर अभिनन्दन ग्रंथ की भी चर्चा की है। हम विषय में तो मरा उनमें यश नम्र निन्दन है, 'श्रीमान्। शत शत धन्यवाद। मैं इस योग्य नहीं।'

### चतुर्वेदी जी का सम्मान

चतुर्वेदी जी ने आज से अपने सौजन्य और सद्ब्यवहार से अगणित हस्ताक्षर अपना स्नेहपूर्ण अधिनार जमा लिया है। उनमें प्रथम और प्रामाण्य प्राप्त कर मध्याह्न साहित्यिक बंधुओं ने अपने जीवन का गौरव बनाया है। जो लोग जीवन में चतुर्वेदी जी ने उठाए हुए हैं उनकी मर्यादा बहुत घटी है। चतुर्वेदी जी ने बड़े ही काम की यही आशीर्वाद में सबके स्नेह विधायक है। का अर्थ है कि चतुर्वेदी जी की हीप वाली गवादा में उठाए गए अनेक कृतकता पाएँगे एक साथ मरकर न उठ और चतुर्वेदी जी के अनुपम वापों का सर्वत्र सगहना होने लगें। मरम पदों उह अभिनन्दन ग्रंथ में मर्मित हुआ। ग्रंथ में सम्पूर्णता में लक्ष्य न स्नेह, श्रद्धा और सम्मान का जो त्रिरणा प्रवाहित है वह अत्यन्त सुख है। फिर यह सब के भीतर ही तान ममान सम्पादन में उह अपनी-अपनी सर्वोच्च उपाधियाँ में विधायित किया। निम्न साहित्य सम्मान में साहित्य वाचस्पति, उत्तर प्रत्तीय निम्न साहित्य सम्मान में साहित्य वाचस्पति और आगम विश्वविद्यालय ने डा. निंद का उपाधि ॥ चतुर्वेदी जी का अनेक किया। चतुर्वेदी जी का व्यक्तित्व मर्यादा है वह इन अनेकता में ही प्रकाशित नाना में गया जान रहा है। मर तो धारणा है कि ये अनेकता ही चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व की शक्ति में प्रकाशित होने हैं।

### चतुर्वेदी जी की सवेदनशीलता

अभिनन्दन ग्रंथ का आरापान पढ़ने के उपरान्त मुझे उम्र श्रेष्ठ ग्रंथ में एक अभाव का लक्ष्य। चतुर्वेदी जी के आत्मचरित्र में प्रातःस्मरणों में उनका श्रीमता का कहीं भी उल्लेख नहीं था। मैंने यह साचर कि चतुर्वेदी जी का मदान साधना में मर्यादायों सहित के लक्षण मर्यादा के बिना अममम हा होता चतुर्वेदी जी का निम्न कि आत्मचरित्र में यह सभी मुझे उसका दाप प्रतीत होती है। चतुर्वेदी जी ने मुझे मुझे निम्न कि मरा यह प्रश्न प्रामाणिक था तथा निम्न यह एक श्रवण वाता में ही रह गई। उम्मेने मुझे एक लयन्त मममममम पत्र लिखा कि इस मरम में वतमान है और त्रिरणा इस

संग्रह में सम्मिलित करने की चाहने मुझे अनुमति भी दे दी है। वास्तव में वे निर्दोष हैं परन्तु सर्वेक्षणशील होने के कारण उनका निश्चल व्यक्तित्व दूसरों के दाप भी अपने ऊपर ओटन को तयार रहता है।

## ब्रजभारती में प्रकाशित लेख

हमने ब्रजभारती के अंक ३ सम्बत् २०२४ में प्रकाशित अपने एक लेख में जिसका शीर्षक था "प० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र" चतुर्वेदी जी के कुछ पत्रों पर विचार प्रस्तुत करते हुए उनके अनेक पत्रों को उद्धृत कर दिया है। पुनरावृत्ति के भय से उन पत्रों को अब हम इस संग्रह में स्थान नहीं दे रहे हैं। हाँ इस पुस्तक में हम परिशिष्ट में उस लेख का जया का रसो मुद्रित कर रहे हैं।

हमारे इस संग्रह में सामान्यतया उन्हीं पत्रों की विद्यमानता है जिन्हें चतुर्वेदी जी ने हमारे पास भेजने की कृपा की है। कुछ अन्य पत्र भी जिनकी प्रतिलिपियाँ चतुर्वेदी जी ने हमारे पास भेज दी हैं इस संग्रह में सम्मिलित कर दिये हैं। जसा कि पहले बताया जा चुका है चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में लगभग एक लाख पत्र लिखे होंगे। अपने वृत्तमान प्रयास में हमारा सद्यः व्यापक रूप से अनेक श्रोताओं में पत्र इकट्ठा करने का नया। चतुर्वेदी जी के सभी पत्रों को जो यत्र तत्र सवत्र बिखर पड़े हैं एकत्रित करना एक कठिन कार्य है। हाँ, यदि कहीं महानुभाव अथवा मर्यादा इस महान् कार्य का अपने हाथ में ले तो हम उन्हें अपने सक्रिय सहयोग के प्रति आश्वस्त करते हैं।

## ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण

ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण चतुर्वेदी जी का सुख स्वप्न है। उन्होंने हमें अनेक पत्र इस सम्बन्ध में लिखे हैं और उन पत्रों में ब्रजभूमि की उन्नति और विकास से सम्बन्धित अनेक सुझाव विद्यमान हैं। उनके अभिनन्दन ग्रन्थ में इस विषय पर एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है 'ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण चतुर्वेदी जी की दृष्टि में।' वस्तुतः वह लेख उनके उन पत्रों पर ही आधारित सामग्री का प्रस्तुतीकरण करता है जो चतुर्वेदी जी ने हम समय-समय पर लिखे हैं। हमने उस लेख में उनके तद्विषयक अनेक पत्रों का उल्लेख किया है तथा उनमें से प्रचुर उद्धरण भी दिये हैं। हम उस लेख को अन्तरण इस ग्रन्थ के परिशिष्ट में छाप रहे हैं। उस लेख में चतुर्वेदी जी के जिन पत्रों का उल्लेख हो चुका है उन्हें हम पुनरावृत्ति के भय से इस ग्रन्थ में नहीं दे रहे हैं।





मेरी यह पक्की धारणा बनी है कि हमारे वर्तमान समाज के प्रखर लेखकों ने उन्हें पूरा सहयोग दिया होता तो आज हमारे समाज का वातावरण ही कुछ और होता।”<sup>१</sup>

श्री विष्णु प्रभाकर—“(चतुर्वेदी जी के पास) पत्रों का सचमुच अद्भुत संग्रह है। किसी दिन उनका प्रकाशन हो सका तो पत्र साहित्य की निधि प्रमाणित होगे। (उनसे) पत्र पढ़ते-पढ़ते पत्र लिखने की कला पर भी बहुत बातें हुई। पण्डित पद्मसिंह शर्मा श्रियुक्त श्रीनिवास शास्त्री और महात्मा गांधी यदि कुछ इस व्यक्ति हैं जो सचमुच पत्र लिखना जानते हैं। बहुत दिन बाद एक साहित्यकार ने मुझसे कहा था कि पत्र लिखते समय शायद चतुर्वेदी जी भी इस बात को नहीं भूलत।”<sup>२</sup>

श्री कर्णदत्त मिश्र ‘प्रभाकर’—“श्री बनारसीदास चतुर्वेदी न माली हैं न किसान, वह बाढ़ल है और (पत्र रूपी मेघा द्वारा) जीवन भर विचार सुझाव और सहयोग के बीज बरसाते रहे हैं।

वह योजना-पुरुष हैं पर कभी योजना प्रवक्ता नहीं जिये, यह उनके जीवा की अनिष्टता है और यही उनके जीवन की विशिष्टता है। उनका विश्वास है जीवन की उन्नति और इसके लिए वह जीवन भर पूरी कीमत चुकाते रहे—सुख सुविधाओं की कीमत, अवसरों की कीमत, यह कीमत इतनी अधिक है कि कराइ पति का भी दिवाला निकल जाय पर उनके अट्टहासों का पजाना कभी खाली न हुआ और उनकी मस्ती की तिजारी सदा भरी रही, यही उनका व्यक्तित्व है।”<sup>३</sup>

पं. सूर्यनारायण व्यास—“पत्र व्यवहार में तो चौबे जी बेजोड़ रहे हैं। डेरो पत्र लिखे और सङ्गृहीत भी किये। चौबे जी ने कई पत्र बड़े सुन्दर और अपनी आत्मस्य वृत्ति पर लज्जा व्यक्त करने वाले लिखे। चौबेजी की तरह मुझे भी पत्र संग्रह का शौक है। सात आठ हजार पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं। चौबे जी के पत्र भी उस पत्र-सागर में वही डुबकी लगाये हुए पड़े हैं।”<sup>४</sup>

श्री भगवान्सिंह—‘चतुर्वेदी जी पत्र-लेखन कला के आचार्य ही कहे जा सकते हैं। जब कभी चतुर्वेदी जी के पत्र आते हैं दफ्तर की मशीनी दुनियाँ से

१ श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ४६

२ ” ” ” पृ० १०

३ ” ” ” पृ० १३

४ श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १७

निकाल कर वह मन्त्र मानवीय उपाय भावनाओं के संग्रह में रखा  
गया है।<sup>१</sup>

श्री बनारसदास महामहिम— 'चतुर्वेदी जी ने पाप' त्रिनयन पत्र लिखे हैं, त्रिनयन  
नामा का निम्न है तथा त्रिनयन नामा और विषयों के लिए लिखे हैं उन  
लिखों और न लिखेंगे यह मैं नहीं जानता। उनका पत्र स्वयंसेवक जिन्हें श्री  
म और स्व के छात्र हैं मन्त्रों नामा में जाता रहा है। मुख्य गौरी जी और  
मुख्य में नरक में विष्णु के अनेक नामों के साथ उनका पत्र स्वयंसेवक बनता  
रहा। उनका नाम उन पत्रों का अभूतपूर्व मन्त्र है। यह स्वामी अधिक और  
मन्त्रपूर्ण सामग्री है कि वह एक चित्रण है विष्णु पदार्थ वषों की शक्तियों  
का चित्रण का पञ्चनयन का। चतुर्वेदी जी का दृष्टा रहीं है कि उनका  
काऽ माणागत उपयोग जाना और उनका मुख्य नाम उनका प्रकाश मिलता  
है तादृशिक उपयोग का चित्र बनता। चतुर्वेदी जी की पद्यावध का  
त्रिनयन नामा का प्रयत्न और उन है यह मन्त्रावध और यदि वह मन्त्रानि  
का या माना जाय तो यही है चतुर्वेदी जी का रसा। पर, स्वयंसेवक  
मन्त्र निष्ठा में इच्छा है दृश्य मन भा है या शक्त का किसी न किना रूप में  
उनका साथ हुआ है।<sup>१</sup>

श्री रामदत्तबाबुसाहब साहब— चतुर्वेदी जी का यह पुस्तक बहुत पढ़ा है।  
उनका पत्र में काव्यनिक उद्घाटन नहीं बल्कि जानी है मन्त्रमूल का मन्त्र और  
दृश्य में जाइ उन जाना एक वही। उनका पढ़ने में प्रयत्न नौना है, ज्ञान के  
मन्त्र विष्णु के नामों में है। ज्ञान २०६ २३ के पत्र में चतुर्वेदी मुख निष्ठा  
का— मुख्य प्रकृति के निकट में किसी एक आश्रम का बनना कर रहा है  
जहाँ के 'मिन शक्त में भाग्य के मिन जायना के नरक गौरी और प्रयत्न  
नरक के मार्गिक तथा साधनिक साधना का विवरण (मन्त्र) जहाँ  
मुख्यतः हागा जहाँ बर्मा शून्य वही आमात्रा का शक्ति विषय का व्यवस्था  
पानी जहाँ उनका साधना का स्थिर रहा कर्मा और जहाँ का द्वार प्रयत्न  
मन्त्रावध पत्र के लिए खुला गया और मित्रों के साथ के समान जहाँ  
उनका शक्ति स्थान नामा। एक आश्रम भाग्यवश में और पादस्थान में  
बना ने बर्मा स्थान गि। प्रारम्भ में वह शक्त अनेक जहाँ हागा पर जाय  
बदल उनका अवश्य मन्त्रानि मिलता। मैंने छात्रों की चोख यहाँ स्थान की

थी, वह नष्ट हो गई, पर वकील कविवर बच्चन 'नीड का निर्माण फिर फिर।' अगले अवट्टवर या नवम्बर म मैं ब्रज म किसी नीम के नीचे बैठकर अपनी शुद्धतम साहित्यिक साधना का पुन आरम्भ करूँगा। यहाँ का उपवन तो अब छाड़ ही रहा हूँ—पर 'मन चगा तो कठोठी भे गगा'। मुझको बुला रही है ब्रज की करीब कुज।'

मेरी राय म यदि सिर्फ उनके ऐसे पत्रों का ही ठीक रूप म संपादन किया जाय, जिन्हें अपनी कलम से उन्होंने दूसरों को लिखा है तो यह उनके साहित्यिक जीवन तथा भावना के अध्ययन की दृष्टि से एक सध्य पूरा धस्तु होगी तथा हिंदी सत्तार के लिए एक रोचक और सजीव कृति। हिन्दी समाज म ऐसे कितने हैं जो अपने जीवन के चिंतनशील क्षणों म व्यस्त रहने हुए भी दूसरों को स्नेह पूर्वक संबोधन करते हैं और जो माग से अनभिज्ञ अपने छुट-भड़का को ईमानदारी के साथ बतलाते हैं कि उनकी अपनी सफलता क भव तथा साहित्यिक कार्यों के तरीक क्या हैं ?''

श्री धर्मद्रनाथ शास्त्री— 'चतुर्वेदी जी की पत्र संग्रह का चौक है। अभी कुछ दिन हुए उन्होंने मेरे तीस चालीस पुराने पत्र दिखलाए। उनके पास गांधीजी के रवीन्द्रनाथ ठाकुर के और सी एफ गड्गूज के न जाने कितने पत्र संग्रहीत हैं। मैं बहुधा सोचता हूँ चतुर्वेदी जी के साथ ऐसी आत्मीयता का क्या कारण हो सकता है? खास कर आजकल की दुनियाँ म यह होता है कि परस्पर आदान प्रदान से घनिष्ठ सम्बन्ध बढ़ने पर आत्मीयता हो जाती है। कभी कभी यह आदान प्रदान सच्चाई के आधार पर होता है, अर्थात् जब कभी कोई व्यक्ति हमारे साथ भलाई या उपकार करे तो कृतज्ञता पूर्वक उसे धाद रखते हुए उसने लिए प्रत्युपकार करने की चेष्टा करने की प्रवृत्ति होती है। ऐसे स्थल पर किया गया आदान-प्रदान भी एक अनुकरणीय बात है, क्योंकि कृतज्ञता सच्चे मानव हृदय का एक विशेष गुण है। हाँ, जहाँ यह आदान प्रदान केवल इसी स्वाध बुद्धि से होता है कि हम किसी का काम करें और वह हमारा कर और उससे दोनों को ही पारस्परिक लाभ हो वहाँ वह आदान-प्रदान केवल दुकानदारी की ही बात होती है, उसम कोई सुंदरता नहीं होती। चतुर्वेदी जी के विषय म इस सिद्धांत को मैंने इसलिए कुछ स्पष्ट किया है कि चतुर्वेदी जी के साथ तो मेरा किसी प्रकार भी (उल्टा या निवृष्ट) आदान प्रदान का सम्बन्ध रहा ही नहीं। जहाँ तक मुझे धाद पड़ता है,

मैं उनमें किसी अपने निजी काम के विषय में प्रायः नहीं की और चतुर्वेदी जी मुझे किसी का निजी काम करना समझाता नहीं होता। इसीलिए यह प्रश्न स्वाभाविक होता है कि चतुर्वेदी जी के प्रति इसकी आत्मीयता का अनुभव क्या कर हुआ ?

“ऊपर आशयान प्रश्न का जवाब निम्नी है। उमम जा उत्तर प्रकार का है अर्थात् दृष्टान्त पर आधिन आशयान प्रश्न बन् भी एक प्रकार में निवृत्त ही है, यद्यपि उमम भी प्रश्न के माय साय आशयान भी लगा रहता है। जीवन का सर्वोत्कृष्ट रूप विगुद्ध प्रश्न ही है जहाँ हम दूसरों के प्रति भलाई बचन भलाई करने के भाव में रहते हैं, जहाँ व्यक्तिगत स्वाध की गति भी नहीं रहती। समाज में हम महान् पुण्य पण्डित गत हुए हैं जिनसे अपना सम्पूर्ण जीवन मानव ज्ञान के लिए अर्पण कर दिया था। परन्तु हम मनुष्यों को छोड़कर साधारण व्यक्तियों में भी यह बात बहुत ही पाद जाती है। दूसरों के प्रति भलाई करना बस में यह दृष्ट व्यक्त का बस दूर करना यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। बचन निजी स्वाध की भावना हम प्रवृत्ति का राके रहता है। साधारण व्यक्तियों में भी कुछ व्यक्ति हम पाय जाते हैं जिनमें अन्तर में जन हिन का भावना आत प्राप्त रहती है जो निजी स्वाध का बिना साध मन में बचन में और कम में दूसरों के हिन के लिए तत्पर रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों के प्रति प्रत्येक मनुष्य के अन्तर आत्मीयता की भावना उत्पन्न हो जाती है यदि वह उन्हें गहराई से देखे। चतुर्वेदी जी के विषय में मैं ऊपर उक्त गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपनी कम के किसी निजी स्वाध के लिए नहीं उठाया, प्रत्युत सर्व किसी विषय आशय के लिए उसका उपयोग किया। इसीलिए चतुर्वेदी जी के प्रति मैं जम बित्त है। व्यक्तियों के हृदय में आत्मीयता का भाव उत्पन्न हो जाता है और विषय साहित्यिक क्षेत्र के व्यक्तियों में।”

श्री रामधन राम— चतुर्वेदी जी प्रतिनिधि इसकी चिट्ठियाँ लिखते हैं कि पञ्चम साठ वर्ष मासिक पोम्प में भव हो जाते हैं। किसी नये आशय का भी चतुर्वेदी जी इस तरह पत्र लिखते हैं माना वर्षों से जान पड़ता है। परिचित अपरिचित शत्रु मित्र सब की आत्मीयता के माय चिट्ठी लिखते हैं।”

श्री विद्याशङ्कर शर्मा— जय साहित्य मित्रों में पिनाजी (स्व० ग० शिशुवर जा गमा) स्वर्गीय प० योगम गमा और गमा जी (प० बनारसीदास चतुर्वेदी)

को अपना परम आत्मीय मानते थे, और दिल खोलकर इनके साथ बातचीत करत थे। ४५ वष की अवधि में पिताजी ने बाई ३०० पत्र दादाजी का भेजे थे, जो उनके पास सुरक्षित हैं, मेरा ख्याल है इमग ल्थीनी सख्या में दादाजी ने पिताजी को पत्र भेजे हंग। इनमें कितने सुरक्षित हैं मैं सम्मान कर गिनती नहीं कर पाया। पत्रों में साहित्य चर्चा अधिक रहती थी, घरेलू बातें कम। लेकिन दादाजी के साथ घरेलू सम्बन्ध बराबर बन रहे। १० वष पूर्व जब बड़े भाई डा० दयाशंकर शर्मा ने अपना मकान बनवा लिया तो पिताजी ने उसके उद्घाटन के लिए दादाजी को विशेष रूप में आमन्त्रित किया था। वह अपने साथ पितामह (महाकवि शंकर) का एक बड़ा चित्र लिली से बनवा कर लाये जिसका नवीन 'शंकर सदन' में उन्होंने उद्घाटन किया। उसी दिन नय मकान में वृक्षारोपण भी हुआ। बाउड्री के सहारे, एक बतार में जो अशोक के पीछे लगाए गए उनमें पहला दादाजी ने लगाया था और दूसरा स्वर्गीय प० श्रीराम शर्मा ने। अन्तिम गुलमुहर का पीछा पिताजी ने लगाया था। १० वष के अन्तर में पीछे बढ़कर अब पेड़ बन गए हैं। दादाजी के अशोक के पेड़ और पिताजी के गुलमुहर की अपनी विशेषता है। हरीतिमा से आच्छादित 'शंकर सदन' इन दोनों की छत्रछाया में अपने को धन्य मानता है।”

स्वयं चतुर्वेदी जी का श्री रामनारायण उपाध्याय खंडवा का लिखा हुआ पत्र दिनांक १२ १-६१ दिस्ती से —

‘आपका कृपा पत्र मिला। बात दर जमल यह है कि पत्र-व्यवहार मरे लिए एक व्यसन हा गया है और बावजूद धार प्रयत्नों के मैं उस छोड़ नहीं पाता। महीने में २४ २५ दिन चिट्ठिया को लिखन में ही व्यतीत कर देता हूँ। स्व० परसिंह जी शर्मा का जीवन चरित बड़े वषा से अधूरा ही पड़ा है। तुलनेव जब मरणासन में थे तब भी उन्होंने किसी युवक ग्रन्थकार के लिए सिफा रिशी चिट्ठी किसी प्रकाशक को लिख दी थी और स्टीफन ज्विंग भी इसी आन्श का पालन करत रहे थे। रोम्या रोला का भी मत्सा पत्र लिखन पड़े थे। मैं इन तीनों का प्रशंसक हूँ, इसलिए यह सम्भव नहीं कि मैं किसी सकटग्रस्त सज्जन के पत्रों का उत्तर न दूँ, बल्कि नवीन प्रतिभाओं का स्वागतार्थ तो मैं और भी प्रयत्नशील बनना चाहता हूँ, पर फालतू चिट्ठिया का जवाब देना मरे लिए असम्भव हो गया है।

अन्य नपुंसक परिपद का उद्धार होना चाहिए। उसकी मीठिंग भले ही न हो, पर पत्र-व्यवहार तो निरंतर होना ही चाहिए।

श्री शिवनारायण श्रीवास्तव—‘श्री चतुर्वेदी जी का सम्पर्क महापुरुषों से रहा है। इतना ही नहीं बल्कि वह विश्व विख्यात साहित्यकारों, कवियों और कलाकारों में महाकवि गुरु बालदत्त शर्मा, डा. सुरेन्द्र रोह्या, राधा, स्टीफन जिग टाल्सटाय, एममन घोरो, चणक, मकिम मोर्गी, तुगनव, क्रॉफोर्डिन इत्यादि मनापिया के प्रयोगों का अध्ययन करके उनकी विचारधाराओं के प्रभावों से प्रभावित हुए हैं। पत्र-लेखन में चतुर्वेदी जी श्रेष्ठ मान जाते हैं। पत्रों के उत्तर देकर न केवल मीठी और बनी-बही जान स्याही में स्वयं अपने हाथ में मुद्रा लगाते हैं, लिखकर भेजते रहते हैं। पत्रों का उत्तर भजन में वह किसी प्रकार का झिझक नहीं करते, बल्कि तत्काल उत्तर भेजते हैं।

पत्र-व्यवहार का व्ययन उन्हें लगभग ४१ वर्षों से है। यदि हमारा जगता जाय तो हम अनुमान में उठाने पर तब सवा ल सात व लगभग पत्र लिखें होंगे।

पत्र-लेखन में विषय में वह एक जगह लिखते हैं—‘बाई भाग पाता है बाई तमाशू पाता है, किसी का अपमान की बात है तो किसी का गौरव का शोक है। गुरु का प्रिय गुरु पाने वाला का क्या कहना। और चाय के पियकरों की सख्या तो दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ गयी है।

पर इन सब मुशकिलों की तरह उनका हा माया, एक नशा और भी है और वह है चिट्ठियों का भेजना। (पद्मिनी शर्मा के पत्र भूमिका पृ० ११)

नवीन लेखकों का सहयोग देने में चतुर्वेदी जी एक बड़े दा महान साहित्यकारों मकिम मोर्गी और टाल्सटाय का उदाहरण देने हुए एक जगह लिखते हैं—

‘मकिम मोर्गी किसी सच के पाम प्राजन भिजवाते थे, किसी के पाम झिझके, किसी को पसा और प्रात्याह्न-पत्र तो उन्हें गरदा लिखते रहते थे। टाल्सटाय के चत्तीन पृथीय पत्रों में जो गम्भीर गेना की अपनी कुमारा अवस्था में मिला था, उनसे जीवन का अत्यन्त प्रभावित किया।’

नये पत्रकारों और साहित्यकारों का चतुर्वेदी जी अपने पत्रों द्वारा गहरा उपपानी भूषनाएँ न रहते हैं। यही हम उनका एक मात्र पत्र,

जा उन्होंने टीनम गढ़ निवासी श्री भगालाल जी को लिखा था, उद्धृत कर रहे हैं

नाथ एवे यू, नई दिल्ली

१४ ४ ५८

प्रियवर,

बड़े, कृपापत्र तथा लेख मिला। कृतज्ञ हूँ। गाडनर के निबंध के अनुवाद का आप कहीं और छपा सकते हैं, पर इस रूप में तो शायद कोई नहीं छापेगा, क्योंकि बागज के दानों आर लिखा होना से कम्पोजीटर को बड़ी कठिनाई होती है।

पत्रकार का प्रथम नियम आप नोट कर लीजिये कि आपको अपनी रचना अच्छे से अच्छे ढंग से स्वच्छ अक्षरों में लिखनी चाहिये, घसीट कर लिखा हुई चीज का पढ़ते हुए चित्त में एक प्रकार की ग्लानि होती है। जब आप मनचाहे ढंग से अत्युच्च कोटि के मनुष्य या प्रभावशाली लेखक बन जाय तब आप मनचाहे ढंग से घसीट सकते हैं। अभी तो आपको इस विषय में अत्यंत सावधानी से काम लेना पड़ेगा।

बागज चाह मासूली तरीके का हो पर अक्षर तो ठीक होने चाहिए और हाशिया छोड़ कर लिखने की जरूरत है। स्याही के फीके पत्र की क्षमा चाहत पर सम्पादक की असुविधा थोड़े ही दूर हो जायगी। अध्यापक होकर भा आप ऐसी भूल क्या करत हैं? यद्यपि मेरे पास इतना समय नहीं कि अंग्रेजी से मिलाकर आपके अनुवाद को देखू, तथापि किसी न किसी प्रकार मैं ऐसा कर भी देता, यदि चीज साफ ढङ्ग से लिखी गई होती।

मुझे विश्वास है कि आप बुरा न-मानेंगे और भविष्य में अपने लेख इत्यादि सुंदर अक्षरों में लिख कर भेजेंगे। अपने बारे में इम्प्रेसन क्या खराब करते हैं? हस्त कम्पन के कारण मैं अधिक नहीं लिख सकता, फिर भी आप जसे उत्साही व्यक्ति को लिखे बिना रह नहीं सकता।

जो थोड़ी सफलता मुझे अपने पत्रकार जीवन में मिली है उसमें अक्षरों का विशेष हाथ है। लापरवाही से लिखी हुई कोई रचना मैंने पिछले तीस वर्षों से किसी सम्पादक को नहा भेजी। इस स्पष्टवादिता के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

विनीत

चनारसीदास चतुर्वेदी



चतुर्वेदी जी का पत्र मग्न होकर पढ़ा मग्न है। वह विख्यात व्यक्तियों के अलावा साधारण व्यक्तियों के पत्र-प्रसार करने हैं। उन्हीं में गान्धी निवेदन (कनकता) की हस्ताक्षरों में विश्वव्यापी क्रांति रवीन्द्रनाथ ठाकुर का निवेदन मद्रास की जेलों में उनका कुछ पत्र भी प्राप्त किया। सावरभनी आश्रम में गान्धी जी के सहयोग में रहकर वे केवल उनके आत्मोपनिषद्, अग्नि, आदि में उनके लगन में भी पत्र भी।

पत्रों के अमर साहित्यकार राम्या राणा से पत्र-व्यवहार किया और उस महान् सचिव के तीन पत्र उनके पास सुरक्षित हैं। इसी तरह आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी भूषण प्रसाद पण्डित जवाहरलाल नेहरू पण्डित परमिह रामा श्रीधर पाठक इत्यादि के अनेक पत्र उनके संग्रहालय का ऐतिहासिक महत्त्व प्रदान करने हैं।

हम कह सकते हैं कि पत्रों के हाथ में, जिनके भारत के विभाजन के पत्रकार साहित्यकार के पास इनके भूषण पत्रों का संग्रह नहीं है।”

श्री यशपाल जी—‘पत्र-लेखन में दादाजी का काद मुलाविना नहीं कर सकता। पत्र-लेखन का वह एक बड़ा मानन है और वह उस जमाने का महान् आचार्य है। उन्हें महाराम गान्धी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर महावीरप्रसाद द्विवेदी परमिह रामा, प्रतापनारायण मिश्र प्रभृति के निवेदन मद्रास में आने का अवसर मिला था। उनके पास भारतीय नानाशाही साहित्यकार, समाज-संविदा तथा अनेक विद्वानों के पत्रों का संग्रह है। इतना ही नहीं, उन्होंने स्वयं एक राज्य से अधिक पत्र लिखे हैं। अपने पत्रों में वह अपना हृदय खोलकर रख देते हैं। उनके पत्रों में न जान कितने निराशा व्यक्तियों का आशा का मग्न किया है। उनके पत्रों में साहित्य का अमूल्य निधि है। उनका जमा प्रसार और तत्सम्बन्धी पत्रकार आज के युग में दुर्लभ भी नहीं मिलता। इस पत्र में उनकी सेवाएँ अद्वितीय हैं।”

श्री शिवप्रसाद साहाय—‘आगरा और मिर्जापुर की परम्परा आप नहीं चला रहे, जिनके आसपास ही विज्ञान भाग्य वाली परम्परा का ‘आगरा और मिर्जापुर में अपनाया था। पत्र-प्रकाशकता आप ही हैं। आत्मकथा

रेखा चित्र मस्मरण, पत्रावली आदि के प्रकाशन की परम्परा हिंदी में बस पहले पहल आपकी ही चलाई हुई है। इतिहास इस बात का साक्षी रहेगा ।<sup>१</sup>

स्वर्गीय साहित्य संविद्या के श्राद्ध कम में आप दिन रात व्यस्त रहते हैं यह आपके ही योग्य है। जितना कुछ आप कर जायेंगे उतना ही रकड़ रहेगा। आपके दस पवित्र कम में मैं यथायोग्य सहयोग करने को तैयार हूँ। जिन चार संस्थाओं की स्थापना आपके द्वारा हुई, उनसे आगे की पीढ़ी सदा प्रेरणा लेती और लाभ उठाती रहेगी। स्मरण और इ-टरे-यू तथा साहित्यिक पत्र सग्रह की प्रथा आपने ही चलाई है। इन कामों में अब तक साहित्य का महान् उपकार हुआ है।<sup>२</sup>

श्री भगालाल शर्मा—“पत्रों के लिखने में वह (चतुर्वेदी जी) बड़े उदार हैं और उनके पत्रों का यदि सग्रह किया जाय, तो उनकी संख्या हजारों तक पहुँच सकती है। उनके पचासों पत्र तो भरे पास सुरक्षित हैं। यदि उनके संपादकीय लेखों का सग्रह किया जाय तो कई बड़े ग्रंथ बन सकते हैं।

चतुर्वेदी जी ने एक पत्र में मुझ लिखा था—‘हाम्पयरस हमारे जीवन के लिए पट्ट रमा में भी अधिक आवश्यक है, लोगो को आनंद देना और सदा प्रसन्न रहना, इसी में दीर्घायु का नुसला है।

‘सम्प्रा किसी एक व्यक्ति की विम्वृत छाया का नाम है यदि अबला एक आत्मी भी जन्म कर बैठ जाय और अपनी अंतरात्मा की पुकार के अनुसार काम करे तो यह विशाल सत्कार उसके निकट आ जायगा।’ एमसन के इस कथन का उह विश्वास है, फिर भी लोग उह केवल प्रोपेगण्डिस्ट ही समझते हैं।

चतुर्वेदी जी सीधी-साधी भाषा लिखने के पक्षपाती हैं। उनकी भाषा बोझिल नहीं है उसमें प्रभाव तथा प्रसाद गुण है। उनकी लेख शक्ती पाठकों के लिए भार स्वरूप नहीं। एक अच्छे अध्यापक के समान उनके लेख खेल-खेल में ही बड़ा संदेश दे जाते हैं। वह अपनी बात ज़रूरस्ती गले उतारने का व्यर्थ प्रयत्न नहीं करते। उह जो कुछ कहना होता है सरल भाषा में स्वाभाविक ढङ्ग से कह देते हैं।”<sup>३</sup>

१ श्री शिवपूजनसहाय के चतुर्वेदी जी को लिखित ता० १८ ५ ५१ के पत्र से

२ श्री शिवपूजनसहाय के चतुर्वेदी जी को लिखित १६ १०-५४ के पत्र

३ श्री बनारसोबास अभिनंदन ग्रंथ पृ० १६३



हो तो पिछने पचास वर्षों में उनके द्वारा लिखे गये साठ हजार से ऊपर के व्यक्तिगत पत्रों को पढ़ना असम्भोगा । पर इन अनेकानेक व्यक्तियों को इतना लम्बी अवधि में लिखे गये इन सहस्रा पत्रों का सफल वर्णन मुनम हागा ? “भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य” पुस्तक में बाबू वृन्दावनदाम जी ने प्रथम बार उनके कतिपय महत्वपूर्ण पत्रों की शायी हम दी थी । ‘अभिनदिनी’ में चतुर्वेदी जी की विचारधारा का मैंने उही थोड़े से पत्रों से आवर्णित किया था । बाबू वृन्दावनदाम जी अब चतुर्वेदी जी के शताधिक पत्रों का सफल पुस्तककार निकालने जा रहे हैं । यह हिन्दी के लिए एक अपूर्व दान हागी । गांधी, टैगोर, प्रेमचन्द, दीनबन्धु ऐण्ड्रूज, महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि अनेक महान् व्यक्तियों के यशस्वी साहित्यकारों के पत्र चतुर्वेदी जी के पास संग्रहीत हैं । उन पत्रों का अपना मूल्य है । पर स्वयं चतुर्वेदी जी न जो पत्र लिखे हैं उनकी उदात्त प्रेरणा जीवन के चिरन्तन मूल्यों की पापिका है । हिन्दी अप्रेजी दोनों में साथ साथ नीनी और लाल स्याही में लिखे गये उनके पत्र सीधा सहज पर अचूक, जागृक शैली के प्रतीक तो हैं ही, जीवन का मनमौजीपन और बड़ी-बड़ी चीजों को करने कराने और कर गुजरन की हास में भरा ध्वस्व उनका अद्भुत आवरण है । उनका संग्रह एक विशाल युग के विशाल हृदय की जीवन्त प्रेरणा का देनीयमान भाण्डागार है । हिन्दी जगत बाबूजी की इस कृति की उत्सुकता से प्रतीक्षा करेगा ।”

साहित्याचार्य श्री श्यामसुन्दर बाइल—‘प्राचीनकाल में—रेखा के प्रचलन के पूर्व—समुचित सुविधा न होने के कारण संदेशों का आदान प्रदान विश्वस्त दूता द्वारा सम्पन्न किया जाता था सा भी बड़ी आवश्यकता हान पर । अतः संस्कृत साहित्य में पत्रों की चर्चा बहुत कम हुई है । महाकवि बाण (वि० सं० ६२६ ६४४) ने बादम्बरी में कुछ पत्रों की चर्चा की है और ऋषिय को लेख हारक कहा है । पत्र की शैली संक्षेप में इस प्रकार है

स्वस्ति । उज्जयिनीत परम माहेश्वर महाराज तारापीड सव सम्पदा आयतन चन्द्रापीड उत्तमाङ्गे धुम्बन् नन्दयति । कुशलिय प्रजा । वियानपि काल भवना दृष्टस्य गत । चलवदुत्कठित नो हृदयम् । ततः लेखन-वाचन विरतिरेव प्रयाणकालता नेतव्या ।”

हिन्दी में पत्रों का प्रारम्भ इसी शैली में हुआ । धीरे धीरे पत्रों में नई शायी का प्रादुर्भाव हुआ । इसमें अनावश्यक शिष्टाचार प्रदर्शन का नितात हा अभाव रहता है । छोटे से प्रिय संबोधन के साथ—कभी उसे भी छोटकर काम की बात निम्बदी जाती है । इस प्रकार कभी-कभी एक ही पत्र में पत्र

श्री मोहनसिंह सेंवर—“चतुर्वेदी जी मैं मगर पत्र-व्यवहार विशालभारत के प्रशासन के नाथ १९२८ से ही शुरू हो गया था। उन दिनों मैं हाईस्कूल का छात्र था। विशाल भारत सब दिनों मामिला में एक नया इजाफा ही न था, वरन् वास्तव में जब ताजा हवा का एक नया झारा था। मैं जान बित्तन माहिर्य रमिका और पितामुत्रा का उमन परम्परागत साहित्य-कृतियाँ के भुलाये कुछ बहुततर किस्म का मानसिक भाजन लिया। मैं उठाया चाहता था ही संख्या में भी पाँचवाँ सवार बनने का हीमसा रखना था। मैं विशाल भारत में प्रशासित मामलों का सेवर चतुर्वेदी जी मैं पत्र-व्यवहार शुरू हुआ। छत्र ता शायद एकाध छात्र हो पाई होगा—बाका भाग चार्जे मध्य-युवा वापस नीचे आद पर जिस धन सात्वना महानुभूति और अपनत्न से चतुर्वेदी जी मेरे अज्ञतापूर्ण पत्रों का उत्तर न था उमम में बड़ा प्रभावित हुआ और कभी उनका ज्ञान करने की सोलसा पावन लगा। एक बार तो सजाय में मैंने निम्न भा दिया था कि यदि मैं इस समय पत्र लिखता तो इस और भी अच्छे रूप में निकालना। पत्रों में चतुर्वेदी जी मैं नम्र रूप दिया जाता।”

श्री रमेशचन्द्र जी बुधे—“पत्र लेखन की विद्या माहिर्यका एक जाना पहिचानी विद्या है। परन्तु निजी आभायपत्र जो माहिर्य गजना के उद्देश्य से नहीं अपितु अपने परिचित एक निवृत्त व्यक्ति का तात्कालिक आशय्यताओं अथवा आकांक्षाओं में प्रेरित होकर लिखा जात है उनसे पहिचान के लिए कुछ जान हैं मूल रूप में उनकी चम्पा का माध्याम्य सूत्र में हाथ लग भी कभी कभी माहिर्य की मूर्खवान् निधि बन जात हैं। तब हम मानुस जाना है कि उनका निम्न वाना व्यक्ति कितना मजान् कितना प्रणालि कितना गवर्नर शाल और किनसे हम मज्जुर्गी अतिरिक्त वाना था। १० बनारसमान जी चतुर्वेदी गांधी टगीर राम्या रोना नीतरधु एण्डूज तथा अन्य न जान कितन स्वनामधेय मज्जुर्पाक मज्जुर्क में आय हैं। अपने दीर्घ जीवन में माहिर्य और समाज की सेवा के अलग-अलग गहरा उद्धान जगाय और पूरकिय, कराय। पीछा और कम्पा न कटी-वहाँ उनके कामल हृदय का कच्चाटा किन किन तजस्वी भावनाओं में किन किन जान-न सूया न किन किन थड़ाह आत्माओं की अन्तरण चिन्ताओं न उनके मज्जुर्मानवीय व्यक्तित्व में प्रतिपादित होकर उनकी जीवन का धुरी का उच्चविचारा और उगात भावनाओं के ज्यातिष्कृतिगा का सतत विराण करने वाली प्रकाश की ज्याति रखा बना लिया यह यदि जानना

हो तो पिछले पचास वर्षों में उनक द्वारा लिखे गये साठ हजार से ऊपर के व्यक्तिगत पत्रों को पढ़ना अलम् होगा। पर इन अनेकानेक व्यक्तियों को इतना लम्बी अवधि में लिखे गये इन सहस्रों पत्रों का सक्लन कहा सुलभ होगा ? 'भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य' पुस्तक में बाबू वृन्दावनदास जी ने प्रथम बार उनके कतिपय महत्वपूर्ण पत्रों की छाँकी हमें दी थी। 'अभिर्नादनी' में चतुर्वेदी जी की विचारधारा को मैंने उन्हीं थोड़े से पत्रों से आवणित किया था। बाबू वृन्दावनदास जी अब चतुर्वेदी जी के शताधिक पत्रों का सक्लन पुस्तककार निकालने जा रहे हैं। यह हिन्दी के लिए एक अपूर्व दान होगी। गांधी, टैगोर, प्रेमचन्द, दीनबन्धु ऐण्ड्रूज, महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि अनेक महान् व्यक्तियों एवं यशस्वी साहित्यकारों के पत्र चतुर्वेदी जी के पास संग्रहीत हैं। उन पत्रों का अपना मूल्य है। पर स्वयं चतुर्वेदी जी न जो पत्र लिख हैं उनकी उदात्त प्रेरणा जीवन के चिरन्तन मूल्यों की पोषिका है। हिन्दी अग्रजी दीना में साय साय, नीली और लाल स्याही में लिखे गये उनक पत्र सीधी सहज पर अचूक, जागरूक शैली के प्रतीक तो हैं ही, जीवन का मनमौजीपन और बड़ी-बड़ी चीजों को करने कराने और कर गुजरने की हास से भरा वचस्व उनका अदभुत आकषण है। उनका संग्रह एक विशाल युग के विशाल हृदय की जीवन्त प्रेरणाओं का देनीप्यमान भाण्डागार है। हिन्दी जगत बाबूजी की इस कृति की उत्सुकता से प्रतीक्षा करेगा।"

साहित्याचार्य श्री श्यामसुन्दर दास—'प्राचीनकाल में—रेलों के प्रचलन के पूर्व—समुचित सुविधा न होने के कारण सन्देशों का आदान प्रदान विश्वस्त दूता द्वारा सम्पन्न किया जाता था सा भी बड़ी आवश्यकता होने पर। अतः संस्कृत साहित्य में पत्रों की चर्चा बहुत कम हुई है। महाकवि बाण (वि० स० ६२६ ६४४) ने कादम्बरी में कुछ पत्रों की चर्चा की है और डाकिए को 'लेख हारक' कहा है। पत्र की शैली संक्षेप में इस प्रकार है

स्वस्ति ! उज्जयिनीत परम माहेश्वर महाराज तारापीठ सव सम्पदा आमतन चन्द्रापीठ उत्तमाङ्गे धुम्वन् नन्दयति । कुशलिय प्रजा । कियानपि बाल भवतो दृष्टस्य गत । बलवदुत्कठित नो हृत्पयम् । ततः लेखन-वाचन विरतिरेव प्रयाणकालता नेतव्या ।"

हिन्दी में पत्रों का प्रारम्भ इसी शली में हुआ। धीरे धीरे पत्रों में नई शली का प्रादुर्भाव हुआ। इसमें अनावश्यक शिष्टाचार प्रदर्शन का नितांत हा अभाव रहता है। छोटे से प्रिय संबोधन के साथ—कभी उसे भी छोड़कर काम की बात निखदी जाती है। इस प्रकार कभी कभी एक ही पंक्ति में पत्र



डॉ० बनारसीदास चतुर्वेदी के  
पत्र  
श्री वृन्दाबननदास के नाम

---





## डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र

( १ )

फरीदौजाबाद

११ १० ६७

प्रिय भाई कृपावदनदास जी

कृपापत्र मिना और सजभारती का जक भी । बंधुवर स्व० अग्रवाल जी की श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए श्री श्रीराम गर्मा की मेरी ओर से हार्दिक बधाई भेज दीजिये । आपका यह सुनकर आश्चर्य होगा कि आगरा युनिवर्सिटी ने अग्रवाल जी पर गोघ्नघ तयार करने की स्वीकृति इसलिये नहीं दी कि उनकी सृजनात्मक कृति क्या है ? आगरा विश्वविद्यालय वाला के इस अकल अजीरन राग का इलाज होना चाहिये । घायद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा था "धूरन खात लामा लाग, जिनका अकल अजीरन रोग पर अब व्यापार क्षेत्र के अतिरिक्त साहित्य क्षेत्र में भी यह रोग व्याप रहा है ।

हिन्दी की आजस्वी सप्त शनी के प्रवक्तृ गणेश जी पर भी गोघ्नघ तयार करने की अनुमति नहीं मिली । मैंने सुना है कि इन अपराधों की जिम्मेदारी कुछ मुपरिविन महानुभावा पर है पर पक्की तोर पर पसा लगाव बिना नाम कैसे लिए जा सकते हैं ?

अमृतलाल जी तथा इयामसुन्दर जी की कविताएँ छाप दीजिये । श्री बगीधर गुल मिथौरा पा० आ० कमहरा, खोरी लम्बीमपुर की अवघ्नी कविताएँ भेज दी हैं ।

सरस्वती न अमृतलाल जी की कविता छाप दी है । मनोरजन जी की भोजपुरी कविता फिरगिया आजस्वितापूर्ण थी । मित्र जी की बुन्देली कविताएँ बड़ी मज्जीव हैं ।

मरा स्वास्थ्य ठीक नहीं ।

बनारसीदास

( २ )

फीरोजाबाद

१२ १० ६७

प्रियवर

पत्र आपका ६ १० ६७ का प्राप्त हुआ। आप मूक्य बल्ब गुरु स  
मिग आय यह बहुत अच्छा हुआ और ११) माया का लिए आय यह जोर  
भी अच्छा किया। आप उक्त पास ब्रजभागी बराबर भजन रहिये।

श्री इयामगुप्त बाल (राठ) का घर का पत्र आया है। व  
सम्पत्ति के साहित्य महोपाध्याय हैं। बुद्धीवान पत्र उक्त अच्छा पाध्याय  
किया है और स्वयं छायाया भा है।

विनीत

बनारसीदास

( ३ )

फीरोजाबाद

१६ १० ६७

प्रिय श्री घृणावनदास जी

स्व० प० पद्मगिह जी शर्मा का मद्रास में मदनान जी के दो पत्र मिल  
हैं। उनकी मकल आपका भज हुआ। यदि चाहें तो उक्त फोटो भी तयार  
कराय जा सकते हैं—एक पत्र का पृष्ठ का है दूसरा बाट है। कुन मिलाकर  
१०) १२) में कवीन सादर के फोटो तयार हो जायेंगे।

उनका ग्वान कवि विषयक लग्न जिन मीनन जी ने लिपिबद्ध किया था  
और जो विंगल भारत में छपा था आपन लेखा होगा। उनकी टाइन की  
हुई प्रति भी भेज सकता हूँ।

शिली में उत्तरराम चरित ( स० ना० कविरत्न ) पर आधारित एक  
हृदय श्री रामनारायण जी अग्रवाल ने प्रकाशित किया था। अच्छी चार धी।  
मैं उन्हें यथाई का पत्र भज रहा हूँ। आप भी भजिये। मर मित्र श्रीब्रजगुप्त  
वर्मा (सम्पादन योगी) अस्वस्थावस्था में हस्तिना कम्पनी में पड़े हैं। व  
कलकत्ते में मर माय रहा था। काम का आनंद है। उक्त मित्र का मर  
आगीवा कश्चित्। व विहार प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रधान रह  
चुके हैं।

मैं चिंतित हूँ। मर मानजे की बहू का पयरी का आपनेन परमा  
आगर में होन वाला है।

विनीत

बनारसीदास

( ४ )

फीरोजाबाद

२३ १० ६७

प्रियवर

आप एक पत्र सादाबाद निवासी श्री पाराशर जी एम ए हिन्दी-विभाग एस० आर० के० कानून फीरोजाबाद को डाल कर पूछ सकते हैं कि उन्होंने डा० वासुदेव गरण अग्रवाल पर घोष ग्रन्थ तयार क्या नहीं किया। यह सम्भव है कि वे सकाचवश स्पष्ट उत्तर न द सकें। उन्हें अभी विषय कोई नीरस मजकूर दिया गया है। उन्होंने मुझे बताया कि यह सब विश्व विद्यालय वाला ने ही किया कि अग्रवाल जी में सृजनारम्भ शक्ति नहीं थी। ठीक-ठीक गद्द वे ही बनावेंगे।

श्री सरदारसिंह 'सनिह' की पुत्री जो एम ए हैं गणेश जी पर नाथ करना चाहती थी। उनसे कहा गया, गणेश तो का कोई भी पाठ पुस्तकी में नहीं आता। सरदारसिंह का पता आगरा में लग जायगा—गायद श्वदशी बीमा नगर में रहते हैं।

सत्यनारायण कविरत्न पर अपना लेख भेज रहा हूँ। निदवई प्रक भिजवाऊँगा। आजकल अशफाकुल्ला पर काम चल रहा है।

बनारसीदास

( ५ )

फीरोजाबाद

२५ १० ६७

प्रियवर

यह धारणा अच्छा किया कि श्री लिय जी में मिल जाय। अइ शना-नी का कार्यक्रम व्ययमाध्य न होना चाहिये, क्योंकि चला करना आजकल बहुत बड़बुद है। सवामी पृष्ठ की एक पुस्तक सत्यनारायण जी पर छप जाय ता गनीमत है।

हाँ, पद्रह-पद्रह रुपय के एलाजमण्ट ( कविरत्न जी के चित्र के ) प्रजमण्डल के अनेक केन्द्रों पर रखवाय जा सकत ह। प्राण भी हो सकत हैं। यू० पी० सरकार छाँधूपुर में उनकी कोठरी का जीर्णोद्धार ही करा द तो बहुत समझिय। तुला ( छाँधूपुर के पाम के ग्राम ) में हादस्कून की नीव

पट जानी चाहिय और उम बविरलन जी का नाम लिया जा सकता है । उम अवसर पर ब्रजभाषा तथा ब्रजमण्डल की उन्नति व लिए भी कोई ठाम काम उठाया जाय ।

विशाल हस्त्रियाणा का रूपान्तरण भी बढ रहा है । उन मागा न ब्रजभूमि का कोई अनाथ विधवा समझ लिया है जिस का जन्म डकना जा सकता है । उन लोग व हम अष्टमहपन का विराध ता शोना हा चाहिये । हम बहान ब्रजवाणिषा म कुछ जायति की जा सकती है ।

श्री बीरद्विषाटी न भी मित निय, यह अवस्था दूना । ब्रजमाहित्य मण्डल व निय जो भी काय आप कर रहे हैं वह सुनी व काम म बनी अधिक महत्वपूर्ण है ।

गण विम

बनारसादास

( ६ )

बीरद्विषादास

१११ ६७

प्रियवर

डा० मलयद्विषा जी की पुस्तक की free frank and fair आवाचना जाना चाहिये—विनम्रतापूर्ण, पर रायन ताव पावना मंत्री । आपा बाध्या गुरागि ।

हम जन्म म कोई भी चीज न छपानी चाहिये । महत्वपूर्ण प्रश्नों का प्रश्न म न के पत्रि समानगीन अधिकार व्यक्तियों के परामर्श न म बाद घाना नहीं । जय में ब्रजमाहित्य मण्डल का सम्पादन बना था ता अपन भाषण का मैन पगणी बढ व्यक्तियों का मन्त्र मन्त्रि के लिए ब्रज लिया था । श्री विजय रायवाचाय न नागपुर व काग्रेम प्र मिहण उनन व पत्रि मी० १९० ९९७ म परामर्श लिया था ।

आवाचना व पूव यह निश्चय न मुनिय कि पुस्तक व महत्त्व को न्यून हूँ हमन नम खरीदना ही उचित समझा । अष्टमहपन यह पुस्तक आवाचनाय ब्रजभाषा म पढुवनी चाहिय थी ।

आगर वाता न मलयनागपिन बविरलन पर मनी वाता मण्डल थी । मैन अपना नम जो पोद्दा प्रश्न म छपा था, टाक्ष कराक ब्रज लिया । हमम मैन

ब्रजसाहित्य मण्डल का भी उल्लेख कर दिया है। निम्न देह सत्यद्वि जी ने मण्डल की उल्लेखयोग्य सेवा की है, पर मण्डल के सहयोग से उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के विकास में सहायता भी मिली है।

श्री हजारप्रसाद जी द्विवेदी आगरे गये थे और सैण्टजॉन्स कॉलेज में आपकी सुपुत्री से भी उन्होंने बात की थी। मेरा भी उन्होंने उल्लेख किया।

विनीत

बनारसीदास

( ७ )

फीरोजाबाद

१४ ११ ६७

प्रियवर,

पत्र मिला। एक प्रश्नावली आप छपा लें—(१) ब्रज प्रांत का अलग निर्माण होना चाहिये या नहीं? (२) यदि नहीं तो क्यों नहीं? यदि हाँ तो उसके लिए क्या क्या उपाय किए जान चाहिये।

भूमिका में विशाल हरियाणा तथा विशाल दिल्ली का जिक्र आप कर सकते हैं। इस प्रकार कुछ चर्चा ही चलेगी। एक मी पत्रों में यदि दस उत्तर भी छापने लायक आ गये तो ठीक।

श्री राजेन्द्र रजन जी का काठ मिला है। उत्तर दे दिया है।

मेरा स्वास्थ्य कुछ ऐसा ही चल रहा है। यदि आप इसी प्रकार काम करते रहे तो ब्रजभूमि के सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कामकर्ता बन जायेंगे पर उसमें समय तो लगेगा ही।

विनीत

बनारसीदास

( ८ )

फीरोजाबाद

४ १२ ६७

प्रियवर,

अलग बुकपोस्ट द्वारा ३ दिसम्बर के सैनिक में प्रकाशित अपना लेख भेज रहा हूँ। चूँकि आगरे में भीटिङ्ग भी उसी दिन होने वाली थी, इसलिये समय पर लेख का निकल जाना जरूरी था। भेजा तो था अमर उजाला का भी, पर वह नहीं छाप सका।



(३) श्री मीतल जी के काय पर कुछ Notes मुझे लिख भेजिये ।

(४) चंचिल के पास ६ सहायक लेखक थे, पर मेरे पास एक भी नहीं । हाँ, दो घण्टे के लिए एक सज्जन पधारते हैं, जो कुछ नकल कर देते हैं ।

(५) ब्रज का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सर्वेक्षण तो कर ही डालना चाहिये ।

(६) श्रीधर पाठक जी सत्यनारायण जी तथा बामुदेव शरण जी के कबिनेट साइज के चित्र जगह जगह होने चाहिये ।

बनारसीदास

( ११ )

फीरोजाबाद

३० १२ ६७

प्रिय श्री बु-दासनदास जी

नवीन वय आपका सुखप्रद हो ।

आपको मेरा लेख पसन्द आया, यह जानकर सन्तोष हुआ । चिरजीव युद्धि प्रकाश ने जाननीताल में इतिहास का अध्यापक है ब्रजप्रांत निर्माण आन्दोलन के विरोध में मुझे लिखा है । उसे हम आन्दोलन में राजनतिक गड़बड़ घोटाळा की गंध आती है । दरअसल कारण यह है कि हम प्रकार के आन्दोलन प्रायः महत्वाकांक्षी निराश या Frustrated राजनतिक नेताओं द्वारा ही उठाये गये हैं । मैं स्वयं ब्रजप्रांत के अलग बनने का विरोधी था और मैंने मुरा में यह बात कही भी थी पर इस बारे में मुझे पुनर्विचार करना पड़ा है । मैं कोई राजनतिक आदमी नहीं । शुद्ध साहित्यिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि में ही विचार करता हूँ ।

नाग प्रांतीयता और प्रांत प्रेम में भेद नहीं कर पाते । ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर प्रदेश जाग चलकर दो भागों में बंटे बिना नहीं रह सकता । तब पश्चिमी भाग का नाम ब्रजप्रदेश दिया जा सकता है । पर केवल नाम रखने से तो कुछ काम नहीं चल सकता । ब्रज की जनता में अपने जनपद के प्रति प्रेम उत्पन्न करना है । जब तक हम नाग जा बुद्धिजीवी हैं, पारस्परिक विचार परिवर्तन करने एक दूसरे के निकट नहीं आते तब तक प्रांत निर्माण की बात हवा में ही रह जायगी । हम में में सभी को कुछ न कुछ त्याग कुछ न कुछ परिश्रम अपने जनपद के लिये करना पड़ेगा । जिसके प्रेम हैं वह कुछ



छपाई का काम करे लेखक या कवि कुछ लेख या कविता कर घनवान घन न और शांतिमय श्रम करने का कुछ महत्त्व ही कर ।

ब्रज व लेखना तथा कविता का एक Directory भी तैयार करनी है ।

Regionalism पर जो भी माहिय आपनी हिंदी अग्रजों में मिले उम पढ़िय । आचार्य वासुदेव शरण जी का पृथिवी पुत्र तो हमारी वादविल ही है । PROF Geddes इसका महत्त्व प्रबल है । उनका रक्षाचित्र मैं हमारे आराध्य में प्रस्तुत किया था । उम कृपा पढ़ लीजिय ।

हिन्दी आन्दोलन को रचनात्मक दिशा में प्रवर्तित करना चाहिये, पर कौन मुनगा ? राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश तथा हरियाणा और सिन्धु मिलकर कोई रचनात्मक काम क्या शुरू नहीं कर दते ? अरुण धू पी का बजट ही १ अरब २८ करोड़ का था । क्या वह अग्रभर हाकर ११६ राज्या व सिन्धु मन्त्रियों की मौलिक नहीं कर सकता ? अरुण प्रयाग तथा काशी की सम्प्रदायों को कुछ मन्त्र दत्त से काम नहीं बन सकता । ना प्र ममा आगरा ब्रज साहित्य मन्त्र इत्यादि संस्थाओं का भी भरपूर गहायता मिलनी चाहिये ।

मरा यदु मुद्राव है नि सत्यनारायण कविरत्नकी मृत्पु की अद्वि शताब्दी के अवसर पर इस बारे में एक विस्तृत आयोजना तैयार कर ली जाय । सम्भव में जो ब्रजवासी रह रहे हैं उनमें भी चर्चा कीजिय । और कुछ नहीं तो दम दीम ग्राम ही ब्रजभारती व बनाइय । ब्रजवासी जहाँ जहाँ रह रह हैं वहाँ ब्रज मान लेना चाहिये । वही नजीर

जा पड़े दाद में उस शोध की जिस बस्ती में  
वही भोक्तुल है हम और वही वृन्दावन ।  
वही है लल्ल, वही फरा, वही सिंहासन

अलीगढ़ के अन्य कुमार जा जैन और यशपाल जी जन्म भी इस आन्दोलन में मन्त्र लेनी है—मरा अभिप्राय नतिर सहायता से है ।

और कुछ लाभ मिलेगा नहीं, पर ब्रजभाषा का Revival या पुनर्जीवन अवश्यभावो है । काशी नागरी प्रचारिणा सभा व श्री रामप्रसाद त्रिपाठी तो ब्रजभाषा के अन्य प्रमा हैं । उह भी जाँचना (१) है—प्रम जाल में ।

मनपुरी का चतुर्वेदी पुस्तकालय—वहाँ व श्री उमगावमिन् जी पाण्ड—और डा० गवद (जयपुर) में मन्त्र स्थापित करना है ।

डा० अग्रवाल जी के कुछ पत्र सम्मेलन पत्रिका में छप गये हैं। उनको तथा अन्य पत्रों को भी संग्रह करके छपवाना है। श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार का मैं पत्र लिखा था, पर वे अस्वस्थ हैं। उत्तर नहीं दे सके। उनके सुपुत्रा न भी उत्तर नहीं दिया। हा उनमें से एक मेरी गर हाजिरी में यहाँ पधारे अवश्य थे। श्री चल्देवगुरु जी को 'पक्ष' श्री दिलवाना तो अब निश्चय होगा।

अम्प—बागची साहब हर्गिश्कर् शर्मा दिव्यजी प्रभृति स निम्नतर मन्दक स्थापित रख, क्योंकि स ना कविरत्न की अठ शताब्दी के यज्ञ में उनमें मन्द मिनकी। भाई महेंद्र जी तो बीमार रहते हैं।

इधर मेरा निमाग भी चक्रान लगा है पर मैं Sir Thomas Lipton का अनुयायी हूँ। लिप्टन ग्राहब एक जहाज में यात्रा कर रहे थे कि उसके डूबने की आशङ्का हा गई। वे सोडावाटर की बोतलों में 'लिप्टन की चाय पिया' लिप्टन की चाय पिया भर भर कर समुद्र में फेंकने लगे— इस उम्मेद में कि व बोतल वहीं न उठी किनारे लगेंगी और उनकी चाय का प्रचार होगा। मैं भी पत्रों द्वारा अपन स्वास्थ्य की इस दशा में भी यही काम अपनी व्रजभूमि के लिये करता चाहता हूँ। व्रजभूमि मेरी पितृभूमि भी है। मेरे पिताजी का जन्म सन् १८५२ में छूना ककड मुल्ते में हुआ था। हमारा मकान अब बकीत महेंद्र जी के पास है।

मैं अपनी डाक्टरी परीक्षा कराने दिन्नी जान की मांग रहा हूँ। प्राण काल कुछ पत्र निम्न देता हूँ—वस। भुज विधाम चाहिये।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—हम लोक संग्रह की भावना से काम लना है।

एटा के Arya Inter College के प्रिन्सीपल श्री मल्लान सिंह सीसादिया उत्साही व्यक्ति हैं। उनसे सम्पर्क स्थापित कर।

यहाँ स ना कविरत्न के इकरने Enlargement = ८, १० १०) रूपों में तयार हो सकते हैं। अप्रैल में जगह-जगह उनका उद्घाटन कराने और ६५) में निरगा चित्र भी अपन कार्यालय में टागिय।

भरतपुर की हिंदी साहित्य समिति का भी खट-बटाइय। प्राप्त बने या न बने, पर हम व्रजवागमियों में पारस्परिक सहायता की रचना ही चाहिये।

व्रज में जितने प्रेसाध्यक्ष हैं क्या व मिशनरी दृष्टि पर न चार बुद्धि भी नहीं छाप सकत ?

मिता स्वायत्त रथाय व शत्रुभूमि का पुनर्निर्माण नहीं हो सकता ।

छतरपुर का बहुत बड़ा बाग जल्द-जल्द लगे और उस पर तिम्रो भी गावदल व बग व विषय में भी निर्णय ।

बनारसीदास

( १२ )

फीरोजाबाद

२५ १ ६८

प्रियवर

पत्र\* छात्र स्व व निम्न कृपण हैं । आपके पत्र की प्रगता में मैं विद्विषी भा मुन्न विनी हैं । मैं तो मुष्मिन्नु या शायर व बानामून का तरफ़ निमापित हो चुका हूँ ।

अमर उजाता तथा मजिद का एक छात्र मा पत्र—प्रगवनाय परधारा रत भेजा है । वट् स्थानाय कसिया तथा सलवा व अभिनन्दन व विषय में है ।

मस्यनागमण कविस्त का अद्वानाया व यन का अत्र विधियु शुभ वर शत्रिय । श्री घातक जो C/O श्री हृषाकेश चतुर्वेदी और जो का कटरा विनारी बाजार आगगा का लजमत शरण का प्रति भेंट कर शत्रिय । श्री श्यामसुन्दर खत्री का भा । क्या फीरोजाबाद में ब्रजभागा व १० १२ प्रान्त नगी बग मकन ? भाई आउम् यदि प्रयत्न करें तो मुश्किल नया ।

आगगा ( बाग मुजफ्फर खां ) व श्री लानागम पत्र भर बार में माहि वाताफ का एक छात्र मा अरु ही निरात र है ।

मिनीत

बनारसीदास

( १३ )

फीरोजाबाद

२८ १ ६८

प्रिय भाई कृष्णवनदास जी,

मैं नवीन पत्र-पत्रप्रश्न निवारण व पत्र में नयी क्याकि वह पत्र नया मकगा । इस प्रकार व घात व मोट वरन में माहि्य प्रमिया का रातना

\* इसमें आशय उस लेख में है जो 'श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र शायर' में ब्रजभारती में छपा था और जो इस पत्र का परिणित 'अ' है ।

चाहिये । हाँ उनके उत्साह की प्रशंसा अवश्य की जाय । जो महानुभाव ऐसा करना चाह, वे चार छै पृष्ठ ब्रजभारती के सप्तोमष्ट के तीरे पर अपन खच मे निकाल सकत हैं, अलग स पसा कयो वर्दाद करें ?

ब्रजभारती के घाट की पूर्ति कैस होती है ? कही आप पर ही ता सारा धाम नही पड़ता ? मण्डल को अपना मकान कब तक मिनेगा ?

कभी महीं पधार कर सत्यनारायण जयन्ती के लिये क्षेत्र सैधार कीजिय । मैं यात्राएँ नही कर पाता । कविरत्न जी की जयन्ती मे क्या श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी स महयाग नही मिल सकता है ? श्री शिवदत्त चतुर्वेदी एम ए छिद्वेदी इत्यादि से सम्पर्क कीजिय ।

एक पत्र के-द्वीय सूचना मन्त्री श्री के के शाह को ब्रजसाहित्य मण्डल की ओर से तुरन्त जाना चाहिये जिसमे रेनियो द्वारा सत्यनारायण कविरत्न पर विशेष प्रोग्राम रसवान का अनुरोध किया जाय । 'ब्रजभारती' का विशेषाङ्क ता उस समय छपना ही चाहिये । उसकी तयारी अभी स कीजिय । तीन महीने ही बाकी हैं ।

विनीत  
बनारसीदास

( १४ )

फ़ीरोजाबाद  
३० १ ६८  
बापू निर्वाण दिवस

प्रिय भाई बृ-दावनदास जी,

ब-दे ! 'ब्रजभारती' मे आपका सुन्दर लेख पडा । आप एक बात भूल गय, जो ब्रज मे उत्पन्न एक महापुरुष—भगवान श्री कृष्ण ने कही थी

"दरिद्रान भर कोतेय मा प्रयच्छेस्वर धनम् ।

'हे कु-तीन-दन गरीबा का पालन करो ऐश्वर्य वाला को धन मत दा''

मो आपने ता भर जैस विज्ञापित व्यक्ति का और भी विनापन देकर भगवान के आदेश की अवहेलना की है । पेट भरे चौवे को मिठाई खिलाई है ।

ब्रजप्रदेश मिल गया है । उस जीवित रहना चाहिये ।

आपका विस्तृत पत्र परमा मिला था आज फिर मिला है ।

अब मर पाय जतना बिट्टियाँ जान गया हैं कि उनका उत्तर बिना किसी पूर वक्त काम करना जान गन्धर्वक नगल मक्ता । क्या किया जाय साधार हैं ।

गय जाने अगन पर म दिखया आइका भाषण मवया खिन रग ।

विनीत

बनारसीनाथ

पुनः—डा० नाथ हिन्दी Dept Delhi University की भाषण वष पुगनी कविता नजता हैं ।

इस व्याप उन्हें भज मकर हैं आर प्रजभागी म ज्ञान का अनुमति भी मांग मकर हैं । उनम कविग्न मठगनाग पर मन्थाय भी नीतिप । व भी अनीग्न जित क ना हैं जग कविग्न न जम दिया था ।

अमर पन भा भूँगा ।

कविग्न जो क विषय म मुख्य मीतिज्ञ ता आगर म नी ज्ञानी चान्ति पर पुनः मनाएँ मभा जगह हा मक्ती हैं ।

ना० नाथ न हृदय मन्त्र की भूमिका दिया था । उन्हें नी निमित्त । वागची जा का भी माय नना हैं ।

डा० नाथ म धूँटिना कि मयनागयन क उत्तर गमचानि तथा माननी मादव का कभी छपाया जान । ताग बाद गन्धर्वक विर चग गुन कर हैं ।

ना० जमून नाथ चतुर्वेदी का अभिनन्दन जाना चान्ति । यह भी वक्त आवश्यक है वक्त काम दिया है ज्ञानि । और उनका विस्तृत पत्रिय ना० राजावा प्रसाद चतुर्वेदी गीतला रना आगर म निखवाय । व था जमूननाथ जो क जामाता हैं । वदून दाव हैं । ना प्र मभा म जान जान ना है ।

बनारसीनाथ

अजलि\*

जाज हृदय म मयन-मयन है उज्जा गाव निरार ।

जिस जगन की काव चयकती है जगन की आर ॥

कम मर व्यभि न हृदय में जमन करना जाट ।

जिसकी मनु भूति आम्ना म बनकर चित ममाट ॥

\* पत्र मे उल्लिखित डा० नाथ जो की कविता

जाना ! जाना ! तुम्हें अरे जीवन-जसास । पहचाना ।  
तुम्हें सदा रहता है बनना बनकर बिगड़ सताना ॥  
हे हिन्दी के लाल ! कत कविता कामिनी के प्यारे !  
विद्यालय के गव ! सदा ही प्रातः पूज्य हमारे ॥  
ब्रजभाषा की मधुर कानिसे । हे भवभूत्यवतार !  
दीन हीन हम तुझ चढ़ात अयुक्ता का हार ॥  
कविवर । तारा चित्र खींच कर चतुर चित्रा लाया ।  
माना सौम्य मुशील प्रेम ही स्वयं मूर्तिधर जाया ॥  
अथवा हिन्दी प्रीति अनूठी यहाँ सनी लिपटी है ।  
किम्बा पूजीभूत भाषुरी ब्रज की चित्रपटी है ॥  
चुन चुन अनुपम कुमुद विधाता गूँथ रहा है हार ।  
शीघ्र राक्षभाभा हिन्दी का द देगा उपहार ॥

‘गैड अमल’

( सेटजास कालेज आगरा में कविरत्न ५० सत्यनारायण के  
चित्तोद्घाटन के सुभवसर पर पढ़ी हुई )

( १५ )

C/o डाक्टर रामगोपाल चतुर्वेदी

मकान न० १११७ सक्टर = रामकृष्णपुरम्

मई दिल्ली २२

१ ३ ६८

प्रिय भाई बृन्दावनदास जी,

बद । मैं यहाँ १८ का आगया था । Prostrate glands की डाक्टरी  
जांच कराती थी, सो कराली । पौरुष ग्रंथि तो बड़ी हुई है ही किडनी में  
तोत पथरी भी हैं । खर यह तो शरीर की व्याधियाँ हैं—नयी ही रहती हैं  
और ७६ वाँ वर्ष में स्वाभाविक भी हैं पर हिन्दी जगत जिस आधि-याधि में  
पीड़ित है वह निरास-ह-चित्ता का विषय है । हिन्दी ससार का नेतृत्व गलत  
हाथों में पहुँच गया है । इस समय हम सबका मिलकर ध्वमात्मक या  
खण्णात्मक नीति का परित्याग करके रचनात्मक कार्य प्रारम्भ कर देना  
चाहिये । आप सक्षेप में अपना विचार साप्ताहिक हिन्दुस्तान का लिख भेज ।  
मैं अभी दो चार दिन यहाँ हूँ । ब्रजमाहित्य मॅन्स के मकान या कोठी का

क्या हुआ ? भाई हरिप्रद्वर जी की बीमारी में चिन्ता रही। यह पढ़कर मनाएँ हुआ कि उनकी होशियारी अब धीरे धीरे सुधर रही है।

विनीत

बनारसाश्रम

अपनी पत्र के साथ चतुर्वेदी जी ने हमें माताहिन्द हिन्दुस्तान, २/ फरवरी, १९६८ के अंक में प्रकाशित अपने लेख का पुनर्मुद्रण भेजा था उस हमें ज्ञात था तथा उद्धृत करने के। हमें उस के माध्यम से हम चतुर्वेदी जी के उन विचारों का बोध हो जाता है जिनके द्वारा वे हिन्दी आन्दोलन का एक रचनात्मक भाव देना चाहते हैं।

—मन्यादश

## हिन्दी-आन्दोलन को नया मोड़

हमें मातृभाषा हिन्दी में सर्वोत्कृष्ट साहित्य की सृष्टि करनी होगी

—बनारसाश्रम चतुर्वेदी

गन्तव्य हिन्दी के पक्ष तथा विपक्ष में जो आन्दोलन उत्पन्न तथा दमिण भारत में हुए उनके विरोध अथवा समर्थन में हम कुछ नहीं करना फिर भी हम इतना निश्चय अवश्य करेंगे कि वे अनुपयुक्त और गलत गति का उपयोग नहीं हुआ है—अब के धन तथा समय की भावना के धर्मात्मा हैं— परन्तु इस अवसर पर अधिक भयंकर स्थिति का हमें सामना है कि उनका तथा हिन्दी की जनता के बीच मतभेदों का उत्पन्न हो गया। हम वक्तव्य किमी पर आया गणना करने में कुछ भी नाम नहीं आया। सर्वप्रथम तरीका यही है कि हम हिन्दी भाषा भाषी हिन्दी प्रचार की चिन्ता छोड़ कर अपना सम्पूर्ण शक्ति रचनात्मक कार्यों में लगा दें।

मनु १८ ८ में भी, जब मद्रास में हिन्दी विरोध की आवाज उठाई गई थी तब एक उग्र स्त्री आचार्य का प्रयास ॥ निम्ना था। हमें यह पता नहीं चलता कि उस समय जो कुछ हमने कहा था वह अत्यन्त ठीक था, अथवा जो प्रस्ताव हमें उस समय रख रूढ़ है क्या वनमान गतिविधि का सर्वोत्तम राज है। हम विनम्रतापूर्वक जनता को कहना है कि हिन्दी आन्दोलन के रचनात्मक तरीके का हमें आग्रह किया, अब रचनात्मक तरीके का भाव मोटा दिया जाए। मनावधानिदर दृष्टि में भाषा आन्दोलन पुराना ज्ञात है कि हमारे नवयुवकों में हिन्दी के प्रति जो ज्वाला उत्पन्न हुआ है, उसका उपयोग रचनात्मक कार्यों में कर देना चाहिए।

सबसे प्रथम हम गम्भीरतापूर्वक वर्तमान परिस्थिति पर विचार कर लेना चाहिए। यह बात हमें समझ लेनी चाहिए कि कितनी ही प्रतिष्ठित अहिंदी भाषा भाषिया के मन में हिन्दी वाला की सद्भावना में ही सदेह रहा है। उनके मन में यह आशंका रही है कि हम अपनी भाषा को दूसरे पर लागू देना चाहते हैं। स्वयं गुरुदेव ( कबीरदास श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ) ने हमसे कहा था—

“आप हिन्दी की तलवार हमारे सिर पर क्यों सटकाते हैं ? अपनी भाषा में आप सर्वोत्कृष्ट साहित्य की सृष्टि कीजिए फिर हम सब लोग हिन्दी पढ़ेंगे।”

स्वर्गीय रामानन्द चट्टोपाध्याय के विचार भी इससे मिलते जुलते थे। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था—

“कराची काँग्रेस में जब एक सिध्दा सज्जन सिध्द के विषय में भाषण देना चाहते थे, तब कुछ हिन्दी वालों ने हिन्दी हिन्दी चिस्ला कर उन्हें बोलने से रोका। यह तो बहुत गलत बात है कि किसी सिध्दी को अपने प्रदेश में ही अपनी भाषा में न बोलने दिया जाए, और सो भी तब, जब वह सिध्द के पृथक करण के प्रश्न पर बोलना चाहता हो।”

यह बात ध्यान में योग्य है कि कबीरदास श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर हिन्दी के समर्थक थे, उसके शुभचिन्तक थे और रामानन्द बाबू को तो हिन्दी पत्र ‘विशान भारत’ में पचहत्तर हजार रुपये का घाटा सहना पड़ा। ऐसे महा पुरस्का की सद्भावना में हमें कोई आशंका न करनी चाहिए। स्वयं गुरुदेव ने कबीर की एक सौ कविताओं का अंग्रेजी में अनुवाद किया था और वह हिन्दी के महान् कवियों के अत्यन्त प्रणमक थे। शान्ति निवेदन में उन्होंने हिन्दी भवन की स्थापना में भरपूर सहयोग दिया था।

### गुरुदेव की चुनौती

गुरुदेव की इस चुनौती का ‘आप लोग अपनी भाषा में महत्वपूर्ण साहित्य की सृष्टि करें तो हम सभी हिन्दी पढ़ लेंगे’ हम अद्यावत् स्वीकार कर लेना चाहिए।

आज से पांच छह वर्ष पूर्व दिल्ली में बचुवर चन्द्रगुप्त विद्यालंकार से इसी विषय पर हमारी बातचीत हुई थी और हमारे आग्रह पर उन्होंने रचनात्मक कार्य के लिए एक आयोजना तयार की थी, उसकी एक प्रति हमने राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल श्री सम्पूर्णानन्द की सेवा में भेज दी थी।



उनका जो उत्तर आया उसका सागान यह प्रसार है। 'आप जिन्हीं में ४८-५८ राग्यवास पर हृष्यम बनाने है कि यह कर नात्रिण वह कर दीत्रिण। यही धात्र कर क्या नहीं करा?' यह ॥ कि अपन प्रमाणवा में जयपुर नहीं जा गया और मामला जहाँ का तहाँ पड़ा रहा। अब पास वर आ उगी प्रश्न का कि न उठाना आवश्यक हो गया है।

इस पत्र का प्रारम्भ करने के पक्ष हम कुछ सिद्धान्त निश्चित कर लेने चाहिए।

(१) जो लोग चरनामक प्रवृत्तियों का जागृता करना चाहते हैं वे गुणा में उन्ने जायें ऐसे हम उन्हें राखना नहीं चाहते बल्कि हमारे बन्द में वे रहें भी नहीं। हाँ हम इस रचनात्मक पत्र में उनका सम्पादन तथा चालन। रात्रनामिक बनवानी में हम यह विस्तृत दूर ही रखना चाहते हैं।

(२) इसका मकान मुकदमा मार्गिक तथा साम्प्रतिक धर्मिया के रूप में रहना चाहिए।

(३) पत्रानुपत्ता में बचने के लिए यहाँ सर्वोत्तम होगा कि किमा एक धर्म का मयात्रक बना लिया जाए और वह अपन समानाधिक तथा परम्परा-गुरुक सम्पादितों का पुनः स।

(४) हमारे यहाँ एक कथन है तात्पर्य गुण मही कि मगर आ हूँ।' इस मार्गिक-गुरुवर का मगरमण्डल में बचाने का भयंकर प्रश्न किया जाए।

**कुछ प्रारम्भिक कार्य**

जिन्हीं में मार्गिकों की एक छाती-मा ममा बुना मौ जाए पर उस में भी एक एक गती विद्या गुमा नी जाए, ताकि जिन्हीं के प्रतिष्ठित तत्वों ब्रह्मा प्रकाश और शुभचिन्तन के विचार का पता लग जाए। बाह्य विचार में बचने का सर्वोत्तम तरीका यही है कि समानाधिक धर्मियों का स सम्पादन लिया जाए।

पहन तो हम सम्पूर्ण जिन्हीं जन्म की रचनात्मक रक्तिया का सर्वोत्तम कर लेना चाहिए जो मदान कार्य जिन्हीं मार्गिक-सम्पादन प्रयोग तथा नागरी प्रचारिणी-सभा काया द्वारा हुआ है वह तो जग-जात्रि है पर स मा में फनी जय पनामों ही छाती भागी हिन्दी-सम्पादकों के कार्य की आर ममुचित ध्यान नहीं लिया गया। उदात्त के लिए इन्हीं की मध्यमादन - जिन्हीं मार्गिक-समिति हैराबाद का जिन्हीं प्रचार-सभा मुजफ्फरपुर का मुद्र स

टीकमगढ़ की बीरेन्द्र केशव-साहित्य परिषद् आगरे की नागरी-प्रचारिणी-सभा, आरा की नागरी प्रचारिणी-सभा और मथुरा का व्रजसाहित्य मण्डल तथा मरतपुर की हिंदी साहित्य-समिति आदि के नाम लिए जा सकते हैं। उनके सिवा हिंदी-जगत में बीसिया ही ऐसी संस्थाएँ विद्यमान हैं, जिनके द्वारा भूतकाल में काफी काम हुआ है और जिनकी अतः निहित शक्ति का यदि सदुपयोग किया जाए तो हिन्दी जगत में युगांतर उपस्थित हो सकता है।

व्रज साहित्य मण्डल के हायरस वाले अधिवेशन के समय जो जनपदीय परिषद् कायम हुई थी, उसे भी पुनर्जीवित किया जाना चाहिए। वस्तुतः यह तो अखिल भारतीय संस्था थी। आचार्य बामुदेवशरण अप्पवाल हमारे पत्र-प्रकाशक थे। उनके निधन से केवल हिंदी जगत की ही नहीं समस्त देश की बड़ा हानि हुई है। सौभाग्य से उनका लिखा ग्रन्थ 'पृथिवी पुत्र' मौजूब है और उसमें हम बहुत प्रेरणा मिल सकती है। बिहार की राष्ट्रभाषा परिषद् ने और उत्तर प्रदेश की सरकारी प्रकाशन-ग्रह ने जो साहित्य-सृष्टि की है उसकी शतमुख से प्रशंसा करनी चाहिए। यदि अन्य हिन्दी भाषी राज्य भी उनका अनुकरण करें तो बहुत काम हो सकता है।

हिन्दी-जगत के विश्वविद्यालयों में जो हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं, वे यदि चाहें तो हिन्दी आंदोलन को रचनात्मक मोड़ देने में बहुत सहायक हो सकते हैं। यदि पूर्ण पुरी, तयारी के साथ इस शुभ कार्य को प्रारम्भ किया जाए तो मधुश्री हजारी प्रसाद जी द्विवेदी, धीरेन्द्र वर्मा नगेन्द्र जी, सत्य द्र जी, विनय माहन शर्मा दीनदयाल गुप्त प्रभृति विद्वान इस यज्ञ के होता बन सकते हैं।

श्रद्धा प० छावरमल्ल शर्मा, भाई हरिशंकर शर्मा और बंधुवर हरिभाऊ जी उपाध्याय अपने घर के आदिमी हैं और उनका सहयोग सुनिश्चित है। पर प्रश्न यह है कि इस यज्ञ का प्रारम्भ कौन करे? दिल्ली में राष्ट्रकवि तिनकर जी बंधुवर बच्चन जी, डा० प्रभाकर भाववे श्री विष्णु प्रभाकर श्री यशपाल जन श्री ममयनाथ गुप्त, भाई जगदीश चतुर्वेदी और श्रीमती मलयवती भक्तिक की आग बढ़कर इस प्रश्न पर विचार तो कर ही लेना चाहिए। भाई चंद्रगुप्त विद्यालंकार तो अपनी सम्पूर्ण शक्ति इस यज्ञ में लगा सकते हैं। हमें विश्वास है कि सभा इत्यादि के लिए दिल्ली की हिन्दी संस्थाओं की सेवाएँ इस यज्ञ को समर्पित हो सकेंगी।

हम किसी में शक नहीं करना। यदि तमिल प्रदेश वाले अथवा बंगाली भाई भग्नजी को अनन्त काल के लिए अपने यहाँ रखना चाहें तो खुशी

ग रस गवन है । हम पूरा महिषासुर तथा दूर्गाजीता की भोजि ग वाम सेना है । सिंगी पत्र भी हम आर-अवर्दनी रही करनी और सब की निम्बाप तथा न ही अपना बन्धाण मानता है ।

भारत की सभी मुख्य मुख्य भाषाएँ राष्ट्रभाषा हैं और उनका गौरव भी बराबर माना ही है पर सिंगी उनकी बड़ी बहन है और उगता बन्धु है जिसे वह छोटी बहना की सेवा कर लेता तथा बहन ग पूरा उग गशत तथा गमूढ बनना है । समस्त हिन्दी जगत में क्या पत्र-पत्र-पत्र भा एग न निरन्तर जा अपा समय तथा शक्ति का एक अग एग मजान मज का अति कर है ? अपनी मातृ भाषा हिन्दी में हम गरीब गरीब की गृहि करनी है और भारत की अर्थ भाषाओं में ही नहीं बरन गंगा का मुख्य मुख्य भाषाओं में भी उच्च वाटि ब सभा का अनुदान कराना है । यदि हम तन मन धन न काम बड़े भा हम पवित्र वाय में लगा दें ता गार वातावरण में परिवर्तन आ जायगा और तब सिंगी का बिम्ब भावना समाप्त हो जायगा और अर्थ भाषाओं भा हमारा हाथ बरा लगगा । तब निम्बक शत्रुता का स्थान स्वस्थ प्रति स्पर्धा में लगे ।

सिगी आत्मन का रचनात्मक माह दन का यही एक माग है । ना य पत्र विद्यन ।

( १६ )

महान न० १११७ सन्तर न  
रामचरणपुरम् नई दिल्ली २२  
३ ३ ६८

प्रियवर,

श्री दत्तमिह विचारों में ए २५१०/१६ भी बड़ीगढ़ (पजाब) में स्वान कवि पर शापग्रन्थ प्रस्तुत किया है । कृपया उनमें सम्मान स्थापित कीजिये । अगर उन्हें किराया देकर स्वान कवि वास उत्तम पर बुलाया जा सके तो जरूर सुनावेंगे । उन्हें भी आपका पत्रा भज रहा हूँ ।

XRays have revealed 3 Stones (पथरी) in kidney Prostrate glands and piles are already there डाक्टर न दा आपरगता की मलाह न है । फिमहाम में एक भी नहीं बगना चाहता । जा हागा, दया जायगा । भाई हरिणदूर आ की तबियत सुधर रही है । उनकी चामारा में चिन्तित रहा । पत्र लिखना अब कठिन है ।

दिनीत  
बनारसीदास

( १७ )

फीरोजाबाद

१६ ३ ६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

प्रणाम । बाबू मिला भाई हरिशङ्कर जी का प्रयाण निस्म-देह बड़ी साहित्यिक दुःघटना है । अन्तिम सन्देश जो उन्होंने मुझे श्री कुमुदाकर जी के हाथ भेजा था, वह यह था कि अक्षयशताब्दी पर जरूर जरूर आगरे पहुँचना है । यद्यपि स्वास्थ्य की बतमान स्थिति में भुज यात्राएँ अत्यन्त कष्टप्रद होती हैं, तथापि आगरे तो पहुँचूँगा ही । आप एक दिन के लिये यहाँ पधारिये । प्रथम बात तो यह है कि आप अपना भाषण चिखकर तैयार कर लें । यदि भाई हरिशङ्कर जी हान तो उनसे उमका सशोधन, परिवर्द्धन करा दिया जाता । अब कोई उस बोटि का विद्वान है ही नहीं—कम से कम अपने ब्रज जनपद में । इस अवसर को ऐतिहासिक महत्त्व देना है । ब्रज प्रेमी जितने भी व्यक्तियों का बुला सकें बुलावें । राजा महेन्द्रप्रताप भी पधार सकते हैं ।

श्री उमरावसिंह जी पाण्डे C/o चतुर्वेदी पुस्तकालय, मैनपुरी को जरूर बुलाइये । मंडस के प्रारम्भ से ही वे उनके समर्थक रहे हैं ।

डाक्टर सत्येन्द्र (जयपुर) को भी आना चाहिए । डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी से सन्देश तो आना ही चाहिए । एटा, भरतपुर, अलीगढ़ हाथरस मैनपुरी, इटावा, शिकोहाबाद आदि की यात्रा भी जाय कर लें । पालीवाल जी तो उन दिनों आगरे रहेंगे ही । जहाँ-जहाँ ब्रजसाहित्यमंडल के अधिवेशन हो चुके हैं वहाँ वे चुने हुए साहित्यिक आने चाहिये । 'सैनिक' तथा 'जमर उजाला' दोनों के सम्पादकों से आप खुद मिलिये । Reporting ठीक हो । यहाँ कविरत्न जी के Enlargement म ८ ६) १० १०) में तयार कराया जा सकते हैं—तैल चित्र ६०) में । उत्सव पर तो तैल चित्र रहना ही चाहिये । सत्यनारायण और उनके मुत्तजी के चित्र का Enlargement मैं भाई हरिशङ्कर जी के यहाँ रखवा लिया था ।

मालती माधव तथा उत्तम रामचरित के छाने का क्या प्रबंध होगा ? हृदय तरङ्ग का भी सक्षिप्त रूप में छपाया जा सकता है । क्या आगरे के प्रकाशक कुछ भी सहयोग न देंगे ?

अजभूमि में स्थित कालेजा के हिन्दी अध्यापकों को अवश्य निमन्त्रित किया जाय ।

ling people Genuine praise given at the proper time is a great stimulant

- 6 Do visit the श्रीरा आश्रापवन of स्व० प्रयाग नारायण अग्रवाल वर्तन of रावतपादा । His son श्री प्रतापनारायण (राजा बाबू) will take you in his jeep to the place It is only 8 miles off 7 on the Agra Gwalior Road and 1 mile kachcha road Go early in the morning उत्तम too deserves a visit Put your self in touch with D F O Sah b Possibly he has his quarters in विजय नगर colony Write about tree plantation in गावर्दन also
- 7 I shall try to get a Copy of the photo of बालगुरु with गण्डगति
- 8 Note down all the anecdotes of बालगुरु about कुशीबारा
- 9 Send the अद्वैताली material to Mr Chernishov Moscow
- 10 My Agra speech should be given immediately to the press and 250 extra copies taken send 100 to me
- 11 Could you sell ten copies of ग ना a biography ?  
ग ना स्मार्तिवा अभी तक नहीं मिला ।

विनान  
बनारसीदास

( १६ )

काराजाबाद  
२४ ६८

प्रिय भाई पुण्यवन्तम जी,

आपका विस्तृत हृदयमित्र मिला । मगर ना हेर विचार है कि गालिबिक म-याएँ जलमल-मल रग पर चलाती नहीं जा सकना । आप कवन तम भी आत्मिका का मास स्वस्ति का आपक पूरक है । ओ-अग्रवाल न है । पुनाव की प्रया न वाक्त्रम आयममात्र और नास्ति सम्मनन मनी का आया वर दिया ।

मरे पास कडिल्ल का का जवनी का प्रतियाँ है । प्रत्यक्ष प्रति का मूल ८) गार म्परा है चलि व नीन नान म्परा में भी लिख एक ना मे टरे वच रना चाहता हूँ ।

(१) उमर ३ स्वय अमृतनाथ जी व श्रीमुख स स्व० रसीटनाथ ठाकुर की कविता (पुनर्जन्म) का अनुवर्ण रचना टाक हाता ।

(२) स्वयं आपके मकान के Hall में ब्रजमण्डल के लेखक तथा कवियों के चित्र होने चाहिये। दो तीन तब चित्र श्रेय साधारण।

(३) आपका सग्रहालय सवधा निजी ही होना चाहिये।

मुझे स्वास्थ्य संपादन करना है।

बिनीत  
बनारसीदास

( २० )

फौरोजाबाद  
२५६८

प्रिय श्री बृन्दावनदास जी,  
पत्र मिला।

(१) सग्रहालय\* की बात पढ़कर बहुत खुशी हुई। सम्पूर्ण ब्रजभूमि के प्रेक्षक कविया, कलाकारों, पहलवानों इत्यादि के चित्र आपके यहाँ सुरक्षित रहन ही चाहियें। उद्गू वाला के तथा खड़ी बोली के कवियों के भी चित्र रखिये।

(२) जो भी काम आपने किया है तथा कर रहे हैं उसका महत्व आगे चलकर ही लीका जा सकेगा।

(३) चर्नीशाव को अभी तब न आपसी भेजी सामग्री भिनी, न मेरी। वन उनका खत आया है।

(४) समय के देखते आगर के उत्सव अत्यन्त सफल और महत्वपूर्ण रहे। एकाग्र भुटि तो हो ही जाती है।

(५) सबसे जरूरी काम स्वस्थ रहना है। In tiptop condition of health ज्यादा यात्राएँ ( तो भी इस ऋतु में ) आपकी तन्दरस्ती को हानि पहुँचा सकती हैं। Beware !

मेरा भाषण तो जल्दी सम्पाद हो जाना चाहिये।

बनारसीदास

---

\* मैंने चतुर्वेदी जी को ब्रज में एक 'सावजनिक' पुस्तकालय एवं सग्रहालय स्थापित करने के अपने विचार से अवगत कराया था। प्रस्तुत पत्र में तथा और भी अनेक पत्रों में चतुर्वेदी जी ने उसके सम्बन्ध में बड़े महत्वपूर्ण मौलिक सुझाव दिये हैं। एतद्वय मैं उनका आभारी हूँ।

( २१ )

फीरोजाबाद

६ ५ ६८

प्रिय भाई कृदासनदास जी,

आपकी पुस्तक की भूमिका मैंने तयार करनी है और उस में वन आपकी गवा म रजिस्ट्री से भज दूंगा। प्रूफ बटून मावधानी में लक्ष्य।

अगर पार्द चुटि या कमी रह गई हो तो कृपया ठीक कर लीजिये।  
उक्त भूमिका के एक सौ १०० Reprints मुझे जरूर चाहिए। किमा अच्छे रकन के लिए ता १७ दिन का समय अनुविदायन आवश्यक है। उसका अवसर भी कमी न कमी मुझे मिलना निश्चय यह भूमिका ही प्रयाप्त होगी।  
मैंने इसे बड़े प्रातः काल के परिश्रम में लिखा है और उमर में मुझे मताप है।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

निम्नलिखित वजन घटत जान म में चिह्नित हो गया था और लिनी जान का निश्चय सा कर चुका था पर अब यही ही रक्त का साध रहा है।

( २२ )

फीरोजाबाद

१८ ५ ६८

प्रिय श्री कृदासनदास जी

स्वर्गीय भाई हरिनाथजी जी शमा के उन पत्रों का तलाश कर रहा था जिन्हें वे लिखने वालीम वर्षों में मर पास भजन रह थे। अब वे पत्र खोजे गए हैं और उनकी मर्यादा २७८ है। गायन अथवा कुछ चिट्ठियाँ और भी निकालीं पर उनकी प्रतीक्षा किये बिना इन २७८ पत्रों का टाइप कराने के लिए मैं लिनी भेज रहा हूँ। प्रत्येक पत्र की पाँच-पाँच प्रतियाँ टाइप होंगी।

विनीत

बनारसीदास

( २३ )

फीरोजाबाद

२२ ५ ६८

प्रिय श्री कृदासनदास जी,

व्रजभूमि के साहित्यिकों में आपका मयक बना रहना चाहिए। अब उनपरा के वायव्यताओं में भी सम्बन्ध रखना ही पड़ेगा।

विशाल हरियाणा वाला की महत्वाकांक्षा पर एक छोटा सा पत्र नवभारत टाइम्स में जा सकता है। "अपनी बात" शीपक के नीचे।

इस मौन में आप यात्राएँ यथासम्भव न कीजिये। *Conserve every bit of your energy for the great cause* मेरे पूज्य पिताजी जिनका जन्म मथुरा में ही हुआ था ६२ वर्ष जीवित रहे थे। आपको भी शतायु होना चाहिये। अत्यधिक काम (Over work) करना भी एक भयंकर दुःख है और झगड़े से हम दूर हो रहना चाहिये।

लाक सग्रह को भावना से काम लेना है, पर साथ ही साथ फालतू समय बर्बाद करने वाला से दूर ही रहना है। हमारे देश में ऐसे युवक बहुत हैं जो कुछ काम न करके दूसरा से काम उठाने की बात निरन्तर सोच करत हैं।

एक बात और भी—हिन्दी जनत के अधिकांश नेता जिनके नाम पत्रों में छपते रहते हैं आत्म-केन्द्रित व्यक्ति हैं। हमसे का शोषण करके अपना उल्टू मीठा करन में वे चुसल हैं। हम लोग उनके चक्कर से बचें, इसी में हमारा कल्याण है।

हिन्दी प्रचार काय के साथ-साथ आपका साहित्य रचना का काम भी चलता रहे। और घर वाला की उपेक्षा हरमिज न हो।

हम अपने उत्सव सर्वोत्तम ऋतु में ही रखने चाहिये। श्री रमेशचन्द्र जी दुबे को लिखे पत्र की प्रतिलिपि सलग्न है।

विनीत

बनारसीदास

श्री रमेशचन्द्र जी दुबे को लिखे चतुर्वेदी जी के पत्रकी प्रतिलिपि

फीरोजाबाद

२२.५.६८

प्रिय श्री दुबे जी

सादर प्रणाम।

कदा कविग्लान स्मृति ग्रन्थ की दस प्रतियाँ मिली, अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

श्री मित्रिजा शङ्कर दुबे ने मुझे तीस रुपये अभी तक नहीं दिये। एसी भूल उठाने क्या की मैं कह नहीं सकता। आप उठ एक पत्र तो भेज ही लीजिये।



स्मृति-ग्रंथ घीर घीर पड़ूँगा। मत्पनारायण क्या मग्गने निगाह में दखनी है। आपन खूब लिखा है। मुझ दृढ़ विश्वास है कि आपका मद्प्रयत्न म म ना वं प्रथा का भी उद्धार हो जायगा। वहा पुण्यकाय है।

ना प्र समा न गाय हृदय तरङ्ग का ध्यान क निय पूरा पूरा प्रयत्न नहीं किया। कितनी प्रतियाँ वहाँ बची हैं ?

आप श्री कृष्णदासजी के मत्पनाम म वचनम म मार्गित्यर तथा मौलिक काय का आन वढ़ावें। अष्टिवाग वग यन् चि ना व बहुत जवान् काम कर सकने हैं। परन्तु मारी मरकार म इनका कल्पनाति नर्ता कि उठ हम लिना म प्रामाण्य कर। मुझ ता य आनद्धा है कि क्या मरकार की ओर म आप जम मद्देश्ययुक्त हिन्दी मवी क माग म बाद वाता न आव। अपनी परिस्थितिया पर ध्यान रखत हुए जा भी काय आप कर सकें करत रहें।

भाद कृष्णदासजी का रखा चित्र सज्ज म छावा लिया है। कृपया पढ़ तात्रिय।

मत्पनारायण जा क प्रति आपका भक्ति म मैं मद्गद हा गया है। मौजूबुर तथा ठारा म उनकी स्मृति रखा क निय कुछ प्रयत्न होना ही चाहिये।

कृष्णदासी  
बनारसीदास

( २८ )

श्रीरामदास  
८-६८

प्रिय भाई कृष्णदासजी,

बिना किसी तरतीब के जम विचार मन में आने जायेंगे लिखना रहेगा।

बिना यजमान-मुग्रह क बाद यज्ञ मफलता पूर्वक नहीं हो सकता और मजमाना (जिजमाना) का Humour करना पन्ता है।

अभी हाल म श्री श्याममुन्दर गय ( पत्रा Hindi Printing Press १४६६ गिवायम Queen & Road Delhi ) न उग्र जा का स्मृति म टिप्पणी का वापिक बद्ध निकाला है। व बलीगद जिले क है। जयन प्रम द्वारा शुभ कायों मोव मद भी दख छन है। Try to rope him in for our जन माहिय महन म ना बकिगन का जम ता बलीगद जिले म ही दृष्टा था।

यहाँ आपने रिश्तेदार आठम् भी समझार आदमी है। सी पचाम रुपये खर्च कर सबत हैं।

मानुम नही श्री मोतल जी अपन प्रेम द्वारा कुछ सवा करेंगे भी या नही।

हैं अमृतलाल जी चतुर्वेदी का इस शुभ अवसर पर सम्मान हा जाय ता अत्युत्तम हो। व ७० के करीब पहुँच चुक हैं। काफी अच्छा लिखते हैं। Handle him through his son in law डाक्टर राजेश्वर प्रसाद Who belongs to मथुरा। तोरा म हाईस्कूल ( स ना कबिरदन के नाम पर ) कायम हाने की बात थी। उसका क्या हुआ ? उत्तर रामचरित, मालती माधव और हृदय तरङ्ग तो अब कोई भी छाप सकता है। यदि ब्रजमंडल म ब्रजभाषा के प्रति प्रेम उत्प न हो जाय तो इन पुस्तकों को छापन म बाटा न रहेगा।

स ना जी के चित्र Cabinet Size से लगाकर बृहदाकार भी इन समय तैयार कराये जा सकत हैं। 'जो मोसा हँमि मिलै होत मैं तासु निरंतर चेरी' ता उनके हस्ताक्षर म ही विद्यमान है। कुछ प्रति स ना जीवनी की विक्रयाय मरे पास हैं। हृदय तरङ्ग की प्रतियाँ ना प्र सभा म हागी।

I have returned rather shoken form Delhi It is very dangerous for me to move out of my place Whether I go to Agra or not my heart will be there in your function

वकील इब्बाल—

"समझो हम वहाँ ही दिल् हो, जहा हमारा"

With prostrato glands three stones in the kidney, as well as old piles I can not afford to waste my energy now

विनीत  
बनारसीदास

{ २५ }

फीरोजाबाद  
१३ ६ ६८

प्रिय भाई बृदावनदास जी,

चिट्ठी मिली। अभी उस दिन राजा बहादुर श्री मधुकर शाह ( स्व० महाराज वीरसिंह जू देव के पौत्र, और वतमान ओरछा नरेश के पुत्र ) यहा

बुछ घटा व लिय पधार थ । निल्ली वि वि स न्हिहाम म M A पाय  
बिया है और अब Regular बिमान बन गय हैं । उन्होंने अपन घता म ७५०  
क्विटम गहूँ पटा बिया है । बढी माठी बुल्लखट्टी धानन है तजीयन मुा  
हो गई । व कहत थे 'टीकमगढ़ म युवक अब बुल्नी धानन व बजाम मनी  
धानी बालन लग हैं । एसा प्रनीत होना है कि बुल्नी बाग वष म घनम हा  
जायगी ।'

यह सुनकर हृदय का धक्का लगा । ब्रजभाषा धानन वाल भी तम  
हात जात हैं । नम अनाचार का गवना चाक्षि । घर पर और आपस म  
ब्रजभाषा का व्यवहार करना हा चाहिए ।

आप अपन गाजियाबाद वाल भाषण म इस बात का भी विवर करे ।  
गाजियाबाद व भाषण की तैयारी व निय समय ता कम ना रह गया  
है फिर भी मर्यादिया तथा मित्रा म परामर्श नुरत भोग्ये । आ आनारायण  
जी चतुर्वेदी मरम्बनी मर्यादक का निर्वे । श्री उमराव मि पाण चतुर्वेदी  
पुस्तकालय मैतपुरी का भा । मोहन जा म मित्रक ज्ञानदान करे और  
श्रद्धेय प्रभुत्न जा ब्रह्मचारी जी म भी । श्री श्यामसुन्दर गन (हिन्दी प्रम,  
मिनी) जनाग व रत्न धान है । भन आत्मी है । बहुत रनिया प्रेम है ।  
उनम भा कभी मिने । जना परिचय पत्र आ अन्य बुधारे जन का भज  
निया आगा । व भा अनीग जिन व है और थापान जन भी । मिना जान  
पर आर मौ० वन्नि मयवता मरिक् 5/90 बना मरम नद मिना म जम्भ  
जम्भ मिने । Rivoli Cinema व मामन जा मरह मरगम नान का जानी  
है एसा पर दूमरा मकान ह गाना चक्कर जाना जाना है । मिनी व मिनी  
भवन की म्यापना म मरम बहा हाय रग का था । उनक पूय पति  
आ रामनाथ मरिक् बकात करत । कान मरिक् उनका मुपुत्र मृत  
याग्य है, दूमरा मुभाप मरिक् आर्कियातातावन विभाग म उच्चप पर है ।  
श्री कपिला वामाज (नरकी) मिना विभाग म उच्चप पर है । मरी पुस्तक  
रक्षा चित्र म मरम्बनी ची का स्वच परे । थापान जा (मम्मा मरिक्  
मन्त्र) आपका नम मित्रान व जावेगे ।

श्री मरमगायन भी आपका स्वच छाप दिया है । एक मर्यादक  
श्री रामनाथ गुप्त—राय नगर कानपुर—उत्त आन्ध्रप्रदेश पत्रकार है । मित्रन  
रायक आत्मा है । वया हान पर कमा कानपुर जाकर नम जम्भ मिने ।

(१) एक पत्र श्री मधुकर गान ( गजा बगार ) M A वतुणी  
टीकमगढ़ रा भेजे । उन्हें ब्रजभाषा की पिछता ब्रह्म भी । य भा है

लिखें कि उनके पितामह महाराज बीरसिंह जू देव न ब्रजभाषा के लिये जो कुछ किया, हिन्दी जगत तदर्थ उनका ऋणी है। उनके पूज्य महाराज बीरसिंह जू देव न मथुरा में जो कुछ किया था उनका भी हाल सुनाएँ। उन्हें मथुरा निमन्त्रित भी करें। व २२-२३ वर्ष के हाथ।

(२) कैमरे का प्रयोग शीघ्र ही सीनिये। आपानी Reflex कैमरा ४०० ५००) में आवेगा। किसी विशेषज्ञ का माफ़ नही खरीदें। दशा की स्थायी बनाने का सर्वोत्तम तरीका है।

(३) जहाँ कहीं भी जावें वहाँसे लीटत वस्तु निकटस्थ Best natural Scenery के दृशन करत हुए आवें। यह विचार स्व० भाई माधनलाल चतुर्वेदी का है।

(४) यजमान मग्न निरन्तर होता रहना चाहिये। चूँकि आपका अपने लिये कुछ भी नहीं चाहिये, इसलिए यह अपेक्षाकृत आसान भी है। और Last but not the least do not over strain your self हर हालत में पूर्ण स्वस्थ रहना ही है। भोजन के मामले में अत्यन्त सावधान रहें। बल्कि Cooker साथ रखें। Henry Ford अरबपति होने पर भी तीन दिन के भोजन का सामान सदब अन्न साथ रखता था और डाक्टर रघावा I C S अपना घी साथ लेकर चलते हैं। बाहर भोजन करने में अत्यन्त खतरा है। निश्चय भोजन मिलता है। You must be able to say 'No to any one, when they give you हानिकारक भोजन। मुझे लेटे रहने के लिये कहा गया है, फिर भी आप जैम मुहूर्त का पत्र लिखे बिना नहीं रह सकते।

बनारसीदास

पुनश्च—

भाई वासपुत्रुद जी चतुर्वेदी मैं कहूँ कि यद्यपि उस समय मुझे बुरा लगा था, पर मेरे हृदय में उनके प्रति सद्भावना ही है। बलत पहचियाँ होती ही रहती हैं। श्री राजाबाबू (प्रतापनारायण अग्रवाल रावतपाड़ा) का इटीरा Garden अबसि देखिये देखन ओणू।

( २६ )

फीरोजाबाद

८ ७-६७

प्रिय भाई श्रीदाबनदास जी,

बंदे। मैं अब तारनुमा पत्र ही लिखूँगा, क्योंकि समय अब कम मिल पाता है—ज्यादातर विधाम ही करना होता है—और मतलब की बात

गमन में निम्न का अभ्यास मुझ करना है। नव भाग्य टाइम्स व वम्बई गमन न आपका स्वयं छात्र किया है। यह बड़ी खुशी का बात है।

अब मैं अच्छे छात्रों के लिए एक महीना माय रहना जल्दी है। वह भी तो अभी न अभी आया ही।

मेरी तबियत सुधर रहा है। वजन १० पौण्ड बढ़ा है—पहले तो २०-२५ पौण्ड कम हो गया था। और तीन बार महीने में स्वस्थ हो जान की आशा बंध गई है। आप मेरी मदद करना तथा आपका नाम गाने भाग्य में है ही।

आपका साथ

(१) एक पत्र श्री डा० राजेश्वर प्रसाद धनुर्वेदी M A Ph D D Lit भानुगोपाली आगरा का निम्नलिखित पत्र श्री अमृतनाथ या धनुर्वेदी व स्वस्थ की बातें पृष्ठित। राजेश्वर जी ज्ञान ज्ञानी हैं। उन विचारों है कि नये छात्रों के लिए छात्रों का निमंत्रण भा नहीं मिला। अमृतनाथ का भा नहीं मिला। वना मधुरा के भी हैं। निमंत्रण पत्र ज्ञान ज्ञानी हैं। उनकी तबियत अब ठीक हो रहा है।

(२) एक पत्र श्री प्रतापनागर अग्रवाल (गंगा बाबू) गवर्नर आगरा का निम्नलिखित। उनका २३० पक्का बाघ बाग ठहराने आपका स्थान है। उनका मनिक में मग एक रूप १० ११ निम्न पत्र छात्र था। उन पत्र नीति। राजाबाबू के पास जीव है। व उन आपकी स्थिति में। ६३ पत्र आम के पत्र है। नीचे नुम्हें है। अब निम्न स्थिति में।

(३) नरेश्वर म गवर्नर के पास एक मन्त्र मन्त्रिणाथ है। वनों का भा नीतिनाथ ज्ञान का करना है। स्वर्गीय ज्ञान में श्री अमर कानि का वह स्मारक है। मन्त्र मन्त्र विज्ञान वनों में निम्न है।

(४) श्री जयजी के पिताजी के श्रद्धा भित्त में तो नया कर रहे भविष्य। उनमें अपने पत्र में हम जानें पर बहुत हफ प्रकाश किया है कि आपका माय उनका मन्त्र मन्त्र पुण्य निम्न।

(५) ब्रह्ममि में ज्ञान ज्ञानी ज्ञानी अच्छा काम में हमें तो हम पर आपकी दृष्टि जानी न चान्ति। निम्नलिखित में हम मुन्नुत गुता है। ६० विद्यार्थी पत्र है। २५० बाघा जमीन एक जमाना न है। उनमें का बहुत वन (जागर में ७ मीन दूर) ज्ञान निम्न। यह का स्थान है। श्रीगम जी ज्ञान का उपायनी का नव जीवन पास आगरा में २१ मात का दूरी पर है—

फीरोजाबाद से ७ मील । हरिमजन शर्मा बल्हा बस्ती आगरा से पत्र व्यवहार कीजिये, श्रीराम जी उनके बहनोई थे ।

(६) भाई हरिशङ्कर जी का एक महत्वपूर्ण पत्र नकल कराने Recd भेजना है । ५ प्रतियाँ टाइप करा सीजिये । एक प्रति श्री विद्याशङ्कर शर्मा, शङ्कर सदन, लोहामंडी Agda को भेज दीजिये ।

अभी भाषण को इधर उधर से देख लिया है । आपने मेरी जो प्रशंसा की है उसका अधिकारी बनने का प्रयत्न करूँगा ।

विनीत

बनारसीदास

( २७ )

फीरोजाबाद

१० ७ १८

प्रिय भाई छुदाबनदास जी,

बन् । ब्रज के पचासा फलत पूरत वृथा की पुकार आप तक पहुँचाना मेरा कर्तव्य है । मैं तो चौकीदार मात्र हूँ— कमिशनर तो आप ही हैं । चाहे परिणाम कुछ न निबले पर 'कमण्येबाधिकास्ते' की बात तो ब्रजराज न ही कही थी ।

मेरी तीव्र यात्रा भीषण रख सन्तुष्ट है ।

विनीत

बनारसीदास

चतुर्वेदी जी का लेख डा० प्रयागनारायण अग्रवाल के उपवन पर

मेरी तीथयात्रा

आगरा जनपद का सर्वात्म उपवन

—बनारसीदास चतुर्वेदी

बर्द बप पत्र की बात है जब भा० श्रीराम जी शमा ने मुत्सदाय प्रयागनारायण जी वकील के इटोरा बाल बाग का जिक्र किया था और यह बतलाया था कि आगरा जिने बा वह सबसे बड़ा बगीचा है । तभी मेरे हृदय में उमक स्थित करने की इच्छा उत्पन्न हो गयी जो मत् अप्रम महीने में पूरी हो सका ।



कृषिशालू में ट्रेण्ड कोई बी० एम सी० यहाँ नहीं है और न कोई फाम सुपरिस्पेण्डेंट । यह सारा काम राजाबाबू खुद ही कर लेते हैं ।

शहृतता की लम्बी कतारों को देखकर मैं पूछ बठा कि इतने शहृतत क्या लगा दिये हैं तो श्री राजाबाबू न बतलाया कि शहृतत का पेड जल्दी लग जाता है और अपनी घनी छाया द्वारा दूसरे पौधों को तू स बचान में सहायक होता है ।

इस उपवन के लिये सबसे बड़ा सबाल पानी का है । यद्यपि आज सारे गाव में ट्यूब वल की व्यवस्था हो गयी है और बिजली से पानी मिल जाता है, लेकिन इस बड़े बगीचे के लिये यह सम्भव नहीं हो सका ।

एक बात सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ कि किसी भी सरकारी अफसर ने यहाँ आज तक पधारने की कृपा नहीं की । हाँ, एक बार श्री चरनसिंह जी अवश्य पधारे थे और वह भी उन्हें यहाँ मजबूरन आना पडा था । उनकी मीटिंग तो किसी दूसरी जगह रखी गयी थी, पर वहाँ इतजाम नहीं हो सका, तो उ ह यहाँ आना पडा । यदि कोई दूसरा देश होता तो इस उपवन की कीर्ति मुल्क भर में फन जाती । पर इस अभाग देश में ऐसे रचनात्मक कार्य की कद्र करने वाला कोई भी नहीं । एक बार आन इण्डिया रेडियो, देहली ने श्री राजाबाबू को रेडियो पर बुनाया था पर बगीचे के बारे में बातचीत करने के बजाय उनसे अत्य अनावश्यक बातों पर चर्चा कराते रहे ।

सबसे अधिक दुःख मुझे यह जानकर हुआ कि पास पडोस के गाँव वाले इस उपवन के महत्व को अब तक नहीं समझ पाये । और उन्होंने इसे नष्ट करने के लिए भरपूर प्रयत्न भी किया । पीने दो बघ सशस्त्र पुलिस का प्रबंध रखना पडा । एक बार ता कारिद को बंद कर के सारा अनाज लूट ले गय । भला हो कलक्टर रना साहब का जिनकी वशीलत यह बाग बच गया ।

बाग के सामने एक सकट उपस्थित हो गया है । बाग सट्रल रेलवे के किनारे है और सरकार की आर से उसे नोटिस मिला है कि टबल रेलवे लाइन पडने के कारण इस बगीचे की ५ फर्निंग लम्बी और बीस पच्चीस फीट चौड़ी भूमि पर सरकार अधिकार कर लेगी । मिटटी खोदने के लिये बने बनाय उपवन को खत्ति करने की यह मूल्यता रेलवे विभाग करने जा रहा है, जब कि वह दूसरी ओर की जमीन से काम चला सकता है ।



मैंने उत्तमप्रभु का राज्यपाल महान्यायी की सेवा में निवेदन किया है कि यह उत्तमप्रभु उत्तम की नष्ट भ्रष्ट हानि में बर्बादें यद्यपि मैं यह नहीं मानता हूँ कि हमारी सरकार जिस धनधार आन्दोलन जिस कुछ भी नहीं करती। आज का युग में जब कि पता तथा सम्पत्ति का उगान पर इतना जोर दिया जा रहा है, किसी पत्रन पुनः बर्बाद का हर्षा करना पर जघन्य अपराध है।

मैं इस बात के निश्चय बहुत सज्जन हूँ कि उत्तमप्रभु की तीव्र याथा मैंने इतने वर्षों में और अब प्रायश्चित्त स्वरूप प्रतिपत्ति यमक श्रुति में उग प्रणाम करने के निश्चय किया होगा। और मैं लक्ष ६ हजार आश्रितों का मैं पत्रों में स्वीकार करना हूँ।

आपका जनपद का जिस शुभनिमित्त व्यक्तियों में इस उत्तम का नष्ट दत्ता उन्हें मैं अमान्य मानता हूँ और उनका ज्ञान का विस्तार अपूर्ण।

( २८ )

फीरोजाबाद

१३ ७ ६८

प्रियवर,

पत्र मिला। यह काम आप का निश्चय।

(१) डाक्टर राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी एम ए पीएच डी डी निदेशित गली आगरा में उनका भाई श्रीनारायण जी गोपबन्धुन में गोपबन्धुन।

(२) श्री प्रतापनारायण अप्रवात (राजाराजू) रावनवाहा आगरा से पूछिय कि क्या उनके काम में जामुन अब भी आ रहा है, यदि आ रहा है तो वहीं के भाज के लिए उस उत्तमप्रभु की तीव्रयाथा की निश्चय।

(३) श्री निवप्रतापगिह गुरुगुरु मिरमागज जिना मनपुरी से उनकी समस्या का हाल पूछिय।

(४) श्री कुमुदाकर जी, आयनगर फीरोजाबाद और श्री बालकृष्ण गुप्त हनुमान गज फीरोजाबाद से पूछिय कि स्व० हरिनाथ जी की स्मृतिरक्षा का कार्य वहाँ तक आगे बढ़ा है।

(५) श्री न्यायमुत्तरगम जिनी प्रम कजी-गरोड जिनी अपनी ब्रजभूमि अलीगढ़ में ही है। उनसे अनुगोध की निश्चय कि मत्स्यनारायण परिवार तथा हरिनाथ जी की कीर्तिरक्षा में सहायक है। व लाना अलीगढ़ में ही है।

(६) थर्डेय प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी तथा भानु जी मे स्वय मित्र मेरा प्रणाम कहिय और उनसे यह भी कहिय कि मरा स्वाम्य्य भव मुग्र रहा है। कभी मयुरा वृंदावन की तीसयाना करूंगा। मीनल जी क पत्रे वमून करन हो हैं।

Matter of fact पत्र लिख रहा हूँ।

बिनीत  
बनारसीदास

( २८ )

फीरोजाबाद  
१ = ६८

प्रिय श्री वृंदावनदास जी,

वद। वन में निरमागज गुरकुल को देख आया। तत्रियत धुन हो गद। दो पीध लगा आया—एक गुलमुहर का दूसरा हारगुल्लार का। वह एक ग्रामीण सभृत पाठशाला है और उसके पास जमीन भी है। विद्यार्थी ८० ८२ हैं। कई परामश भी द आया हैं। श्वबर्वल हान के काग्न हरियाली काफी है। कुछ पाटा भी मैन लिय थ। कापद २/१ ठीक आवें, कपाकि धूप अच्छी नहीं थी। कभी आप भी देखें।

आप इन्गेन वाले उपवन का ता यथासम्भव शीघ्र ही देखें। नरवर की सभृत पाठशाला का भी। साहित्यिक कमिशनरो का यह कतव्य भी है। आप अवश्य ही मेरे इन परामशों से तग आ थप हूँ। पर क्या करूँ लाचार हूँ। सत्परामश देने की बीमारी मुझ विरासत म मिली है।

हैं श्री श्यामसुन्दर जी सुमन का बुलाकर समझा दीजिय कि ना समझी से भर पत्र न लिखा करें। उन्होंने टाइप कराकर ८, १० पत्तियां लिख भेजी थी और यह उम्माद रखते थे कि मैं उन पर हस्ताक्षर कर दूँ। किसी भी प्रतिष्ठित लेखक का यह अपमान है। जब मैं उन पर हस्ताक्षर न किये तो मुझ खरी छोटी सुना रहे हैं 'आप नवयुवका की उपजा करत हैं,' इत्यादि। हाला कि इस अस्वस्थ्यावस्था म भी मैं कुछ पत्तियां लिख भेजी थी। इस तरह के सर्टीफिकेट पाने का माह वे छाड द।

बिनीत  
बनारसीदास

( ३० )

फीरोजाबाद

१४ ८ ६८

प्रिय भाई धृतायन दास जी,

कृपापत्र मिला ।

महामा गायत्री जा एक एक पत्र म बाएँ बाएँ चिट्ठियाँ भज गिया करन थ यद्यपि व छोटी छोटी हो गयी थी । उन्होंने अपन जीवन म एक मात्र पत्र ना लिखे थे जिनमे कुन जमा २० २५ हजार मूर्तित रु गव हैं । [ उनमे १०१ मूल पत्र मर पाये हैं । पत्रा का दृष्टि म मैं नखबनी हूँ । सो वष बाद उन पत्रा का मूल्यटना ना हो गयी जायगा । ]

१८८८ म गायत्री गान्धी मनाए जा रही है । बापू की नखबन गान में भी तीन बार पत्र ली लिखाऊ म रहे गना है । नख लिखी प्रचार समाचार म आप व गुमनाम का लख है ।

वि० नरग का (०) १०) म अच्छा काम गायन मिल जायगा । यी मोहन जी का ना कृपापत्र मिला है । अक्षर गठीर मास्टर का भा । ग० गनीर अयन कृपान गनन हैं । मधुग का यन मोघाग्य है रि गन प्रतिष्ठित विदित मजन वनी पढ़ें व गये हैं ।

बिनान

बनारसीनास

पुनश्च—

(१) था पत्र (नानाराम जी बाग मुजफ्फर साँ) म ना कविगन व ममन ग्रन्था का मग्न छाप रहे हैं । माघन तीन हान पर भी उनका यन मरमात्म जगत प्रगमनीय है । कृपया उनका मध्याम दात्रिय । क्या ना दुव जी म मध्याम नहीं मिल सकता ? काय मन्वपूण है ।

(२) वि० नरग का लख मिला ( स्व० रामनागयन चतुर्वेदी ) का नखबनीत जी विषय म पत्रा लीत्रिय । मन भायन न पत्र हा । व आपक यनी बत्करी पत्र न । नरग मित्र तीन वष का हो था—(मन् १८८६ म) जम रामनागयन का स्वगवाम २८ वष की उम्र में ग गया था । व History में First Class first गानग कात्र म इतिहास का अध्यापक था । नरग निरु प्रन म विरुन वचित रहा ।

(३) एक पत्र श्री हरिभजर शर्मा ( श्रीराम शर्मा का मकान बल्वा बस्ती, आगरा ) को भेजिये । स्व० श्रीराम जी के सारे हैं । उन्हें प्रेरित कीजिय कि वे श्रीराम जी विषयक सामग्री का व्यवस्थित कर दें । अब जीवाम फाम का भी हाल उनसे पूछ लीजिय ।

(४) डा० दयाशङ्कर शर्मा, यू० राजामहो Agra से स्व० हरिशङ्कर जी शर्मा की जीवनों क काय को सुचारु रूप से करने के लिए कहिये ।

(५) श्री प्रकाशवीर जी को मेरा प्रणाम कहिये ।

( ३१ )

फीरोजाबाद

१६ न ६८

प्रिय भाई बु० दादबनदास जी,

स्वर्गीय शिवपूजन जी तथा स्व० अग्रवाल जी के पत्रों की नकल आपकी सेवा में रजिस्टर्ड बुकपास्ट से बल भज दूँगा । चूँकि आप साहित्य में प्रेमी हैं इसलिए इसे अपने संग्रह में सुरक्षित रखेंगे और पत्र भी समय समय पर भेजता रहूँगा । आज अखबारा में पता कि आपके यहाँ बड़े जोर की वर्षा हुई है । आशा है कि आप सकुशल ह ।

विनीत

बनारसीदास

( ३२ )

फीरोजाबाद

४ ६ ६८

प्रिय भाई बु० दादबनदास जी

अपने प्रातः कालीन चायामृत पान के बाद मैं अपने सहयोगियों का ध्यान किया करता हूँ और आज आपके बारे में सोचता रहा ।

चूँकि ब्रजमण्डल के विषय में मेरी आशाएँ मुख्यतया आप पर केन्द्रित हैं इसलिए आपकी अस्वस्थता मेरे लिये चिन्ता का कारण बन जाता है । चाय के नदी पत्ते में मैं न जान क्या ऊन जलूत लिख जाता हूँ । उसमें कुछ सार हो तो उसे ग्रहण कीजिये । नहीं तो मेरे पत्रों को रद्दी की टोकरी में डाल दीजिये । आपको राजाबाबू ( रावतपाड़ा के श्री प्रतापनारायण अग्रवाल ) के इटोरा बाग को अवश्य शीघ्र देखना चाहिये । मध्य रेलवे अधिकारी उसकी ५४ फीट

चोड़ी और ६ फर्माग तम्बा जमीन काट लेना चाहते हैं। इसके बारे में कुछ न कुछ कारवाई हमें करनी ही चाहिए। राजाबाबू काफी समन्तार व्यक्ति हैं पर वे सरकारी अधिकारियों की सुझाव नहीं कर सकते। आप जब स्वस्थ हो जाय तब उनसे अवगत भेंट करें और तब तब वन्द्रीय लेख द्वारा फिर आप नियंत्रणपूर्ण अतिक्रमण के विषय में उनसे पूछ-ताछ करें।

विनीत

बनारसीनाथ

( ३३ )

श्रीरोभाबाद

१७ ६ ६८

प्रिय श्री शुभावनदास जी,

ब्रजभाषा की एक जगह का मिलाकर जगदीश बसन्त पंचमी पर एक विशेषांक निकाला जा सकता है। ब्रजभूमि में जो भी साहित्यिक सांस्कृतिक, कृषि सम्बन्धी जवका जय काय हो रहा हो उसका स्वयं विस्तृत वृत्तान्त चाहिए। उदाहरण स्वरूप आप एक 'नव नव' के सम्बन्ध महाविद्यालय पर हो सकते हैं। अद्वैत कर्मात्री जी तथा जय कद आधुनिक विद्वान् स्वयं 'प्रज्ञा' में लिख रहे हैं। वह एक महान् सच्य है। तुलसी मिश्रमागध 'निकालवा' पर भी एक छोटा नव चाहिए। ना प्र सभा आगरा और भागना भवन 'पीगलवा' पर भी छोटा छोटा नव गान चाहिए 'तब' के बच्चों के जगह 'दुर्गा' के उद्घाटन का मन्त्र विवरण दें। जय श्री बालकृष्ण गुप्त अनुमानात्र 'पीगलवा' में अनुमानात्र काव्य उद्घाटन पर एक नव के लिए प्रायना कर सकते हैं। निम्नलिखित अथवा आदि या सम्प्राप्ता द्वारा प्रश्न हान चाहिए। ब्रजसाहित्य मन्त्र का स्वयं प्रश्न पर विषय जय न करना पड़े यह आपका स्वयं है। अदि सम्प्राप्ता जी भवना 'पत्नी' और पुष्पवध का मन्त्र अथवा 'अद्वैत' प्रश्न जी 'सुधा' और 'वन्दव' तुलसी भगवानुभावा के रत्नाचित्र ना स्वयं गान हो चाहिए। 'प्रज्ञा' के साहित्यिक कार्य के लिए एक सम्पूर्ण योजना का 'स्वयं' एक तब में 'ज्ञान' अथवा 'ज्ञान'। उन विद्वान् के लिए जगह चला करना भी पड़ेगा—जो जगह पान के समान है।

ब्रजभूमि में जगह भी जो भी अथवा 'प्रज्ञा' है—विनम्र आवाचन वृत्त बनने की सम्भावना है—हैं 'स्वयं' जगह जगह है।

अत्युक्तिमय प्रश्नमा किसी की भी न हो। लेख विश्वसनीय तथ्या तथा  
आँकड़ों से परिपूर्ण हो।

विनीत  
बनारसीदास

पुनश्च—

एक महिने में १५ पौंड वजन कम हो जाना चिंता का विषय बन  
सकता है इसलिये मुझे पूरा विश्राम लेना चाहिये परन्तु मैं आप महशस मित्रा  
का विचार देने का लाभ सवरण नहीं कर सकता। जहाज जब डूबने वाला होता  
है तब भी जहाज का रेडियो वाला S C S message भेजता रहता है।  
पर तु मैं अभी कुछ दिन तक और जीवित रहने की आशा करता हूँ।

हरिगङ्गार शर्मा स्मृति ग्रन्थ का तबमीना श्री प्रकाशवीर शास्त्री,  
एम पी १ कनिंग लेन, नई दिल्ली को भेजा जा चुका है। जब आप उनमें  
शीघ्रता करने की प्रार्थना कर सकन है।

बनारसीदास

( ३४ )

फीरोजाबाद  
१८ ६ ६८

प्रिय श्री धृ-दाबनदास जी,

ब्रजभारती के दो अंका को मिलाकर एक विशेषांक निकालने की बात  
मैं कल लिख चुका हूँ। उस एक में ब्रज के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक  
कायकर्ताना के सचित्र रेखा चित्र हान चाहिए यद्यपि वे सक्षिप्त ही हो सकत है।

शिकाहाबाद के श्री भाजराज चतुर्वेदी ( Glass Factory ), मनपुरी  
के श्री उमराबसिंह पाण्डे इत्यादि का भी लिखिये। स्वर्गीय कौशलेन्द्र तथा  
स्व० हरदयालसिंह का ता श्रद्धाजलि अर्पित हानी ही चाहिये।

हैदराबाद के श्री मधुसूदन चतुर्वेदी से भरपूर सहयोग लीजिये। वे  
काम के आत्मी हैं।

रुयानगो लोग के भी वृत्तांत दीजिये।

एक चाहे साल भर बाद निकले पर मसाला तो अभी में झट्टा करना  
शुरू कर दीजिये। It may serve as a directory for Braj It will not  
be a losing business at all विज्ञापन खूब लीजिये।

देखिये तो एक 'वामन' वंश को व्यापार सिखना रहा है। परन्तु यह  
न भूलिय कि मेरे बाबा चौबे नरमण्यस चूना क्वड मधुरा में एक बजाज थे।  
गजी गाढ़े का उनकी दूकान थी गदर क दिना में। So I am spiritually a  
वंश। शेष कुशल।

बनारसीदास

( ३४ )

दीर्घावस्था

२३-६ ६८

प्रिय श्री कृष्णबननाम जी

आपका क विचार का अंश अंश निकलवाया गया कुछ दिनमें ही आए। उस समय में ब्रह्माणा क विचारों निदानन का प्रयत्न था। वैसाविक विचार का भावना पर निदानना ही चाहिए। अतः उसी की पुनः निरवाह्य।

मम्मवन भा आत्म एक मग टूटने लगेवा मु मी एक एकपुत्र का एक है। उसमें मम्मवनभा का एक हाथ और मग थकावत भा। मैं उस एकपुत्र का चित्र न बना चान्ता है और कृष्णा स्वयं स्व० रामनाम का भाव का भी।

श्री रामनामनाम जी क बाग क विषय में मम्मवन भाव का पत्र मैंने भेजा है। मिट्टी मानन क मित्र यह विचार उसका बाट उठे बन्ना रहा है जब कि मिट्टी हमसे आत्मा म भा ना ना मन्ना है। हमारे सर्वोत्तम मान का एक विचार मम्मवन अल्प है। आप भा ब्रह्माणा मम्मवन क प्रयत्न की हैमिन्त म रामनाम मम्मवन का विषय। अतः पत्र का मम्मवन आत्म म मित्रवा नगा। अतः पत्र का प्रति अल्प म भवना है। स्व० रामनामनाम क मम्मवन Reprints कृष्णा शिरी म भवना।

मैं स्वास्थ क विषय म गावधानी बन रहा है। चिला कान की प्रयत्न नहीं। सादर पर आप नि० बुद्धिमान बनाना म आव।

बनारसनाम

( ३६ )

दीर्घावस्था

८ १० ६८

प्रिय श्री कृष्णबननाम जी

वत् १ स्व० रामनामनाम क मम्मवन का Reprint भिजा और श्रीगुरु मना जीव क पत्र का भा। कृष्ण है।

भाई आत्म अतः गुरु तथा आपकी भतीजी क भाव पधार थ। एक एक पत्र था। दीनवन्तु मी एक एकपुत्र का गाना क लिए २ पत्र का एक पुस्तिका छपा उन का वचन भा श्री आत्म न भिजा है। आपका भतीजी

पीएच डी, के लिए शोधकाय करना चाहती है। मध्ययुगीन रीतिकालीन कवियों के समय में सामाजिक अवस्था विषय बहुत अच्छा है। शायद बि० बुद्धिप्रकाश कुछ परामर्श दे सके। मध्यकालीन भारत ही उसका मुख्य विषय रहा है।

धनारसीदास

( ३७ )

फीरोजाबाद

१३ १० ६८

५ बजे प्रातः काल

प्रिय भाई कृष्णदास जी,

बन्धे ! अभी मैंने आपकी वह श्रद्धाञ्जलि, जो आपने बंधुवर अमय जी के पिताजी को अर्पित की है पढ़ी। मुझे इस बात का बिलकुल पता न था कि वे इतने परिश्रमी और सात्विक प्रयत्नकार थे। न तो यशपाल जी ने उनका कभी जिक्र किया और न अमय जी ने ही। क्या उनका चित्र प्राप्त है उसका तल चित्र बनवा लेना चाहिये।

ऐसा प्रतीत होता है कि अलीगढ़ जिला अपने साहित्य सेवियों की कीर्ति रक्षा में बहुत पिछड़ा हुआ है। स्वर्गीय महाकवि नाथूराम 'शंकर' शर्मा के स्मारक के लिये अलीगढ़ वाला न क्या किया है और सत्यनारायण कविरत्न के लिये जिनका नाम अलीगढ़ में ही हुआ था। बंधुवर हरिसंकर जी के लिये भी वे लोग कुछ भी नहीं कर रहे। श्री यशपाल जैन ( सस्ता साहित्य मंडल ) से जवाब तनव कीजिये। कभी फुसत मिलने पर आप अलीगढ़ जिले का दौरा कीजिये। हरदुआगंज की तीर्थयात्रा तो आपसे करनी ही है। भाई विद्याशंकर जी का आगरे से साथ ले लीजिये। यदि भाई हरीशंकर जी के जीवन में आप यह कर सकते तो क्या ही अच्छा होता।

लोग शास्त्र ग्रन्थों के निये उपयुक्त विषयों की तलाश में रहते हैं। अलीगढ़ जनपद द्वारा अपने साहित्य साधकों की उपेक्षा यह एक सजीव विषय होगा।

नरवर के संस्कृत महाविद्यालय को भी आप देख आइये। स्व० जीवनदत्त जी आचार्य भी एक महापुरुष थे। वे भी निम्स-देह एक स्मृतिग्रन्थ के अधिकारी हैं।

मैं आज ७॥ बजे कपावली ग्राम के एक वयोवृद्ध सज्जन से मिलन जा रहा हूँ, जिन्होंने एक सौ स अधिक वृक्ष लगाये हैं। इस अभाग्य नगर में चूड़ी



का भट्टिया म साग्रा हा नृणा का भस्म कर दिया है। उगता प्रायश्चित्त करने वान व्यक्ति म जनपद म उतरान जेन हा चाहिये।

अब कुछ काम की बातें —

(१) आगरा क बन्धु हमार प्रिय कवि श्री अमृतनाथ चतुर्वेदी का सम्मान करने का विचार कर रहे हैं। कृपया श्रीनाथगण या चतुर्वेदी मुने बाग नखनऊ और डा० राजश्वरप्रसाद चतुर्वेदी का पत्र निम्न कर पूछनाछ करें।

(२) श्री नानाराम पक्क, धाममुजसकर श्री आगरा क पुत्र का क्या हाल है? पक्क जा बड़े काम क आत्मी हैं पर बिचकहीं औषड दाना। आगर क दगिम्नान म उनका म गनामन है।

(३) अमर उजाना क सम्पादक श्रीरामनाथ या अग्रवान का था राजावाहू क इन्गीष बाग उपवन पर एक सम्पादकाय तब निम्न का कहें।

(४) जी ए का कादत्र कीर्तिजावाद म गकर मदन का स्थापना क निय वहाँ क प्रधानाचार्य आर कुमुमाकर या का निश्चें।

(५) अपने भमरी जाउम् जी का मी एक लच्छूज पर पम्पन छानन क निय पयदान नीजिय।

(६) 'गीतिज्ञानन समय म सामाजिक स्थिति नामक' नाघ पर अपना मनीजा का मन्त करन क लिए बि० बुद्धिप्रकाश का निमिय।

(७) श्री जगन्नाथ तट्टी का मैन आपकी पुस्तक की एक प्रति भेंट कर ला है।

जल्दी म घसीट दन क निय क्षमाप्रार्थी हूँ।

बनारसीनाथ

( ३८ )

फारोजाबाद

१४ ११ ६८

प्रिय भाई धृदावनदास जी,

अमरका क मन्तन रमक (Dewis Mumford) न अपनी पुस्तक Condition of man म लिखा है—

Utopia can no longer be an unknown land on the other side of the globe It is rather the region one knows and



( ३८ )

फीरोजाबाद

१२ ६ ६८

प्रिय भाई कृन्दावनदास जी,

५९ ५९ ६० प्रति भाषण के रेन सिगया केवर कुछ भाषण पत्रकारिता पर तीन चार के आ पर कराया जा सकत है ।

मथुरा, आगरा, फीरोजाबाद इत्यादि ।

भाषण निश्चिन साथ जाके जीर फिर उन्हे पुस्तकालय भी छगाया जा सकता है । १० व्याख्यान म ६१० २० के ०० २० यात्रा व्यय-नगमन एवं हजारा का खर्च आगा । जहाँ जहाँ व्याख्यान सब प्रथम ही वर्षों वर्षों म पमा आगाह दिया जाय । यह व्यावहारिक योजना पर भी विचार कीजिये ।

२१ २१ २० ता कम आग । आज की मन्गी के युग म ५१ २० तो भेंट बन ही चानिय । जान न उनका बान दूमरी है ।

एक भाषण पत्रकारिता घाट का नीला यह विषय पर था जगन्नाथ नन्दा मृतपूव एम एन गीताभा फीरोजाबाद म कराया जा सकता है । उन्हे हजारा रुपय फीरोजाबाद मन्गी म कराया गिय थ ।

उन्हे आप पत्र ता दिवें ही । इस नगर की व विभूति है । Best Worker

विनीत

बनारसीदास

( ५० )

४, लाजपत कुँज निवसित लाहौर

आगरा

१६ १२ ६८

प्रिय श्री कृन्दावनदास जी

वन्दे । मैं कन नाम का आन्त नैप्रोमी हान्स नात्रगज आगरा म था मथुरा-न गान्धा एम ए म मित्त जा १ वष म कुछ गम म पाहिन है । उनका ज्ञान करके हार्निक पीछा हुई । हमारे बभाग दान म ४० लाख कुछ गयी है । गाँधी जी मथुरा जिन म हा मस्कृत अध्यापक रह चुके हैं । धर्म रहन बान बनमा है है ।

गिवनान अधवान एन व० के श्री राय मानन जी न २१ २० गाँधी जी का भेंट दिय थ और था एन्मचन्द्र प्रकाश न ११ २० । गाँधी जी म

‘आपवीती’ लिखवा रहा हूँ। उसे पत्रा में छपवाऊँगा। आपको जब कभी आगरा आना हो तो ताजगंज जाकर शास्त्री जी से जरूर जरूर मिल लीजिये। उन्हें ब्रज भारती इत्यादि भट भी कीजिये। उन्हें मानसिक भोजन देने की जिम्मेदारी मैं अपने ऊपर ले ली है। उनके ४ बच्चे हैं। जिनमें बड़े बच्चे को जो १४ वय का है, यही बीमारो हो गयी है।

मूको को वाणी देना यही लखन का पवित्र कर्तव्य है। अधिक क्या लिखू। शाम तब घर पहुँच जाऊँगा।

श्री रमेशचन्द्र दुब के पत्र से ज्ञात हुआ कि आप २३ को फीरोजाबाद पधारने वाले हैं। २४ की शाम को ठीक रह्या। क्योंकि तभी श्री बालकृष्ण गुप्त के यहाँ सबसे मिलना हो जायेगा।

गुरु जी भगवानदत्त द्वारा आपका प्रेमपूर्ण सन्देश मिल गया था।

विनीत

बनारसीदास

( ४१ )

फीरोजाबाद

२०-१२ ६८

प्रिय श्री सुदासनदास जी

६ ता० का लिखा गया पत्र पडा रह गया। अकेले काम करना कठिन ही है। भाषण देन वालों में कुछ तो बिना कुछ लिये ही भाषण दे देंगे, इसलिए कुछ विफायत हो जायगी। इसके सिवाय ५१ रु० के बजाम ३१ रु० ही प्रति भाषण रखे जा सकते हैं। हर हालत में भाषण लिखित लाना चाहिये यह अगले वय का कार्यक्रम है।

१ अमजावी पत्रकार संगठन

२ आचार्य द्विवेदी जी

३ शहीद गणेश शर्मा जी

४ विलायती पत्रकारों का संगठन जगदीश चतुर्वेदी

५ बाजपेयी जी पराडकर जी, गर्दो जी

६ स्वाधीनता संग्राम और हिन्दी पत्रकार बनारसीदास

७ बालमुकुन्द गुप्त और कूर्माचल केसरी बन्नीदत्त पांडे बनारसीदास चतुर्वेदी ऐसे ही और भी विषय चुने जा सकते हैं।

१० शायरमल्ल जी शर्मा जसरापुर बाबा खेतड़ी राजस्थान से भी

पत्र ध्यवन्तार कीजिये। था गर्मा जा मुक्तम भी ४ वष बढ़ है। उनम हिन्दू सगार' तथा कनकता समाचार क बार म भाषण म्निाय जा गवन है।

गन्धम्यान म पत्रकारिता पर भी व निग्र मछन है।

बिनीन

बनारसादास

( ८२ )

कारोजाबाद

१७ १ १९

प्रिय भाई पृथावनदास जी

बन् । बामात्र पहना तब अभिशाप है। नुम है—और मैं मुत्राग्नि बन गया। मायन अनामिया या रक्तानना क कारण पुरा म मूत्रन आ गई। रक्तता बन् है। Liver Extract क Injections लिय जा र् है। चिन्ता की कोई धान नहीं। १/ नि म नत्रियन ठाव हू जायगी।

अन बाउ में आप नादा का बिन्तन करना र्ना। अम समन क्रन का ब्रज मछन क त्रिय चिन्ममरणाय बनाना है। बगन पक्षमी म रामनवमा नर का एक मान्त्रियक तथा मास्त्रुनिर कायक्रम उना सना चान्ति। बवन मधुगा म ही नरा काराजाबाद र्ना मनुग्री, अना अनीमन् स्त्र्यानि म मान्त्रियक नमव जान ०१ चान्ति। य नमव बम म बम मर म १। नान मर म ब्रजवामा बर ११ नरा मवन।

१ समन व्याख्यान माना

२ नामगाग क मुन्त्र म्यना म गाष्ठिया।

छात्र छात्र दुक्ता का प्रवान।

४ स्मन्त्रिधिन क्षमिास्न ग्रन्था तथा स्मृति ग्रन्था री नयागी।

५ मयानगा नागा का मण्डन।

स्यानि विषया पर विचार कीजिये।

ममम उन्मग बाज नात मग्र है। अच्छ कायकनात्रा का नुगना है। यत्रमाना का भी मग्र है। स्वन्त्रिधिन री का आद काय नरा बगन क्रनु म पूरा कर र्ना चान्ति। री प्रसागवार नाम्ना ना रा मर पत्र भेजा है रि र एव भी मय न्यात्र स्त्रिनी बाव मन्त्रिधिन का भत्र न तादि पत्रा क मन्त्रिधिन का काम मुन्त्र कर र्ना जाण। कुन्त्र ना आप का नुगा

यहाँ हमने सामूहिक अभिनन्दन की एक योजना बनाई है। सन्निभ उस पर लिखेंगे। केवल राजनतिक लीडर या साहित्यकारों का ही अभिनन्दन न होना चाहिये—अच्छे कलाकारों का भी चाहे वे किसी क्षेत्र के क्या न हो हम अभिनन्दन करना है।

आपके रिश्तदार श्रीयुत ओत्तम् ने सी एफ एड्मिज पर एक टुकट छपाने का भार अपने ऊपर ले लिया है। जब एड्मिज सन् १९२० में यहाँ पधारें थे, श्री रतनलाल जी के मकान में ही ठहरे थे। श्री लहरी जी को आपका पत्र मिल गया है।

अबकी बार जब आप आगरा जायें तो श्री मथुरादत्त शास्त्री, एम ए पुराना कुष्ट चिकित्सासम ताजगज, आगरे से जरूर मिलें। उनको कुष्ट राग है। अपने घर के Hall को बिजो से सुसज्जित कीजिये। १०-१० रु० में Enlargements यहाँ तयार कराय जा सकत हैं।

बनारसीदास

( ४३ )

प्रिय भाई बृन्दावनदास जी,

काष्ठ मिला। राजभूमि के साहित्योपवन में जहाँ कहीं भी आपको प्रतिभा के अक्षुर दील पड़ें, उन्हें पल्लवित कीजिये। जिन किसी से जो कुछ सेवा सहायता मिल सके लीजिये। यह बड़ा पुण्यकर्म है। जिस पथ पर आप चार पाँच बय स चल रहें हैं वह निस्संदेह कल्याणकारी है।

स्व० हरिशङ्कर जी के पत्र टाइप हो रह हैं। २४ पृष्ठ कल भिजवा दूंगा। नैप भी उमा त्या जात आवेंगे भिजवाता रहेंगा।

पकज जी निस्संदेह बड़े त्यागी नायकता है—पर उनमें विवेक की कमी है। अपनी सामर्थ्य की बाहर के काम में उठा लेते हैं और अपने घर वालों की उनके द्वारा उपेक्षा ही होती होगी। ना प्र सभा से उन्हें शायद १३०) ही मिलते हैं। उनकी पत्नी बीमार है और बच्चा कालेज में पढ़ रहा है। ईश्वर के यही जब विवेक बैठ रहा था पकज जी कुछ भेर स पहुँचे। फिर भी उनका दम गनीमत है। जहाँ लोग कुछ भी दान न करने चाहत वहाँ पकज जी जैसे उदार व्यक्ति का अस्तित्व अत्यंत आशाप्रद है।

वे स्वस्थ रहें और दीर्घ काल तक अपनी साधना कायम रख सकें हमारी यही कामना होगी चाहिये।

विनीत

बनारसीदास

( ४४ )

फीरोजाबाद

२४ १ ६६

प्रिय आई बृदाबनरास जी

बंद ! वन डा० बनारस में मुझे मालूम हुआ कि आप मर अभिनन्दन की बात माच रहे हैं। उसका जल्द पत्र मिले तक मैं ब्रज अभिनन्दन पत्र का आशीर्वाद आपकी सेवा में तथा सज्जन पत्र का भी प्रकाशनाय भज रहा। इस प्रकार हम साक्षात् विचार टकरा गये।

गुण आदरना या Appreciation की मैं ब्रज करता हूँ। पर इस विषय में काम बना चाहिए। 'अस्मिन् मर कोन्मय मा प्रयच्छन्मर धन यत् उरग एव मरान् ब्रजामा—भगवान् कृपा का ही है। मर जम अत्यन्त विनाशित व्यक्ति का कीर्तनाती मित्राई मित्रान का कोई पुण्य नहीं। यदि ब्रजमदन की डाइरेक्टरी आप बना सकें तो वह बड़े काम की चीज होगी। व्यापारिक दृष्टि में और व्यावहारिक दृष्टि में वह मरान् होगी। ताराका व पुन बौध्द में बड़ा फायदा नहीं। हमारे मनमें ब्रज का विभूति व मामन हम सब नगण्य है। ब्रज का मरान्नीय रूप हमारे मामन आना चाहिये गुण धर्म का यही लक्षण है। ब्रजभूमि का हम पुन निर्माण करना है। इस रणभूमि में जहाँ कहीं भी हम हरियानी दीप्ति पद उसका रक्षा करना है। फिर चाहे वह साहित्यिक हरियानी हो या कृषि सम्बन्धी। छुम्भद्यों का प्रामाह्निक मरम प्रथम मित्रना चाहिये। मुच ठा ब्रज मम्मन मित्र चुका है। और अब उसका अन्तीर्ण हो जान का आकाश है।

मधुन ब्रज का साहित्यिक तथा साम्प्रतिक सर्वेक्षण (मर्क) हो जाना चाहिये पर उसका साथ साथ कृषि व्यापार तथा न्याय धर्मों का भी हम नहीं भूलना है। जिस किसी क्षेत्र में जो कुछ अच्छा काम हो रहा हो उसकी ब्रज हानी चाहिये। यदि ब्रज की डाइरेक्टरी तयार कर दी जाय तो भविष्य में वह बड़े काम की चीज बन जायगी। न जान किन्तु व्यक्तियों की कातरणा उसमें न जायगी। और किन्तु का माग प्रमाण होगा।

इसलिए मैं आपसे और आपके मित्रों से कम्बद्ध प्रार्थना करूँगा कि आप राग मर अभिनन्दन न करके ब्रजमदन का अभिनन्दन करें। उस दृष्टि से आप १०-१२ ब्रजमदनकों का समर्पण कर सकते हैं। और उन बरह में मर नाम भी रख सकते हैं। वह का एक मर है ब्रजनाथ नवति

केवलादी जो अकेला खाता है, पाप खाता है। आप मुझ पाप क्या रिलाना चाहते हैं।

जस खायो सब जगत को भयो अजीरन तोड़।

अपजश की गोली दऊँ खात तुरत फल होय।

यह बात किसी दिल जले ने कही थी। सो मुझे तो वमे ही अजीण हो चुका है ?

विनीत

चतारसीदास

पुनश्च —

वसल जी को यह पत्र मैंने पडवाया सो उन्होंने कहा कि इससे बुद्धि भेद ही पैदा होगा। यह भी न होगा, वह भी न हागा। इमलिये जैसा भी आप लोग मुनामिव समझ करें। मैंने अपनी रुचि की बात लिख दी। मरा विश्वास नहीं कि कोई व्यक्ति मेरे अभिनन्दन के लिये चढ़ा दे सकेगा। मागी स्कीम टाइ टाइ फिम्म हो जायगी। फिर भी आप प्रयोग करना चाहते हैं तो करें। हाँ, हस्तलिखित अभिनन्दन ग्रन्थ तो २००) २५०) में ही बढ़िया तयार हो सकता है। मेरे नाम का सहारा लेकर ब्रजजनपद का अभिनन्दन भी हो जाय तो मुझे विशेष आपत्ति न होगी।

( ४५ )

फिरोजाबाद

५ २ ६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

बन्धे ! कृपा पत्र मिला। मैंने बिरजीव बुद्धिप्रकाश को जो पानपुर में इतिहास का अध्यापक है, आप लोगों के प्रस्ताव के बारे में लिखा था। वह भी मुझसे पूणतया सहमत है कि मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ के काय को प्रारम्भ ही न किया जाय। मरी अब भी यही दृढ सम्मति है कि यह 'मुनाह बलग्रन' है। मुझे जतना विज्ञापन मिल चुका है कि उससे तवियत उठ गई है। मैं ईर्ष्या का पात्र नहीं बनना चाहता। जिह् कोर्नि की आवश्यकता हो उन्हें वह अवश्य प्रदान कीजिये। ब्रजभूमि के उस महापुरुष की वाणी का आप क्यों भूल जाते हैं जिसने कहा था—

दग्दिन भर कीन्तेय मा प्रयच्छेश्वर धनम्"

हम पशव्य वाला का धन न देकर दरिद्रा का ही पालन पोषण करना है।





स्वराज्य के सम्पत्तिक मन्त्रालय इस बारे में आपसे भी परामर्श माँगेगा। मरा उससे कोई निजी परिचय तो है नहीं, पर जब अमर उजाला तथा सैनिक ऐसा नहीं कर सकते तो फिर जो कोई भी करे उसी को सहयोग देना चाहिए। भाई यशपाल जी के बहनार्द्र का स्वगमन हुआ गया। यह बड़ी भारी दुःखटना है—व्यथापन्न है। डा० मरग चन्द्र (भनीजे) का पत्र मिला है। उनकी परनी को रक्तहीनता का रोग है—फिक्र है।

विनीत

बनारसीदास

( ४७ )

आजाद शहादत दिवस

फीरोजाबाद

२७ २ १६

प्रिय भाई धृवाचनदास जी,

बंद ! श्री रत्ननाथ जी बसल शायद दिल्ली में आज लौटेंगे। उन्हें पत्र भेजकर आप यहाँ पधार सकते हैं। एक पत्र श्री बालकृष्ण गुप्त जी का भी हनुमानगढ़, फीरोजाबाद के पत्र पर भेजिये। उनका काटले नामा बगीचा भी जरूर देखिये। वहाँ पर वे एक गाँधी-कुटीर का निर्माण कराना चाहते हैं। फीरोजाबाद के पाँच सौ लक्षपतिया में केवल उनका दम गनीमत है। भ्रम विश्वास है कि उनके द्वारा ब्रजमंडल की उत्तम योग्य सेवा भविष्य में बन पड़ेगी।

बजाम इसके कि आप मेरा अभिनंदन करें, आप अपने घर पर एक ब्रज सप्रहालय की नींव डाल दें तो अत्युत्तम हो। आपका भवन ब्रजवासिया के लिये कभी तीव्र बन सकता है। यही बात आप श्री बालकृष्ण जी गुप्त से कह सकते हैं। वे एक इन्टर कालेज जो कोटला में चल रहा है के सर्वोत्कर्षा हैं।

१९७१ की १२ फरवरी से १९७२ की १२ फरवरी तक दीनबन्धु C F Andrews की जयशताब्दी मनाई जावे, इसका आन्दोलन मुझे करना है। आपके रिस्पेन्सर श्री आन्ड्रू ने मेरी पुस्तिका छपाकर बड़ी मदद की है। उस शताब्दी के लिये मुझे जीवित रहना है यद्यपि बारबार बीमार पड़ जाने से कुछ आशंका हो जाती है। जो भी सामग्री भरे पास है उसकी नकल आपके निजी सप्रहालय में रहनी चाहिए। यह कोई बहुत ध्ययसाध्य कार्य भी नहीं है। चित्रा का तो पूरा-पूरा सप्रह आपका रखना ही है। श्री जगन्नाथ लहरी से मैंने फीरोजाबाद सप्रहालय की नींव डलवादी है।

मर्यादी मर्यादाय म गो चारी होरी रहनी है । नमस्स में घरमू  
मर्यादाय का प्रबन्ध बनाना तो बन गया है जो मर्याद अधिक आवश्यक काय  
है— गौर मर्याद । मुद्राविद्ध मर्यादी मर्यादाय Dr Johnson न कहा था—

‘आमन् । त्रिम त्रि में बा । तदीन मित्र नही बना पाता उम त्रि  
का में दयय नष्ट हुआ मानता है । गा ह्य भा नवीन मित्र बनाने रत्ना है— जो  
हमारे काय व पूरक है । एक पत्र था जमनाथ मर्यादी मर्यादाय पीरोजाबाद  
को भी भजिय । त्रिजोय नरम म मित्र नष्ट हुआ । ॥ मार्ग का विद्यालय  
जी १ आगर बुद्धाय है पर मर्याद पहुँचना बहुत मुश्किल है । आगर ॥ मरी  
पुत्री का आपरगत हान बाता है, विनिन है ।

त्रिनीत

जनारसादास

( ४८ )

पीरोजाबाद

१३ ३ ६६

प्रिय भाई बुद्धासनदास जी,

आपका पत्र मिला । यदि आप बाम्बय म विद्यालय म मित्रता  
चाहते हैं तो यहाँ आइय और बाता बुद्धासन आकाश म मित्रिय । ३ यहाँ वन  
आय व और अगल गविदाय मर्याद । व बाम्बयन थी बाताका मुस  
व यहाँ टहरेग ।

जनारसादास

( ४९ )

पीरोजाबाद

१३ ४ ६६

प्रिय भाई बुद्धासनदास जी

वन् । अम्बय ज्ञान दुत भी मैं त्रिमत्री मर्यादाय की सेवा म उनम  
निवन्धन करने व त्रिय मोटिय म गया था । जा कुछ मैं वन माय म नथी  
है । त्रिमत्रीय मर्याद का निज का भवन वन नक बावू म आ जायगा ।

वि० नरम को बाई अच्छा मर्याद मित्र जाय ता मैं भा २ ६ त्रि  
व त्रिय मधुग की यात्रा का बाता माच गचना है । अम्बय मर्याद जीवनर  
मुनिमित्र बाट व अधिगामी अधिकाय थी बन्धुनाथ अग्रनाथ मरे पाग  
पधार ४ । उनका तृत्तान शायद गविदाय व मनिन म छाया । कृपया पत्र  
लीजिय ।

ताम्रगज न Old Leprosy Hospital में थी मथुरादेन जी पाण्डे जी रहते हैं। उनको पुस्तिका भी छपवा दी है वभी आगरे जाना हो ता उनस जरूर मिलिये। श्री आचार्य जी मुझसे मिलने आने वाले थे, पर मैं खुद ही उनकी मीनिंग में हाजिर हो गया। मैं उनकी सहृदयता का कायल हूँ।

विनीत

बनारसीदास

( ५० )

फीरोजाबाद

१५.४.६६

प्रिय माई धुन्दाबनदास जी,

धन्ने। काठ जभी मिला। यदि वभी बम्बई जाना हुआ तो अवश्यमव श्री रत्नछोडदास जी के प्लेट पर चाय पिजेंगा। उह मेरा आशीष कहिये। आशा है कि आपके घर वालों की चिकित्सा ठीक तरह हो जायगी। इट पता करूँ परवर को मैं भी महत्व नहीं देता।

श्री आचार्य लक्ष्मीरमण जी के सामने जा भाषण मैंने दिया था, उसकी प्रति अलग से भेजता हूँ। आप भी आचार्य जी को उसके Support में लियें। जौनपुर नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी श्री बटुकनाथ अग्रवाल यहाँ एक दिन के लिये पधारे थे उन्होंने ७ शहीदा की मूर्तियाँ स्थापित की है। और आजाद की जीवनी दो जिल्दों में छपाई है। मूल्य ८ रु० है। मिशनरी स्प्रिंट के आदमी है। उहे पत्र लिखिये जरूर जरूर।

विनीत

बनारसीदास

( ५१ )

फीरोजाबाद

प्रिय माई धुन्दाबनदास जी,

धन्ने। मैं १७ ता० की शाम को यहाँ आ गया। विस्तृत पत्र तो फिर लिखूँगा, इस समय दो एक आवश्यक बातें लिखे देता हूँ।

१ कृपया ब्रज भारती की फी लिस्ट में आप श्री राधेश्याम वर्मा 'रामा', टैलाफोन एक्सचेंज, बुलन्दशहर का शुभ नाम लिख लीजिये। बजभाषा बाबू का बड़े ही गधुर स्वर से वे पाठ करते हैं। विमूर्ति हैं।

२ बल यहाँ आध घन्टे के लिये श्री भक्तदशन जी (यत्री) पधार रहे हैं। उनसे अपने संग्रहालय की रक्षा के विषय में बातचीत करूँगा। लिखी ॥

मैं एक लेख 'अपनी ब्रजभूमि में ५ वर्ष निवृत्ति चाहता हूँ। मुझे घेराव इस बात का है कि मैं पूरे ५१ वर्ष गान्धेय ब्रजभूमि का लौटा। १८९३ में निवृत्ति तो १८६४ में लौट गया। इस लोका को मित्रवत् ब्रज के सर्वाङ्गीण निमाण की एक व्यावहारिक योजना तो बना ही लनी चाहिये। जनगणना में मातृभाषा, "ब्रजभाषा" अवश्य अवश्य लिखाई जाय। दूसरा हर जिस बात का है? आन्दोलन में जान लेने का दूसरा उपाय है ही क्या? इस पवित्र कृत्य में मनोबल जिस बात का? हम राष्ट्रभाषा हिन्दी को कोई हानि नहीं पहुँचनी। काश्च में हिन्दी लिखा जा सकती है। जो लाभ ब्रजभाषा का मातृभाषा लिखान में भी डरत हैं या मनोबल परत हैं उनकी भाटी अलग पर मुझ तरफ आता है। बस्यय का भूत गदा करने हैं। ब्रजभाषा तो खड़ी बोली की माँ है। उस सौत समझना अन्तर्गत नम्यर की नाममझा है। आपका पत्र इतना प्रबल है कि उसकी विजय निश्चिन्त है।

विनीत  
बनारसादास

( ५५ )

४ साजपत कुञ्ज सिविल लाइन्स

आगरा

२५ ६ १६

प्रिय भाई बंदाबनरास जी,

बन्धु ! श्रीयुक्त वासुदेव जी गुप्त तथा श्री बमल जी यहाँ पधारे थे। आप शायद फिराजावाद नहीं जा सकें।

श्री हरप्रसादगुप्त जी के रिक्कार श्री ज एन गुप्त हैं। क्राफ्ट्स ताजमहल आगरा यहाँ Piles के Operation के नियम पढीये म रहें। उनमें कुछ सम्मरण लिखाय जा सके है।

मेरी डाक्टरजी जीव जायन्त में समाप्त हो जायगी। आपका तो पानी बरमाने पर—कुछ ठन्का हो जान पर ही—ही सजना है। फिर सूचित करेंगे। स्व० डा० अग्रवाल के सुपुत्र पृथ्वी अग्रवाल की निधिय कि वे पूर्य पिताजी के पत्रा का छपा दें। राजाजार्ज के बगीच के मामल में हम लागा के प्रयत्न सफल हो जायेंगे। इन्जीनियर ने उह बुनाकर कहा कि हम थोड़ी भी जमीन लेंगे, अपनी आरम हटाने कर देंगे आप मुआवजा कुछ भी न मागें। यह मौखिक वार्तालाप हुआ है। निम्नी हर्ड चीज अभी नहीं मिला। आप इस धार में राजाबाबू में ही तलाश कर लीजिये।

“ब्रज मंडल म ५ वष” Talk म लिख देना चाहता हूँ ।

नहरू संग्रहालय वाला की दृष्टि मेरे संग्रहालय पर है । अपने संग्रहालय के भविष्य के विषय म चिन्तित हूँ । इतनी बहुमूल्य सामग्री का सदुपयोग होना चाहिये ।

बनारसीदास

( ५६ )

४ लाजपत कुंज, सिविल लाइन्स

आगरा

३ ७ ६६

प्रिय भाई बंदाबनदास जी,

बंदे ! मेरे लिये आपको किसी म भी हाथ पसारना पड़े यह बात मुझे बहुत खटकती है । खाम तौर पर इसलिये भी, कि मैं अपने अभिनन्दन को बिल्कुल ही निरर्थक चीज मानता हूँ । उस अज्यापार समझता हूँ । अज्यापार का किस्सा आपने पत्रतन्त्र मे पढ़ा होगा ।

No a thousand times no I entirely disagree with this ABHINANDAN business that leaves me cold

अभी तब हम हिंदी वाले स्व० रामानंद झा के लिये कुछ भी नहीं कर सक, जब कि उन्होंने तथा उनके कुटुम्ब न १ लाख का घाटा विशाल भारत म सहा था । शहीद गणेश जी के लिये जो कुछ भी किया गया उसका वृत्तान्त आप जानते ही हैं । भी बाइ चित्तामणि की पुण्य तिथि १ जुलाई को थी । उह भी लोग भूल गय । तब फिर मेरे जैसे नाचीज आदमी को सम्मानित करने की बात लगा है । It is worse than useless positively harmful

अपनी स्पष्ट सम्मति आप स क्या छिपाऊँ फिर जैसा आप समझें करें । टायटरी जाच समाप्त हो गई । आपरेशन तो कुछ टड्क हाने पर ही होगा ।

विनीत

बनारसीदास

( ५७ )

२१, प्राइवेट बाइ, एस० एन० हास्पिटल,

आगरा

६ ७ ६६

प्रिय श्री बंदाबनदास जी

बंदे ! मैं उन सभी यजमानों स, जिनसे आपने मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ म लिय पत्रा भागा है, प्रार्थना कर दी है कि वे इस (अज्यापार) के लिये एक

पैसा भी न दें। मैं दम्भ नहीं करता पर इस अवसर पर अपने हृद्गत भावा का छिपाना भी नहीं चाहता। मेरे नियम किसी का हाथ पगारना पड़े यह विचार ही मेरे नियम अत्यन्त कष्टप्रद है। इससे सिवाय मुझे तो बहुत काफ़ी विनाशित मित चुका है। मैंने यज्ञपात्र जी बालकृष्ण जी बगन जी, आठम राजाबाबू और शम्भुनाथ जी का स्पष्टतया अपनी दृष्ट मम्मति नियम भेजा है और उससे मेरे मन पर का बाध उतर गया है। आप जैसा मित्रा का गुण साहसना की मैं कद्र करता हूँ पर इस उम्र में किसी गन्तव्यहीन का निकार नहीं करना चाहता।

आप सब अभिनन्दन साथ निवासित मेरी सवायें आपका अपित है।

दिनीन

बनारसीदास

( ५८ )

प्रिय भाई बृन्दावनदास जी

बन् ! मैंने अभी यज्ञपात्र जी का पत्र भेजा है जिसका सारांश यह है 'I have all along been opposed to the idea of presenting me an अभिनन्दन साथ and to day I am more than ever convinced of its positive harmfulness इससे गन्तव्यहीन भा उत्पन्न हो सकता है और मेरा अहित होगा। साथ ही मैंने भी भ्रम उत्पन्न होगा कि चीज जा स्वयं ही इस ब्रह्मपूजा का प्रासादन रहे हैं। Please give up this mad adventure at your earliest

यदि आप सब का अभिनन्दन करें तो मैं भी आपका भ्रमपूर्ण महयोग दूंगा और तदर्थ १०१) रुपया भी भेंट कर दूंगा। लेकिन अपने अभिनन्दन का विचार ही मुझे सख्त नापसन्द है। आशा है कि आप साथ मेरी हृद्गत भावनाओं की कद्र करेंगे।

मेरे आपराध में अभी कुछ दूर है। आशा है कि वह मफ़्त होगा, पर कुछ भी कम न हो मैं विस्तृत निश्चित हूँ। ब्रह्मपूजा के लिए आप योग प्रयत्नशील हैं इस आशा के साथ मैं परतार यात्रा करना चाहता हूँ। यदि कुछ समय और भी मिल जाय तो ब्रह्मपूजा की सवाय में ही उन बिना दूंगा।

अप्य मायिका का भा एसा ही पत्र निम्न रहा है। राजा बाबू का भी निम्न दिया है।

बनारसीदास

( ५८ )

४, साजपत कुज, सिविल साइंस,

आगरा

८ ७ ६६

प्रिय श्री घृदाबनदास जी,

बन्दे ! मैं बत्त सबरे यहाँ अपनी डाक्टररी जाँच के लिये आ गया था । शायद अभी ५, ६ दिन और भी ठहरना पड़े । अस्पताल के २१ नम्बर प्राइवेट वाड म ठहरा हुआ हूँ ।

एक सन फीरोजाबाद म आपके लिये लिखा था । पर वहाँ ही पड़ा रह गया । मधुसूदन जी चतुर्वेदी के काय का उत्तम प्रशंसा थी । उनकी ग्रन्थ माला के ६०० स्थायी ग्राहक हैं । यह करिश्मा उन्होंने कर दिया है । इधर के जनपद म यह बहुत कठिन है ।

स्व० हरिश्चर जी के स्मृति ग्रन्थ के विषय म व्यावहारिक काय यह होगा कि रत्नमुनि जैन कानज तथा सक्करिया कालेज की पत्रिकाया के Special हरिश्चर अब निकाल लिय जायें । व दोना कालेज दो दो हजार स्व कर सकत हैं और वहाँ की प्रधानाचार्याएँ हरिश्चर जी की पुत्रभूएँ ही हैं ।

उनके अनिरिक्त जो दा शोध ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं उनम मदद दी जाए । आय मित्र का विशेषाङ्क भी निकाला जा सकता है ।

अभी तक केवल एक सौ रुपय आयमित्र के प्रेस की ओर से हमारे ट्रांसिस्ट श्री जय किशन ८७ गुमा वीलोनी दिल्ली ६ मे भेजे गये हैं । 'जा बनि आव सहज मे ताही म चित देख' यही हमारा मोटो होना चाहिये । आपन तो पचास रुपय दे ही दिये थ ।

अपने अभिनन्दन के विषय म मैं क्या कहूँ । जो भी आप लोग उचित समझें करें । Some how I cannot reconcile myself to the idea of my अभिनन्दन । यदि ग्रन्थ का मुख्य भाग ब्रजभूमि की सर्वांगीण उन्नति का अर्पित कर दिया जाए और मेरे बारे म कम से कम रहे तो मैं उसे सहन कर सकता हूँ । अत्युक्तिमय प्रशंसा बिल्कुन फालतू चीज है । यह मैं मान सकता हूँ कि मेरे द्वारा छोड़ी बहुत मेवा हुई है पर उसका व्यौरा इकट्ठा करन का वक्त अभी नहीं आया है । हम लोग—मेरे जैम आत्मी—आते हैं और चले जात हैं पर हमारा जनपद—ब्रजभूमि—ता रह्यो ही । Let us concentrate on



ब्रजमाला and its problems, अभी मैं एक Interview थी कावच मिश्र कमन हरिजन निवास Kingway Delhi 9 का भेजा है। उसकी typed copy में टाईपिस्ट द्वारा आपका नाम परामर्शाय पहुँचिगी—अभी छपन के नियम नये—छात्रोंग ता कमन जी त्रिमम उक्त कुछ पत्रा शायद वहीं में कुछ मिल जाय। आप और दुब जी वस इन २० स्थितिया पर हा मरा आशाएँ कद्रित हैं।

अमा अमृतलाल जी चतुर्वेदी व घर तक टहन कर आया है। उनका सर्वोत्तम रचनाआ व सर्वोत्तम जन मी मी शृङ्गा में छपाय जा मरत है। मर किताबें ता छपन में रनी।

मध्य प्रश्न सरकार में विद्या पनी करके अब पुरस्कार व नियम का ठीक कराना है। महाराज आरछा न उस Alternate years में ब्रजभाषा तथा छडी वाली व लिय स्वभा था। उस नियम का बन्दन का काद भी नतिन आधार था काग मर प्रश्न सरकार व नाम बन्नापि नन्। अरधमन महाराज माह्व ता इस ब्रजभाषा व लिय हा स्थना चान्ति थ पर मैं हा जिह करके उस एक मान ब्रजभाषा और दूसरा मान लही बानी करा लिया था अब मध्यप्रश्न सरकार में उस नियम का भी लाह लिया है। मर अनाचार का विरोध जगह जगह में कराना चाहिए। मर बीम पत्र पहुँचिगी ता शायद शासन के काम पर जू रेंगेगा।

आप बद्रीनाथ जी यात्रा पर जा रह हैं यह पत्रकर मर पुत्रा। बहुत मुश्किल प्राकृतिक स्थान मुना जाना है। यशपान जी भी गयाथा तक जा मर है।

मरी पुस्तक ग्रिम काशकित्त का आमचरित छप रहा है। मरन नी छापगा। भूमिका उसकी कस्त लिखा भन रनी है। युवक का शरीर एक भी छप मर है। कात्या काचित्त की पत्रिका का विनायाक भा छपगा। था बानरुण गुप्त की कृपा में काग द्वारा पागजाबात में अगर १ घंटे में आ गया तथा पैसा की बचन मर गया।

इस बीच में बाबा पृथ्वामिह आजात ( पात्र सावर जिता पत्रियाला ) के निकट मरक में आया है। What a marvellous Man with a capital M Do make a point to pay your respects to him personally His आमचरित कानि पयकापथिक is a great book and बाबा मुसम उग्र मर महान वर हैं पर काफी स्वम्ब हैं। He can make a century उनका पथक बनान व निय प्रयत्नगीन है। उनमें वर उम्ब तिववाय भी है। कानि पय का पथिक ता अभी अप्राप्य है पर पान

मडल, काशी ने राहुल जी द्वारा लिखित उनकी जावनी छापी थी। मूल्य ४ रु० होगा। उसे अवश्य पढ़िये। स्व० जुगलेश का पता लगवाइये। वे पहिल सम्मेलन प्रयाग में काम करते थे। बहुत बढ़िया ब्रजभाषा लिख लेत थे। शायद डा० रामप्रसाद त्रिपाठी उनके बारे में कुछ बनला सकें। उन्होंने अपना काव्य ग्रंथ स्व० सरदार नर्मदाप्रसादसिंह को अर्पित किया था।

अपने घर के Central Hall को चित्रों में सुसज्जित कीजिये। बल्देव गुरु तथा राष्ट्रपति का चित्र ५, ६ रुपये में बन जायगा। बनवा दूंगा। ब्रज के लेखका, कविया, पहलवानों तथा अन्य विषयों के पाताझा के चित्र आपके संग्रहालय में रहने ही चाहिये। अलख जी ने अपने पिताजी का चित्र मुझे अभी तक नहीं भेजा। अभी ७½ बज रहे हैं। बन्धि ८—और मैं राजाबाबू की कार की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उनके उपवन के दशन एक बार फिर भी करन हैं। अमृतलाल जी उनसे कह आये थे। स० ना० बदरत्न के समस्त ग्रंथों का संग्रह छप जाना चाहिये। छाँयपुर में भी उनका मंदिर का जीर्णोद्धार हो जाए, तो क्या कहना है। शेष फिर।

विनीत  
बनारसीदास

( ६० )

४, लाजपत कुंज सिविल लाइंस  
आगरा  
२४ ७ ६६

प्रिय श्री धृत्वादनदास जी

प्रणाम। आपका २१ जूनाई का कृपापत्र मिला। उत्तर प्रदेश साहित्य सम्मेलन के उद्धार के लिये जो आप कर रहे हैं वह बहुत ठीक कर रहे हैं। उस जीवित जाग्रत सस्था बनाना ही है। वहाँ काम करने वाले कौन सज्जन हैं, उनके विषय में कुछ लिखिये।

मेरा आपरेशन अभी स्थगित हो गया। अब आपरेशन अगस्त के दूसरे सप्ताह में होने की आशा है। डा० जगवान जी की पुस्तक पृथिवी पुत्र की समीक्षा लिखिये। वह तो हमारी वाइजिट है। ब्रजमंडल के सर्वांगीण विकास पर हम अब पूरा पूरा ध्यान देना है। क्षेत्रीय विकास ही हमारा मुख्य ध्येय है। आप सबका मैं बहुत-बहुत ऋणी हूँ।

विनीत  
बनारसीदास

( ६१ )

४, लाजपत कुल

आगरा

८ ३-६६

प्रिय श्री कृष्णदासजी

बंद । कृपापत्र मिला । नन अपनी विनम्र सम्मति आप मक्का निम्न भेजी—यह मरा कनव्य था —जिसे जमा भी आप उचित मंजूर करें । हमारा मुख्य कनव्य इस समय ब्रज जनपद का महाद्वारा उन्नति करना है और मर धु व्यक्तित्व का उदयाग यन्त्रि नय किया जा रहा है मैं अपने उपर कुल भा महन कर लूंगा । मैं सम्मन य अनुभव करना चाहूँ कि मय बहुत विनापन मिल गया है । भाद आम् व उन्नति का मैं वायल हूँ । मैं घायल का पत्र भेज दूंगा ।

विनाय

बनारसीदास

पुनश्च —

पानी कुछ पढ़ गया है ठक भी हो गई है । अब पाय आपरान होगा । डा० राजमान अचल कृष्ण मकर ३ । गांधी जी म म क्या मीय मकर है ? इस विषय पर विवादाद् निबानन क निय मैं था पक्क का म कहा है ।

बनारसीदास

( ६२ )

४, लाजपत कुल

आगरा

२६ ८ ६६

प्रिय श्री कृष्णदासजी

बंद । कृपापत्र मिला । आप त्रिन प्रकार मक्षिद नन म्मन है उस म्मरर ह्य दाना है—मनाथ भी ।

Please continue your missionary work as vigorously as you have been doing so far My operation takes place on 20th and I have every hope that it will succeed I have, however decided to retire now and enjoy my life of course it will be an enjoyment with a Purpose

ब्रजभूमि की महाद्वारा उन्नति क लिए म्मन है कि म्मन का मुद्र म्मन करें । अब का का दारादारा यात्रा क अवसर पर वाटन

जहर जावें। वहा भाई बालकृष्ण जी का बडिया बगोचा है, जिसके आम गनवध बीस हजार म बिके थे। भाई बालकृष्ण ने फीरोजाबाद मे घर से एक मील दूर एक उपवन की नीव डाली है। उस पर वे ५० हजार व्यय करेंगे। स्नानगार भी उसमे हांगा। उह बघाई का पत्र सो भेज ही दीजिये। सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी बाबा पृथिवीसिंह यहाँ पधारे थे। फीरोजाबाद गये हुए हैं। मिलने लायक आदमी ह। चि० आउम् स बहुत काम लिया जा सकता है। उनमे क्षमता है।

बिनीत  
बनारसीदास

( ६३ )

फीरोजाबाद  
१०-१० ६६

प्रिय भाई कृदावनदास जी,

बदे ! मुझे इस बात की शिजायत है कि अपनी अस्वस्थता की कोई सूचना आपने मुझे नहीं भेजी। मैं इधर उधर से सुनता रहा कि आपका आपरेशन हुआ है। मधुमेह मे शक्कर त्याज्य हो जाती है सो आप उसे छोड ही दीजिये। प्रातःकालीन भ्रमण आपके लिये अनिवार्य आवश्यक है। डाक्टरों के आदेश का पालन करना चाहिये।

मैं अब मधेरे ४ फर्लाङ्ग टहल लेता हूँ। स्वस्थ होने म तीन महीने ता नग ही जावेंगे।

भाइ चन्द्रगुप्त जी का कहना है कि मैं खुद ५०/६० पृष्ठों का आत्म-चरित इस ग्रन्थ क लिय लिख ७०० पर सयत भाषा मे अपन गुण दोषा का विवचन जस न कठिन काम है। आत्म विनापन म सबथा दूर रह कर अपनी शरय बिकित्ता खुद ही करना कोई आसान काम नहीं।

चि० बुद्धिप्रकाश १२ ता० की छुट्टिया म घर या रहा है वह कुछ लिख सकगा। आप सब का मैं बहुत श्रेणी तथा कृतज्ञ हूँ।

बिनीत  
बनारसीदास

( ६४ )

फीरोजाबाद  
११-१० ६६

आशीष।

पत्र मिला ! आप लोग श्रम कर रहे हैं। मूय पर अहसान का बोझ सत्ना जाता है। आप सबका श्रेण कस चुका सकूगा ?

मेरे नाम के मगरे यदि ब्रह्मभूमि की कुछ मवा न जाय तो क्या गर  
मिए मव म अधिक हृष का मान हागी। हम बाभागी म मुप अपन विम्वन  
मानियक कुटुम्ब क स्नह का पता नम गया। विनन व्यक्ति मेरे स्वम्य हा  
जान के लिए चिन्तित रह रहे हैं। हममे मेरे मन म नीप जावन की प्रवत इच्छा  
हानी है। पर मैं जीवन का क्या नहीं जानता। अब मौख रहा हूँ।

आत्म चरितामर ५० पृष्ठ विज्ञान का प्रयत्न करनेगा।

विनाश

बनारसाश्रम

( ६४ )

एम एन अस्पताल

आगरा

प्रिय भाई श्रीदासदास जी

कनकन म श्री सीताराम आ मकमरिया तथा श्री भागारय कानाहिया  
म न मरानुभाव मेरे यत्रमान हैं और उन्नि मर अनक पता म यथ मरानुपता  
प्रदान की थी।

यदि आप और पत्नीजी कनकन की यात्रा करे तो नान नगर  
हवन वही म आरका मित मवन है।

इस वगान वत्र अभिनन्दन ग्रन्थ आप निरन्तर मर्वे तो कुछ बात भा  
है। मुम ता स्वयं का अभिनन्दन वग भाग रचना है।

मि के एक गायकता नरिन्दर आ क पता न्याय की नवमान  
आवकन यों कर रहे हैं।

स्व० बामुन्दर न्याय जी अवकाश क पथों का छान क रिग आप ननक  
मुत्रा पर जा रहें। श्री पृथ्वा अवकाश तो पत्र क ननर भा न्याय न।  
मैं उनक नगमग भी पत्र मन्दन पत्रिका म छता नि य। आप भी मकन  
नत्र मत्र तत्र विधुने पत्र है।

श्रीराम न्याय जी की पुत्रिया क पाम वका वना म वटन न पत्रा का  
मन्द अवधमियत पडा है।

विनाश

बनारसाश्रम

( ६६ )

फीरोजाबाद

२५ १० ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

क्या ही अच्छा हो यदि अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए मर मग्नहालय पर दुबे जी ( श्री रामशचन्द्र जी दुबे ) एक छोटा सा लेख लिख दें । परन्तु इसके लिए उन्हें किसी रविवार को यहाँ आना होगा ।

आत्म चरितार्थक ५० पृष्ठ तयार कर रहा हूँ आपने जो यत्न प्रारम्भ किया है वह सफल हो तदर्थ प्रयत्न करना मेरा कर्तव्य है, यद्यपि मैं उसका पान नहीं हूँ । चित्र छाट लिए हैं भेजूंगा ।

हरिशङ्कर जी शर्मा की ३०० चिट्ठियाँ टाइप होनी शिल्ली भेज दी हैं । एक टकित प्रति आपके सग्रहालय को भी भेंट कर दूँगा । मधुसूदन जी आगरे में मिलेंगे ।

बनारसीदास

( ६७ )

फीरोजाबाद

२८-११ ६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

बन्ने । मैंने जो पत्र आज डा० कमलेश अग्रवाल का भेजा है उसकी नकल आपकी सेवा में अर्पित है । उनका पता है राम लक्ष्मण भवन, पथजारी, बेन गज, Agra उनको २८ नवम्बर को पी एच डी की उपाधि मिलेगी । यह बहुत ही अच्छा हुआ । दुभाग्यवश उनके गाइड डा० हरिशङ्कर शर्मा अब इस समार में नहीं हैं ।

उत्तर प्रदेश की राजनीति में जो भूकम्प आया हुआ है उसमें श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य जैत ब्रज भक्त की भी स्थिति खतरे में पड़ गई है नहीं तो मैं ना कविरत्न के मन्दिर के जीर्णोद्धार के लिये उसे कुछ काम लिया जा सकता था । उन्होंने शहीद अन्नफाट के भतीजे को ५०) महीने की पेंशन शिल्ली दी, यह बहुत अच्छा किया ।

कृपया आप मरी आर स श्री लक्ष्मीरमण जी को हम पुण्य काय के लिये धन्यवाद भेजिये ।

भाई यशपाल जी की माता जी का स्वर्गवास हो गया है । व ८० वर्ष की थी । उनका जाने का वक्त था, फिर भी मातृ विछाड़ दुपटना है ।



तथा श्री पक्क जी जीर सर्वोपरि श्री वृंदावनदाम जी ( अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल, मथुरा ) को पूण सहयोग देकर स ना के ग्रन्थ के पुन मुद्रण के लिय प्रयत्नशील हा ।

आप यदि उचित समझें तो धाघुपुर की तीययाना करके स ना के मंदिर पर कुछ पुष्प जरूर चढावें । एक प्रायनापत्र आगरा वाला की थोर से जरूर जाना चाहिये कि धाघुपुर वाले उनके मंदिर का जीर्णोद्धार करा दिया जाय । श्री लक्ष्मीरमण आचार्य को इस बारे म लिखा जाय ।

यदि मेरा स्वास्थ्य ठीक होता ता मैं अवश्य सेवा म हाजिर होता पर यात्राएँ मेरे लिय अत्यन्त ही कठिन हैं । गैर हाजिरी के लिय क्षमाप्रार्थी हूँ ।

अपने ग्रन्थ को छपवाने के लिये विनोद पुस्तक भण्डार वाला से कहिय । व शायद कुछ रुपये माँगेंगे । प्राय ये लोग ऐसा ही करते हैं । अगर स्पष्टा का प्रबंध आप कर सकें तो बोजिये । शोधग्रन्थ या ही पढा न रह जाय । पुन पुन आपको हार्दिक बधाई भेजता हूँ । लोहामंडी जाकर भाई विद्याशङ्कर जा को कुछ फल अवश्य भेंट करें ।

विनीत  
बनारसीदास

( ६८ )

फीरोजाबाद  
१६-१२ ६६

प्रिय श्री वृंदावनदास जी,

माननीय शिक्षामंत्री उ प्र को लिखे पत्र की प्रतिलिपि सलग्न है ।

जो ड्राफ्ट गुरु जी ने बनाकर भेजा था उसका कुछ सशोधन करके मैंने यह पत्र लिख दिया है और आज सीधे लखनऊ भेज भी दिया है । नकल गुरु जी को भी सीधी भेज रहा हूँ । विचारे यशपाल जी पर बख्शपात हुआ है । उनके वहनोई का आकस्मिक देहांत हो गया ।

मेरा ख्याल है कि इस परिस्थिति म उन्हें इलाहाबाद फिन्हाल नहीं जाना चाहिये । पौष सुनी २ [मेरा जन्मदिवस] शायद ६ जनवरी को पड़ेगा । अगर जन्म दिवस पर ही उत्सव करना जरूरी समझा जाय तो २४ दिसम्बर के बजाय ६ जनवरी ठीक रहेगी । वैसे कोई जल्नी तो है नहीं । मैं उन्हें इस बारे म लिख रहा हूँ । वे पहले स्वस्थ चित्त हो लें, उसने बाद अ य बातें साची जा सनती हैं ।

विनीत  
बनारसीदास



पुनः—

आप मध्याह्न स्वर्ग्य वनमञ्ज आगम का उत्तर आगम कमिन्तरी  
पत्र के लिए कुछ सुभाव भेज गये हैं। वे आपका विशेष भा।

प्रतिनिधि पत्र जो चतुर्वेदी जी द्वारा गिन्यामन्त्री को भेजा गया  
मया धं,

श्री गिन्यामन्त्री महादेव

सचिवालय

उत्तर प्रदेश सरकार

लखनऊ

श्रीमान्

महोदय निवेदन है कि मैं बहुत वर्षों से गुप्तार श्री भगवान् दत्त  
चतुर्वेदी (मधुरा) से व्यक्तिगत और पर परिचित हूँ। वे एक बड़ा बृद्ध गान्धिय  
का हैं और श्री गान्धी जी तथा स्वतन्त्रता के लिये उनका अमाप्य अग्रिम  
है। उनकी मृत्यु तथा पक्ष का स्वतन्त्रता के लिये वे प्रतिष्ठित पत्रों में प्रकाशित  
होना चाहती है। स्वयं मैं विज्ञान भवन में उनका मग्न हूँ।

अन्य बात उनका आशुपत्र में उनका कविताओं का मुद्रण का श्रीमान्  
भा मुद्रण प्राप्त हुआ है। उनका आशुपत्र है और प्रमाण गुण भी। श्री भगवान् दत्त  
जी का गम्भीर जीवन आशुपत्र के लिए ही अर्पित रहा है।

उनका सम्मान करके उनका प्रमाण सरकार स्वयं अपने का श्री  
गौरवान्वित करोगी।

पारोक्षादास आगम

६ १० ६६

विनीत

बनारसीदास

धुनगुप्त मन्त्रालय

( ६८ )

पारोक्षादास

१० १० ६६

प्रिय भाई चतुर्वेदीजी,

आपका पत्र दृष्ट कर प्रीति में भाग्य नामक पत्रिका निकालने हैं  
त्रिमता कृष्णकर विद्यालय अभी जानने में आने निराशा था। उसकी  
प्रति पात्र है मित्रवाङ्मय। अपना आशुपत्र पर वे भाव सम्पत्ति जै

(बुन्देली का) विकासना चाहत हैं और उसवे लिय मैंने उह कुछ परामश भेज हैं। नकल आपको भेज रहा हूँ। क्षेत्रीय विनास मही हमारा कल्याण है। हमका मतलब सरोण दृष्टिकोण को विवसित करने का हर्गिज नहीं है। उदाहरणार्थ 'भूमि बटन' का सवाल लीजिये। यह अन्तर्राष्ट्रीय है। केवल खम्बल तथा जमना व खारा तक सीमित नहीं। अमरीका म भी भूमि बटन का सवाल मौजूद है। प्रेसीडेन्ट आइजन होवर ने उस पर कहा भी था।

बुन्देली लोक सस्कृति अक ब्रज लोक सस्कृति अक का पूरक ही हागा। यह भी अतजनपदीय परिपद के दायरे म आता है।

मरे अभिनन्दन ग्रन्थ मे ब्रज के लिय जा पृष्ठ दिय गय हाग व ही लाभदायक होगे। उनके Reprint स पुस्तिका तयार हा जानी चाहिये। मरी प्रशमा के जो पुल बाँधे गये होगे, डाक विषय म क्या कहूँ। सुप्रसिद्ध अंग्रेज लेखक H G Wells की उनकी ७० वी बपगाठ पर जब अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया (या अभिनन्दन ही किया गया) ता उन्होंने अपनी बाल्यावस्था का एक विस्सा सुना दिया। जब वे छोटे बच्चे ही थे तो उनकी घाय रात शुरू होत ही कहती थी 'Henry it is time to sleep now' ता मरे भी रिटायर होने का वक्त आ गया है, यही अभिनन्दन का तात्पर्य है।

ब्रजसाहित्य मंडल की भूमि के विषय म क्या हुआ ?

छ रूपय की कीमत की पुस्तक 'मध्यप्रदेश और गांधी जी' सूचना विभाग, मध्यप्रदेश भोपाल से जहर मगा सँ। मर भेज बापू का ११ पत्रा के ब्लाक उसम हैं।

सबरे पीने चार घंजे उठकर घाय बना लेता हूँ। फिर इसी प्रकार के पत्र भसीट दिया करता हूँ। कम स कम एक लाख फालतू चिट्ठियाँ तो मैंने लिखी ही हागी।

I burn my candle both the ways  
It gives a beautiful light  
But oh ! my friends and oh ! my foes  
It gives a great delight

ये कविता शायद Lawrence की है। मुझ शुद्ध याद नहीं। किसी से पूछिये। Burning the candle both the ways वाली expression अय पूण है।

यमगान जी पर श्रुती विपत्ति आ गई । उनसे बहनाई का स्वगवाग हो गया । यदि निधि ताराध का ही ध्यान माना जाय तो ६ जनवरी (पीप गुप्त २) क्या न रक्खा जाय । हिंदू टिगाव न बहा मरी जमतिथि है ।

विनीत

बनारसीदास

पुनर—

श्री सीताराम गुरर का विश्व पत्र की मरन मरग है ।

चतुर्वेदी जो द्वारा श्री सीताराम गुरर को भेजे गये पत्र की प्रतिनिधि

बीरोजाबाद

१० १२ ६६

प्रियवर,

बन् । कार मित । यदि मरुति अरु का विचार बहुत अच्छा है । अवाप निराविष ।

श्री विद्यादास व निय विद्यापन प्राय मित ही जान है अनिय मान म न विद्यादास निवापन व प्रम पत्र विचार किया जा करना है पर यही मुक्ति य है कि भारती व भारती अरु प्राय माधायन का वि व ही जान है, इस कारण उन विद्यापन ज्याय मित नहीं मरन । यह मवान मु अवाप गौर बन का है ।

सोच सतृति अर—

आर अभा न उमरा तथा बरियों न मरुत स्थिति करें ।

श्री ज्ञानानन्द गुप्त मरीग श्रीमी

श्री श्यामगुप्त बान्न गड, हमीरपुर

श्री मित्र ज्ञा श्रीमी

श्री विद्वान्नी ज्ञा भाषाव

श्री गुण जी कृष्णवर

श्री द्वाविन जी श्रीमा

श्री चतुर्वेदी जी अनिया

श्री रामदेवबान्निह गान भन्, मुजफ्फरपुर Bihar

श्री स्वत मवाधी निना ( पूरा पत्र तताव करना है )

इन अनिम्न श्री गौगभर निवना तथा श्री माहोर जी न भा परामन उन हैं । विर न वापा न मगा उन हैं । मरुवर की पुगनी पाइना

म कुछ नाम और भी मिल जावेंगे। बादल जी तथा कृष्णानन्द जी से कहिये कि सम्पादकीय मंडल मे वे अपने नाम का प्रयोग कर लेने दें। उस विशेषाङ्क में स्व० डा० वामुदेव शरण जी अग्रवाल का चित्र जरूर रहे। स्व० वीरसिंह जू देव का भी।

श्री बाबू कृष्णबनदास जी ग्रन्थ साहित्य मन्त्र मधुग मे भी सलाह से लोजिय, इन सबको मेरा नाम लिख सकत हैं कि मेरे आग्रह पर आप उह पत्र लिख रहे हैं। २० पैमे का टिकट लगाकर लिफाफा रख दें तो उत्तर पाने म कुछ आसानी होगी। इस प्रकार प्रत्येक पत्र पर ४० चालीस पैम खच हो जायगे। पासल अभी नहीं मिली। आज फिर तलाश कराऊंगा।

विनीत  
बनारसीदास

( ७० )

फीरोजाबाद  
१६ १२ ६६

प्रिय श्री कृष्णबनदास जी,

ब दे। मेरा भानजा [डा० मिथिलेश चन्द्र] यह पत्र आपके पास जा रहा है। बि० नरमी की पत्नी के बाल बच्चा होन वाला है इसलिये मेरी पुत्रवधू को लेकर वह मधुग गया है। नरमी अब Dampier park मे रहता है।

भाई यशपाल जी न ६ जनवरी को वह Function रखता है और श्रीमान् गिरि साहब से प्रायना की है। मुझे शायद २-४ दिन पहिले ही दिल्ली पहुँच जाना चाहिये। ग्रन्थ ६०० आधी पृष्ठा का है यह बात यशपाल जी न लिखी है। इसको तैयार करने मे—तथा तन्त्र साधन जुटाने म भी—आप सबको कितना परिश्रम करना पडा है। मैं भना इस ध्येन से कसे उग्रण हो सकूंगा ?

सम्पादक 'म्बरगज्य' चलन गज आगरा से मैंने आगरा कमिन्गरी पर जनपदीय-अङ्क निकालने का अनुरोध किया है। शायद व कृत् कर। बाज्या कालेज अङ्क भिजवाऊंगा। साँगी की भारती का कुछद्वय अङ्क प्रिया गया। ब्रजभारती के दो तीन पुराने अङ्क श्री महेश शास्त्री गनपुग प्रिया भागन का भिजवायेंगे। वे भोजपुरी के अच्छे कवि हैं। धनत्रयजी के कृत मे सहयोग माँगिय।

यू भी मरदार हम बत कुछ बग्ने के Mood में प्रान्त होनी है। ब्रजसाहित्य महन की आश में एह प्रार्थना पत्र आर्षित गन्धार्ग व निय भाष्य हा भिन्नसाध्य। ना प्र समा आगर का भी मैं यही अनुग्राह किया है।

ता लगूमा में कुछ काय में ना बकिन्न व धांपूर वान मन्त्रि व लिय भी हो जाय ता क्या कहना है। मैं श्री सम्भारमण जी आचार्य का निम्ना ता है।

६) व मूल्य का एक ग्रन्थ मध्य प्रश्न और साधी जा सूचना विभाग M P Govt भागन न छाया है। उनका प्रति जम्मा मगाइय।

डा० वामुन्व शरण जी अवधान व सुधुमा न पया का उत्तर न मेन का बगम छाती है। अवधान जी व तो पत्र मैं छद्मता निय व और मकहा हा पत्र रिस्तर पडे हैं—जिनी जगन में—पर उनका आश विनी का भा ध्यान नहीं। डा० मरयद्र का भा यात्र निताइय। उनका पास बटून में पत्र हैं। श्री मोहन जी का प्रम उह नहा छा मचना।

श्री मोहन जी का मग नमस्त्र बहिय। हम मरका आचार्य वामुन्व शरण जी अवधान व श्रृंग में उच्छ्रण होना है। यथाशक्ति जा निमम बन प, करे। निम्न पास प्रम है व ना बटून पास कर मचन है।

विना

बनारसीनास

( ७१ )

फारोनामाद

२१ १२ ६६

प्रिय भाई वृन्दावननास जी,

बन् । मुझ उत्तर प्रश्न सङ्कार का अङ्कगणिता का पना तनी या निमन कुन जमा ५००) का मरायता प्रान्त का है। पिछता धार जय श्री सम्भारमण जी आचार्य पदारे व ता चुगी का मावजनिव माटिङ्ग में मैं उनमें अनुग्राह किया था कि ब्रजसाहित्य महन तथा ना प्र समा आगरा का आर्षित मरायता निवावे। उमा व कारण वृ पत्रन्धवत्तर चन पडा है। पायन् मका कुछ भी परिणाम न निवन। पर मुझ उमा प्रान्त जाता है नि मम ममय समा पार्श्वी कुछ वर गुजरन व Mood में है। मममवन व हम वत कुछ विगप उच्छ्रता में काम वे। श्री सम्भारमण जी न एक प्रार्थना ता मरी स्वीकार कर ही ली—याना गहीन अपाक व भनात्र का १०) पचास मय में का पौन निता दा। हमक निय मैं उनका कृतन है।

पुराने जमाने से एक प्रश्नावली चली आ रही है—वह अंग्रेजी में है और Indigent मुफ्त साहित्य सेविका को उससे मदद मिलती है। वह निस्सन्देह अपमानजनक है। कोई भी स्वाभिमानी साहित्यसेवी खपरा लेकर किसी सरकार के सामने इस प्रकार भीख नहीं माँग सकता। सरकार यदि किसी साहित्यसेवी को कुछ सहायता करना ही चाहती है तो निजी तौर पर उसकी स्थिति का पता लगाया जा सकता है और सारी चीजें gracefully की जा सकती हैं।

श्री सम्पूर्णानन्द जी ने बिना मेरे वह और बिना मुझे सूचित किये श्रीमती सुधेता कृपलानी को लिख दिया था कि यू पी सरकार मुझे पेंशन दें। साल भर वह मुझे १५०) महीने के हिसाब से मिली भी। श्री सम्पूर्णानन्द जी का आग्रह था कि मैं उसे अस्वीकार न करूँ। फिर वह प्रश्नावली मेरे पाम लखनऊ से आई, जिसका उत्तर देना ज़रूरीजनक होता। इसलिये वह पेंशन बढ़ हो गई। मैं उसके जारी करने के लिये नहीं कहता। मेरा काम तो किसी न किसी प्रकार चल ही जाता है पर दूसरे साधनहीन साहित्य सेवियों की सहायता उनके गौरव की रक्षा के साथ होनी चाहिए। क्यों न इस बारे में आप आचार्य जी को लिखें? इसमें तो पैसे का सवाल है नहीं। उस प्रश्नावली को मसूदा कर देना चाहिये, दूसरा काम और भी ज़रूरी है। देव पुरस्कार के नियम स्वयं ओरछा नरेश से मैं ही बनवाये थे—यानी वह एक वर्ष ब्रजभाषा काव्य पर मिलने का था दूसरे वर्ष खड़ी बोली काव्य पर। चूँकि मध्य प्रदेश सरकार ने ओरछा तथा अन्य राज्यों को विलीन कर दिया था, इसलिये उनकी जिम्मेदारियाँ का निभान का नतिक कर्तव्य उस पर पड़ा।

काफी प्रयत्न करने पर मध्यप्रदेश सरकार ने देव पुरस्कार तो चारू कर दिया पर नियमों में परिवर्तन कर दिया। यह चीज बहुत गलत हुई। ओरछा महाराज काव्य प्रेमी थे—विशेषतः ब्रजभाषा के पक्षपाती—दरअसल वे देवपुरस्कार ब्रजभाषा काव्य पर ही देने के पक्षपाती थे। मेरे आग्रह पर उन्होंने alternate year पर उसे देना स्वीकार किया था। उनके बनाये हुए नियमों में परिवर्तन करने का कोई भी नतिक अधिकार M P Govt को नहीं है। आप ब्रजसाहित्य मंडल के प्रधान की हैसियत से श्री प्रियामाचरण शुक्ल को लिखें। मैं भी लिखूँगा। भाई श्रीनारायण चतुर्वेदी से भी लिखवायें। गरज यह कि हाँका होना चाहिये। यह शब्द शिकार क्षेत्र का है। तीन तरफ से जंगल के बाँके वाले खट्टे खट्टे की आवाज करते हैं तो जानवर घबरा कर चौथी तरफ (जहाँ से आवाज नहीं आ रही) जाता है और वहाँ खड़े शिकारी उस पर निशाना लगा देते हैं।

श्री रामचरण ह्याग्न मित्र का पुस्तक 'बुद्धमित्र' का मसूदा और 'मार्गिक' छप गई है। मूल्य १४) है। राजकमल न छापी है। मैं मित्र जा को लिखा है कि आपका भिन्नवावे। वह निम्न-मित्र आलाचना की अधिकारी है।

हैं ८ जनवरी के दिवस यापान जो न राष्ट्रपति महान्य का निवास है। उनका उत्तर अभी नहीं मिला।

६०० पृष्ठा के पाठ की सामग्री में क्या क्या है उसका मुझे बहुत कम पता है। हों श्री प्रकाश जा न अपना लक्ष्य का नवन मुझे भी भज नहीं। श्री अमृतलाल चतुर्वेदी का लेख मरु द्वारा भेजा गया था। गुना है कि अमृतलाल जा की पुस्तक 'मार्गिक' अमृत छप गई है। मुझे अभी तक नहीं मिला।

भाई आठम न तीन तैल चित्र (हर्षिगच्छर नामा थाराम शर्मा और C F Andrews) के बनवाने का आदेश दिया है। श्रीराम जा तथा हर्षिगच्छर जी के चित्र भारतीय भवन में रंगों और एण्टिपूज का उनका घर पर ही।

नौ तारीख के अखबार में बिनाप लोग पर बातचीत का मुझे आठम राजाबाबू शम्भुनाथ जी प्रभुति गतिता का निमन्त्रित करना है। यह कार्य आवश्यक गुप्त है।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

२० ता० का कार्र अभी मिला। मरा ग्यार है कि हम निधि-वादि के अन्तर्गत न बनना चाहिये मरु हाउस इत्यादि में ना बहुत खर्च पट जायगा। व्यय में एक पन्ना भी व्यय न किया जाय। आप डा० नराम मित्र आप यह दृष्टि किया। कृतज्ञ हैं।

विनीत

बनारसीदास

( ७२ )

फारोखाबाद (आगरा)

६ १२ ६६

प्रिय भाई श्रीवाहनदास जी

बन् ! यापान जा का मैं निम्न लिखा है कि उसमें पर अधिक खर्च न करें। किसी बन्नी जगह के बिनाप पर लन में बहुत खर्च पट जायगा। यदि

राष्ट्रपति गिरि जी को फुर्लत न हा तो श्री जगजीवनराम जी स प्राथना की जा सकती है। व भी मुझे जानत हैं। यशपाल जी का आदश मिनन पर मैं तीन दिन पहिले दिल्ली पहुँच जाऊँगा।

बधुवर रामचरण ह्यारण 'मित्र' का पुस्तक 'बुदलखण्ड का साहित्य और संस्कृति' मूल्य १५) निकल गई है। अच्छी चीज है। मैंने उह निखा है कि एक प्रति आपकी सेवा में भिजवा दें। भाई अमृतलाल जी की गालिब अमृत अभी देखन में नहीं आई। श्री रमशचन्द्र जी दुब का तवादिला ब्रजमदन के लिये एक दुपटना है। Stefan Zweig की 'परिवर्तन' नामक एक कहानी मधुसूदन जी छाप रहे हैं। वह मेरी अत्यन्त प्रिय कहानी है। छपन पर अवश्य पढ़िय। व भेजेंगे।

श्री श्यामचरण शुक्ल जी को देव पुरस्कार के मूल नियमों के बारे में आप लिखिय—मैं भी लिखूंगा। यह Alternately ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के काव्य पर दिया जाने वाला था। उस नियम में परिवर्तन करने का माना है स्व० ओरछा की अन्तरात्मा का सवधा विरोध। यह तो एक नतिक अपराध है।

श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य का Indigent वाली प्रस्तावली का मसूदा करने के बारे में लिखना है। वह तो किसी भी स्वाभिमाना साहित्यिक के लिये घोर अपमान-कारक है।

सम्भव है कि वर्तमान वाली हुई परिस्थिति में यू पी सरकार कुछ उठारना स काम में। श्रीमती इंदिरा जी ने बुद्धि जीविता का आह्वान किया है पर उनकी प्राय उपस्था ही होती है—हैं राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू के जमान में उनकी ओर अवश्य कुछ ध्यान दिया गया था—सा भी चाटी के साहित्य सविया के प्रति। साधारण बुद्धिजीवी तो घोर संकट में निमग्न होते रहता रहा है। पोस्टेज की बढ़ी हुई दरों ने पुस्तक व्यवसाय का चोपट हो कर दिया है। 'स्वराज्य' नामक एक साधारण साप्ताहिक चलनयज Agra से निकलता है। मैंने उसका सम्पादक आनन्द शर्मा से आगरा कमिश्नरी का जनपद अदालत निकालने के लिये कहा है। वे राजी तो हा गये हैं।

इटाव के श्री मयनारायण जी अप्रवान्त यहाँ पधार थे। व श्रीमान नारायण जी के चाचा हैं। पुराने लेखक हैं—८० वर्ष के हाग एटाव में अच्छा काम करते रहे हैं। Eye Hospital खोल दिया है और स्कूल भी चला रहे हैं।



उन्ही हज़ार में स्व० शिशु जी के सुपुत्र पुत्रराजकिशोर जी पधार थे। ११ जनवरी का शिशु जी का जन्मदिन है। मैंने उन्हें लिखा है कि उनका विषय में सम्मर्ण इकट्ठा करें। क्या Kotla College Magazine का विभागीय मित्र ? माधव का कविता भाई दयामगुप्तर जी मंत्री न भत्री है। अत्युक्ति-अवस्था का भव जाता जामना उदाहरण है। इसे छपन के लिये नहीं भज रहा, आपसे दण्डन भर के लिये है।

द्वितीय  
बनारसीदास

( ७३ )

प्रिय श्री कृष्णदास जी

बन् ! उसका पत्रवरी के प्रथम मसाले तक के लिये टाल गया यह अच्छा है हुआ। तब तब फ्लूइन्जा में Influenza का प्रभाव भी कम हो जायगा।

स्व० शिशुजी का ०० पत्रों की टाइटल का हुई ५ प्रतिमां विरजीव रामगोपाल मरान न० १११७ मस्तर रामदृष्टपुत्रम् नई दिल्ली २० के पास पहुँच गए हैं। श्री प्रकाशवीर जी ने १०० रु० आय मित्र का आरंभ भिजरा दिया था। ११२ रु० और भजेंगे। १०० रु० उधार गृह्य हैं। उन टाइटल प्रति आप अपने मण्डलानय के लिये न माजिये। भाई शिशुजी के लिए स्मृति प्रथम तयार करना इस समय तो अत्यंत बड़बुदा प्रभाव होता है। श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी में ही चला करन का गति है मां के कुछ नया कर सक। अब व्यावहारिक बात यह लगी कि रत्नमुनि जन कालज आगरा तथा गङ्गागिर्या बानज आगरा की यात्रा पत्रिकाओं के हस्तिकर अब निकलना लिये जावें। उन लाना मन्त्रिकान्तर्गत में शिशुजी की पत्रकभूमें ही प्रिन्टींग है। यह श्राद्ध कम आमान है। भिन्न के बाद व्यापार जन पर Research भी कर रहे हैं। उन भां मन्त्रिकान्तर्गत में जानी जानिये।

क्या प्रकाश (अभिनन्दन ग्रन्थ) के Reprints के लिये गए ? मुझे तो पता भी नहीं कि ग्रन्थ में क्या क्या छपा है। श्री ज्ञानदृष्टपुत्र गुप्त तथा आदर आदर की श्राद्ध लाने उम्मेद करने की थी। वे कुछ खपलुद्ध हैं। अपना जी का मातन करने यापान आ का पत्र भा भजता है।

द्वितीय  
बनारसीदास

पत्रक—

श्री मित्र का विश्व पत्र की प्रतिनिधि गन्त है।

## चतुर्वेदी जी द्वारा डा० सुधाकान्त मिश्र, अदली बाजार वाराणसी को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

कोरोनाबाद

१० १ ७०

प्रिय मिश्र जी,

प्रणाम । सदस्यता फाम भर कर भेज रहा हूँ । इस उम्र में अधिक सवा ता नही कर सकूंगा फिर भी समय समय पर कुछ परामश—यदि आप जरूरी समझें तो—भेज सकता हूँ ।

यदि आप अथ जनपदीय भाषाओं के कायकताओं से सम्पर्क स्थापित करें तो उनसे लाभ ही होगा । राष्ट्रभाषा के कुछ हिमायती लोग अपना नासमझी के कारण अपन Steam Roller से जनपदीय भाषाओं का कुचल डालने का असम्भव प्रयत्न करते रह रहे हैं, यद्यपि इसमें उनका मफनता मित्रता मन्त्रया असम्भव है । मेरा खयाल है कि मैथिली की Position जनपदीय भाषाओं में काफी ऊँची है और उसे भारतीय संविधान में वृषद् भाषा का स्थान मिलना ही चाहिये । पर आम्रण जनश्रुति की बात मुझे मिलकुल नहीं जचती । प्रत्यक्ष सावजनिक मत तयार करने की जरूरत है । डा० सुनीति कुमार चटर्जी तो आपका समर्थक हान ही । आचार्य द्विवेदी जी से भी पूछिये । श्री रामद्वैपालमिह्र राजश से भी सहायता लीजिये । श्री नागाजुन जी का वर्तमान पता क्या है । उनका कृपापत्र बहुत दिना से नहीं मिला ।

पूज्य पिताजी के मस्मरण ता तुरंत लिखना लिखाना शुरू कर दीजिये । ४, ५ मप पर्याप्त हैं, पर जितनी जल्दी यह श्राद्ध कम सम्पन्न होगा उतना ही ननिक बल आपकी मस्या को मिलेगा । धर्मयुग अथवा साप्ताहिक हिन्दुस्तान में उन पर लेख छपना चाहिए । मिथिला-आलाक वाले लेख का ही पुन लिख दीजिये ।

बाबू वृंदावनदास जी अव्यय व्रजसाहित्य मन्त्र, मधुरा को मैं आपके बार में लिख रहा हूँ । वे बड़े कुशल कायकता हैं । आपका पूरा-पूरा सहयोग उनसे मिलेगा ।

विनीत

बनारसीदास

( ७४ )

रामकृष्णपुरम्

वसंतपक्षमी

प्रिय भाई बृंदावनराम जी,

ब० । आपका द्वारा रिम मय यम का अन्भूत मयनता मिता । तन्मय में आपका बहुत बहुत वृत्त हैं । पर गिनना कानि कभी मिटाई मुम पराग भी गयी है, उम निम्न-मेह मुने अजीण हा मरना है ।

जम छापी तब जगल की मयी अजीरन तोह ।

अपजम की गोली बर्झ, छाह मुरत पन होह ॥

किमी मनचन बवि न बारवन का यह मोन रिम भेजा था । मुक्त भी अपजम की गोली चानि । यजपान जी का भागत जाना पहा । अब मोन पाप है । यय की प्रनियो अर भेजेगे । पन् ता मैन अभिन-न का पार विराध किया था पर अर में मममना है कि जा कुछ हुआ टाक ही हुआ यद्यपि उतनी कानि का अजिवाग में अरन का हरविज ननी मानता । यम नना ही मानता है कि नाग मुमे रिम रूप म लेखना चाहन हैं । उनकी मदभावनाओं तथा आशीर्वात व अनुभवजम जमानन म भी वन नबू गो यनी बात हा ।

ब्रज का पुनर्निमाण आरका मय यमन बरिया रहा । मरी आशीर्वातों का टाक चिपन आगन किया है ।

बनारसीराम

( ७५ )

नई दिल्ली २२,

प्रिय भाई बृंदावनराम जी,

ब० । आपका है कि आप बम्बई म मोन बार नाग । १ उ निन वाग में विराजवाग मोन जाउंगा । मों स्वरूप यय भागत वाता के पत्र आ रह ॥ । मैं विनम्रतापूर्वक उर नवागमन उत्तर ही न रहा है । काई २ । तीन बार यय की विनाय गना ना मरीतर भज रना । पहना वनम्य यय की रिशी वगना है नाकि मयन का पाग ना न रन । यजपान जा का अभा पत्र भजा है कि अदेय प्रमुत्त पी ब्रजवाग की प्रनि नहें मोघ्र ही मूमी मिन जाव ।

आह अभिन-न मुन वम्पनी अनतिमि-न व मनजिम टारकर प० आबरमल्ल जी गमा मर अग्रज है—१ वय ब० । एक प्रति उनका मोंट

स्वरूप जानी चाहिए। वे आना चाहते थे पर हंगियाणा के आंदोलन के कारण न पहुँच सके। दरअसल वे और श्री श्रीप्रकाश जी मुझसे पूर्व अभिनन्दन के हस्ताक्षर थे। अपने सग्रहालय के विराम में श्री भक्त दशरथ जी से बातचीत करनी है। वे National Archives के द्वारा कुछ आवश्यक बागजात Preserve करा सकते हैं। सी एफ एड्जुड की शताब्दी पर नेहरू म्यूजियम एक प्रदर्शनी करना चाहता है, उसमें भी मुझे सहभाग देना है। अब कई महीने विधाम अनिवाय हो गया है। आपरेशन के बाद जाराम नहीं कर सका। अगर २ दिन ठहरता हुआ फीरोजाबाद पहुँचूंगा।

विनीत

बनारसीदास

( ७६ )

रामकृष्णपुरम्

नई दिल्ली २२,

प्रिय भाई पृथ्वीनारायण जी,

बड़े। आशा है कि आप बम्बई में सौट आये होंगे। मेरा विचार १५ ता० रविवार को Taj Express से आगरे पहुँचने का है। भाई हरिशंकर जी के पत्रों की टाइप्ड प्रतियाँ साथ लेता जाऊंगा। मुश्किल यह है कि पृष्ठा का छांट छांटकर लगभग ५ प्रतियाँ नहीं बनाई गई। एक प्रति आपको भेंट करनी है २ प्रतियाँ विद्याशंकर जी को तथा २ प्रतियाँ मूल के साथ मेरे पास रहनी।

अगर मैं दो दिन रुकूँगा—४ लागत कुंज पर। प्रातःकाल १६ को राजावाड़ के उपवन को देखने का विचार है। और १७ ता० को फीरोजाबाद लौटने का। गुरुवर्य श्री भगवान दत्त जी चतुर्वेदी एक प्रति चाहते हैं। मैं राजावाड़ में अनुरोध किया है कि यदि वे भेंट कर सकें तो अच्छा हो। नरसीन प्रति लेगी या नहीं। उस एक प्रति यशपाल जी द्वारा भिजवाऊँगा। इस बीच वह आपमें एक प्रति उधार लेकर पढ़ सकता है। उमम घेर अनुज पड़े स्व० रामनाथगण का रेखा चित्र है। आपने उस पढ़ा या नहीं। श्री बालकृष्ण जी यहाँ पधारेंगे। ८ का भी आने वाले थे और १५ को भी। आपके अभिनन्दन ग्रंथ के त्रिपुत्र के मुख्य मुख्य स्थानों की तीर्थयात्रा करनी है। रघुचित्र प्रस्तुत करने हैं।

होती की परवा में भरद पूना तक पत्नी मनाऊँगा। शेष कुशल।

बनारसीदास

( ७७ )

रामकृष्णपुरम् नई दिल्ली २२

१३ २ ७०

प्रिय श्री कृष्णचन्द्रशाम जी

बन् । यद्युक्त अमृतनाथ जी ने मुझसे पाराकाश में आपसूचक अनुरोध किया था कि अब एक दूसरे अभिनन्दन ग्रन्थ का काम होय मैं तैयार था। और उन्होंने आरम्भ शुभ नाम suggest किया था।

मुझे अमृतनाथ का यह विचार बहुत पसन्द आया था और मैं उस कायस्थ में परिणत करने के निम्न अर्थों उद्गुह भा है। आगे नाम के महार ब्रजभूमि के विषय में एक नवान Reference Book well illustrated तैयार हो जायगा।

मदन भाषा में उन सब प्रतिभाओं का जिनके बहुत ब्रजभूमि में प्रयुक्ति है। यह है मन्त्राव विज्ञान ही हमारा उद्देश्य होना चाहिये। ब्रजमण्डल में जहाँ जहाँ जो उन्नत योग्य मार्गिक तथा मार्गिक काय हो रहा हो उसका संग्रह किया इकट्ठा कर लेना चाहिये।

हमने कोई अयुक्ति नहीं कि हम समय मग्न ब्रजमण्डल में आपका सवागें अतिनाय है और हम कारण हम सब का भग्न नरिष तथा आपिक मन्त्राग भी भिन्न जायगा। मर अभिनन्दन ग्रन्थ में जो अनुभूतियाँ दुर है उनका सन्तुषाग हम द्वितीय ग्रन्थ में हो सकता है।

आ भी मगाना तिर मन्त्राग इकट्ठा है वह आपका निजी मगहानय में सुरतिन किया जा सकता है। जो २ ४ वर्ष में धुन जावन के रूप बंध हैं उनको मैं अपनी ब्रजभूमि के चिह्न है। मुख्यतया अतिन कर लेना चाहता हूँ। भाई मीनल जी तथा मरयद्र जी प्रभृति का पूरा सहयोग तो निश्चय ही समझिये। पाराकाश के साहित्य प्रेमा तथा मार्गिक मुक्त यद्यपि मन्त्राग देग ही। आगे वाता का सहयोग भिन्नता और मधुरता तो आपका निजी बन्ध ही है। मैं उस ग्रन्थ का मवाङ्गीकरण बनाने के लिये हूँ। अन्धारा वाग-वगाचा गायका तथा पद्विवाता का क्या छोड़ा जाय ? गोवटन तथा छत्रमर प्रयोग क्या न उचित स्थान पावे ? नरवर का मन्त्र विद्यालय क्या उपनिष रह ? मरा हड़ विस्वाग है कि आपका अभिनन्दन ग्रन्थ में ममम्न ब्रजभूमि में उमाह की लहर पन्न सकती है। दक्षिण में पट्टिपूति पर—६० वर्ष समाप्त होन पर हम उम्भव हान हैं और मरा अनुमान है कि आप भी माठ के आमपात



and out of season on that question । पर दस ममय उस सिंगी म आदामर तहो उठाना है ।

आपका अभिनन्दन व मंगले मैं ब्रजभूमि व नवान अरुण को प्रस्तुति हान दया का अभिलाषा है । यही व अग्रज वरि—Pope, 'The proper study of mankind is Man' ममयन उक्त गुरु व नाम व माय पश्यवाना व चित्र तथा चारव अतिन रिय जा मरत है । चरन गुरु व नाम व माय मायरा व । राखवान श्रीमन्नागयण व विनृष्य था मूयनारायण अग्रवान १ भौज का एक श्रुत अस्पनान हा गान रिया है । आ वातहान गुरु न यजमाना म अग्रजा बनकर अपन जावन का एक नया अध्याय ।

भाई भातम् भी कुछ आज्ञा रखत हैं । उन्होंने तान तीन चित्रा का Order रिया था—श्रीगान, हरिशकर जो जी C F Andrews हा गीपुरा व कालज का भा लीपयात्रा भाई शम्भुनाथ जा चतुर्वेदी व साथ करना ही है । मरज पद रि प्रतिष्ठित व्यक्तिया का पद बनाकर उनर चारा और आज्ञात्र चित्र बनाप जा मरत है । उक्त भाता म Dulness मयन बहा अपराध है मग वान का हम मदनकर रखें ।

पीराजावा व गवायना नरमा का चित्र दमन आज म ४० वय पहुच विमान भारत म छापा था । एक कुत्रिया—छत्तामायान का भी चित्र रिया था । मैं जानता हूँ कि ब्रज म भाद मानल जा जम अय प्रतिष्ठित उधु भा १ तिनरा माहियिक काय आपन बहा अधिा है पर उनर नाम का प्रभाव भीमिन ही है । केवल आपका हा नाम एसा है, जा दखनन ग्यापन प्रभाव रखता है । अपन म १० वर राज ब्रज गवा म—गुन करन वाता वाई दूमरा है भा ता नहा ।

हम गमी का जाना है आज न मही वन पर हमारी प्रिय भूमि—ब्रजमण्डल ता सन्व जीवित तथा जागृत रणी । मैं कुछ जन्मी म अरु हूँ । आविर ७८ थी वय म भरे पास अधिक जत नर्न वचा । वय आप मवरा आगीवा तथा मदभावना मुन कुछ वय और भी जावित रख मरतो हूँ । मैं अभी यही व पाना स adjust करन का प्रयत्न कर रहा हूँ । पाना भारी ता है नी वम चिरजीव गुपना न प्रयत्न मुविधा कर रमी है ।

डा० नरेन्दी का यजमान जो म एक प्रति भेंट करानी ही है । भाई हरिशकर जो व पत्रा की नवन की एक प्रति आपन निजा मद्रहानय का

अवश्य भेंट करूँगा। आपके Hall को सुविधित करने की जिम्मेदारी मरी रही। वह यत्न यथासम्भव अल्प व्यय में ही होना चाहिये।

हिन्दी टाइपराइटर अब फिर खरीदना चाहता हूँ। पहला तो ५०० रु० का ५०० रु० में ही बेच देना पड़ा था। नरेशी की बहन की शादी के वक्त। कृपया भीतल जी तक मेरे प्रणाम पहुँचा दीजिये। नरेशी उक्त ग्रंथ में अपने पिता स्व० रामनारायण का हाल पढ़ ले और सौभाग्यवती बहन को भी पढ़ा दे। ग्रंथ की एक प्रति रजिस्ट्री द्वारा मेरे मित्र डाक्टर हरिदत्त पालीवाल, निम्न, कायमगंज जिला पर खावाद का देखने के लिये भेज दीजिये। लीडान के लिये रजिस्ट्री का पास्टेज भी रख दीजिये। दाना आर का पास्टेज मैं दूँगा।

विनीत  
बनारसीदास

( ७८ )

फीरोजाबाद  
११ ४ ७०

प्रिय भाई कृष्णदास जी,

बन्ने ! आपके कृपा पत्र के लिये कृतज्ञ हूँ। काबल की मदद से मैं अपने पना की ३ प्रतियाँ निकाल लेता हूँ और क्षय का प्रतियाँ जय सज्जनों का भेज देता हूँ। इस प्रकार विचार परिवर्तन में कुछ मदद मिल जाती है। श्री रावेश जी को भेजे गए पत्र की नकल आपको भेज रहा हूँ।

श्री हरिमोहिन्द गुप्त को उनका जगवान विषयक पत्रों की नकल की पहुँच आप लिख भेज। उन्होंने बुदलखण्डी के लिये बहुत काम किया है। उनका बेतवा का जीवन चरित्र प्रकाशित होने को पड़ा है। बहुत काम के आदमी हैं। खेती के काम में फँस गए और उसमें थोड़ा ही उठाया है। 'भज भारती' के लिये कभी-कभी वे लिख सकते हैं।

डा० हरिशंकर शर्मा के पत्रों की ८ प्रतिलिपियाँ Typed copies श्री रामगोपाल के पास दिल्ली में सुरक्षित हैं। वास्तव में काफी होने के कारण मैं ला नहीं सका। उनमें एक प्रति आपके निजी संग्रहालय के लिये है।

विनीत  
बनारसीदास



## चतुर्वेदी जो द्वारा श्री रावेन को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

बाराबाद

११ ४ ३०

श्री रामदत्तबालसिंह रावेन

प्रिय रावेश जी प्रणाम !

मुझ जा प्रथ ३ पत्रकी का भेंट किया गया था, उस पत्र की हिम्मत मुझ ३ पत्र की हुई। और आपका मन्त्रपूजक तब आज ११ अंग्रेज का पद पाया है। मुझ स्वप्न में भी इस बात का कल्पना नहीं था कि विभिन्न क्षत्रों के इतने अधिक व्यक्तियों का मैं कृपापात्र हूँ। यद्यपि मैं उन सबका हृदय में कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपनी गुणघातकता के वशीभूत होकर मरी अयुक्तिमय प्रशंसा की है तथापि मेरे मन का एक बात खरबनी है वह यह कि किसी के कितने ही तपस्वी साधकों का उनके जीवनकाल में तो appreciation मिला ही नहीं स्वर्गवास के बाद भी उन्हें भुला दिया गया है। क्या न इन उपनिषद् के रत्नाविद्या में प्रथम तपस्वी दिया जाय—जा मन्त्र भी है।

जिन जिन जागों के पास समाजा—पत्र व्यवहार तथा चित्रादि इकट्ठा हो उनके घर की यात्रा करके उनकी नकल तो न लेनी चाहिए। निम्न का यत्न न मानुम उन जागों। उदाहरणार्थ प० सावरमन्त जी तथा के पास जयरापुर (बनारस) में उन्मुख सामग्री मौजूद है पर एम जिम्मेदार महायक उन्हें भी नहीं मिला जा उनका उपयोग कर सकें। या मन्त्र पा-एच ही उन बातों से कभी नहीं।

ज्या ज्या जिन बीजों जायेंगे यह सामग्री बिलीन होनी जायगी और फिर हमारे मार्शियक इतिहास नीरस तथा नया आँकड़ा का समूह न रह जायेंगे। मेरे पास पिछले १८, १९ वर्ष में जो सामग्री इकट्ठा हो गयी है उसकी सुरक्षा की चिन्ता मुझ निरन्तर बनाती रही है पर अब मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि इस प्रकार की चिन्ता का छाटकर मुझ स्वस्थ रहना चाहिये। २० अगस्त का भग आचरेणन हुआ था और ४ महीने का पूष विश्राम मुझ आवश्यक बननाया गया था, पर मैं आगम कर नहीं सका। अब करना चाहता हूँ। हाँ, वन मुझे यहाँ में २५, ३० मात्र दूर एक शाम की यात्रा करना है जहाँ कि ४ अंग्रेज १८४० में महीने हुए थे। लाग उन्हें प्राय भूत हो चुके हैं। यह कम अमिताभ की बात है अपने स्वाधीनता की नवीन महान की व के पत्रों की दृष्टि विस्तृत उपायों की है। गहरी का अभी निम्नीय

उपेक्षा शायद ही किसी अरब देश न की हो । आपके यद्वापूष का व्यात्मक लक्ष के लिये मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ । उसमें आशीर्वाद समझ कर ही स्वीकार करता हूँ ।

विनीत  
बनारसीदास

( ८० )

फीरोजाबाद  
१२ ४ ७०  
रविवार

प्रिय भाई धुन्दावनदास जी

बंदे । इस समय ४ बजेके ५० मिनट हुए हैं । थर्मोम के गरम पानी से चाय बनाकर पी चुका और स्वाध्याय भी कर चुका । आज स्वाध्याय के लिये W H Allen London द्वारा प्रकाशित Stefan Zweig A tribute to his life and work नामक पुस्तक पढ़ी । उस ग्रन्थ में जिवग विषयक सस्मरणों का संग्रह है और मैं ही एक मात्र भारतीय हूँ जिसकी tribute छपी है । जिवग को हिन्दी में लाने का सौभाग्य मुझे ही प्राप्त हुआ था । आप से मेरा अनुरोध है, प्रार्थना है आग्रह है कि आप जिवग की प्रत्येक रचना को पढ़ें । He is Supreme as an artist । रोमाँ रोलाँ भी उनकी कृता का सम्मान करते थे । एक काष्ठ तुरन्त भेजकर श्री मधुसूदन चतुर्वेदी ( १४/७/३ बंगम बाजार हैदराबाद A P ) से 'पुनर्जन्म' की प्रति मंगा लीजिये । वह छप चुकी होगी । तत्पश्चात् Kaleidoscope—Cassell and Company Limited की दिल्ली के Allied Publishers आसफ अली रोड से खरीद लीजिये । उसमें Transfiguration नामक कहानी है जिसका अनुवाद हमारे भानजे प्रकाश ने किया है । अनुवाद काफी अच्छा है ।

ब्रजभारती में आपन स्व० अग्रवाल जी विषयक मेरा पत्र छाप दिया है और सम्पादकीय नोट भी लिख दिया है । तदर्थ कृतज्ञ हूँ । दिल्ली में अग्रवाल जी के एक सुपुत्र मिले थे जो डाक्टरों पढ़ रहे हैं । उन्होंने बतलाया कि उनके बड़े भाई ने पूज्य पिताजी के कई ग्रन्थ छपा दिये हैं । यदि यह सत्य है तो निस्सन्देह अत्यन्त प्रशंसनीय है । पर उन्हें पत्रोत्तर तो देना ही चाहिये । शायद उनका यह खयाल होगा कि हम लोगों की सेवार्थ उनके लिये नगण्य हैं और इसलिये वे अपने समय का एक छोटा सा भक्ष भी हम लोगों से पत्र व्यवहार करने में नष्ट नहीं करना चाहते । फिर भी हमें मिशनरी दृष्टि से

अपने बाप से पत्र लेना चाहिये। अग्रवाल जी के पत्रों का मसह्र हम लोगों का ही करना है। मीनल जी के पाल के पत्र तो आप उनसे लेकर लेना करा ही सकते हैं। शिवपुरी में श्वनाम्बर नामों के मस्तिष्क में भी अग्रवाल जी के १/१ पत्र मिल जायेंगे। मसह्र जी को पुनः मसह्र-मसह्र। आप न हरणाविन्द गुप्त को पत्रों की पट्टी बिगड़ाने के पत्र पर भेज दी होगी।

अब तक जो पत्र मर श्वन में आय हैं उनमें जमा प्रतीत होता है कि अग्रवाल जी ने अपने सर्वोत्तम पत्र मुझे ही श्वन की कृपा की थी। उनके आत्मचरितात्मक दो पत्र (जो उन्होंने मुझे भेजे थे) के अलवारा में छप चुके हैं। वे निम्न में बहुत महत्वपूर्ण हैं। अब ५ बजकर १० मिनट हो चुके, मुझे जाननी चाहिये। ६ ६३ उजे में श्री बानकृष्ण गुप्त के साथ उनकी कार में बरतन के पास लौट आया जा रहा है। बमबोला स्थान पर ४ अक्टूबर १९४२ में मनीष हुआ था। उनकी विधवाओं ने पुनर्विवाह नहीं किया। यद्यपि उनकी जानि में दमका रिवाज है। मुना है कि उन्हें ३०) मनीष पेंशन मिलना है। बंधुका नहरी जी [ जगन्नाथ लहरी भूतपूष M L A गोपाला फीरोजाबाद ] को छान कर और बाद में उन महिलाओं ने मिलन नहीं गया। जो काम हम स्वाधीनता संग्राम की समाप्ति के बाद शुरू ही शुरू कर लेना चाहिये था। उस विधिवत् हम अभी तक नहीं प्रारम्भ कर सके। Let us collect every anecdote every picture every detail about the sacrifices made by our people to get Freedom for us यह हमारा पवित्र कर्तव्य है।

कभी-कभी मैं मजाक में बोलता हूँ कि the investment करना बर्बाद है। जानते हैं और चूँकि मैं जूना कबट मुन्ना मधुग के बीच नष्टमन्त्रम यज्ञों का पीछे हूँ [ वे मन्त्र के बत मनीष गाड़ की दूकान करत थे ] इसलिए मनीषों के आद का सर्वोत्तम Investment मर द्वारा ही हुआ है। So I am a more clever बर्बाद than many of that caste।

स्निग्ध  
बनारसीदास

पुनश्च—

श्री बानकृष्ण जी गुप्त हम जालीपुरा के स्टार कालेज का शिक्षक बननेगे। वह श्री जगन्नाथ धनुष्योदी के अधीन है। उस भी देखना चाहिये कभी आप भी उस स्थिति में जलमूमि में जल भी बाल प्रगतिमान बाप हो रहा है उस प्रगतिमान जना हमारा कर्तव्य है।

जब वमी आपको समय मिले आप खांडा की यात्रा करें, श्री सीताराम-गंग प्रधान खांडा को पहल सूचित कर दें। बरहन स्टेशन से खांडा २ मील दूर है। वह तो हमारे लिये तीर्थ तुल्य है।

श्री बालकृष्ण गुप्त खुद अपनी कार में Drive करके हम लोगों को खांडा ले गये। उन्होंने १०१) एक सी एक अहीरन गद्दीद विधवा को दिये जिसका भवान गिर गया था। मैंने कई चित्र लिये थे।

( ८१ )

रामकृष्णपुरम्

नई दिल्ली ३२

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

बन्ने ! प्रकाशवीर गाल्सी जी न एक काम तो करा ही दिया। स्व० हरिशङ्कर जी के पत्रों को टाइप कराने के लिए आय मित्र (लग्ननऊ) स २१३) दिला दिये।

अब ४३० पृष्ठ typed हैं। ५-५ प्रतिमाँ हैं। एक आपके लिये सुरक्षित है। पर वे arranged नहीं।

१५ तारीख को Taj Express से आगरे जा रहा हूँ पर वह मयुरा पर बहुत कम ठहरती है। नरसी तो आवेंगे ही। उन्हें बुकर देना है। श्री राजाबाबू से मैंने प्रार्थना करदी है कि यदि वे एक प्रति गुन्जी श्री भगवान दत्त जी को भेज सकें तो अत्युत्तम हो। प्रातःकाल १६ तारीख का उनका उपवन म बीरे हुए आम देखने हैं। सीलिंग स शायद उनके उपवन की भी काट छाँट हो जायगी। आप इस विषय की जाच पड़ताल तो कीजिये। मैं होली की परवा स शरद पूना तक कम्झी खेसता चाहता हूँ—यानी फलों छुट्टी मनाना। मरा लेख (हरिशङ्कर जी पर) सैनिक म छपा या नहीं ?

आप अपने निजी सग्रहालय को समृद्ध कीजिये। गवीन अभिनन्दन ग्रन्थ के विषय मे आपसे चर्चा करनी है।

१५-१६ को आगरे रहकर १७ को घर पहुँचना है श्री ओ३म् ने तीन चित्रों के बनाने का आग्रह किया श्रीराम गर्मा, हरिशङ्कर जी तथा सी एफ एड्रयूज।

विनीत

बनारसीदास

अपने ग्रन्थ को पढ़ने की हिम्मत नहीं पड़ रही। इतनी अधिक कीर्ति रूपी मिठाई परोस दी गई है कि जी जब उठता है। श्री राजेन्द्ररजन जी तक मेर पासगन पढ़ा दीजिये।

( ८२ )

१८ ८-३०

प्रिय भाई कृदावनदाम जी

वेद । काट मिला । मेरे पत्रों के संग्रह का वक्त अभी जायद नहीं आया है । अभी तो स्वर्गीय माहिय भवियों की चिट्ठियों का संग्रह हो जाना चाहिये ।

प्रथम काय—ठा आप यह करें कि जिल्ला जाकर थिरकीव रामगापाव म स्व० हरिगङ्गुर गमा जी के पत्रों की typed प्रतियाँ उ लावें । ५ प्रतियाँ हैं । उनमें एक प्रति आप अपने संग्रहालय के नियम से २ प्रतियाँ श्री विद्यागङ्गुर गमा (मन्साक मुनि) का दे दें और ३ प्रतियाँ मर संग्रहालय के लिए हैं । फिरहाल मूत्र पत्र चि० गुरग के पास ही रहेंगे । माय का पत्र मैं श्री महदगाछी के पास भेजा है । उनकी ब्रजमास्ता का Free list पर रख लीजिये । भादपुरी में अच्छी बकिता बन चुकी है । अपना एक काव्य संग्रह उन्होंने मुझे समर्पित किया था । मिगनरी बङ्ग के काव्यका है । अन्तर्जनपीय परिपद के नियम बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे । उन्हें एक अमिनन्दन प्रप भेंट किया जायगा, जो छप रहा है ।

द्वितीय काय—है नरवर की तीस यात्रा । नगीना अभीगत म २० मील मुना जाता है । वहाँ स्वर्गीय प० जीवनदन का का सम्भृत महाविद्यालय है । मैं भी वहाँ जाना चाहता हूँ । करपात्री जी वहाँ के पुरान छात्र हैं । काई शङ्कराचार्य भी ।

तृतीय काय—है बरहन स्थान म १ मील दूर खाने की यात्रा । वह ठा ठबन तीस है । बमगीना स्थान पर चार गृहीत दे—१८४२ की २८ २६ अगस्त को । चारों बहीर म । उनकी विधवाओं ने पुनर्विवाह नहीं किया । उन्हें पेंशन मिलती है । एक ठा उनमें स्थानमा हा चुकी । आप श्री प० श्रीराम गग प्रधान साँदा Agha का पत्र भेज कर नि निश्चित कर लीजिये । वहाँ अम्बर चर्खे न आधिक स्थिति सुधारन का अच्छा काम किया है । मुना है दो १ हजार रुपय महोन की आमदनी उन चरण न उक्त गम का हो जाती है । बरहन खाने स्थान केन्द्र भी बन गया है । बरहन में बदीर खीरनाथ के अनुवाक श्री घाटुमारजन भी रहते हैं । वहाँ उनकी समुपन है । बकिता भागत में मर माय नाम बन चुक है । बहुत प्रशस्तीय काय उन्होंने मुख्य के ग्यों के अनुशा का किया है । He

deserves a good sketch ये तीन काम मैंने आपके सुपुद कर दिये । जब कमी फुप्त मिले कीजिये ।

विनीत  
बनारसीदास

पुनश्च—

जय पत्र मे कई नाम आये हैं । श्री ब्रजशङ्कर वर्मा यागी के सम्पादक रहे है । काफी बीमार हैं । हरिदास कम्पनी की चमेनीदेवी को उहोने आश्रय दिया था । स्व० नारायणबाबू सारन जिले के अत्यन्त प्रतिष्ठित कायकर्ता थे—राजेन्द्रबाबू के धनिष्ठ भिन भी । तारारानी के पति फुलेनाबाबू शाहीद हुए थे ।

### प्रतिलिपि पत्र

जो श्री महेन्द्रशास्त्री रतनपुरा जिला सारन को लिखा गया ।

फीरोजाबाद

१५४७०

प्रिय शास्त्री जी,

प्रणाम ! आपका बिना तारीख का कृपा पत्र मिला । बहुत है । मेरा आपरेजन २० अगस्त को हुआ था और डाक्टर का यह स्पष्ट आदेश था कि मैं चार महीन पूरा विश्राम करूँ पर अपनी वद आदतों के कारण मैं ऐसा कर नहीं सका । सबरे घौने चार बजे उठकर चाय बनाकर चिट्ठिया लिखन का जो नियम मैंने बना लिया था उससे छुटकारा मिलना असम्भव हो गया । स्वाचाय के बाद पत्र बखार ही मेरा मुख्य व्यसन है—फोटो खींचता तथा सम्पादक उसके साथ आते है बहुत सा शक्त तथा पसा उ ही में बर्बाद करता रहा है । खर—अन पछिताए होत का, जब चिट्ठियाँ चुग गईं भेत । बीती ताहि बिसारि द—आगे की मुधि लेइ ।

अभिनन्दन ग्रन्थ इतनी प्रशंसाओं से भरा हुआ है कि मेरी हिम्मत उसे पढ़ने का नहीं होती । आत्मप्रशंसा का अध्ययन बिल्कुल बसा ही जसा किसी नवयुवती का स्वयं ही कुचमदन ! मुनाह वेलज्जत है ।

मैं हृदय से अनुभव करता हूँ कि जो सेवा मुझसे बन पड़े है उससे दस गुनी सेवा मैं कर सकूँगा था यदि मैं आत्म नियन्त्रण द्वारा अपने जीवन को व्यवस्थित कर सकूँगा । जितने साधन मुझे मिले, सत्तज्ञ के जितने अवसर प्राप्त हुए, अनन्त अवकाश और मुक्त आकाश जितनी प्रचुर मात्रा में मुझे उपलब्ध हुए उनके देखे काम बहुत कम ही सका ।

पत्र का मूल्य ३०) रंग दिया गया है जिस धन करना माघारण  
 मियनि व आत्मी व वृत्ति व बाहिर है। मुझ कुत्र जमा ५ पाँच प्रतियाँ और  
 मियी थी, जो बट गई। अब व। म प्रतियाँ मिल जाय ता पाम्त्र अपन  
 काम से रख करी पढ़ने व निय मिया वी भजना चान्ता हैं। पढ़नेर तान  
 राय रख करी रजिरी द्वारा लोग मका हैं। मरा २६० रामनारायण  
 विषयक लग आरखी पत्र आया यह आरखी महत्त्वता का सूचक है।  
 मरी ८ आठ किताबें भूरी करने अवका Revise करने का पढी हुई हैं और  
 पत्र व्यवहार मरा समय निम्न को पत्र है। महायक काइ मितता  
 नहीं। (१५०) महीन एक प्रकाशक दन का तयार है पर अभी तक एक  
 भी सुयोग्य व्यक्ति जो टाइप करना भी जानता है। मिल नहा सका।  
 नताजा यह है कि मारा काम अतुर पडा है। रामधन का किताब  
 मैन छापाया थी—१५० प्रतियाँ उस वचन का निरवाण था, जिसम उसका  
 कुछ काम चला। मुझे बराबर यह ध्यान रहा है कि उसन द्वारा आपन  
 चार से काम बचा हा गया है। पर मैं क्या कर सकता था? मनुष्य का  
 स्वय ही अपना श्रुण चुकाना चाहिय। दूसरों का प्रेरणा का प्रतीक्षा करना  
 न कर।

अद्वैत नाथगवाबू व विषय में 'योगी' म अच्छी लख माना निकल  
 रनी है। स्व० राजद्र बाबू न अपन अतिम पत्र म मुझ दिया था कि  
 नागम बाबू व लिख लखा का उन् पत्र नहीं है। पत्र तय जाय ता छान  
 का प्रवच किया जा सकता है। भारी ब्रजाछू जी बहुत बीमार हैं नही ता  
 यह पुण्य बाप उनके मुपुं कर दना।

धामती तारारानी श्रीरामनव की पुस्तक उनका नाम का इलाय  
 सम्करण अभी तक नहीं हुआ। मारन जिन व गहीन व विषय म अब भी  
 एक पुस्तक लिखी जा सकती है, पर तिय कौन? अद्वैत राजद्र बाबू का  
 आदेश था कि मैं अपनी दख रख म य काम करा दू पर ७८ वाँ वष मला  
 में क्या कर सकता हूँ? मर १२ अप्रैल का मैं यहाँ से २० मील दूर एक  
 ग्राम की तीर्थ यात्रा का थी जहाँ चार गहीन १८८२ म हुए थे। उनका  
 वृत्तांत अभी तक नहीं छपा। वह स्थान आगरा जिले म ही है। जिला  
 छपरा न तो स्वाधीनता संग्राम में बहुत महत्वपूर्ण भाग दिया था। आप,  
 भारी चंद्रिकाविह जी तथा श्रीमती तारारानी प्रभृति मिलकर इस ग्राम पर  
 विचार ता कर हा सकते हैं। क्या यह भी असम्भव है?

फूलना बाबू के स्मारक का क्या हुआ ? और देवशरण मिह क ? यह वर्ष दीनबन्धु ऐण्ड्रू की शताब्दी का है। लेनिन की शताब्दी चल रही है। बाबू की बात चुकी। स्वयं मेरे विचारों में परिवर्तन हो गया है। 'नीलकण्ठ गोर्की' भेजता हूँ वृथवा पढ़ लाजिये।

( ८३ )

फ़ीरोजाबाद

१८ ४ ७०

प्रिय भाई बुद्धावनदास जी,

ता० १५ मार्च के दिन नई दिल्ली से आगरा जाते हुए साज एक्सप्रेस में दैवयोग से श्रीधुत फूलसिंह जी से मेट हो गई। वे वृहत् हरियाना प्रांत के प्रमुख समयकों में से रहे हैं परंतु उस आशय को उस समय त्याग दिया जब उन्हें प्रतीत हुआ कि उससे गृह कलह होने की सम्भावना है।

श्री फूलसिंह जी में मुझे आदर्शवाद की कुछ चतक दीख पड़ी। वे गांधीवादी कार्यकर्ता हैं। वर्तमान की होली देखने दिल्ली से मपुरा जा रहे थे। उनसे मिन लन में कोई हज नहीं। वे पहले उत्तर प्रदेश के उद्योग मंत्री रह चुके हैं। श्री चरनसिंह जी के निकट के आदमी हैं। उन्होंने स्वयं मुझ बतलाया था कि ३० एफड की Ceiling वाला कानून पास नहीं होना पावेगा। उनका शब्द था— आप अपने मित्र (राजाबाबू) को निश्चित कर दें अपने ग्रंथ की एक प्रति राजाबाबू द्वारा उनको भिजवा दी है। शेष कुशल।

विनीत

बनारसीदास

चतुर्वेदी जी द्वारा श्री फूलसिंह जी को प्रेषित पत्र की प्रतिलिपि

फ़ीरोजाबाद

१७ ४ ७०

प्रिय श्री फूलसिंह जी प्रणाम !

उस दिन १५ मार्च को आपके साथ जो आकस्मिक परिचय हुआ उसे मैं अपने लिये परम सौभाग्य की बात मानता हूँ।

मैं बहुत दिनों से किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में था जिसके द्वारा मैं अपनी बात श्री चरनसिंह जी की सेवा में पहुँचा सकूँ। वे तो मुझे जानते न होंगे और हम लोगो का साक्षात् परिचय भी कभी नहीं हुआ।



अपन किया स्थाय की प्रायना उनम मुझे नहीं करनी, हाँ कभी कभी लाकड़िन व बायों की आर उत्तर प्रान्त मन्वार का ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूँ ।

जगा नि मैं उम नि निरन्तर किया था मैं आगरा जिन व गवश्रष्ट उपवन व विषय म चिन्तित हूँ । उमर स्थायी था प्रतापनारायण अश्वार की मुझ पर कृपा है । चूँकि मैं ब्रजभूमि ॥ ११ वष दूर दूर हा रहा इमनिप उनर मनार बाग का मैं उमर वर्षा बाग—१ वष पहुँच ही—मम मका और उम दखार मैं मुग्य ग गया ।

श्री प्रतापनारायण जी उम उपवन की वच की तरह पाना पाना है और व उनर मन्मूग जावन की साधना का परिणाम है । विन्गी यात्री भी उसका मराहना करत हैं ।

श्री प्रतापनारायण जी अपन बाय म इनर वरम रहत हैं कि व दूमरा बा—यही नर नि मन्वारी आफिगरीं तर बा—निमत्रण दरर अपन यनी नही युता पान । उत्तर प्रान्त मन्वार का बाइ भा उच्च पन्नाधिकारी यही आज तर नर पहुँचा यद्यपि एक बार था चरनिहि जा अरम्मान वही पहुँच गय थ ।

पन्त ता मन्मूग रनव हाग उम बाग व एक भाग व नर हान की आगच्छा थी और अर गीतिङ्ग का नरार उमर गिर पर सटव रही है ।

क्या कभी यह सम्भव न मकना है कि आग उपवन का एक बार मन्त्र नें ? वनी छ न्जार आम व पद हैं और बामुन व गरडा हा । आगरा जिन म ता क्या आगरा कमिन्दगी म भा उमक मुबारक का उपवन पाय हा बाइ हागा । यदि आग चन मके ता मैं भा तामरी बाग वनी की तीथयात्रा कर लूगा । हा बार मैं वही जा चुका हूँ ।

मैं सुना वना तथा उपवना का प्रमा हूँ और मन्वारज आगछा ( म्ब० वार्गनिङ्ग जू रव ) की कृपा म माहे चौम वष एक उपवन म रहा था जा वन व निवन्त न था ।

वार्ग वष १८४० म १८६४ तक ( जय कि मैं राय ममा हा मन्म्य था ) मैं ८८ नाय एनयू व एक पन्त म रहा था जिनक पाठ यगीची था और नमगी भी । वम म्म प्राकृति प्रम न न मुझ ज्ञान जिन व म्म उपवन का भक्त वना किया है । जय किमी प्रकार का भी सम्भव मग उमन नहा है ।

मेरी यही प्रार्थना है—अनुगृह्य है— कि ब्रज को उस विभूति को नष्ट  
प्रष्ट होन स बचा लिया जाय । अधिक क्या लिखू ?

विनीत  
बनारसीदास

पुनश्च—

फीरोजाबाद वालो को आपके जागमा की धुधली सी याद रह गई है ।  
एक बार फिर इस अभिशप्त उद्योग नगरी को देख लें ।

क्या हरियाना और ब्रज में कोई साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध  
कायम नहीं हो सकते ? यह तो हरियाना का आन्दोलन ब्रजभूमि में बड़ी  
शक्का की दृष्टि से देखा गया था । हमारे सबश्रेष्ठ वाचकता बाबू बृन्दावनदास  
जी [ अध्यक्ष ब्रज साहित्य मण्डल ] ने उस पर कुछ लिखा भी था । मैं स्वयं  
राजनतिन गठबन्धन को महत्व नहीं देता, जब तक कि उसकी नींव साहित्यिक  
तथा सांस्कृतिक आधार पर न रखी गई हो ।

यद्यपि ७८ वी वय में मैं प्रायः Retire हो चुका हूँ तथापि  
फीरोजाबाद की सफाई तन्दुरस्ती, के बारे में यू पी सरकार से कुछ जज  
करना चाहता हूँ ।

( ८४ )

प्रिय भाई बृन्दावनदास जी

श्री रामकृष्णसिंह रावेश पो ओ भदई जिला मुजफ्फरपुर को  
लिखे मेरे पत्र की प्रतिलिपि सलग्न है । उन्होंने मयिली पर खूब लिखा  
है । स्व० राहुल जी ने उनका एक विस्तृत निबन्ध हिन्दी साहित्य के  
विस्तृत इतिहास में छपा था । उसे आप ना प्र सभा काशी से मगाकर  
जकर पढ़ें । किस जिल्द में है यह आप रावेश जी से ही पूछ सकते हैं ।  
मथुरा में अतजनपदीय गोष्ठो का प्रस्ताव भी विचारणीय है । ८ १० यक्ति  
बुलाये जायें ।

आपके दोनों पत्र आज मिल गये हैं । अभिनन्दन श्रम की सबत्र प्रशंसा  
ही प्रशंसा हुई है । निस्सन्देह आप सबन मिलकर A I चीज निकाल दो  
है । यद्यपि मैं उसका पात्र नहीं हूँ ।

विनीत  
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी द्वारा श्री राकेश जी को निम्ने पत्र की प्रतिलिपि

फाराजाबाद

१६ ८-३०

४।३० प्रातःकाल

प्रिय राकेश जी

प्रणाम ! क्या एक साठ भद्र बुद्धा है। पर जयम मन्त्राय नग नृवा। आपने पत्र में एक वाक्य एता जाया है 'निम्न मुने विहित कर दिया।

'नन्द' अन्तर्गत मरु यह अन्तिम भेंट है। 'अन्तिम भेंट' क क्या माना ? एता निगमजनक भविष्य-वाणी आप क्या करने है ? 'मम आप अपने प्रति तो अयाय करने हो हैं, मर प्रति भी अयाय करने हैं। आप कृष्णवर पट्टेच मकन है ना मैं भर्त्स कया मरु पट्टेच मकना ? Petura Visit की प्रया अग्रेजा के मरु है आर वर निगवार का नग है। इमरिए आर अन्तिम बायी बात Withdraw कीरिय।

क्या स्वाध्य टीव नग है ? या परमू चिन्ताओं है। पूरा-पूरा कृष्णान् बुद्ध्या निम्न भविष्य। अभा ना विनन हो यत् 'म सांग का 'परम्यगिक मन्त्राय म करने हैं। ममनन् अन्तर्जननगीय 'रिपु' क बाय का आग वगना है। बायुवर कृष्णजननम जा [ अध्याय—इत्र मास्त्रि मन्त्र मधुज ] न 'ममार्गी म टमक वि म्यान रित्रव कर दिया है।

मन्त्रिका विविदि क्या है ? 'म बाया क 'राग्माता म जा उच्चवादि का मास्त्रिपता मुन गीष्ट पनी क 'अत्र गानियों म मवया टुनम है। आका क विनन 'म त्रिनका मन्त्रान् गन्त्र जा न किया या 'म पन्त्र म अभी तक नने अया। विन रित्र म टुन है ?

क्या बायुवर गनवरण मित्र की पुनरु [ बुद्ध्या मास्त्रि नया मन्त्रवि विपक् ] अयजा मित्रा है या नगे ? नित्रवा मकन है। अन्तर्जन पनीम बायुवर्तात्रा की एक टुन मा गीष्टी कों न का जाय ' 'ममार्गी क आनन्तन मधुज म कया रगा। 'माद कृष्णजन नगना 'नो प्रमन्त्रा मधुज म विदमन है जीव व = १० 'मन्त्रा का 'मन्त्रि आननों म कर भी मकन है। या 'म नाय बाय 'म दन्त्र नग कर मकन 'मक माय कप ता प्रवर्ग करना गान। द' का अममद काय नगे। १००) मने वन्त्रा विना जा मकना है।

वि' की पुनरुम नामक वन्त्री गीष्ट न 'मगद' न 'मन्त्रि। मरु 'मन्त्र विविदि वन्त्रा ह वर। 'मन्त्र आ 'मन्त्र गीष्टि। मन्त्र की रचना है।

पुनश्च—

श्री गणेश जीव, 'मित्र जी, रामनारायण उपाध्याय प्रभृति को बुझाया जा सकता है। आप जानते ही हैं कि अतजनपदीय परिपद की स्थापना मैंने ही कराई थी। ये भापाएँ खड़ी बोली की भाएँ हैं— सीत नहीं। आप अपने विचार कृपा कर लिखें।

विनीत

बनारसीदास

( ८५ )

बीने पाँच बज प्रात काल

फीरोजाबाद

२४ ४ ७०

प्रिय श्री धुन्दावनदास जी,

बंदे। बल आपका कृपा पत्र मिला। यह पढ़कर हर्ष हुआ कि ब्रज साहित्य मंडल को अपनी भूमि एक महीन में वापस मिल जायेगी। तब अनेक रचनात्मक कार्यों का प्रारम्भ विधिवत् हो सकेगा। उस दिन की मैं उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा करूँगा।

स्व० वामुदेवशरण जी अग्रवान के पुत्रा से आप मिल आये यह बहुत अच्छा किया। चूँकि हम लोग उस धाद से कोई आर्थिक लाभ नहीं उठाना चाहते इसलिये उनके सुपुत्रो को कोई एतराज न होना चाहिए। यदि वे छापकर उस ग्रन्थ की निजी ठीक तौर पर कर सकें तो और भी अच्छा।

आचार्य वामुदेवशरण जी प्राचीन काल के विद्वानों की याद दिलाते थे। उनका सबसे बड़ा गुण यह था कि वे अपनी शक्तियों को विकेंद्रित नहीं होने देते थे। सभी वे इतना अधिक काम कर सके। पर जिस त्रुटि ने उनके महत्वपूर्ण जीवन को इतनी जल्दी समाप्त कर लिया वह थी—स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षा, हमें उनके गुण ही ग्रहण करना चाहिये और उनकी त्रुटियों से सबक सीखना चाहिए।

पना को तो छपाना ही है वस्तुतः उनका स्मृति ग्रन्थ भी छपना चाहिये। यह कार्य कोई प्रगतिशील प्रकाशक कर सकता है। आप समझ तो कर ही लीजिये।

सौ० बहन सत्यवती मलिक की पुत्री डा० कपिला वात्सायन ने ( जो भारत सरकार के शिक्षा विभाग में उच्च पद पर हैं ) अग्रवाल जी के अधीन Doctorate ली थी और ५०) का वह अग्रजी ग्रन्थ छप भी गया है। आप

उम गरीदकर अग्न पुष्पमालय म रखे बहन मत्पयना जी तथा बनिमा जी दाना म उनक मस्मरण निगाय जा सकन है । बचुर हजाराग्रमा द्विती स इग बार म मना मगवरा काजिय ।

श्रीयुग गग ( भूतपूर्व प्रिमीयन S R K College कीरोजावा ) अग्रवाल जी व समधी लगन है । उन्होंने अग्रवाल जी का एक तीन चित्र तयार करा दिया है—मर आग्रह म—और उनका उद्घाटन व डा० हजाराग्रमा जा स कराना चाहते हैं । यह चित्र जी जा पधार सके ता अत्युत्तम हा । द्विती अग्रवाल जी व सामी रह चुक है ।

अग्रवाल जी का जीवन चरित भला कौन तयार करेगा ? स्मृति ग्रन्थ अवेगा इन आमान हागा और उनक निय anecdotes खट्टे कर लन गान्धे । बचुर मीतन जी न उनक अन्तिम शिा की जा याने निम्नी है व भी वही प्रेरणाग्र है । जम कोई नोडू की बूँद डूँ का मिनाहकर उनक छिनक का फें द उमी प्रकार अग्रवाल जी न अपन अन्तिम शणा का भी भरपूर मत्पयाग ही कर दिया । जिन्होंने उनके गति क अन्तिम शणा स लाभ उठाया—यथा मीतन जी—उनका ता और भी अग्रि कन्त्य हा जाना है कि उनका स्मृति ग्रा व निय भरपूर प्रयत्न करें ।

अपन मटल का भूमि मिन जान व वां वनी कभी वामुवगरण कन का निमाण किया जा सकता है । निबुरा (ग्वास्पर) म जा दवनाम्बर मन्दिर है उनके प्रवक्ताओं व पाम अग्रवाल जा व १५ पत्र य । उनकी नवल भी ल लनी शान्ति ।

श्री स्वर्द्र सत्यार्थी म भा पत्रा की नवन ली जा सकनी है । अग्रवाल जा व पुत्रा मे पूटना शान्ति कि उन्होंने ( यानी अग्रवाल जा न ) दूमरों व पत्रों का सुरभित रक्या या या नहीं ।

श्री चर्नागाव के पाम पृथिवा पुत्र पट्टरा या नहीं ? अभिनन्त ग्रन्थ की एक एक प्रति वागान्तिवा और चर्नागाव व पाम पट्टरानी ही शान्ति । मातूम नहीं कि समुद्री समुद्र स उनमे जिनना व्यय गगा ।

अमर उजाला वातों का वृषा पत्र मिन है । व आपक अभिनन्त व मामन में पूरी मन् देगे । श्री दारोनाल जी यद्यपि Perfect business man हैं तथापि उनस काम लिया जा सकना है ।

यद्यपि मुक्त ता अब कई महीन विग्राम ही करना है तथापि समय समय पर ता निग्रा ही खूँगा ।

( ८६ )

२२ ४ १९७०

प्रियवर,

शायद १४ जून से इटावे का देश घम दो पृष्ठों के बजाय ४ पृष्ठ का निकलेगा। मुझे धुनाया था, सो मैं तो जा नहीं सकता यह पत्र भेज रहा हूँ। इटावे को ब्रज में ही शामिल कर लेना चाहिये। हरिश्चन्द्र जी के पत्रों की ५।५ प्रतियाँ टाइप होकर आ गई हैं। उन्हें छट्वाँझा एवं प्रति आपके लिए सुरक्षित रहेगी। बि० बुद्धिप्रकाश गर्मियों की छुट्टियों में कल ज्ञानपुर से यहाँ आ गया है।

विनीत  
बनारसीदास

पुनश्च—

महाकवि देश पर शोध ग्रन्थ जिन्होंने तैयार किया है उन महिला का नाम डा० राज बुद्धिराजा ए० १४ डी टी यू कौलोनी शादीपुर दिल्ली ८ है। शोध ग्रन्थ के प्रकाशक श्री यज्ञदत्त शर्मा साहित्य प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली ६ है।

सम्पादक देश धम इटावा को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

प्रियवर,

मैं आपके शुभ उत्सव पर जरूर हाजिर होता, यदि मेरा स्वास्थ्य ठीक होता, २० अगस्त को मेरा आपरेशन हुआ था, पर पिछले ९ महीनों में मुझे पूर्ण बिधाम करने का मौका नहीं मिला। अब मजबूरन मुझे आराम करना पड़ रहा है। क्षमा कीजिये, मैं १४ जून का इटावा पत्र बन में सबका असमय हूँ।

आप उचित समयों तो श्री जगन्नीशप्रसाद चतुर्वेदी ५५ काका नगर New Delhi को बुला सकते हैं। व जगन्मनपुर के निवासी हूँ—४ वष भर सहायक रह चुके हैं और २ दो बार जखिल भारतीय थमजीवी पत्रकार संघ के प्रधान भी बन चुके हैं। हा, उन्हें फस्टक्लास का लौटा बाद किराया देना ही पड़ेगा। वे ससद में आज के सवान्ताता है। अनेक बार विदेश यात्रा कर चुके हैं।

इटावा का मैं ब्रजमंडल में ही शामिल करता हूँ। भाषा सम्बन्धी वाद विवाद में पड़ने की जरूरत नहीं। ब्रज साहित्य मंडल से सम्बद्ध रहकर इटावा को अपनी साहित्यिक तथा सांस्कृतिक उन्नति की विशेष सुविधा होगी। आपक

इस उम्र के अवसर पर भुग बंद बाने मूना है। उन्हें नियमना है। उनमें बाइ काम की बात जैसा ता तन्नुमाय बायवार्द भी करें।

१ महाशिव देव विषय शोध ग्रन्थ आर्य कार्यालय में होना ही चाहिये। शायद श्री निरन्तर जी उसकी प्राप्ति व नियमना बतला सकें।

२ A G Hume को याद कर सना निहायन जम्मी है। यंग्रेजी में तो उनका जीवन चरित्र है इंग्लैंड व पाग व जगज्ज का उद्दिष्ट धर्म बना दिया था। उनकी विद्वत्ता पर एक ग्रन्थ ही लिख दिया था।

३ श्री प० सावरमन्म जी शर्मा प० जसराजपुरखेन्हा (राजस्थान) से भनीरिया जी पर लम्ब लिखा है बु० गणेशमिह भनीरिया पर। श्री कंगवन्म मिश्र कमल C/o श्री विद्योती हरि जी हज्जिन कात्राना किम्बव नई दिल्ली से प० भीममन जी के विषय में लम्ब लिखवाइय व कमल जी व पूज्य प।

अपने आस-पास व स्थानों पर जहाँ पर भा जी कुछ उत्कृष्ट योग्य सेवा काय हो रहा हो उनका विवरण छपना ही चाहिये। मिरमागज व मुद्रुल पर एक सगिष्ठ लम्ब जा सकता है। भाई भूपनारायण अग्रवाल से उनका नेत्र-औषधालय का विवरण ले लीजिये। व स्वयं बहुत अच्छे worker रह चुके हैं। उनकी भाभी तथा भाई साहब का जीवनिया आपका पुस्तकालय में होनी ही चाहिये।

जिन जिन स्थानों पर आपके पत्र का प्रचार हो वहाँ व वासवास्तव्यव्यक्तियों व चित्र तथा चरित्र आपका कार्यालय में रहना चाहिये। औरया व मुकनीलाल गुप्त की जीवनी भी रमिये।

फीरोजाबाद के श्री बालकृष्ण गुप्त, श्री रतनलाल कमल डाक्टर महेंद्रस्वरूप भटनागर, श्री बालविहारी शर्मा श्री जगन्नाथ सहरी इत्यादि व विज्ञ जल्द रखिये।

यहाँ के D Jain inter college ने मेरे प्रस्ताव पर एक शहीद कर्म का निमाण करा दिया है। उनका उद्घाटन शायद जुलाई में होगा। श्री श्यामसुन्दर शास्त्री का चित्र जल्द रखिये। बन्नाका का सब उही स्थानों में भिज जाना चाहिये।

श्री बाबू कृष्णचन्द्रजी का ए, एल एल बी अध्ययन चक्र सार्वत्रिक मण्डल मधुरा में गुरुत सम्पन्न स्थापित काजिय। श्री मधुसूदन चतुर्वेदी एम ए १९१७१९ बंगम बाजार हैदराबाद से भी।

शिशु जी के वे अनन्य भक्त रहे हैं। दश घम को वृहन्नाकार में निकालने के पहले पूरी पूरी तैयारी कर लें। आपके सदुद्योग में सफलता चाहता हूँ।

विनीत

बनारसीदास

( ८७ )

फीरोजाबाद

८ ५ ७०

प्रिय भाई धुन्दावनदास जी,

बन्दे। प० हावरमल्ल जी शर्मा पो० आ० जसरापुर बाया खेनडी (राजस्थान) ग्रन्थ की एक प्रति के लिए उपयुक्त अधिकारी है। थ्राड अभिनन्दन मुण्डन कम्पनी अनलिमिटेड के मैनेजिंग डाइरेक्टर वही हैं। मुण्डन शब्द नवीन जी द्वारा जोड़ दिया गया था।

प० हावरमल्ल जी मुझसे चार वष उम्र में बड़े हैं, मेरे अप्रज हैं। बाबू बालमुकुन्द गुप्त का थ्राड मुख्यतया उन्हीं के प्रयत्न से हुआ था। दोनो Volumes आपके पुस्तकालय में होने ही चाहिये।

दानी सज्जना को भेंट स्वरूप कितनी कितनी प्रतियाँ दी गई थी। उनका भी उचित उपयोग करा लिया जाय तो ठीक हो। मेरे अनुरोध पर तीन प्रतियाँ श्री बालकृष्ण जी गुप्त ने भेंट कर दी थी। (१) श्री भक्त दशन जी (२) श्री शीतलप्रसाद जी उपबुलपति आगरा विश्वविद्यालय आगरा (३) श्री जगन्नाथ महरी फीरोजाबाद संदेश और राजाबाबू ने भी चार प्रतियाँ (१) अमर उजाला (२) डाक्टर राजदान (३) फूलसिंह एम पी (४) भगवानदत्त जी चतुर्वेदी मधुरा को भेंट कर दी है।

विनीत

बनारसीदास

( ८८ )

फीरोजाबाद

११ ५ ७०

प्रिय भाई धुन्दावनदास जी,

५ ७० का कृपापत्र आज मिला। श्री शिवदत्त जी चतुर्वेदी एम ए छिपटी मुहल्ला इटावा भी बरात में पधारे थे। ग्रन्थ उन्हें भी नहीं मिला है। शायद आप भेज नहीं पाये। कृपया अब शीघ्र ही भेज दीजिये। स्व० आचार्य



वामुनेव शरण जी के पत्रा की प्रानि के चार म आपन निगा मा जाना । मरपद्र जी क पाम क पत्र भी मित्र जावेंग । उनका स्वाम्य केना है ?

मरे पत्रा का छपान की इम समय जरूरत नहीं है । व ता अनम्य है और उनम मे चुनाव करना कठिन होगा । मैं ता उन्हें मटल नहीं र्ता । हाँ स्व० भादहरिगङ्गाधर गमा क पत्रा की / Typed copies लिनी म आ गई हैं । उन्हें छटना है । उनक टाइप करान म ५०) ता आपन और २१३) ता भी तरह स्पष्ट जाय मित्र कायानय लखनऊ क मच टूण । करीब चार मी पत्र ता हूंगे । एक टर्किन प्रनि आपन सप्रदानय का अपिन हांगी दा भाद बिद्यानकर का द दी जावेंगी और दा मर पाम रटेंगा । उन्हें छटना है ।

भाई कुमुनाकर जी का मित्र रहा है कि व म काम में मदद करें । काई मधुप जान वाला मित्र ता उनक हाथ मित्रता मकता है नहीं ता फिर ठाक द्वारा ही भज टूगा ।

अन्तर्जनकीय परिषद के लिए छापी भी गयी जमाप्रमी पर रख लेना ठीक होगा । तदर्थ अभी मे पत्र-सम्बन्धित होना हा चाहिये । स्पष्ट अगल पत्र म ।

बिनीत

बनारसनाथ

( ८८ )

छापीनाथ

१३ ५-७०

प्रिय भाई बहादुरनाथ जी

बहा । मुझे ख्यात जाना कि मय की एक प्रति गजमना माहिवा बकुला टाकम मध्य प्रान्त का सेवा म रखा भवनी चाहिये । व स्व० मन्नागत्र वागमि त्रु त्व का छननी है त्रिनका में अपन कला है । मात्र भी मन्नागत्र वागमि त्रु त्व का गुरु पौन म मग गानन गाना हा र्ता है । उनक कला म उच्छा गाना असाधार है ।

उनक लैत्र आ मधुकर मटल म ए मय समय अमरका म अध्यन कर र्ता है वन ममपत्र सुवक है । उन्हें लखमना का लिपिना यदु ( त्रिमन प्रथ क भेज करन का वृत्तल ग ) By Air आप भज मरन है । श्री विनय चतुर्वेदी का दाय भज लिपि र्ता है ।

बनारसनाथ

( ६० )

फीरोजाबाद

१२-५ ७०

प्रिय भाई बृन्दावनदास जी,

श्री राधेमोहन अग्रवाल ( मसस शिवलाल अग्रवाल पब्लिशर्स ) ने बाबा पृथ्वीसिंह आजाद का आत्मचरित बहुत खनिया छापा है। आज ही उसकी एक प्रति मुझे मिली है। आप उस पुस्तक की एक प्रति शीघ्र ही अवश्यमेष खरीदें। मूल्य पंद्रह रुपये है, जो बिल्कुल ठीक है। [I. III a remarkable autobiography of a great revolutionary आप पुस्तक का पढ़ने के बाद एक निम्नो पत्र बाबा पृथ्वीसिंह आजाद पो आ लालरू जि० पटियाला (पंजाब) को जरूर भेजें। वस उनका स्थायी पता शिशु बिहार भाव नगर है पर इन दिना वे लालरू अपने घर आय हुए हैं, उनके सुपुत्र का विवाह था। मैं तो इस मौसम में जा नहीं सका। पंजाब से भावनगर जात हुए अवश्य वे मथुरा स्टेशन से गुजरत होंगे। कभी उन्हें निमन्त्रित करके अपना अतिथि बनाइये। महापुरुष हैं। ऐस सत्पुरुष से आपका व्यक्तिगत परिचय होना ही चाहिए। 'दीन क्या है किसी कामिल की इबादत करना।' चरन्वस्त की यह परिभाषा मुझे प्रिय है।

विनोद

बनारसीदास

( ६१ )

फीरोजाबाद

२८ ५ ७०

प्रिय भाई बृन्दावनदास जी,

बंदे । साप्ताहिक हिन्दुस्तान उत्तर प्रदेश विषयक विशेषांक निकाल रहा है। शायद अब उसमें लेख देने के लिए वक्त तो बचा नहीं क्याकि वह १४ जून को ही निकल जायगा फिर भी आप एक पत्र तो सम्पादक को भेज ही सकते हैं। कोई भी मौका अपनी ब्रजभूमि की चर्चा का हम छोड़ना नहीं चाहिये।

शिवपुरी में श्वेताम्बर लोगो का जो मन्दिर है वहाँ उनके एक गुरु विजयद्वार सूरि जी रहते थे जिनकी पुस्तक की भूमिका स्वर्गीय अग्रवाल जी ने लिखी थी। उन गुरु जी के सहायक श्री काशीनाथ सराफ ने मुझसे कहा था

कि अग्रवाल जी के १५ पत्र उनमें यहाँ सुरक्षित हैं। उन पत्रों की प्रतिलिपि भेगा लेनी चाहिये।

डा० सत्येन्द्र जी अपने भानजे की शांती में यहाँ पधारे ५ मुद्रस मिले भी थे। उनसे पत्रों की नकल भेगा ही लेनी चाहिये।

जमाष्टमी के भौक पर अतजनपनीय परिपत्र के ५, ७ कायरताज्ञा की गोष्ठी का विचार परिवर्तन सामयिक होगा। अभी स लिखा पढ़ी की जाय तो ठीक हो। आनिय्य तो आप कर ही लेंगे, पर किसी किसी को शायद पायस भी दना पड़े। उसके लिए चन्ना कर लिया जाय।

बिनीत

बनारसीदास

( ८२ )

फीरोजाबाद

२६ ५ ७०

प्रिय भाई कृदाबनदास जी,

प्रणाम। जनाबाय विजयन्द्र मूरि के सहायक श्रीयुग काशीनाथ सराफ का पता — यमोदम मन्दिर १६६ मजदान रोड, अंधेरी बम्बई २८ है। उनसे अग्रवाल जी के पत्रों का पता लग जायगा। तीसरे महावीर भाग २ की भूमिका अग्रवाल जी न लिखी थी।

श्री सरयेन्द्र जी का पुन निप्रिये कि वे अग्रवाल जी के पत्रों की नकल भेज दें।

भाद हरिमण्डूर जी के पत्रों की नकलों को विधिवत् छेन्वा रहा हूँ। एक प्रति आपके लिए सुरक्षित रहेगी। भाई विद्यानकर जी न, जो मनिष में काम करते हैं, यह मन्त्रेशा भिजवाया है कि जिस विद्यालय में उनकी पत्नी प्रिन्सीपल हैं उसकी पत्रिका का विशेषाङ्क निकालना ठीक न होगा। हमारे कालज में उनकी भतीज की पत्नी प्रिन्सीपल हैं। ऐसी स्थिति में क्या किया जाय? श्री प्रकाशवीर झाझी तो विलायत यात्रा पर गये हैं।

मरा विचार था कि आगे के रत्नमुनि जन कालज तथा सक्करिया कालज की पत्रिकाओं के विशेषाङ्क निकाल लिये जायें।

नागरी प्रचारिणी पत्रिका (काशी) का सम्पूर्ण निवेदन अब बहुत ही घटिया निकला है। मभा न उस ठीक तीर पर निराकरण के लिए कुछ भी प्रयत्न नहीं किया।

बनारसीदास

( ६३ )

फीरोजाबाद

३ ६ ७०

प्रिय भाई यु०दासदास जी,

बंदे ! आपका काह मिला । आप बन्नीनाथ की तीथयात्रा पर जा रहे हैं, यह पढ़ कर हँस हुआ । कभी कभी प्राकृतिक सौंदर्य के दर्शन करने चित्त को प्रफुल्लित कर ही लेना चाहिये । धार्मिक विश्वास रखने वालों को तो उसका पुण्य भी मिलता है । डबल मुनाफा है ।

यह काह आपको तीथयात्रा में सौटने पर मिलगा । इन दिना मुझे आपकी याद कई बार आई । २८ ता० के जमर उजाला में छपा था कि नारखी ( जिला आगरा ) में २९८ दो सौ अठारह बच्चों की मृत्यु चेचक से हुई है । तभी मुझे ख्याल आया कि मैं आपको उसके बारे में लिखू । आपके सिवाय मैं किसी भी ऐसे दूसरे व्यक्ति को नहीं जानता—शायद बालकृष्ण गुप्त जी आपके समकक्ष हैं—जो मेरी प्रार्थना पर ऐसी याता की ओर ध्यान दे । बल नारखी के एक सज्जन ने खबर दी है कि मृत्युसंख्या बढ़कर ४५६ हो गई है । आठ दस हजार की आवादी में यह एक बड़ी भयङ्कर दुष्टता है । मैं नर्सिक, जमर उजाला, पायोनिवर, अतः न भारत तथा कलकट्टर आगरा को पत्र भेज है । आप यदि मयुरा में होते तो आपके साथ नारखी आने का प्रोग्राम बनाता । ब्रजसाहित्य मण्डन के संस्थापक तथा उसके अध्यक्ष का यह कृतव्यु भी है ।

बिनीत

बनारसदास

( ६४ )

फीरोजाबाद -

५ ९ ७०

प्रिय भाई यु०दासदास जी,

आपके सज्जन लीट आन के समाचार मिले । नारखी में कुछ action तो ले लिया गया है । वहाँ ने भी बच्चों की मृत्यु ही घटती है ।

उत्तर प्रदेश सम्मेलन वाले मुझे भी साहित्य वारिधि बना रहे हैं । इस प्रकार ब्रजभूमि में ने दो समुद्र हो जायेंगे । मैंने उह लिख लिया है कि मेरे जैसे साहित्य पोषरे ने वारिधि क्या बनाना चाहत है ? पर उनकी जाना शिरोधार्य कर ली है ।

भाई हरिगद्दर जी के पत्रों की निधिवार छँटवा रहा हूँ। श्री विद्यागद्दर जी के सखीबखश रत्नामुनि जैन इच्छर कालत्र की पत्रिका का हरिगद्दर घर नहीं निरमवाना चाहते, वहाँ उनकी घमण्डनी प्रधानाध्यापिका हैं और न सेवगरिया कालत्र की पत्रिका का, जहाँ उनकी भाभी प्रिंसीपल हैं। तब आप मित्र का ही हरिगद्दर अद्ध निवासना व्यावहारिक होगा।

कम्पनी में मुण्डन भण्ड नवीन जी का जोड़ा हुआ था। उन्होंने कहा था, 'बिना सोना को मूँड़े कम्पनी का काराबार चलेगा नहीं।'

विनीत  
बनारसीदास

( ८५ )

फीरोजाबाद  
१६७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्रीयुग गुप्तावर भी ए, गुप्ता श्री कुमुमावर जी आयनगर फीरोजाबाद का शुभ नाम ब्रजभास्ती की श्री निष्ठ पर रक्षित। गुप्तावर जी ४ दिन से स्व० हरिगद्दर जी के पत्र छँट रहे हैं। उन पाँच टंकित प्रतियों में मैं एक आपकी सेवा में अर्पित होगी। श्री कुमुमावर जी तो बहुत अच्छे व्यक्ति हैं और हिन्दी के लिए बहुत काम भी उन्होंने किया है। वे भी ग की कालत्र में हिन्दी पढ़ते हैं। श्री गुप्तावर जी न एम ए, प्रीविप, की परीक्षा भी हैं। उत्साही युवक हैं।

६ ता० के सनिव म पानीवाल जी का मरी अक्षात्रलि पढ़ सीजिय। ब्रजसाहित्य मण्डल का त्रिक है।

मि० ए आर शेरवानी सनिव बाना को आप निम्न सन्त हैं नि यमि वे कुछ महायत्ना करें तो ब्रज साहित्य मण्डल पानीवाल जी की २०० वृष्ठ की जीवनी तैयार करा सकता है।

विनीत  
बनारसीदास

( ८६ )

फीरोजाबाद  
१०६६०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

बेटे ! ६ ता० का वृत्तापत्र मिला। आचार्य श्री विश्वारीनाम जी का एक अभिनन्दन ग्रन्थ छोट किया जा चुका है। उसकी प्रति भर पाठ है। वैदनाथ धाम वाले उनका यजमान हैं।

स्व० हरिशङ्कर जी शर्मा के पत्रों की प्रतिलिपियों की पाच कापियाँ मैं श्री मुधाकर जी वी ए ( श्री कुमुमाकर जी के पुत्र ) द्वारा ६ दिन में छोटवा नौ हैं—तिथि के अनुसार उनकी व्यवस्था कराती है। दो प्रतिपा आगरे विद्याशङ्कर जी को भेजनी हैं, एक आपको भेंट करनी है तथा दो अपने सग्रहालय में रखनी हैं। मयुरा कैसे भेजूं यह सवाल सामने है। पोस्टेज में तो बहुत व्यय हो जायगा। क्या हमारे भिजवा दू।

प्रिय क्लोपाटजिन को जीवनी भी आपको भेजनी है। राजमाता जी को ग्रंथ भेज दिया यह अच्छा किया। भाई विद्याशङ्कर जी का पत्र भी अभी मिलता है।

वि० बुद्धिप्रकाश के मन में एक विचार आया था कि यदि श्री बालकृष्ण जी गुप्त राजी हो जाय तो ब्रज साहित्य मण्डल का अधिवेशन फीरोजाबाद में किया जा सकता है। तिथि उनकी सुविधा पर छोड़ दी जाय। मैंने इसका जिक्र बालकृष्ण जी से कर तो दिया था।

नारन्ही विषयक आपका पत्र पढ़ लिया है। बहुत ठीक लिखा है आपने। मेरी सामर्थ्य नहीं कि देहरादून की यात्रा कर सकूँ।

विनीत

बनारसीदास

( ६७ )

फीरोजाबाद

१३ ६ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

बन्ने ! 'मुल्ला की लीड मसजिद' तक और बनारसीदास की वृन्दावनदास तक। कई वर्षों में स्व० आचार्य जीवनदत्त जी के विषय में स्मृति ग्रन्थ निकलवाने की साधना ग्ना है पर कोई व्यय नहीं बन पाया। मुझे यह देखकर घटना होती है कि जिन आचार्य ने १ हजार मस्कृतज्ञ उत्पन्न किये हैं उसका नाम देवा कोई नहीं। कृष्णता की कोई सीमा है ?

दो सम्मरण मरे पाम हैं, एक तो आयुर्वेदाचार्य श्री जगन्नाथप्रसाद का और दूसरा निमय जी का। आप कहें तो आपको भेज दूँ।

यदि आप, श्री प्रमोदजी तथा निमय जी इस श्राद्धकर्म को हाथ में ले लें तो अत्युत्तम हो। और कुछ नहीं तो लेखा का सग्रह तो हो ही जायगा।

आज 'सन्निव' का एक सत्र हम बार में भेज रहा हूँ। पन्च रत्न निगा फिर फयर किया और तीन प्रति तयार की। गायन तीन प्रति और भी तैयार करनी पड़ेगा। आप अपनी सुविधानुसार नग्वर जरूर जाइय। पर उसके पूव वही के आचाय प्रभृति में पत्र व्यवहार कर लाजिय। आचाय जावन दस जी के शिष्या तथा भक्ता के नाम तथा पत्र इकट्ठे करके उनसे पाग एक गान्ता चिट्ठी—परिपत्र—भेज दीजिय। था करपात्री जी से भी चिट्ठी पत्री कीजिय। गायन के कुछ माधन इकट्ठे करा सकें।

देहरादून के सम्मेलन के कृतान्त सन्निव अमर उजाला इत्यादि में छपन ही चाहिए, अगिल भारतीय सम्मेलन का सरकारी-करण के बाबू बिल्लुन मनीन गा बन गया है—भवया हृदय हीन। यदि प्रन्धीय सम्मेलन का हा सजीव बनाया जा सके तो कुछ काम हा। पर आज तो मुख्यतया ब्रजमन्त्र पर ही अपनी शक्तियों का कद्रित रखें। एकत्रि सार्ध सब सध।

विनीत

बनारसीदास

( ८८ )

कीरोजाबाद

१६ ६ ७०

प्रिय भाई कृदाधनदास जी,

बन्ने। कृपया अपना छोट साइज का ब्याक बनवाकर उम रजिस्टर फामन द्वारा श्री दवीन्यान दुब सम्पादक दगधम मासिन गज इत्यादि का भेज दीजिय, दुब जा न दगधम' का अब चार पृष्ठ का कर लिया है। माधना की उनक पाम कमी है। दगधम में जनपनीय काम लना है। इत्यादि का बन्धान इमी में है कि ब्रजमन्त्र के साथ सहायक कर। उममें उमसी कोद हानि नहीं।

देहरादून का उत्सव क्या रहा? यदि उत्तर प्रन्ध सरकार प्रान्तीय सम्मेलन का आर्थिक सहायता दे तो बड़ा काम बन।

विनीत

बनारसादास

( ८८ )

द्वितीय काद

१६-६ ७०

प्रिय श्री कृदाधनदास जी,

यदि उत्तर प्रन्धीय सरकार कम से कम ७८ हजार रुपये प्राज्ञाय सम्मेलन का दे देता ४००) चार सौ रुपये महिन पर एक प्रचार मन्त्री या साहित्य मन्त्री

रखा जा सकता है जो ममस्न प्रदेश में घूम घूम कर पुरानी सस्थाओं की देख भाल कर और नवीन समितियाँ कायम करे। पुरानी सस्थाओं का बुरा हाल है।

ग्राम निर्माण के खगड़ों से सवथा दूर रहने हुए ब्रज, अवधी, भाजपुरी तथा बुंदेलखण्ड के लिए प्रदेशीय सम्मेलन डा० अग्रवाल के कार्यक्रम के अनुसार काम कर सकता है। वह काम निहायत जरूरी है।

सत्यनारायण जी कविरत्न की कुटी का छाँछपुर में निर्माण भी एक ऐसा विषय है जिस पर ध्यान देना चाहिये।

वामुन्वशरण जी का तैल चित्र उद्घाटन के लिए एस आर के डिग्री कालेज में तैयार करा लिया है। प्रिमीपल गग उनसे समझा हात हैं।

जैसे ब्रजमण्डल में आप काम करते हैं वैसे अवधी, भाजपुरी तथा बुंदेलखण्ड मण्डल में भी काम करने वाले होने चाहिये। बुंदेलखण्ड में तो हैं भी। अब की बार बंधुवर रामचरण ह्यारण मिश्र का उपाधि जरूर मिलनी चाहिये।

बाबा पृथ्वीसिंह जी की पुस्तक मैसर्स शिवलात अग्रवाल ने बहुत ही बढ़िया छपाई है।

विनीत

बनारसीदास

( १०० )

२० ६-७०

प्रिय भाई पृथ्वीदास जी,

बंदे। आशा है आप देहरादून की यात्रा से सकुशल लौट आए हों। मैं अनुमान किया था कि चायद आप हरिद्वार चले गये हों—गंगा स्नान करने।

ब्रजमण्डल की भूमि अधिग्रहण में अब क्या देर है? सनिक क शेरवानी जी यदि चाहें तो पालीवाल जी की स्मृति के लिए हजार रुपये दे देना उनके लिए कुछ भी कठिन नहीं। जो स्कालर शिप उन्होंने लिये हैं, वे उपयोगी अवश्य हैं पर उनके मुकाबले ब्रजमण्डल में स्मारक का महत्व कहीं ज्यादा है।

नरीला के आचार्य जीवनदत्त जी का साहित्यिक श्राद्ध आपको ही करना है। दो लेख मेरे पास हैं उन्हें मैं आपको भेज दूंगा।

ब्रजभूमि में जहाँ-जहाँ उन्नति के अकुर दीध पड़ें वहाँ हमें प्रोत्साहन के विभिन्न जल से उन्हें सींचना चाहिये।



स्थानीय एम आर क कारनेज म डा० वागुदेवगरण जी अग्रवान का तेल चित्र नगार करा निया गया है। यन् हिजाराप्रमाण जी पधार मक्के ता अत्युन्नत तदा नो आप ही उमरा उद्घाटन कर रे। एम आर क कालज क भूतपूर्व प्रधानाचार्य अग्रवाल जी क समधा हात है।

बिनीत  
बनारसीदास

( १०१ )

फीरोजाबाद  
२७-६-७०

प्रिय भाई बुद्धावनदास जी,

चाय पीन क बा में प्राय अपन मित्रा जुम चिन्तकों तथा महायकों का स्मरण किया करता हूँ और जा विचार आत है उन्हें यथावकाश उन तक पहुँचा जाता हूँ। कुछ घानें आपका मवा म भा निवन्त करनी है—

१ अपन निजी सग्रहालय पर अपन समय तथा शक्ति का यन् आप केन्द्रित कर मक्के ता वह एर मन्दबुद्धि चीज बन मक्की है। तर आपका अपनी मुनफरिब मानानता पर अकुश उमाना हागा। रामजम कारनेज क मम्पापर की काय पद्धति मुन्न प्रिय लगता है। सारा बनारनाथ जी रिटायड जज थ और उहनि बहुत छोटा भा पैमा अपन निय रमकर गय अपना शिक्षण मम्पात्रा का अर्पित कर लिया था। उनक पास यन् कोई कुछ माँगन जाना तो व यही कहन कि मरी मम्पात्रा क निय यन् आप कुछ कर सकें तो मैं भी वाली मी मवा कर मक्की हूँ। सारा बनारनाथ पर एक अच्छी जीवनी लिखी जा मक्की है। सिवा आप जान रहन हैं। वही के रामजम कारनेज क अधिवारिया म मिलकर साला जी विषयक सामग्री इकट्ठी कर लीजिय। साला बनारनाथ पर एक सभ ता लिखिय ही।

२ मरा स्व० हरल्यालुमिह जी विषयक फाइल में स उनके कुछ पत्रा के अग नकल करा लन चाहिय।

३ स्व० जुगलश ब्रजभाषा क अच्छे कवि थ। सम्मनन प्रयाग म काम करा थ। उनका ब्रजभाषा काव्य का ग्रन्थ स्व० सरदार नेमदाप्रमाणमिह का जा रीवा निवामी थ मर्मपिन किया गया था। उनका पता लगाकर उन पर जम्पर कुछ लिखिय। चित्र मिल जाय तो जरूर उसका Enlargement कराइय। उनकी पुस्तक ता रमिय ही।

४ रसिकेन्द्र जी के चित्र का भी Enlargement आपने महा होना चाहिये। रसिकेन्द्र भवन कालपी से चित्र मिल जायगा। “नवीन नायिका भेद” मधुसूदन जी ने छपा दिया था।

५ देशधम सावितगज, इटावा में कनौजी भाषा पर कुछ छपा है। श्री देवीदयाल जी दुवे को लिखकर उनके ४ पृष्ठ वाले दैनिक का प्रथम अङ्क मंगा लीजिये।

६ बंधुवर डा० नगेन्द्र के भाषण पर अथ अन्तजनपदीय कायवर्त्ताओं की प्रतिक्रिया मात्सूम कीजिये।

विनीत

बनारसीदास

( १०२ )

फीरोजाबाद

२६-६-७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

प्रणाम ! कल रजिस्टर्ड बुकपास्ट से आचार्य जीवनदत्त जी विषयक तीन लेख तथा कुछ नोट्स भेज दूंगा। साथ में आचार्य जी के शिष्या तथा भक्तों के पत्र भी हैं। इस कृत्य को आपका सौंपत हुए मुम हादिक हर्ष है। आप धन्यवाद का एक पत्र आमुर्वेदाचार्य श्री जगन्नाथप्रसाद जी वैद्य की डाकखाने के पास फीरोजाबाद के पत्र पर भेज दीजिये। पत्रे बगैरह उन्होंने ही लिखे हैं। निम्नय जा को भी लिखिये। अवकाश मिलने पर आप उस विद्यालय के दशन जरूर कीजिये। वैसे कभी मैं भी वहाँ की तीथयात्रा करना चाहता हूँ। श्री बालकृष्ण जी की गाड़ी चाह जब मिल सकती है। श्री बालकृष्ण जी की पुत्री का विवाह कल है। चैनीशोब को मैंने कल एअर मेल पत्र भेजा है— ब्रजभारती पढ़ कर।

आप अपने स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रखें। ब्रजभूमि के पुनर्निर्माण में आप अथ कार्यकर्त्ताओं की अपेक्षा सबसे अधिक सेवा करने की सामर्थ्य तथा श्रद्धा रखते हैं, इसलिये आपका तटुर्मुक्त रहना ही अत्यन्त ही आवश्यक है। Over work से बचिये। जितना काय सुविधापूर्वक हो सके उतना ही हाथ में लीजिये। ‘न’ कहना सीख लीजिये। यदि कोई काय आपको अनावश्यक तथा बह्प्रद जेंचे तो निस्सहोच और दृढतापूर्वक उसे अस्वीकार कर दीजिये।

विनीत

बनारसीदास

( १०३ )

फीरोजाबाद

२६ ६ ७०

प्रिय भाई बृदायननाम जी,

बन्ना ! आचार्य ज्ञानन्त जी त्रिपय मासग्री पहुँचो हांगी । उमरे साथ उनर त्रिप्या क पत्र भा हैं । कृपया उनरा मर सत्र का प्रति भजनर आचार्य जी का सम्मरण भजन का अनुरोध काजिय । यह बड़ा पुष्प काय है । First hand impression पान क त्रिए आपरो मरीरा का तीषयात्रा—अपना मुविज्ञानुसार कर ही सना चाहिय । फिन्हाउन ता आप त्रिधाम करें । स्वर्गीय कस्त्रिवर जुगता के विषय म सम्मजन प्रवाण वाता म पूछिय । उनरा काज्य मयह सम्मजन पुष्पराजय मे हांगा । बहुत अच्छा निश्चन थ ।

ब्रजमन्त्र की मवाज्ञाण उनहिही हम सांगा का उद्य नृता चाहिय । भाद बावदृण शुभ न फीरोजाबाद क निकट हा एन नवीन उपवन की नीय हाती है । उममे ६१ वृष उन्ना त्रिप्या थाम क रगा दिय हैं । और भी वृष क रगावेंगे । आप उन्हें पत्र निम्निय । उनरा राटना वाता बगीचा भा आपका खना है । राजागानू का उपवन ता आप रग नी खुन है । उम पर ता मानिज्ञ की तनवार रग रगा है । छत्रमर का भा यात्रा करें—आगरे म वम ७ मान दूर है ।

भाद बाउम् न आगम जमा नया त्रिपिद्धर जी क तन चित्र बनवा के त्रिप स्वय मे कग है पर चित्र बमी तनान मरी रग गया । य वरों के भारती भजन म रगेगे । बाउम् रा भी पत्र निम्निय प्रा मानिय करन रदिय ।

भाई यणपान जा न त्रिपि म बिम्बा है त्रि जितना मन्थाग उन् मरे अमिनन्त ग्रथ मे मिना उनरा गताग भी आचार्य बिनावा जा क भक्त नहीं द रह । यह वर ग्रथ की बात है । आचार्य बिनावा जी ता त्रिप की एन विमूनि हैं । वस्तुतः नगन क कायकर्त्ता का कभी ही हमका मृन् कारण है । मय फिर ।

विनीत

बनारसदास

पुनरुच—

पाना उम्मेन म मर टन्तना मुस्किन हा मवा है इतिथि का उन् समय का त्रिप्या जाय म पत्र-व्यवहार करन म हा कर नना चाहता है । इनावा क्या बन्दोही भाषा क धर म जाता है ? मे ता उम भाषा क बार म

कुछ भी नहीं जानता । क्या बैसवाड़ी उससे मिलती जुलती है । सभी जनपदीय भाषाओं के प्रांत बनवाने का विचार स्व० राहुल जी का था, पर वह तो अव्यवहार्य था । हमें विशुद्ध साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम पर अपनी शक्ति केन्द्रित करनी चाहिये । प्रत्येक जनपदीय भाषा में सचित सामग्री का पूरा पूरा उपयोग हो, उसकी रक्षा हो और उसको फलने फूलने का मौका भी मिले, यही हमारा लक्ष्य होना ही चाहिये ।

मैथिली भाषा का मामला नया नहीं है । स्व० सर आशुतोष मुखर्जी ने उसे कलकत्ता विश्वविद्यालय में स्थान दिया था । स्व० अमरनाथ झा बड़े गौरव के साथ कहते थे—'मैथिली हमारी मातृभाषा है हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा' यह दृष्टिकोण सबथा स्तुत्य है । माँ जिम बोली को बोलती हो वही मातृभाषा । यदि किसी की पूज्य माँ खड़ी बोली बोलती है तो अवश्य खड़ी बोली उसकी मातृभाषा है पर सबको एक लाठी से क्यों हाका जाय ? बात दरअसल यह है कि इस विषय पर लोगों के दिमाग में अस्पष्टता है । वे इस बात को भूल जाते हैं कि जनपदीय भाषाएँ हिंदी की माँ हैं, उसकी सौत नहान ।

मनुष्य गणना के समय जनपदीय भाषाओं को मातृभाषा लिखा देने से कौन आसमान टूट पड़ेगा ? मातृभाषा ब्रजभाषा (हिंदी) लिखान से यह तो पता लग ही जायगा कि ब्रजभाषा बोलने वाले कितने हैं अवधी तथा भोजपुरी के कितने । यदि साहित्य अकादमी में राजस्थानी बुंदेलखण्डी या भोजपुरी को स्थान मिल जाय तो उससे राष्ट्रभाषा की क्या हानि होगी, यह मेरी समझ नहीं आता । अतर्जनपदीय कार्यक्रमों को इस प्रश्न पर विचार कर लेना चाहिये । गंती रिट्टी भेज कर आप श्री गणेश चौब, राकेश जी प्रभृति से पत्र-व्यवहार कीजिये । नाई जमूनमाल जी आपको नमस्ते कहते हैं वे भी आपके प्रशंसक हैं ।

विनीत  
बनारसीदास

( १०४ )

फीरोजाबाद  
१ ७-७०

प्रिय भाई धृंदायनदास जी,

वन्दे ! वधुवर मीतल जी के विषय में आपके भेजे नोट मिले । उनसे मुझ सहन सहायता मिलेगी । यशपाल जी ने मुझे निश्चा है कि जितनी सहायता

उन्हें मरे अभिनन्दन ग्रंथ में मिलता उनकी गतांग भी आचाय विनोबा जी के ग्रंथ में नहीं मिल रही। इसमें मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। 'नाग अपन-अपन घषा में व्यस्त हैं और हम कामों का 'पालन' सम्पन्न हैं। यदि आप यादगल जी, बालकृष्ण जी, आठम, राजाबाबू और शम्भुनाथ चतुर्वेदी पारम्परिक सम्प्रदाय की नीति से काम न लें तो मरु ग्रंथ कल्पि नहीं निकल पाता। आपका आश्चर्य होगा कि भाद हरिमाळ जी का ग्रंथ अब तक प्रेम में बाहिर नहीं निकल पाया—यद्यपि छपा छपाया पड़ा है। यहाँ दया श्री माहन्तान द्विवेदी ग्रंथ का हृद है।

मैत्री के विषय में डा० जोनसन ने Sir Joshua Reynolds को लिखा था— If a man does not make new acquaintances as he advances through life he will soon find himself left alone. A man Sir should keep his friendship in constant repair

जानसन ने बौद्धिक से भी कहा था—“Sir I consider that day lost in which I do not make a new friend पर मित्र बनाने का व्यापार काफी खर्चीला है यद्यपि उसमें पर्याप्त आध्यात्मिक मुनाफा है। आप इस बात का भूल जाते हैं कि मैं जूना ककड़ मुसल्ल के सठमननाम बजाज का नानी है जो गन्दे के जमान में मधुरा में गजी गाढ़े की दुकान करता था। इसविषय में बंदर वृत्ति [ sound investment की बुद्धि ] विराम में पड़े है।

परमों नई लिखा के श्री जवाहरलाल म्यूजियम के एक कार्यकर्ता सीनबन्धु C F Andrews गतांगी के विन मरे द्वारा संप्रेषित समाद का स्थान जान है। उन्हें मङ्गल से १० लाख रुपय प्रतिवष की इमरान मिलनी है पर वे मरी सम्पूर्ण मामलों में स्वल्प योग्य हैं। खरीद कर कान्ति मिमान नहीं कायम करना चाहते। यही नीति National archives का भा है। खर। चूकि जानबन्धु एड्जुज मरे विन भानु नृप पूष्य से इसविषय उनकी गतांगी की प्रार्थना में मुझे भरपूर महाराज देना हा है।

भाई मोहन जी पर एक छाया सा उभर उठाय दिना हुआ। उनका एक बार आप पर नीतिरक्षण। निम्नलिखित उक्ति बना मानना की है। उनके पुस्तक के नाम तथा मन्त्रि परित्व मुने चाहिए। यद्यपि मुझे पूरा-पूरा विश्वास करना चाहिए पर इस प्रकार के कृत्य पावन में मैं क्या विमुख नहीं होना चाहता। आचाय वासुदेवार्ण का उल्लेख मरे सामने है और

तुगनेव का भी जिहाने अपनी मृत्यु माय्या से एक लेखक के लिये सिफारशी चिट्ठी लिख दी थी। तुगनेव भेरे द्वारा ही हिंदी में आये हैं—और जिवग भी।

बिनीत

बनारसीदास

( १०५ )

फीरोजाबाद

३-३-७०

प्रिय भाई पृ०दादनदास जी,

बंदे। मैं आपके निजी संग्रहालय के विषय में जितना ही विचार करता हूँ उतना ही उसकी उपयोगिता के विषय में मेरा विश्वास दृढ़ होता जाता है। ब्रजमंडल में कोई स्थान तो ऐसा हाना ही चाहिये जहाँ उस जनपद की सर्वाङ्गीण उन्नति के विषय में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध हो सके। पर जैसा कि मैं आपका लिखा है उसके लिये आपको अपनी मुतफर्रिक दानशीलता पर अकुल रखना होगा। ब्रजजनपद तथा उसकी सेवा बस इतना ही या यही लक्ष्य आपके लिये पर्याप्त है।

ब्रज के आधुनिक कवियों के चिन्ता की दो दो प्रति आपके यहाँ होनी चाहिये। उनके सुरक्षित रखने के ब्रजानिक ढंग भी जो सुलभ हो सकें आपको जान लेना चाहिये। सीढ़ तथा दीमक इत्यादि से कागजा को बचाना अत्यन्त ही कठिन कार्य है। और फिर स्याही भी मर पड़ जाती है। जो पत्र महात्मा जी ने दादा भाई नौरोजी को भेजे थे उनकी स्याही निकुल खतम हो गई है और वे पड़े भा नहीं जाते।

मेरे पास बापू के भी पत्र हैं। उनमें से जो पतिल से लिखे हैं वे dim हा चले हैं। उनकी Photostat copies तो गांधी संग्रहालय नई दिल्ली तथा यास्नाय पालयाना (रूम) में सुरक्षित है और फोटो भापाल में। आप नित्य प्रति अपने संग्रहालय के लिये कुछ न कुछ काजिये। एक अच्छा कपड़ा तो आपके पास होना ही चाहिए। ब्रज क्षेत्र के कवियों के—खडी बोली तथा ब्रजभाषा के—चित्र ले लीजिये। भाई बालकृष्ण जी की सुपुत्री का विवाह सवुशल हो गया। भाई बालकृष्ण जी बहुत सहृदय व्यक्ति हैं। उन्हें प्रोत्साहित करत रहिये। उनसे बहुत काम सेना है। भीतल जी विषयक लेख कुछ रफ तो लिख लिया है। भेजूँगा।

बिनीत

बनारसीदास

( १०६ )

फीरोजाबाद

७-७-७०

प्रिय भाई बन्दाबनदाम जी,

यन् । मातन जी विषयक आन सत्र का एक प्रति उन्हें तथा दूसरी आरती मायूना बुकपोस्ट द्वारा भेज रहा हूँ । यदि कोई गार्हस्थ्य प्रमा पाल्मन एक प्रति रख भी स तो दूसरी तो पहुँच ही जायगा । आप मीनल जी से फोन द्वारा कुछ सन्निधि वि चयन उक्त मित्रा या नगी । तीमरी प्रति भी मेरे पास सुरक्षित है । यदि बन होना तो भाई इन्सोप्रमा डिप्टी जी तथा धानारायण जी और सत्येन्द्र जी से इसम इसनाह स सना । आपका नाम म मैन प्रणाम स ली है । यदि मीनल जी नम प्रतिमां टाइट कर सें ना भिन्न भिन्न पत्रा म इस उद्घुन कर सचता है । कुछ विचारन हा हा जायगा ।

मुझे पत्रने दम्न हो रहे हैं तथा बबामीर म गून भी जाता है फिर भी जम कर चार घण्ट बझा आवसयक प्रतीन दूत्रा । अरन ब्रज क सक्ता की मेवा का कोई मौका मैं हाथ म ज्ञान देना नों चाहता । आप और मीनल जी नाना ही मेर निजमान है । यद्यपि बाबा सठमनगम न उत पत्र को छोड़कर बजाजी कर ना थी पर उनका पोत्र निजमाती जनी लाभनायक वृत्ति का नहा छोट सक्ता ।

विनीत

बनारसीदास

( १०७ )

फीरोजाबाद

११-७-७०

प्रिय भाई बन्दाबनदाम जी,

यन् । कृपापत्र मित्रा । आशा है कि मातन जी विषयक लक्ष अब तक पहुँच गया होगा । मे म म एक प्रति ता भिन्न हा गद हागी । न पहुँची हो तो तीमरी प्रति रजिस्ट्रा म भेज दूँगा ।

आपका सम्बद्ध प्रवामा अनुज चाह जब पधार सकन हैं । नम मित्रकर बन्त हय होगा । मेरा मयाल है कि मग्रहानय को ब्रज सम्प्रदायी चित्र चरित्र हत्यानि पर ही वेष्टित करना टीक हागा । विम्वार करन मे ता मामना विपुन व्यमाध्य बन जायगा । फिलहाल अपन हील का ही मग्रहानय का रूप दे दें । 'एकहि सार्ध सब सार्ध' ।

बनारसीदास

( १०८ )

फीरोजाबाद

१२ ७ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आप एक विनम्रतापूर्ण पत्र श्री फूर्नसिंह जी एम पी मैन्यूर राज्यसभा १३५ साउथ एवेन्यू नई दिल्ली को भेजिये, वे विशाल हरियाणा आन्दोलन के प्रवक्तव्य में से थे, पर मत भेद के कारण अलग हो गये थे। वे ब्रज की हौली देखने १५ मार्च को गये थे, तब अवस्मात् ताज एक्सप्रेस में मरी उनकी मुलाकात हो गई थी।

जमाष्टमी पर आप उन्हें भी बुला सकते हैं। हाँ, यह बात आगे चलकर उन्हें स्पष्टतया बतला देनी होगी कि ब्रज की सूट खसोट करके हरियाने को विशाल बनाने की कल्पना भयङ्कर है पर अपने विरोधियों के प्रति भी हमारा बर्ताव अत्यन्त शिष्टतापूर्ण होना ही चाहिये। उनके आतिथ्य में किसी प्रकार की कुटि न हो।

विशाल हरियाने का आन्दोलन ब्रजभूमि में उद्भिन्नता ही पैदा करेगा और उसमें लाभ कुछ भी न होगा। नवभारत टाइम्स में राजन जी का लेख बहुत अच्छा है।

विनीत

बनारसीदास

( १०९ )

फीरोजाबाद

१६ ७ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

मैं अब तारनुमा पत्र ही लिख सकता हूँ। आदाब-अलकाब छोड़ कर तार की भाषा में पत्र-व्यवहार करने से समय की कुछ तो बचत हो ही जायगी। अंग्रेजी में घसीट देना भेरे लिए अपेक्षाकृत आसान होता है। डा० विष्णुचन्द्र पाठक एम ए, पी एच डी प्रधान हिन्दी विभाग 'लाल बहादुर शास्त्री कालेज' प्रताप भाग तिलकनगर जयपुर से सम्पर्क स्थापित कीजिये। हमको चाहिये कि अपने कार्य क्षेत्र में अधिक से अधिक निष्ठावान् व्यक्तियों को सम्मिलित करें। स्वर्गीय वासुदेवशरण जी अग्रवाल के चित्र का उद्घाटन करने के लिए आचार्य हजारीप्रसाद जी द्विवेदी को लिखिये। उनसे प्रार्थना कि



ये जमाएगी पर मधुरा आ सकते हैं क्या ? ये यदि तूफान से तिल्ली जावें तो मधुरा उतर सकते हैं ।

डा० सत्येन्द्र को अब अधिक सक्रिय होने की जरूरत है । उनका अभिप्राय प्रथम का उद्धार कीजें हो ? शुद्ध सेवा भावना से हम इटावे को ब्रजसाहित्य मण्डल ॥ ही शाबिस कर लेना चाहिये । हम लोग की कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा तो है नहीं और न हम अपना कोई स्वायत्त सिद्ध करना चाहते हैं । महाकवि स्व पर लिखा शायद प्रथम छपा या नहीं ? डा० राज मुद्दिराजा से पूछना चाहिये । यह एक मर्तिता है ।

२८ अगस्त का यह न स्मरण कि चमरोला में एक शहीद मेला का आयोजन है । वहाँ पर सन् १८४२ में चार शक्ति गानों में धून दिया गया है । श्री भीताराम गंग खोटा को विन्दु विवरण के लिए लिखें । आप जरूर पधारें ।

विनीत

बनारसीदास

( ११० )

कीरोजाबाद

१७-७-७०

प्रिय भाई कृदाबनदास जी,

ब्रज-मया के पचास वर्ष अर्थात् श्री प्रभुस्थान मीतल का माहितिक काय यह नाम क्या रहेगा ?

विनाद पुस्तक भण्डार का यह तब कि मीतल जी विषयक ग्रन्थ का नाम कुछ आकषक होना चाहिये भुक्त युक्तिमग्न जैसा । सम्मानकाचार्य रामानन्द चट्टापाध्याय की जीवनी का नाम उनकी पुत्री न बगना की अद्वैतनाम्नी का इतिहास" रक्खा था । पुस्तक की संपन्न के लिए यह जरूरी है कि उसका नाम पटवता हुआ हो । कृपया मीतल जी तथा पचीरी जी तत्पक्ष द्वारा मेरा यह मृग्राव पहुँचा दें ।

श्री गायनाथ मुस ( स्व० श्री हरदयालुमिह जी के पुत्र ) का पत्र महमूदाबाद से आया है । मरे लख की नवन मांगी है । तलाश करूँगा । हरदयालुमिह जी का बढ़िया चित्र अपना भजूँगा ।

विनीत

बनारसीदास

( १११ )

फीरोजाबाद

१६ ७ ७०

प्रिय भाई धृन्दावनदास जी,

बंदे ! एस आर के कालेज के प्रधानाचार्य थी गग की स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल पर अपनी कालेज-पत्रिका का विशेषाङ्क निकालने को लिखिये । गग जी उनके समधी होत हैं । या फिर मथुरा के किसी कालेज का ही वासुदेवशरण अब निकाल देना चाहिये । यह काम अत्यन्त आवश्यक है ।

कल अकस्मात् राजा महेन्द्रप्रताप जी मेरे घर पर पधारे । मैं उनसे आपका जिक्र किया था । राजा साहब व्रज की विभूति हैं । वे ८४ बय के हैं—स्वस्थ और क्रियाशील । उनमें एक खास भोसापन है जो बहुत आकर्षक है । उनका तल चित्र आपके संग्रहालय में होना ही चाहिये । विशाल भारत के प्रवासी अब भी उनका जो चित्र छपा था उस पर से अच्छा चित्र बनाया जा सकता है ।

भवन के चक्कर में न पड़ें वह तो बहुत व्ययसाध्य चीज होगी । अपने हाल को ही संग्रहालय का रूप दे सकते हैं । वह सर्वथा निजी होना चाहिये । सार्वजनिक बनाने से सारा गुड गोबर हो जायगा ।

अगस्त में यदि क्रांतिकारी सम्मेलन दिल्ली में हुआ तो शायद मैं भी जाने की सोच सकता हूँ । स्व० छवीलेलाल गोस्वामी की पुत्री पधारी थी । उनके सुपुत्र के तबादिले के लिए शिक्षामन्त्री मोपाल को पत्र लिखाना था तो लिख दिया ।

विनीत

बनारसीदास

( ११२ )

फीरोजाबाद

२५ ७-७०

प्रिय भाई धृन्दावनदास जी,

दोनों वृत्तापत्र मिले । लेख के पुनमुद्रण भी । हमें व्यवहार बुद्धि से काम लेना है । जैसे साधन उपलब्ध हो सकें, तदनुसार ही यादकर्म का निर्धारण करना चाहिये ।

श्रीमान् के एस गर्ग एम ए प्रबन्धक एस आर के डिग्री कालेज फीरोजाबाद से यदि आप अनुरोध करें कि डिग्री कालेज की पत्रिका का अगला

अब वामुदेवगण अग्रवाल अब हो तो अच्छी बात है। गग जी अपने महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष थी उपाध्याय जी से परामर्श कर लें।

साधन मिलन पर ब्रजभारती का पचमाष्टक विशेषाष्टक रूप में निकाला जा सकता है। मैंने अद्वेय प्रभुदत्त जी तथा डा० श्री हरिदत्त जी पालीवाल को पत्र भेज दिये हैं। विद्याभट्ट जी से स्व० हरिदत्त जी के पत्र की एक एक प्रति भेगा सीजिय।

विनीत  
बनारसीदास

( ११३ )

फीरोजाबाद  
२६ ७ ३०

प्रिय भाई बुढ़ावनदास जी,

श्री गोविन्दप्रसाद ब्रजडीवान का पत्र अभी मिला। ३ अगस्त तक ब्रज के माहिपकारा के मस्मरण निम्न भजन का रहा है। इस बीच यन्त्र आप तुरन्त कुछ विप्र श्री मोहन जी का अपना स्व० राधाचरण मास्वामी तथा स्व० किशोरीलाल जी प्रभृति के मीथ लिखी भिजवा सकें ता अयुक्तम। दो फुलस्वैप कागजात ब्रजमाहिप मन्त्र के कार्य का मण्डित विवरण भी भेज दीजिय। छपना कठिन ता है ही। भाई मोहन जी को भी पान पर यह चिट्ठी सुना दीजिय।

विनीत  
बनारसीदास

( ११४ )

फीरोजाबाद  
२८ ७ ३०

प्रिय बंधु !

मुझे तो ब्रजभारती का पचमाष्टक विशेषाष्टक बनाने का प्राधान्य ही अपना व्यावहारिक प्रज्ञान है—बानें उस अष्टक के मन्त्रों का प्रवर्णन हो सके। एक पत्र भी ऊपर से सच न करना पड़े। स्व० जीवनदत्त शर्मा या स्व० हरिदत्त शर्मा के निम्न पाद यन्त्र आदि कम अपन बात का होगा।

डा० केदारदत्त तन्नाडी उपाधि महाविद्यालय पीलीघाट का पत्र आया है। आपकी अभिनन्दन की बात लिखी है।

यासी की एक अग्रवाल ब्या शशि ने पी एच डी के लिए सस्मरण विषय लिया है। उसकी माँ की ननमात यहा है। वह यहा पधारी हैं। डा० भगवानदास माहोर की शिष्या है। काफी होशियार है। मुझे यह देखकर हय होता है कि हमारी पुत्रियाँ पुत्रा से अधिक प्रतिभाशालिनी हैं।

दिनीत  
बनारसीदास

( ११५ )

फीरोजाबाद  
३० ७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

बदे। कुमारी शशि अग्रवाल एम ए सस्मरण विषय पर शोधग्रन्थ प्रस्तुत करना चाहती हैं। उनकी दानी फीरोजाबाद की ही हैं और इसलिये वे यहा आकर सात दिन रह सकी। अब वे झाँसी वापस आ रही है। उनका पता है—२० रानी महल, ज्ञानी। उनके शोध काय के लिये जो भी परामश आप दे सकें दें।

प्राचीन ब्रजसाहित्य में सस्मरणा के जो प्रसंग आये हों उनका विवरण श्री शशि जी को चाहिये। भीतल जी से भी अनुरोध कर रहा हूँ। इस पत्र की तकल उनके पास भी भेज रहा हूँ।

दिनीत  
बनारसीदास

( ११६ )

फीरोजाबाद  
१ ८ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

अपना लेख सशोधित करके आज चार चित्रो सहित मासाहिक हिन्दुस्तान को भेज दिया है। पहली प्रिनि में कुछ नाम जो छूट गये थे वे जोड़ दिये गये हैं।

लेख २३ अगस्त के अङ्क में आ रहा है। उसकी चर्चा चलाने के लिए भिन्न भिन्न व्यक्तियों द्वारा उक्त लेख में सशोधन तथा परिवर्द्धन किया जाना चाहिये। मुझे तो विनापन की जरूरत नहीं पर ब्रज के विषय में चर्चा निरन्तर होती रहे ता कुछ न कुछ काम आग बढ़ेगा ही।

आगर व मकमगिया कानन नया गनमुनि जैन कानन का यन्त्र आप लिखें कि व हरिगच्छ अत्र निवाले ता उमम ता राई दूत्र नया । उमम उनरी पुत्र बधुआ का पात्रासन पर कृष्ट आपन नहीं हा मचना । मुत्र मा वदा कायक्रम व्यावहारिक जेवना है ।

विनीत

बनारसीदास

( ११७ )

फरीदाबाद

४ द-७०

प्रिय भाई कृष्णदास जी,

बच्चे । वन आप पत्रारे, घट्टन अच्छा दुआ । २१ अगस्त का मैं मधुरा पहुँच जाऊँगा, और २४ का वहाँ रूँगा तत्परवाना या ता गिन्दी बना जाऊँगा, या घर लौट आऊँगा । हाँ, १२ म ४ तक का बाइ भा प्राप्ताम भर लिए न हाना चाहिये । आप जानत ही हैं कि मग स्वाम्य माधारण ही है इमनिय अधिक श्रम नहीं कर पाता ।

आपके अभिनन्दन का काय विधिवन् गुप्त कर दना चाहता हूँ । श्री रजन जी का पूरा पना क्या है । उनका पत्र लिपना चाहता हूँ । मग श्रयान है कि स्व० अग्रवाल जी व मर्बोनाम पत्रा का श्रवणाग्री व विवादाष्ट रूप म निकाल दना ही व्यावहारिक हागा । अग्रवाल जी व मुपुत्र उन पत्रा का पुम्नकावार म छापना चाहें ता छापें ।

स्व० बालमुकुन्द गुप्त के मुपुत्र भाइ नवनगिनार गुप्त और अमृतराय जी ( प्रेमचन्द जा व मुपुत्र ) का छोटकर गिन्दी बगल म अपन पूवजा का आद शाय किमी न ननी किया । इम बार म मैं एव नाम लिखना चाहता हूँ । कद चित्र सता आऊँगा ।

विनीत

बनारसीदास

( ११८ )

फरीदाबाद

१२ द ७०

प्रिय भाई कृष्णदास जी,

बद । क्या आप कृपा कर १८ ता० का रात्र व ८ बज म पूर्व चमरीला [ दूल्हा—बहू व निरग म्मान ] पहुँच सकत है ?

वहाँ के नवि सम्मेलन के सम्पादित्व करने के लिये वहाँ के ग्रामवासियों ने आपसे आग्रह करने का आदेश भरे पास भेजा है। वैसे मैं तो यहाँ से भाई बालकृष्ण जी की कार द्वारा १८ ता० को टूटला जाऊँगा और वहाँ से १० बजे ट्रेन द्वारा १०॥ बजे चमरोला पहुँच जाऊँगा। आप टाहम टेबिल देखकर तय कर सकते हैं कि टूटला से चलने वाली कोई गाड़ी शाम को चमरोला ठहरती है या नहीं।

आप अपनी सुविधा का खयाल कर लीजिये। एक नवीन परम्परा—शहीदा के लिये भले नगवाने का प्रारम्भ हो रहा है। मैं २३ को मथुरा पहुँचने का निश्चय कर चुका हूँ, पर अभी यह तय नहीं कि वस से आना ठीक होगा या ट्रेन से। कल राजा महेन्द्रप्रताप जी यहाँ पधार रहे हैं। पी डी जन कालेज के शहीद कर्म मही के ठहरेंगे। शेष शुशल।

विनीत  
बनारसीदास

( ११८ )

फीरोजाबाद  
२१ द-७०

प्रिय भाई सुधावनबास जी

बंदे ! यदि मुझ पता होता कि आप पधार रहे हैं तो शायद मैं एक न्न के लिए चमरोला में रुक भी जाता, पर आपका कृपापत्र असमयता प्रकट करते हुए मिल चुका था। इसलिये मैं जल्दी ही लौट आया। १६ ता० को सबेरे चार बजे से मुझे निरन्तर थम करना पड़ा। अपना भापण मैं लिख कर ले गया था और उसकी एक एक प्रति सनिक अमर उजाला तथा बीर अजुन को द दी थी। अमर उजाला ने उसका माराश दे दिया है स्थान के अभाव के कारण पूरा भापण दिया भी नहीं जा सकता था।

मैं २३ का प्रातःकाल का आगरा पहुँचना चाहता हूँ और वहाँ विश्राम करके शाम को सवा चार बजे की मेल द्वारा ५॥ बजे मथुरा पहुँचने का विचार है।

शरीर में इतनी शक्ति नहीं कि मैं किसी अन्य प्रोग्राम में भाग ले सकूँ। सासनी फिर कभी पहुँचूँगा। मथुरा से लौट कर ४ महीने मुझे पूरा पूरा विश्राम ही करना है। आपके प्रेमपूर्ण आग्रह को भेर लिये टालना सम्भव नहीं था सिफ इसी कारण यह तीथयात्रा कर रहा हूँ।

बनारसीदास

( १०० )

२६ द ७०

प्रिय श्री शुद्धावनदास जी,

हमारी विभिन्न मन्त्राय भाषाओं का जोहन वाता कटा के रूप में ब्रजनाट्य मण्डन का विभिन्न वर्णन व अथन ध्यय में अग्रगण्य हाना चाहिये। राजस्थाना का पत्र बीन-बीन में पत्र गमयन कर रहे हैं यद् ५० प्रावामन्त्र जी गमा जयरापुर बाया धनुर्ही राजस्थान में गृह्य। जननीय परिणत का मधुरा में नुद गत बैठन व बार में श्री शुद्धान्त गुप्त श्री गला चौद व अथ वपुत्रा का विधिय। अग्रगण्य जी व पत्रा व विषय में अर्थात् व तीर पर उनके पुत्रों को निर विधिय। आगरा में ५० इगिन्दुर जी व पत्रा का नवन से आइय। विगत हगियाना का विराय ता करना हा है।

श्री मूदस्र ममराह अमराका व वतमान चिन्तकों में अग्रगण्य है। व स्वर्गीय प्रोदमर गीरीज व प्रधान गिप्या में व है। जनपदा व पुननिमाग पर पर उनका यह विचार ध्यान दन योग्य है।

Utopia can no longer be an unknown land on the other side of the globe it is rather the region one knows and loves best reappportioned reshaped and recultivated for permanent human occupation

विनाय

बनारसागम

( १०१ )

दीरोत्रावा

३१ द-७०

प्रिय श्री शुद्धावनदास जी,

श्री वानहन्ता गुप्त तथा कात्या इन्टरकात्र व निर्माणन पूनमाना लकर २६ ला० की भाग का आपक दर शीत पर हात्रि ह्वा य—वपगाठ की वषाई तन व निष्—पर आप उम वक्त वनी मने मित और किमी न कह् निया कि क्षाय घमगाया में होंगे। व वही भा मय पर वनी नी पत्रा न नग मका। उन्हें निरागा हुई। वृत्ताकर उन्हें घमगा का पत्र भेज में तथा न मित पान के लिए वृत्त प्रकट कर दें। गुप्त जी कात्या में भी एक महीन म्त्रम् कायम करेंगे। आप कमा कात्या चरित।

अंग्रेजी में एक उक्ति है—'Be the man thou S-eekst जिस आदमी को तुम तलाश में हो वह खुद ही बन जाओ। आप में वह शक्ति विद्यमान है जो आपको अजभूमि का सर्वश्रेष्ठ सेवक बना सकती है। Conserve all your energies please आपके सुतर्फीक दान ठीक नहीं, Concentrate on your संग्रहालय।

सुना है विभव जी ने ब्रज प्रांत पर कुछ लिखा है। उनका पता है ६ महात्मा गांधी रोड, आगरा। जनपदीय कायकर्ताओं के पत्र श्री गणेश चौबे तथा श्री जगदीश जी से पूछिय। मरा भाषण सम्पोज करने से दीजिये। उसका प्रूफ देख लीजिय। यावा पृथ्वीसिंह फिटियर मेन से आते जाते हैं। कभी उन्हें मयुरा में उतारिय। उनका 'क्रांति का पथिक मूल्य १५) गजब का आत्म चरित है।

बिनीत  
बनारसीदास

( १२२ )

फीरोजाबाद  
३ द ७०

प्रिय भाई श्रीदासनदास जी,

बन्दे, ३१ ता० का टूपा पत्र मिला। स्व० आचार्य जीवनदास जी के विषय में सम्मरण तो हर हासत में इकट्ठे कर ही लेने चाहिये। अगर स्मृतिप्रिय के लिये पैसा इकट्ठा न भी हो सके तो ब्रज भारती का पाँचवा अङ्क ही निकाला जा सकता है। अगर उसमें भी आर्थिक बाधा हो तो हस्तलिखित ग्रन्थ तो तयार किया ही जा सकेगा। उसमें तो सौ रुपय ही खर्च होंगे। आचार्य विजयप्रकाश जी का यदि कोई आसक्त हो तो उन्हें एक रजिस्टर्ड पत्र द्वारा आप यह सूचित कर सकते हैं कि इस श्राद्ध वर्ष में हम लोग का कोई भी स्वाय नहीं है। उह यह भी लिख दीजिय कि उत्तर न आने पर आप अपने पत्र की नकल स्व० आचार्य जीवनदास जी के भक्तों को भेज देंगे।

सम्मरण अभी इकट्ठे हो जायें तो भले ही हो जायें, फिर १०-१२ वष बाद वे विलीन हो जायेंगे। "जो बनि आव सहज में ताही में बित देद" मैंने 'विमल हरियाणा' पत्र की नमूने की प्रति के लिये श्री फूलसिंह जी ( सदस्य राज्य सभा ) तथा चडीगढ़ की भी लिखा था, पर उन लोगों ने,



मेजा ही नहीं। एत सज्जना ने 'अमर उज्जाना' में विनाम हरियाणा के पक्ष में भी लिखा है और हम सागा पर जाट अहीर विरोधी होने का इसजाम लगाया है। यह आशेष गवा मोलह आन निराधार है।

एक गरीबी विद्वती प्रस्तावली ने म्य में उन जिना के प्रतिष्ठित ध्यक्तिया का भेजी जा गयी है, जिन्हें विनाम हरियाणा हृदय बना चाहता है। उत्तर आन पर छाया जा सक्त हैं ( म १५ म )। जगन्नाथदास भानु जी को छाया छाया अभिनन्दन ग्रन्थ उनका जीवन काल में भेट नहीं किया जा सका। यत लानों का पुलंदा भेट पर किया गया जिम से सोमों का धर्म पूवक स्थितते थ। शायद उनका स्वयंसाधन का यह छाया। मैं गीध ही ८।१० सारीत का आन-पास होलीपुरा जाना चाहता हूँ। यहाँ भाई राम्मुनाथ जी चतुर्वेदी का इन्टर कानज है। जगत में भगत।

विनीत  
बनारसीदास

( १२३ )

कीरोजाबाद  
७ ६ ७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

जय कभी आपके मन में उत्साह हो और आपके पास कुमल भी आप होलीपुरा का इन्टर कालज को जरूर दमिय। भाई राम्मुनाथ जी का ही यह कालज है। रामान्तर इन्टर कानज नाम है। अपनी पत्रिका का भन्वर विनायादू यदि मैं निवास सकें तो अत्युत्तम हो, पर जगत पूव उह पत्रिका का श्री शयेलाल अद्वि निवासना चाहिय। इस बारे में आप भाई राम्मुनाथ जी चतुर्वेदी ( मीना बाजार कोटी गहमज आगरा ) को अपनी ओर स लियें। भाई राम्मुनाथ जी बहुत भले आदमी हैं। सब्जे कायकर्ता हैं।

प्रजभारती का एक अद्वि श्रीमती सारा पाण्डे C/o दो कलक्टर मैनपुरी भेजें। उनका पुत्र श्री कमल पाण्डे मैनपुरी में कलक्टर हैं। श्रीमती पाण्डे अच्छी कवयित्री हैं। व यहाँ अपन पत्रिक् श्री पी० पाण्डे का साथ पाँच सात दिन गहन पधारी थीं।

विनीत  
बनारसीदास

( १२४ )

दूसरा पत्र

फीरोजाबाद

७ ६ ७०

प्रिय भाई वन्दावनदास जी,

एक पत्र श्री हरिहरनाथ अग्रवाल अध्यक्ष रामप्रसाद एण्ड सन्स मौडर्न बुक डिपो हास्पिटल रोड आगरा को लिख कर पूछिय कि व सत्यनारायण कविरत्न के उत्तर राम चरित और मालती माधव को प्रकाशित कर सकते हैं क्या ? श्री हरिहरनाथ के पिता श्री रामप्रसाद जी सत्यनारायण के मित्र थे । उन्होंने मालती माधव का प्रथम संस्करण छपा था ।

कोटला इटर कालेज भी जिसके संचालक भाई बालकृष्ण गुप्त हैं आपको देखना ही है । वहाँ के निक्ट राजापुर ग्राम का एक व्यक्ति १६४२ मे शहीद हुआ था—नाम था ओउम् प्रकाश—पानी जेल मे ही उसका स्वर्गवास हो गया था । उसकी पत्नी फूलमती जिंदा है । उसका स्तम्भ कोटला कालेज मे स्थापित करना है । इस बारे मे भी बालकृष्ण जी से पूछिय ।

आपको ही ब्रजभूमि के सर्वश्रेष्ठ सेवक बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा इसलिये ब्रजभूमि की सर्वाङ्गीण उन्नति का ध्यान आपको रखना है ।

बनारसीदास

( १२५ )

फीरोजाबाद

२८ १० ७०

प्रिय भाई वन्दावनदास जी,

बंदे ! कृपापत्र मिला । अपने प्रिय जनपद—ब्रजमण्डल—के लिये जो कुछ भी हम कर सकें हमें यथासम्भव शीघ्र ही करना चाहिये । I am in a hurry because I haven't much time left now आपके शुभनाम का सहारा लेकर—आपको निमित्त मात्र बनाकर—इस यज्ञ का आगे बढ़ाना है । “निमित्त मात्र भव सव्य-साचिन्” यह भगवान की ही उक्ति है ।

स्व० हरिशङ्कर जी का एक बढ़िया तैल चित्र भाई ओउम् ने तैयार करा दिया है । उसे पी डी जैन कालेज के शहीद-कक्ष मे टंगवाना है । उसके निगेटिव से कुछ Cabinet Size चित्र भी तैयार करा लेंगे ।

आप एक असमारी या कोई बड़ा सङ्घ इस प्रकार के मंगल के नियम पर पर गुरगिन नर दीजिये। अन्य व्यय यानी चीजें तो इकट्ठी करत रहना ही चाहिये।

मेरे मद्रासलीय का देशो के लिये दिल्ली से National archives वाले आ रहे हैं। पैमे ताब नाम मात्र को ही देंगे—(१०० २००) लेकिन चीजें यथानिश्च दण्ड में उनका यहाँ ही गुरगिन रह सकती हैं। व Permanent loan ( जिगरा अथ दात ही हा सकता है। ) पर उर्दू से लेंगे। भविष्य के प्रयास से मैं भी उन अत्यन्त बहुमूल्य वस्तुओं को गुरगिन करा देना चाहता हूँ।

आपरी अभिनन्दन समिती में कुछ उद्योगपतियों का भी शामिल करना चाहिये। Sponsors की मर्यादा १० १२ की वृद्धि हो जाय तो कोई हानि नहीं। श्री गणमान्य अग्रजान ( शिवनाथान अग्रवाल & Co ) को रखना ही चाहिये। राजाशाहू को भी।

भाई बालकृष्ण जी अग्रजान बहुत व्यस्त हैं। सबरे ७।। से शाम के ७।। बजे तक अपने कारखाने में ही रत हैं। भाई अमृतलाल जी में डहलने यही कहा था। यहाँ के उद्योगपतियों में उनका नाम बनीमत है।

दिनीत

बनारसीदास

( १२६ )

श्रीरोमायादा

दि ११ ७०

प्रिय भाई बंदावनदास जी,

धन ! मैं वन २ ता० की मीटिंग में आना चाहता था, पर अण के कष्ट के कारण न आ सका। तैरिन जो निवन्ध मुने करना था, उस समय उमाला न प्रभावित करने की कृपा कर दी। वह एक पत्र का सारांश है जिसमें मैं श्री रजन जी का लिखा था।

आचार्य वागुन्वशरण जी के पत्रों को छपा ही दीजिये। भूमिगत मंख का व्योरा भी न दीजिये ताकि वागुन्वशरण जी के पत्रों को यह विश्वास हो जाय कि हम लोग मुनाफ की दृष्टि से यह श्राद्ध कम नहीं कर रहे।

क्या मत्स्येन्द्र जी के पास के पत्र नहीं मिले ? उनमें फिर ताराजा कीजिये। मैं भी लिख रहा हूँ। १२ ता० को दिल्ली की National archives

की एक महिला Mrs M Singh यहाँ मेरे संग्रहालय का देखने पधार रही हैं। महात्मा जी, दीनबन्धु ऐण्ड्रयूज प्रभृति के पत्र मैं वही राष्ट्रीय अभिलेखागार में सुरक्षित करा देना चाहता हूँ। इससे मेरी चिन्ता मिट जायगी। वैज्ञानिक दृष्टि से सुरक्षित करना कोई आमामान काम नहीं। मेरे पत्रों को आप छपाना चाहते हैं तो जरूर छपा दें, यद्यपि मैं उन्हें महत्व नहीं देता।

आप प्रातः काल टहलने जाते हैं ? या नहीं ? स्वस्थ रहना सबसे जरूरी काम है। विद्याशंकर जी स भाई हरिशङ्कर जी के पत्र तुरन्त से लीजिये।

विनीत

बनारसीदास

( १२७ )

फोरोजाबाद

१२ ११ ७०

प्रिय श्री कृष्णदास जी,

बंदे। आप तो मन्त्री शिक्कार में गये न होंगे। मुझे टीकमगढ़ में मौका मिला था। शिक्कार मैंने कभी नहीं की, देखी अवश्य थी। तीन तरफ से हाँका कराने पर जानवर चौथी ओर निकलता है और वहाँ बैठा शिकारी उसका काम समाप्त कर देता है।

अपने शासकों का भी अहिंसात्मक हाँका कराना होगा। दम बाराह जगह से एक ही आशय के पत्र जब उनकी सेवा में पहुँचेंगे तो शायद उनके कान पर जू रेंगगी। महात्मा जी का कहना था कि रेल के डिब्बों की अस्वच्छता के बारे में मात्रियों को रेल अधिकारियों को लिखना ही चाहिये। जब बीसियों लोग लिखेंगे तो शायद वे ध्यान देंगे।

हाँका के कुछ विषय लिखता हूँ —

- १ घाँघुपुर में सत्यनारायण कविरत्न के लिये कोई स्मारक।
- २ अजसाहित्य मण्डल के लिये भूमि की प्राप्ति।
- ३ देवपुरस्कार के नियमों का यथापूर्व रखवाना—(मध्य प्रदेश सरकार द्वारा)
- ४ अजसाहित्य मण्डल को अनुदान।
- ५ श्रीधर पाठक संग्रहालय की स्थापना।
- ६ जनपन्थी बोलिया के शब्द भुहाविरे, कोप इत्यादि के संग्रह की व्यवस्था।

जो जिस मंत्री या विधायक को जानता हो वह उस लिखे। उदाहरण के लिये मैं श्रीमान् मुख्यमंत्री महोदय को (जिनसे थोड़ा सा परिचय है) लिख सकता हूँ।

आप, मोनस जी, दुन जी, अमृतनान जी, बालकृष्ण जी, सयद्र जा, इत्यादि एक ही आग्य क पत्र श्री सन्मीरमण आचार्य इत्यादि को भेज सकन हैं। 'कवहुँक दीनन्याय क भनक पड़ेगी बान इन लागे क बान पर भी कभा न कभा भनक पड़ेगी।

आगर न पहुँच सकने का मुन पछतावा रहा। क्या करता, साधार था। भाई बालकृष्ण मुन का कहना था कि आगर बाल ठाक प्रवचन नही कर सक। वैन भी साहित्यिक मोटिक्का म उपस्थिति ज्यादा नहों हाथी पर जगह ता ठाक रहना चाहिय था।

'बालकृष्ण जी का कहना है कि आगर बाला का सबक मिछान के लिय यहाँ काइ मोटिक्का सफनता पूवक की जा सकनी है।

"अपन नामकों स भीषक एक सख में निम्नना चाहता है। यह पना लगान की जरूरत है कि हमार शामका म कितना म साहित्यिक रचि है। शायद २० फीसदी म भा न हाथी। एम लागे क सामन साहित्यिक रचा करना भन क आग दीन वजान क समान है।

दिनीत

बनारसादास

( १२८ )

फीरोजाबाद

२१ ११ ७०

प्रिय भाई दूदाबनदास जी,

बल इटाव क मुप्रमिद कायकता श्री कृष्णगापाल चौधरी पधार प। उनम उम नगर के साहित्यिक तथा साम्प्रतिक जीवन क विषय म बहुत दर तक बानाताप दुना। उनका पत्रा दटावा काफी है।

कृपया उन्हें एक पत्र भेजकर इटाव म साहित्यिक कार्य पर एक सख ब्रजभारती क लिय निमवाद्य। ब्रजभारती का एक अङ्क उन्हें तुरन्त भेजिय और उनका शुभ नाम फी निस्ट म निख लाजिय। व मरी उम्र क ही हैं—आगरा कालज क पुरान छात्र और प्रतिष्ठित बकाल।

आपका कभी इटाव जाना भी पढ़ा। पहल म श्री मूपनारामण अग्रवाल जी म पत्र-व्यवहार कर लाजिय। उह भा ब्रजभारती में स्वल्प हा भेजिय। दटावा पढ़ने आगरा कमिशनरी म ही था। साहित्यिक दृष्टि स

तो वह हमारे जनपद में ही है और आप चूँकि ब्रजमण्डल के साहित्यिक कमिश्नर [ आयुक्त ] हैं इसलिये इटावा आपके क्षेत्र में आता है ।

National archives की एक महिला Mrs M Singh पधारी थी । वे २८ नवम्बर को पुन आ रही हैं । अपने संग्रहालय की महत्वपूर्ण सामग्री में उन्हें २६ का साथ दूना । यदि आपको फुसत हो तो आप भी २८ ता० को पधारें । वे सम्भवत तूफान Express से आवेंगी । महात्मा जी के एक सौ पत्र, सौ एक एड्डिज की सम्पूर्ण सामग्री, श्रीनिवास शास्त्री के पत्र इत्यादि अब दिल्ली में ही सुरक्षित रहेंगे ।

इस पत्र की नकल चौधरी श्री कृष्णनोपास जी को भी भेज रहा हूँ । साहित्यिक सगाई कराना मेरा प्रिय कर्तव्य है ।

बनारसीदास

( १२८ )

फीरोजाबाद

१४ १२ ७०

प्रिय बाबु !

बाबा पृथ्वीमिह आजाद, शिशु बिहार भावनगर (मोराष्ट्र) को मैं लिख रहा हूँ कि वे २० दिसम्बर को यहाँ पधारें । व आपको तार देंगे आप उनसे मिल लीजिये । अब की बार हम लोग फीरोजाबाद के दो प्रतिष्ठित व्यक्तियों का सम्मान कर रहे हैं श्री सरदारसिंह अध्यापक उम्र ८४ वर्ष, श्री गुनजारीलाल आयुर्वेद विशारद उम्र ८० वर्ष । पहले सज्जन ने प्राइमरी स्कूल में बहुत वर्षों तक पढ़ाया था और दूसरे पीयूषपाणि हकीम रह चुके हैं । मुझे तो बहुत काफ़ी सम्मान मिल चुका है ।

आगरा में इस बार ६ दिन व्यतीत हो गये । ता० ५ को गया था और ता० ११ को लौटा हूँ । मुझे डी लिट् उपाधि दिलाने में श्रीमान् कुलपति महोदय का जबरदस्त हाथ था और मैं उनका बहुत बहुत कृतज्ञ हूँ । मुझे तो ४ दिसम्बर की शाम को ही—जिस दिन यह निश्चय हुआ था—यह समाचार अस्मात् मिला था । मैंने इसकी कल्पना भी न की थी । प्रयत्न करना तो रहा दूर ।

मेरा जन्म दिवस २४ दिसम्बर को पड़ता है पर मैं तो कीर्ति रूपी मिठाई खाते खाते उन्व गया हूँ ।

बिनोद

बनारसीदास

( १३० )

श्रीरोजाबाद

२६ १०-७०

प्रिय भाई बुद्धावनन्त ज्ञा

बन् । आपका कृपापत्र मिला । हा निट व इस नूतन न मर दनिह कायक्रम का मकया अन्तःपुन कर दिया । दापदूर की नां ना निन हगम हूँ और स्वागत सम्माना म बन रा बरान्नी हूँ ना अलग । यह आपन अनन पत्र म बिबुन प्रागद्विक प्रन दिया है । बि० बुद्धिप्रसाद १ भा बना था बि अमिनन्त य य क भाग्य चरितमर भाग म बू [ मरा घमना पर म श्री नाम म पुकारी जानी था ] का उलग जाना चात्रि था ।

बन्तुन यह परतू अष्याय श्रीपुन बंमन आ क गुपु था पर एन वल पर उहाने इस अस्वाकार कर दिया और मुन हा व निगना पदा ।

निम्नान् मरी पनी का जा थय मित्रता चात्रि था व उम मरा मिता । मर मन म इस बात का चार परनालाय बगार रहा है कि मैं उमक प्रति अपना कन्य पावन नहीं कर मरा । आप रमाचित्र म मरा आम-चरितात्मक बनना सम्मान का समाधि पड़ चात्रिय । चार क घगगाय म व बाम्बविह घननाभा म भाग प्रोन है । स्वर्गीय आशय बामुबगान् जी अग्रवाल न मुन अपने पत्र म ( जा प्रकाशित हा पुका है ) दिया था कि अपने विद्वृत अध्ययन म उगने एमी टीम मरा रचना दूगरी नहीं पढ़ी । आप सम्मनन पत्रिका म प्रकाशित उम पत्र का अन्त पढ़ने ।

मरी पनी की आकस्मिक मृत्यु मन् १९३० म हा गई जब कि मैं कुन जमा ३८ वष का ही था । उमम मरा मधुन जावन ती अन्त-व्यमन हा गया । मैं अपने पापा का कुतुर भीनार म पाविन बग्न का पगपामी हूँ और कभी उन् टिपान का प्रयन नहीं करता । यदि मैं यहाँ उन मर अनाचार का उयोग मुनान लगे जा मुगस बन पडे, तो आपन हृय का चक्र लगगा ।

अमिनगताचार एन जैन बवि दू गय है । उनक मामाधिकार का जन राग राज पड़ने है । उमका एक दाक है —

विनिदनालोचन गहर्छेह,

मन वच काय कपाय निमित्तम्

निहति पाप मर दुख वारण,

मिषम् विष मर गुगुरिवाचितम् ।

अर्थात् जिम तरह कोई वैद्य मन के बल से साप के विष को नष्ट कर देता है उसी प्रकार मैं निन्दा, घोर निन्दा और बालोचना द्वारा अपने उन पापों को जो मन वचन काया द्वारा मुझसे बन पड़े हैं नष्ट करता हूँ ।

हैवनॉक ऐलिस ने लिखा है कि बहुत से व्यक्ति चन्द्रमा की भांति अपने प्रकाश भाग को ही जनता को दिखलाते हैं और अन्धकार भाग का बिल्कुल छिपाये रहते हैं । मैं उस नीति ( या अनीति ? ) में यकीन नहीं रखता ।

जिसका सहयोग मुझे १७ वर्ष मिला, मेरे उद्दाम जीवन में जो मेरी सहचरी रही पर जो मेरे सुख के दिन आने के बहुत पूर्व ही चली गई उसके प्रति शाब्दिक कृतज्ञता प्रगट करना निरर्थक ही होगा । सम्पादक की समाधि में मैंने अपने हृदय की जो व्याथा उडेल दी है वह आशिक रूप से पर्याप्त है । हमारे लोग वे गलतियाँ न करें जो मुझसे बन पड़ी, यह भी उस सच्ची कहानी का एक उद्देश्य है । वैसे वह प्रायश्चित्तमूलक ही है ।

दिनीत  
बनारसीदास

( १३१ )

कीरोजादाव  
२० १७१

प्रिय भाई बनारसीदास जी,

बड़े ! आप मेरे पत्रों को छाप रहे हैं इससे मुझे आश्चर्य ही होता है । वे कभी इस खयाल से नहीं लिखे गये थे कि उन्हें प्रकाशित किया जायगा । अगर यह विचार मन में आता तो उनकी सहज स्वाभाविकता ही नष्ट हो जाती ।

पत्र व्यवहार मेरा व्यसन रहा है—जैसे भग पीना चौबे लागे का व्यसन है—और कम से कम एक लाख चिट्ठियाँ तो मैंने घसीट डाली होंगी । मैंने कहीं पढ़ा था कि लाख कर्जाने कभी-कभी सौ सौ पृष्ठों के पत्र लिख भेजते थे । [ प० पर्याप्त जी के पत्रों की पुस्तक आत्माराम एण्ड सन्स से ७॥ ) मे मोंगा लीजिये ]

किसी अंग्रेज लेखक ने लिखा था— Only those letters are worth preserving that ought not to have been written—and if written they ought to have been destroyed

नमस्ते क नवीन अह्म म मैंने स्व० नवीन जी के ऐसे कितने ही पत्र छाप भी लिये हैं । उम्मी फक्कडपन म स्व० प्रतापनारायण मिश्र ने अपने अनेक पत्र लिखे थे । जिनमें ४, ५ ही सुरक्षित हैं ।



पत्र व्यवहार मग व्यक्त नाम पुरान के निय मग्नूज मामरी तयार है पर निगन का मोहा प्रभा तक नया मिला । आ गयमात्र जा ( निवतान अद्वान & Co ) नेत्र मो गय मग्न पर पर गतायक का का उद्यत है, पर कार्म गमगार गतायक यनी मितता हा गनी । आप जात हा है कि मुम अग्रेहा यागा म कार्म दिव्य गनी और मन् १८१६ म अग्रेही पत्रा म मग भजता रहा है । पर बात यह भा है कि Roman विधि पत्र घमात्र के निय विनय मुशिपा जनक है । मैं अपना मानविक भाजन प्राय अग्रहा प्रया म मता रहा है । वन गाना, यम्भर मरामात्र इत्यादि म भा प्रग्गा मुन मितनी रही है पर Emerson, Thoreau Whitman Ramain Rolland Gorky, Stefan Zweig Turg १८१५ Edward Carpenter इत्यादि क प्रया का स्वाध्याय मैं किया है ।

अग्रेही म पत्र निगन म एक पात्रा जम्ह दृष्टा है—वह यह कि व हिन्दा पाठना तक पहुँच नहीं सकत । पर मैंने क्या यह बलना भा न का थी कि मर पत्रा में कुछ लगी चीज भा हा मरनी है जा मराध व्यति म अधिन के निय उपायो हा ।

मैंने आज बहुत ही कम पत्रा की नकल रक्खा है । कम म कम ३०० पत्र धाराम जी के घर पर हाथ—इन हा भार्द दृष्टिदूर जा के यनी । बहुवर ज्ञागप्रमात्र जा निरर जी मयवनी मरिक् मर० कमता चौपरा इत्यादि के यनी पत्राभा हा पत्र पाय पड़े हा । क्या क्या किता भगदा न या निमाव जगाया हागा कि उमन जिनन जात भाग गा है ? और किमा चाय पान याद न प्यामा का गिनता का हागा ? अभा चार बर उठार मैंने तीन बार प्यात्र चायामून का पान किया है और उमर-उमर बर इन पमात्र जात है । शकमान मर जम मूखों के बर कुन पर चरन है । पत्राभा गय मग्न का यह नुमन्ना मर निय ययदि व्ययमाध्य रहा है नयादि उमर काग्न ज्ञाग पत्र मरुटे हा गय है । दूसरा यमन पात्राग्राही का भी रहा है ।

बाद तम्हारें मुनी चर हमानों के छुनूत,  
बाद मरन के मेर घर मे यह मामी निवन ।

Don't have over-crowded programmes 'मुनात्र विनय की विभा भगवान उम्मा न नी ना थी । 'विनय का क्या नजरनात्र करन है ? चीनी बनावन है Enjoy yours If it is already too late ६० वय बाता

के लिये सबया उपयुक्त है और ७६ वालो के लिय अनिवाय । दिल्ली से डा० आनंद स्वरूप पाठक का भा पत्र आपके अभिनन्दन के विषय में मिला ।

विनीत  
बनारसीदास

( १३२ )

फ़ीरोजाबाद  
३० १ ७१

प्रिय भाई धूँदावनदास जी,

आपके अनुज श्री कुजलाल के वियोग की दुःखद खबर राजेन्द्र रजन जी ने सुनी । यह एक हृदय विदारक दुःघटना है । निस्सन्देह आप पर यह बड़ी विपत्ति आई है । भुक्त भोगी होने के कारण मरी आपके साथ हार्दिक सहानुभूति है । ऐसे अवसर पर धैर्य बाँधने का उपदेश देना भी हिमाक्त हागी । समय ही ऐम घाव को पूरा कर सकता है यद्यपि उसकी कसक कभी नहीं जाती ।

आपके दुःख से दुःखी

बनारसीदास

( १३३ )

फ़ीरोजाबाद  
२२ ७१

प्रिय भाई धूँदावनदास जी,

आशीष । काह मिला । मुझे उस दुःघटना की खबर राजेन्द्र रजन जी से मिल चुकी थी और तभी मैंने एक पत्र भी भेज दिया था ।

मुझ पर ऐसी ही विपत्ति सन् १९३६ मे आई थी । अनुज रामनारायण का स्वर्गवास कुल जमा २० वष की उम्र मे हो गया था । अभिनन्दन प्रथम आपने मेरा लेख पढ़ा ही है ।

इस अवसर पर अपने अनुभव की एक बात घुष्टापूर्वक निवेदन कर दूँ । उस वज्रपात के समय मैंने दृढ निश्चय किया था कि मैं स्वस्थ रहकर इस विपत्ति को झेल लूँगा । I will not succumb to this calamity तब मैंने regular टहलना शुरू कर दिया था । मेरे हाथ में Nervous system की कमजोरी के कारण कम्पन भी शुरू हो गया था । किसमिस खान से वह व्यथा दूर हो गई ।



पहले मैं अपने पत्र सदा अपने सर्वोत्तम अक्षरों में ही लिखता था और हस्ताक्षरों की सुन्दरता भी लोगों को भरमा देती थी। वे लोग इस भ्रम में पड़ जाते थे कि शायद पत्र लेखक भी उतना ही अच्छा है, जितने उसके अक्षर। बापू ने भी एक बार कहा था—तुम्हारे अक्षर तो मोती जस हाते हैं। असली कारण मैं आपको बतला दिया है। दो वर्ष पहले परीक्षा में मेरी लेख शक्ती पर एक प्रश्न आया था। मैं स्वयं उस प्रश्न का उत्तर न दे पाता और फेल हो जाता। अपनी लेख शक्ती की विशेषता मैं खुद नहीं जानता। मैंने एक लाख पत्र तो घसीट डाले होगे। दरअसल डाक विभाग मेरे जैसे मूर्खों के कारण ही चलते हैं। योरो का कथन था कि जिनकी अन्तरात्मा में कुछ नहीं हाता वे ही डाकखाने की ओर दौड़ते हैं।

विनीत  
बनारसीदास

( १३५ )

प्रिय श्री गृन्दावनदास जी,

बन्ने। कल वैद्यराज श्री जगन्नाथप्रसाद जी मिल गये और उन्होंने यह समाचार सुनाया कि आचार्य श्री जीवनदास जी के विषय में ८० लेख एकत्र हो गये हैं और उन्हें श्री माखनलाल जी पाराशर तथा श्री उपाध्याय जी देख रहे हैं। आप तुरन्त एस आर के कालेज के पते से उनसे पत्र-व्यवहार करें और पूछें कि यह यज्ञ कहाँ तक आगे बढ़ा है।

अपने संग्रहालय की चीज़ों का छांटन के लिये अब जनवरी में मैंने National archives वालों को बुलाया है। तब तक मुझे विश्वभारती के सी एफ ऐंड्रयूज अर्द्ध तथा Illustrated weekly के शहीन अर्द्ध में व्यस्त रहना पड़ेगा।

आप अपने निजी संग्रहालय का कार्य तुरन्त प्रारम्भ कर दें। सार्वजनिक संग्रहालयों की दुर्दशा का मुझे व्यक्तिगत अनुभव है। सम्मेलन के संग्रहालय ने सत्यनारायण कविरत्न के अमूल्य संग्रह की रक्षा नहीं की।

श्री सूर्यनारायण जगन्नाथ जी ए, घटिया इटावा तथा श्रीयुक्त कृष्णगोपाल चौधरी एटवोकेट इटावा को ब्रजभारती फ्री भेजिये। उन्हें लिख दीजिये कि उन्हें ग्राहक बनने की जरूरत नहीं है। श्रीयुक्त बालकृष्ण जी गुप्त का मकान बन रहा है सो उसी में तथा व्यापार में व्यस्त रहते हैं। यह स्वाभाविक भी है। अभी रंग जी उनके यहाँ पधारेंगे। अक्समाव टहलते हुए मिल गये।

१॥ पट तक अच्छा कागज समाख्यान रहा । बाबा गृध्रीमित्र न बचन दिया है कि व इस बार मयुरा नान दूग मनी पधारेंग । उनकी गुप्तर कागिनय का पयिक अवश्य अवश्य खरीदिये ।

विनोद  
बनारसीदास

( १३६ )

फीरोजाबाद  
११-२-७१

प्रिय श्री घृणामनदास जी,

आगाप ! मैं बत १ बर नान का लिखी आ गया पर मनी न कर पता पर का हा न दिया है । मर ४ बर गडर काय बाबा जीर रि पत्र लिखन बैठ गया । पत्र लगन मर रिण creation और recreation नाना हा हैं । ताड बजन न ता मी मी पृष्ठ क पत्र रिख थ पर इनना पत्रियम मैं नली कर सकता । अमा २ पृष्ठ का बिट्टा मैं अतन ज्ञापना वि० मुद्र का भरी है और उसका नकल वि० बुद्धि प्रज्ञा का और अतन मानन का भी भेज दूगा ।

आप मरी पडति का नकल कर सकन हैं । Ball pen म नान प्रतिया हा जाती हैं । Kores का २०१४ न० का कागज परर बबला नाना है । एक एक प्रति फाइन क रिप ग्वरर दूसरा अयस भत्र सकन है ।

आज मुन मी एक एण्ड्रयूज पर Talk record करणा है । बत १२ ता० का रात का गायन ८ बर बट प्रमात्रि नान और ६॥ बर हिमना का Feature भी । टीक टाडम आप अमबार म दख साजियगा ।

मार्द आठम न एण्ड्रयूज का बटुन बनिया तन चित्र ६०) म बनवा दिया था क्योंकि जब १८२० म एण्ड्रयूज फीरोजाबाद पधार थ तर उनी क निनाजी श्री रतननाल आप क पर पर टूर थे । ऐसा प्रतीत नाना है कि श्री आठम का बटुन काम रहता है क्योंकि २ मिनट क कामिल पर रतन दूए भा व मिन ही नग पान । उनीने मी एक एण्ड्रयूज क टुकट का छपाकर तथा मरे अमिनन्त मर में बटुन मन्द दकर मुन अनुदान किया था । मैं उनका श्रोती हूँ । मुन फीरोजाबाद म रहत दूग ७ वय दू मर । न मान वपी में भाद बावहना जी तथा श्री आठम वम मरी न व्यक्ति मनुयक मिल है ।

अब तो मेरा फीरोजाबाद का अध्याय समाप्त होने को है। अब घूमत हुए ही रहना चाहता हूँ। परिव्राजक मुझे बहुत पहिले वन जाना चाहिये था, लेकिन अब यात्राएँ मुश्किल हैं। डा० वाराणसीकोब का पता मैंने आपको शायद लिखा था यहाँ मेरे पास नहीं है कृपया भेजिये।

विनीत  
बनारसीदास

( १३७ )

नई दिल्ली २२  
६ ३ ७१

प्रिय भाई पृथाबनदास जी,

बड़े। साथ के काढ को पढकर आगरे के लिये पोस्ट कर दीजिये। भाइ अमृतलाल जी का अनुवाद ( गुरुदेव की कविता का ) मुझे भेजिये।

यदि कबीर न ब्रज में जन्म लिया होता तो वह क्या क्या देखते? यह विषय बड़ा मनोरंजक बन सकता है। यदि मैं उनका guide या पढा बन सकता तो उन्हें छलेसर ( जहाँ बबूल बन लगाया गया है ) और राजाबाबू के उद्यान को जरूर ले जाता। गोबद्धन भी दिखलाता—यद्यपि मैंने उसे अभी तक नहीं देखा और ब्रज में क्या-क्या दर्शनीय है उसका उल्लेख होना चाहिये, पर साथ ही साथ उन अनाचारों का भी वर्णन होना चाहिये जो ब्रजवासियों से बन पड़े हैं—यथा फीरोजाबाद के गांधीपाक व वृक्षा का विनाश। लाला पडा का चूड़ी की भट्टियों में जला देना इत्यादि। आप भी इस विषय पर लिखें। ब्रजभाषा के जुगलेश कवि मैंने सुना है कि प्रतापगढ़ के थे। उनका काव्य ग्रंथ यदिया था। सम्मलन वाला स पूछिये तो।

विनीत  
बनारसीदास

( १३८ )

फीरोजाबाद  
आगरा

प्रिय भाई पृथाबनदास जी,

बड़े। श्री जटलविहारी बाजपयी जी ने आगरे की भीटिङ्ग में मरा जिक्र किया था तो उन्हें एक पत्र भेज दिया है। अपने जनपदीय काव्य में उनका सहयोग लाना ही चाहिये। वे बटेश्वर के हैं।

चूँकि राजस्थान वि० विज्ञानय फिर म चानू हो गया है, मत्वत्र जी म म्व० वागुदवशरण जी क पत्रा क निय तराजा किया जा सक्ता है ।

मैं दस समय Illustrated weekly के शरीर तथा क्रांतिकारी विशेषाङ्क क काय म व्यस्त हूँ—तत्परचात भी एफ एण्ड्यूज विषयक सामग्री विद्वत् भारती को भेजना है ।

National archives वाला का जनवरी म बुनाईगा । मैं चाहता हूँ कि Cost price पर सामग्री क आवश्यक पत्रा का नक्कल या photostat क आपने सप्रदानय का दे दें । ११४ पत्र तथा कागज ना अकत बापू—महात्मा जी क ही हैं ।

आचार्य जीवनरत्न जी के विषय म भी करपात्री जी में वानचीन बघराज जगन्नाथ की हुई थी । सामग्री हरशदि हान पर क मन्त्र दन को तयार हैं । यह आद काय भा हा हो जाना चाहिये ।

मरा पिछता पत्र मिला हागा । आपक अभिनन्दन ग्रन्थ म बत्बरर विषयक लेख यदि श्री अन्त गिहारी जी विश्व दें ता अत्युत्तम ।

हमें सभी दन वाला म मन्त्र लेना चाहिये । गार्दियक यथा माम्बुनिक घरातम पर सभी का स्वागत सम्मान हम करना है । दनगत राजनीति म हमारा कुछ भी सम्बन्ध न रक्ता चाहिये ।

विनीत

बनारसीदास

( १३८ )

रामकृष्णपुरम्

नई दिल्ली २२

प्रियवर,

मरा त्रिमूर्ति आपक लेख शायद अमर उजाता या मनिक् म छद्म । २८ फरवरी का आगम जो का स्वयंवाग हुआ था और ८ मार्च को हरिमन्दिर जी का । मन्त्र आप अमर मुनि जी स प्रायना करें ता क गन्धमुनि जन बालज क अधिनागिया म हरिमन्दिर अन् निकनवा मकन हैं । Best is enemy of good पुराना कहावन है । सर्वोत्तम काम की धुन म हम अच्छा काम भा नहा कर पात ।

ब्रजभागा अभी मिली । मर विषय म आपन जा कुछ निम्ना है है तन्त्र बहुत बहुत कृतन है ।

श्री प्रकाशवीर जी अपने चुनाव सम्बन्धी गोरग घाघा में व्यस्त रहे। उन्होंने बस इतना ही किया कि २१३) रुपये हरिश्चन्द्र जी के ४०० पत्रों के टाढ़ के लिए भिजवा दिये। आपन अपनी प्रति विद्याशंकर जी से ले ली या नहीं? मैंने ८ फरवरी को यहाँ जो तार भेजा था वह मुझे ही यहाँ १२ सा० को मिला।

विनीत  
बनारसीदास

( १४० )

सरयनारायण जन्म दिवस  
रामकृष्णपुरम्  
नई दिल्ली २२

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्री त्रिलोकीनाथ ब्रजवाले एक सद्गम ग्रन्थ ब्रज की साहित्यिक मस्याओं पर निकालना चाहते हैं। मुझे सुभाव माँग है। मैंने डाइरेक्टरी निकालन के लिए परामर्श दिया है, क्योंकि उसमें कुछ विनापन भी मिल जावेंगे। क्या हिन्दी प्रचार सभा के पास इस मग के लिये साधन हैं भी?

डा० बारान्निबोव का पता शायद मैं आपको भेजा था—नया पता। उनके पास मरे सवामी पत्र होंगे। उनका पता मुझे भेजिये। वासुदेवशरण जी के पत्र शायद आपका ही छपान पड़ेंगे। और किसी को उनके महत्व का अनुमान ही नहीं। श्री मकनलाल पाराशर एम ए, एस आर के कालेज फीरोजाबाद से पूछिय कि आचार्य जीवनदास जी का काय कहां तक आगे बढ़ा।

विनीत  
बनारसीदास

( १४१ )

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

बदे! फीरोजाबाद में प्रांतीय साहित्य सम्मेलन का प्रस्ताव मुझे पसन्द है। और मेरा अनुमान है कि बाबुवर बातकृष्ण गुप्त भी उससे सहमत हो जावेंगे, डेढ़ हजार रुपये खर्च होंगे, जिनका इकट्ठा करना फीरोजाबाद जैसे साधन सम्पन्न नगर में भ्रष्टिल न होगा। यद्यपि यमिया के दिना में उत्सव करने की बात मुझे विवृल भीनी जँचती है, तथापि जिसमें अधिकारियों को सुविधा हो वही करना चाहिये।



मई जून में तो बाद साहसिक उभर इस सम्भूमि में हर्षित न हान  
चाहिये। कविता तथा नम्रता का मुक्त में तपस्या क्या कराई जाय ?  
मयनागवण जो न श्याम गङ्गा में निम्ना था—

न भावन अमन वमन धन बाग, अनेप घर घरनी मी अनुराग ।

सूत तत्र पाद अनुग्रह भाग, कमायी सेंट मन बराग ॥

मा श्रवणामिया का सैन्यमन वराग कमान क निय क्या मजदूर किया  
जाय ? मैं तो क्या प्रारम्भ ज्ञान पर ही उभर करन क पत्र में है। इस बाव  
वत्र की मस्याजा के विवरण मया निर जवे। नय नय कायनताजा का  
मूँडे बिना काम नत्ता चरगा। मैं जपनी कम्पनी का नाम याद जनिनन्त  
कम्पनी रक्ता था। नवीन जो न उमम मुहन और जाह निया। मैं पूछा  
कि मुहन का क्या मतलब ? ता नवान ची बाव बिना बागा का मूँडे तुम्हारी  
कम्पनी का कारावार चरगा कम ?

बाद आत्म ( ऐसा प्रतीत जाना है कि ) या तो विरक्त या वरगी  
वन गर हैं या फिर हमारी गति विधि न समनुष्ट हैं। व न कभी मितन हैं,  
न किसी यन में भाग लन हैं। ऐसा स्थिति में ज्ञान पर बाद भार डालना  
उचित न होगा। अथवापूर्वक ता बाद यन न जाना चाहिये। कवन अत्र्यायका  
की मुविद्या अमुविद्या का ध्यान में रखकर धार गर्भी में पचामा व्यक्तिया ता  
कृत्ता मिटलनी भूतन का परिणाम है।

काबुल में मरा और रू में बहुर उद्यान बाव भावान का भा मिटलना  
भूत गर्भी थी। प्रान्ताम सम्भवन में बुद्धव्यक्त क भा कुछ चुन न्ना कायकताजा  
का युताना चाहिये।

बिनान

बनारसीदास

( १४७ )

रामकृष्णपुरम्

वई गिल्ता २२

प्रिय भाई कृदावननाम जी,

१ एक पत्र बाव श्री कमला तमा गम में श्रीगम जा का मकान बन्ना  
दन्ता बागर का भवि, और रू बागनाग छात्रा का पूरा नाम तथा  
पता दृष्टि जा श्रीगम जा पर पाद कर रहा है। श्रीगम जा क दर्जा  
मर २०० पत्र ना गी। ज्ञान पर स्मृति ग्रन्थ निवृत्तन का प्रस्ताव भी

- कीजिये। उनमें मुमुक्षु श्री रमेशकुमार शर्मा पा एच डी काश्मीर वि० वि० में विभागाध्यक्ष हैं।
- २ भाई मधुप्रदन जी चतुर्वेदी से कहिये कि वे कौशलेन्द्र जी की कावली पुनः मुद्रित कर दें।
- ३ भाई श्रीनारायण जी से प्रार्थना कीजिये कि वे स्व० हरदयालुसिंह जी के रघुवश के अनुवाद की कुछ यानगी आपको भेज दें। उस पर स्वर्गीय बरिस्टर ब्रजकिशोर चतुर्वेदी ने विक्रम में लिखा था।
- ४ अमर उजाला वालों को कहिये कि चुनाव के बाद वे ब्रजमण्डल की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक प्रगति के विषय में अधिकाधिक लिखें।
- ५ श्री विद्याशङ्कर शर्मा एम ए, सनिक खँदारी रोड आगरा का लिखिये कि और कुछ नहीं तो हाथ के बत कागज पर Documentary Ink से ही भाई हरिशङ्कर जी पर स्मृति ग्रन्थ तैयार कर दें। छपेगा तब छपेगा।
- ६ श्री कृष्णशोपाल चौधरी वकील इटावा तथा श्री सूर्यनारायण अग्रवाल बी ए घटिया, इटावा इन दोनों से इटावे की साहित्यिक स्थिति पर लेख लिखाइये।
- ७ श्री ब्रजकिशोर जैन एम ए पी डी जैन इन्टर कालेज फीरोजाबाद का लिखिये कि फीरोजाबाद अङ्क में ब्रजसाहित्य मंडल पर एक लेख जरूर छापें। अङ्क में ही निकलवा रहा हूँ।
- ८ श्रीपुनः मानव जी प्रिन्सीपल डी ए बी कालेज फीरोजाबाद से उनकी कुछ अच्छी कविताएँ भगाकर अपने संग्रहालय में रखिये। श्री कुसुमाकर जी भी वही काम करते हैं। उनसे भी यही अनुरोध कीजिये।
- ९ भाई ओजम् [ अपने रिस्तदार ] से प्रार्थना कीजिये कि वे अपने घर के हाल में दीनबन्धु सी एफ एण्ड्र्यूज के तैल चित्र का उद्घाटन करावें। उन्हें ग्रन्थवाद दीजिये कि उन्होंने स्व० हरिशङ्कर जी का बन्धिया तैल चित्र तैयार करा लिया है। उस वे शायद पी डी जैन कालेज को अर्पित करेंगे।
- १० प्रिन्सीपल दामोदर इन्टर कालेज होलीपुरा को भी पत्र लिखें। उनकी विट्ठी मुझे मिली है पर मैं तो उधर इस समय जा नहीं सकता। स्व० रामलाल अङ्क में कब तक निकालेंगे ?

११ भाई बालकृष्ण शुभ ( हनुमानचल फीरोजाबाद ) २० ता० का पत्र  
मिलता पधार रहा है । व ता मंगलवार ॥ हा आन जान है । रास्ता  
मधुरा हाजर हो है । आप यही राटी साकर बियाम क्या न करें ?

१२ आचार्य जीनन्त जा के स्मृति ग्रन्थ का काम वही तक अप्रमत्त हुआ  
यह धान श्री मन्नाल भमा पागल अयापन एम आर क बालक  
फीरोजाबाद म पूछिय । बँध जी स भा ।

य बारह काम आकर मुपुं कर लिय । था हुब जा का मरा प्रणाम  
लिखिय ।

बिनान  
बनारसाबास

पुनरव—

श्री भगवानमिन् जा आई म एम High Blood Pressure म कारण  
विनिगहन अस्पताल म भर्ती हैं बिता की कोई बात नहीं ।

( १८३ )

मई दिस्ती २२

११ ३ ७१

प्रिय भाई कृष्णचरणजी,

बन् । चुनाव मसाम क नतीज आ रहे हैं और मैं भी वं चाय म  
उहें मुन रहा है । चूनि मग म मुझ भा १० वष मिन पये थ—वरीन  
राष्ट्रकवि गुप्त जी बारह वष मिल्ती रह—श्रीग नाह ही श्रीग विय ।  
इमनिम पुरान कुम्भार म कारण चुनाव म नतीज मुनन ॥ मुझ भा वक्त  
बवा करना पडा है । गतनीति म अपन का विकृत अंग गवना भा नटा  
चाहिय वनाकि उमन अय मव क्षत्रा का वाञ्छानि कर रख्या है । स्वर्गीय  
राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू का एक वख था अन्तिम छय गतानि नटा, मम्हनि  
है” श्री राजेन्द्राजी जीन गय यह बन्टा हुआ । मम्मवत उनम कुछ काम  
दिया जा मर ।

हम लोग का अपन मान्त्रिक तथा माम्कनिक बाय म भरपूर लगन  
म जुट जाना चाहिय । We ought not to allow ourselves to any  
particular political party though we may have sympathy with  
one or the other

हम य ममय लना चाहिय नि पन्चीम वष बा उन रातनिक  
ननाका का—जा आज भार्गीय तिनज पर कमक रट है—जनता विकृत

भूल ही जायगी जब कि रत्नाकर जी तथा मत्स्यनारायण कविरत्न को योग तब भी याद रखेंगे ।

कृपया साय का पत्र पढ़ लीजिये । यह प्रा० कुलदीप जी का ६ महात्मा गांधी माग के पत्र पर आगरे भेजा गया है । वह विभव जी का स्याम है । उन्होंने पिछले चुनाव में ८२ हजार खच कर लिये थे और Ram prasad & sons के श्री हरिहरनाथ न एक लाख । स्व० रामप्रसाद जी से मरा परिचय था । मालती माधव उन्होंने ही छपाया था । वास्तव में मत्स्यनारायण जी व सभी प्रथा का पुनर्मुद्रण होना चाहिये ।

आप भी श्री कुलदीप जी का लिखें । हम इसी वक़्त जमी क्षणिक चाजा से विचलित न होकर अपन ध्यय की ओर अग्रसर जाना चाहिये । इलका- की हरिगङ्गा जी all action कहते थे ।

विनीत  
बनारसीदास

( १५४ )

नई दिल्ली २२

१३ ३ ७१

प्रिय भाई श्री बाबनदास जी,

बंदे । चुनाव का तूफान खत्म हो गया । अब हमें सगन के साथ अपन साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यों में व्यस्त हो जाना चाहिये । इस चुनाव में करोड़ा ही रुपये खर्च हो गये होंगे जब कि literary or cultural यन्त्र के लिये पाडे में पस व्यय करने में भी हमारे शामका तथा सीढरा की नानी मरती है । कराडो के बजट पाम हात हैं जब कि साहित्यिक कार्यों को १० २० हजार में ही टरका लिया जाता है ।

इसमें हम लाग का भी कुछ क्रुमूर है । Why do we attach so much importance to politics and politicians ? जा भी व्यक्ति साहित्य का छाडकर राजनीति का ग्रहण करता है वह मणि को त्याग कर कांच ग्रहण करता है । चूंकि आप ६ वर्ष Municipal politics की बीमारी में मुलता रहे चुके हैं इसलिये याडा सा अनुभव खुद आपको उस क्षेत्र का हागा ही । दुभाग्य की बात यही है कि साहित्य क्षेत्र में भी politics घुम पय्नी है । जा राजनिति मता साहित्य क्षेत्र में पधारते हैं व अपने साथ राजनीति के कीटाणु भी ल आते हैं । Power Politics का प्रवक्त सम्मेलन में हा गया था और उमन गजब हा लिया । रोडर बाजी ही उमक भूल में थी । पाम्यक्रम में पुनका का नियुक्त कराने वाला का यह करामात थी । मैं इस बात को

कभी भी नहीं ममझ सका कि श्रीमती राना टंडन की ३०-३२ किगों सम्मनन की परीक्षाओं में था। यह मौनाग्र्य हा ममझिय कि अजमाहित्य मदन व पाम पमा नहीं है नहीं तो यहाँ भी बड़ा मगम गुरू हो जाना।

मैं छोट छोट स्थानीय बन्दा को सजोव तथा शक्तिशाली बनान का पणपानी है। बन्दा में बहुत सा गुड इकट्ठा कर मन में बनी छोट इकट्ठा हा हो जायेंगे।

श्री प्रकाशदास शास्त्री जी हार गये। मैंने मुना था कि व भाई हरिश्चन्द्र जी व बहुत श्रणीय पर अपनी मम्बरी व जिना में व हरिश्चन्द्र जी के लिय विनोद कुछ नहीं कर सक। हाँ, आयमित्र म २११) २५५ उनका पत्रा व टाइम करान का उन्ने अवश्य मित्रवा लिय था। तन्म में उनका कृतज्ञ है। २३० हरिश्चन्द्र जी का तन चित्र बहुत बढ़िया भाद आरम्भ न धनवा लिया है। उनका उद्घाटन होना बाकी है।

विनीत

बनारसीदास

( १४५ )

रामकृष्णपुरम्

नई दिल्ली २२

२० १-३१

प्रिय भाई धृवाचनदास जी,

मैं एक मसाह व भीतर फारोजाबाद गोट जान की साव रहा हूँ। सात्र एकसप्रेम म आगरा गार्जना और वहाँ कुछ विद्याम करके फीराजाबाद।

अब चुनाव का नूफान खनम हा चुका है। हम गंगा की—मार्मिक् तथा साम्बुनिक कार्य-वत्ताओं का अपना काम हन्तापूवक आर शार व माध करना चाहिये। मर आदशानुमार श्री शिवप्रभु एम ए ग्राम कनगा फीराजाबाद तथा उनके मनीर कृष्णगानात जा ट्रेनिंग स्कूल एनमात्पुर ग्यानगा सागा की चीजें इकट्ठी कर रह हैं। दोना म मम्बक म्वापित कीरिय।

रामानन्द शास्त्री अभिनन्दन ग्रंथ म चचराक जी व ब्रज व नाक साहित्य पर अच्छा लिखा है। आपन ग्रंथ दखा ही होगा।

यदि फीराजाबाद म प्रान्तीय सम्मनन करना हा है तो काय अभी स गुरू न जाना चाहिये।

विनीत

बनारसीदास

( १४६ )

प्रिय भाई वंदावनदास जी,

खयालगो लोगो का एक अच्छा समूह था। उनके भी रक्ड सुरक्षित करा लेने चाहिये। श्री नक्सा भुज्जी फीरोजाबाद का अच्छा खयालगो है। उससे बहुत सी बातों का पता चल सकता है। पता नहीं मथुरा में भी कोई खयालगो है या नहीं। बुदेलखण्ड में उही के मुकाबिले के गायक हैं। उनका पना श्री रामचरण ह्यारण मित्र, बतन बाजार भासी से लग सकता है।

श्री देवकीनन्दन विभव आगरा साधन सम्पन्न व्यक्ति हैं। श्री कुलदीप जी उनकी जय ती मना रहे हैं। जनपदीय शहीदा के लिए वे लोग कुछ करना चाहते हैं। उनसे जो सहयोग मिल जाय ले लेना चाहिये।

बिनीत

बनारसीदास

( १४७ )

२४ ३ ७१

प्रिय भाई वंदावनदास जी,

आप मेरे पत्रों को छपा रहे हैं, इसमें मुझे सचमुच आश्चर्य हुआ। मैंने अपने पत्रों को घसीटते समय कभी इस बात की कल्पना भी न की थी कि वे प्रकाशित करने योग्य समझे जावेंगे। सम्भवत इसी कारण उनमें कृत्रिमता का अभाव रहा है। चाय के नशे पत्ते में मैंने सहस्त्रों ही पत्र लिख डालें होंगे। एक महानुभाव ने उनकी सख्या के बारे में पूछा था। यदि मेरा अपराध क्षतय माना जाय तो मैं कहूँगा कि यह प्रश्न उतना ही घृष्टतापूर्ण है जितना किसी चौक जी से पूछना कि तुमने कितने लोटे भग पी है। या किसी चाय के पियक्कड़ से प्याथो की सख्या पूछना? मेरे पत्र लेखन के पीछे मुख्यतया कोई परोपकार की भावना रही है ऐसा मान लेना भी गलत होगा। पत्रकारिता का जीवन में पत्र लिखने ही पडत हैं और सम्पादक बनने के बाद तो उनका नम्बर और भी बढ जाता है। इसके सिवाय मुझे रेलवे स्टेगन से पतीस मील दूर कुण्डेश्वर में १४॥ वर्ष रहना पडा जो टीकमगढ से भी चार मील के फासिले पर था। अपने सुट्ट एकाकी जीवन में कुछ रस लाने के लिय मुझे मजबूरन पत्र व्यवहार का आश्रय लेना पडा? फिर तो वह मेरे लिय मनोरजन का मुख्य साधन ही बन गया। वह Creation और recreation [ रचनात्मक काय तथा विथाम ] दोनों का ही काम देता था।



या कि मुझे उहने चालीस पैंतालीस पत्र भेज थे, जो अब National archives—राष्ट्रीय अभिलेखागार में सुरक्षित हैं।

दीनबन्धु एण्ड्रयूज ता माना पत्रों की बीछार सों करत थे। उनके पत्रों की सट्या मैं गिन भी नहीं सका। बहुत स व्यक्तिवों का इस बात का पता न होगा कि महात्मा गांधी जी के पत्र मगह तथा संग्रहालय का प्रारम्भ सन् १९२१ में मैंन ही साबरमती जाथम में किया था और विशाल भारत में सन् १९३४ ३५ में दो लेख भी उस बार में लिख थे। खेद है कि उस समय किसी ने भी उन सत्वा पर ध्यान नहीं दिया। नती ता महात्मा जी के सकडो ही पत्र नष्ट होने से बचा लिया जात।

आज भी साहित्यिका तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के पत्रों का एक बड़ा समूह अस्त व्यस्त अवस्था में यत्न तत्र पड़ा हुआ है और कुछ वर्षों में वह विलुप्त ही हो जायगा।

मेरे क्षुद्र जीवन का एक अच्छा घस उन पत्रों की रक्षा करने में व्यतीत हुआ है। पत्र-व्यवहार पर मेरे चालीस पंचाम रुपय महीने खच हाते रह रहे पर मैं इसे घाट का मोटा हरगिज नहीं मानता। आनन्द का वितरण एक ऐसा ध्यापार है, जिनमें मुनाफा ही मुनाफा है। पर इसके लिय अनन्त अवकाश की आवश्यकता है। यह अवकाश मुझे दीनबन्धु एण्ड्रयूज महात्मा गांधी, सम्पादकाचार्य रामानन्द चट्टोपाध्याय और महाराज दीरसिंह जूदव की कृपा से पयाप्त मात्रा में मिला और यदि मैं इस क्षेत्र में कुछ सेवा कर सका ता उसका श्रेय मुग्धनया उही महापुरुषों का मिलना चाहिय। इससे अधिक क्या लिखू।

विनीत  
बनारसीदास

( १४८ )

नई दिल्ली २२  
२४ ७१

प्रिय भाई शृदावनदास जी

बन्धे ! कभी मैंने एक सख सिखा था कि हिन्दी साहित्य क्षेत्र को परिव्राजक की आवश्यकता है जो जगह-जगह घूम फिर कर दूर दूर छितरे हुए और परस्पर में असम्बद्ध साहित्यिक तथा सांस्कृतिक केन्द्रों का निरीक्षण करें और अपने सत्परामर्शों द्वारा उनको पुनर्जोड़न प्रदान करें। योजकस्तत्र दुलभ।



पर आधुनिक जीवन इतना मधुमय हो गया है और यात्राएँ इतनी बुरी प्र-  
 कि यन् काम अब बहुत बढ़ित हो गया है। आजका पता ही होगा स्वामी  
 सत्यन्व जी परिव्राजक न हमारी मानृभाषा और राष्ट्रभाषा के नियमिज्जा  
 उपयोग काय किया था। आज भी बारा साहब कालसकर निरन्तर भ्रमण  
 करने हुए जा बाय कर रहे हैं उसरी शनमुख से प्रथमा ही करनी होगा। बारा  
 हिन्दी जगत में बारा माहज जग दा चार व्यक्ति भी हान।

अग्रेशी में कहावन है Be the man thou seekest यानी जिस  
 आत्मा की तुम तलाश में हो वह खुद ही बन जाओ। दूसरा जो उदयन दन के  
 बजाय स्वयं ही तन्मग्न काम करना थोप्यकर हागा।

बहु बार मेरे मन में आया था कि अपने वनमदन के भिनभिन  
 बन्दा की साथ यात्रा करूँ पर पिछले मय से पौष्य प्राय के कुछ के कारण  
 मन की मन के मांदिग्ग और अब ७८ बी—एक कम अस्सी बर्ष—वय  
 में यात्राएँ जीर भी बढ़ित हो गई हैं। उठूँ की जिमा किताब में एक कविता  
 आता थी। वह कविवर गाकिन की था।

सर कर बुनिया की गाकिन जिंदगानी फिर कहाँ ?

जिंदगी पर कुछ बची तो मौजबानी फिर कहाँ।

[ गाकिन का बन्नाम बनी भिनता हा ता तलाश बाजिय। बहुत साफ  
 लिखत थ। पागलागाल के एक कवि मनेन्ध को उनक तीन चार पद्य  
 यात थ ] हा अगलें मर पास भी अब जिन्गी के थागे नि हो बाकी बच है  
 फिर भी घूमन फिरन की इच्छा अभी बनी हुई है।

मन् १८६६ में मन् की द्वितीय यात्रा प्रारम्भ करने के पहिले ॥ पूर्व  
 जमनी के बाणिज्य प्रतिनिधि मि० फिार में भिनन गया ता उहने छुन्न ही  
 कहा “आपके नियम हा नमार यहाँ का एक निमन्त्रण तैयार है। आप म पत्र  
 का मास्की में हमारे प्रतिनिधि को दे दीजिय। वे एक महीन के नियम आपकी  
 यात्रा का प्रवृत्त कर लेंगे—नर आप हमारे देश में घूम फिर आदय। ये” हैं  
 कि मैं अपनी अस्वस्थता के कारण उस मौभाग्यपूर्ण अवसर में लाम नहीं  
 उठा सका।

दो बार क्यूरा में भी मुख निमन्त्रण मिला था और दो बार चीन में  
 भी पर मैं उन निमा यात्रा करने की म्यनि में नहीं था, पर अब मेरी हात्कि  
 अभिनापा घूमन फिरन की है। जब फस्टक्लास का पास मुझे मिला हुआ था  
 और भारत के किसी भी स्थान का यात्रा रैन द्वारा कर सकनी था मैं उस

दुलभ सुविधा का उपयोग नहीं किया। बंधुवर श्री बंनौपुरी जी ने हिंदी भवन की एक मीटिंग में इसी कारण एक घुटनी भी ली थी कि ऐम लोग के पास छीन लिये जाने चाहिये, जो उनको इन्समाल में ही नहीं लात। फीरोजाबाद के उद्योगपति श्री बालकृष्ण गुप्त ने मुझे एक सुविधा प्रदान कर रखी है वह यह कि २५-३० मील दूर के किसी स्थान की यात्रा के लिये मैं उनकी कार का प्रयोग कर सकता हूँ और मैंने भी आगरा, हानीपुरा तथा सिरसागज की यात्राएँ उनकी कार द्वारा की थीं। बोटला तो कई बार जा चुका हूँ। एक ब्राह्मण देवता ने कहा कि हमने अपने ग्राम कपावती में एक सौ वृक्ष लगा दिये थे। श्री बालकृष्ण जी खुद झाड़व करके हमें वहाँ ले गये और हमने वह मनोहर दृश्य अपनी आँखों से देखा। और हमारी सर्वोत्तम यात्रा छलेसर के बबूच जंगल के बगले में बसि सम्मेलन तथा गोष्ठी की हुई। चमरीला के शहीद भले में भी बालकृष्ण जी ही हमें ले गये थे। वह तो तीसरी यात्रा थी।

आजकल लोग का जीवन इतना अस्त व्यस्त हो गया है कि हर आदमी जल्दी और हरबडी में इधर से उधर भागता हुआ नजर आता है। थोड़ी देर ठहर कर घटे आधे घटे के लिये भी गप्पाटुक करन का वक्त किसी के भी पास नहीं बचा। अवकाश की इस कमी ने हमारे जीवन की रेगिस्तान ही बना दिया है। छोटी छोटी मनोरंजन गोष्ठियाँ उस नखलिस्तान में परिवर्तित कर सकती हैं।

मैं दो बार राजा बाबू [ श्री प्रतापनारायण अग्रवाल ] के उम महान उपवन की यात्रा कर चुका हूँ जो आगरे से आठ मील की दूरी पर स्थित है। वहाँ ६ हजार वृक्ष तो अनेक आम के ही हैं और ढाई सौ सन गुलाब प्रति वष उत्तरता है। सैकड़ा पेड़ जामुन के हैं। मेरे आग्रह पर आप भी उस उपवन का देव चुके हैं और अमर उजाला सम्पादक श्री डोरीलाल जी भी वहाँ गये थे। अब ५ अप्रैल की तीसरी बार वहाँ की आभ्रमजरियों तथा गुलाब पुष्पों को प्रणाम करने के लिये यात्रा कर रहा हूँ।

बौद्ध ग्रन्था में हमने पढ़ा था कि भगवान बुद्ध आभ्र उपवनो में ठहरा करते थे। अगर गौतम बुद्ध का पुन अवतार हो और वे आगरे पधारे तो उससे बढ़िया जगह उनके ठहरने के लिये मिल ही नहीं सकती।

जब फीरोजाबाद में आप उत्तर प्रदेशीय साहित्य सम्मेलन करें तो कुछ प्रतिनिधियों को, जिनके पास अवकाश है बोटला अथवा छलेसर की यात्रा अवश्य करावें। मथुरा के पेड़े आप लाइये, फीरोजाबाद की दाल मोठ का

पर आधुनिक जीवन इतना मध्यमय हो गया है और यात्राएँ इतनी कष्ट प्रद कि यह काम अब बहुत कठिन हो गया है। आपका पता ही होगा स्वामी सत्यदेव जी परिभाजक ने हमारी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के लिए सितना उपयोगी कार्य किया था। आज भी बाबा साहब बालसर निरंतर धमन कर रहे हैं जो कार्य कर रहे हैं उसी शतमुद्र से प्रशंसा ही करनी होगी। बाबा हिन्दी जगत में बाबा साहब जस दा चार व्यक्ति भी हान।

अंग्रेजी में कहावत है Be the man thou seekest यानी जिस आत्मा की तुम तलाश में हो वह तुम्हें ही बन जाओ ! दूसरा जो उद्देश देने के बजाय स्वयं ही तन्मग्न रह कर काम करना अवसर होगा।

बई बाबा मेरे मन में आया था कि अपने सज्जन के भिन्न भिन्न वेदा की सीध यात्रा करने पर पिछले लग बर से पौष्टिक कार्य के कष्ट के कारण 'मन की मन के गति' और अर ७८ थी—एक कम अस्ती कल्प—वय में यात्राओं और भी कठिन हो गई है। उन्नी की किसी रिताव में एक कविता आती थी। वह कविवर गाफिर की थी।

सर कर बुनिया की गाफिर जिंदगानी फिर कहां ?

जिंदगी भर कुछ बची तो भीमवानी फिर कहां ?

[ गाफिर का कनाम कही भिन्नता हा ता सवाश कीजिये। बहुत साफ लिखत था। फारोनाया के एक कवि महान्य का उनका तीन चार पद्य था ] मैं अगले मेरे पास भी अब जिन्गी के थोड़े भिन्न ही बानी बच है फिर भी धूमन फिर की इच्छा अभी बनी हुई है।

मई १९६६ में मैं की द्वितीय यात्रा प्रारम्भ करने के पहिने मैं पूर्व जमनी के वाणिज्य प्रतिनिधि मि० फिगर में भिन्न गया ता उन्होंने छान ही कहा 'आपके तिय तो हमारे यहाँ का एक निमंत्रण समार है। आप इन पत्र को मास्को में हमारे प्रतिनिधि को दे दीजिये। वे एक महीने के तिये आपकी यात्रा का प्रवर्ध कर दें—तब आप हमारे देश में धूम फिर आदय। धन है कि मैं अपनी अस्पस्यता के कारण उस सौभाग्यपूर्ण अवसर से लाभ नहीं उठा सका।

दो बार क्यूबा से भी मुझे निमंत्रण मिला था और दो बार चीन से भी, पर मैं उन यात्रा करने की स्थिति में नहीं था, पर अब मरी हाणि अभिनाया धूमने फिर की है। जब फस्टक्लास का पास मुझे मिला हुआ था और भारत के किसी भी स्थान की यात्रा रेल द्वारा कर सकनी था, मैं उस

दुलभ सुविधा का उपयोग नहीं किया। बंधुवर श्री बैनोपुरी जी ने हिंदी भवन की एक भोटिङ्ग में इसी कारण एक चुटरी भी ली थी कि ऐसे लोगों के पास छीन लिये जाने चाहिये, जो उनकी इस्मालत ही नहीं लात। फीरोजावाद के उद्योगपति श्री बालकृष्ण गुप्त ने मुझे एक सुविधा प्रदान कर रखी है वह यह कि २५ ३० मील दूर के किसी स्थान की यात्रा के लिये मैं उनकी कार का प्रयोग कर सकता हूँ और मैंने भी आगरा, होलीपुरा तथा मिरमागज की यात्राएँ उनकी कार द्वारा की थी। कोटला ता कई बार जा चुका हूँ। एक ब्राह्मण देवता ने कहा कि हमने अपने ग्राम कपावली में एक सौ वृक्ष लगा दिये थे। श्री बालकृष्ण जी पुनः ड्राइव करके हम वहाँ ले गये और हमने यह मनोहर दृश्य अपनी आँखों से देखा। और हमारी सर्वोत्तम यात्रा छलेसर के बंधु जगल के बगले में कवि सम्मेलन तथा गोष्ठी की हुई। चमरोला के शहीद मले में भी बालकृष्ण जी ही हम ले गये थे। वह तो तीसरी यात्रा थी।

आजकल लोग का जीवन इतना अस्त-व्यस्त हो गया है कि हर आदमी जल्दी और हुरदडी में इधर से उधर भागता हुआ नज़र आता है। थोड़ी देर ठहर कर घंटे आधे घंटे के लिये भी गप्पाटुक करने का वक्त किसी के भी पास नहीं बचा। अवकाश की इस कमी ने हमारे जीवन को रेगिस्तान ही बना दिया है। छोटी छोटी मनोरंजक गोष्ठियाँ उस नखलिस्तान में परिवर्तित कर सकती हैं।

मैं दो बार राजा बाबू [ श्री प्रतापनारायण जयवाल ] के उस महान् उपवन की यात्रा कर चुका हूँ जो आगरे से आठ मील की दूरी पर स्थित है। वहाँ ६ हजार वृक्ष तो अकेले आम के ही हैं और बाँई सौ मन गुलाब प्रति वर्ष उत्तरता है। सब्जो पेड़ जामुन के हैं। मेरे आग्रह पर आप भी उस उपवन को देख चुके हैं और अमर उजाला सम्पादक श्री डारीलास जी भी वहाँ गये थे। अब ५ अप्रैल को तीसरी बार वहाँ की आभ्रमजरियाँ तथा गुलाब पुष्पों को प्रणाम करने के लिये यात्रा कर रहा हूँ।

बौद्ध ग्रन्थों में हमने पढ़ा था कि भगवान् बुद्ध आश्रम उपवना में ठहरा करते थे। अगर शीतल बुद्ध का पुनः अवतार हो और वे आगरे पधारे तो उससे बढ़िया जगह उनके ठहरने के लिये मिल ही नहीं सकती।

जब फीरोजावाद में आप उत्तर प्रदेशीय साहित्य सम्मेलन करें तो कुछ प्रतिनिधियों को जिनके पास अवकाश है, कोटला अथवा छलेसर की यात्रा अवश्य करावें। मथुरा के पेड़ों आप लाइये फीरोजावाद की दाल मोठ का



यहाँ जाजकत चुनाव वाले साने नहीं देने । रात भर चिन्ताते रहते हैं । यहाँ अभी चिटिया का चहचहाना बहुत अच्छा लग रहा है । यहाँ सामन कचनार का पेड़ है । उनमें बैंगनी रंग के फूल बहुत लगने हैं । आज हमारी फोटो खिंची थी । घर में अब घूप आने लगी है इस वक्त शुन रहे हैं । हमारी गुल्लक में इस वक्त २१) ६० हैं । अभी मम्मी पर उधार हैं । मम्मी इस वक्त रामायण पढ़ रही हैं । भय्या अपने नोस्त से बातें कर रहा है । जीजी पढ़ रही है । हम सब लोग का अब की गिल्ली में ही रहने का मन है आज बूढ़े बाबा की पूजा थी । खूब मन से पूजा की थी । यहाँ पड़ोस में फीरोजाबाद वाले शर्मा जी के यहाँ बड़ा आ गई । उनके आने की खुशी में उन्होंने खूब भारी जलना किया था । २००-३०० आदमी बुनाये । अपने यहाँ के सब लोगो को खाना खिलाया । मलाई के लड्डू निरणी वर्षी समोसा । छोला पकौड़ी खूब था । खूब पट भर के खाया । खूब साइडिङ्ग रिकार्ड खूब बजा था । बड़ा मजा आया ।”

आपकी बेटी

गुडिया

कक्षा ६

गुडिया की दूसरी चिट्ठी भी इसी प्रकार की मनोरञ्जक छोटी छोटी बातों से परिपूर्ण थी । कभी वह तोरई के बीज निवालने की चर्चा करती है तो कभी जालू के सेव और कवरियाँ बनाने की । एक पत्र में लिखा था—  
‘यहाँ के मौसम बहुत दुष्ट हैं । कोई भी चीज का घूप में सुखाने रखने तो आब के सामने से उड़ा से जाते हैं । एक दिन साबुन उड़ा से गया और आज नारियन का तेल घूप में रखा था सो आधा तेल फैला गया । गुडिया कभी-कभी अपने पत्र में यह सिखायन भी कर देती है कि हमको सब मारते हैं । शायन डाट फटकार को वह भारला ही कहती है और उसकी यह बात ठीक भी है ।

गुडिया की चिट्ठीमा को पढ़ कर हम अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ पत्र लेखक काउपर के पत्रों की याद आ जाती है । उनका एक पालनू सरपोश नाग गया था सो उसका बड़ा ही मनोरञ्जक वृत्तान्त उन्होंने एक चिट्ठी में लिखा था । प्रथम महाभुद्ध में अमरीका के जो राजदूत लन्दन में रूने में थे भी पत्र लेखन में निरोधित थे । एक चिट्ठी में उन्होंने उन तमाम साग चक्कारियों के नाम लिनाये थे जो अमरीका में होती थीं उन दिना स्वयं राजदूत महोदय कुल जमा साठ वष के ही थे ।

प्रवचन था गहन ज्ञान प्रगट करेगा। आनिश्व विभाग की जिम्मेवारी श्री आठम् उठा लेंगे। भाद्व अमृतनाथ जी स मधुर कविता का पाठ कराना मरे जिम्मे रहा। Division of labour अथ विभाजन की यह पद्धति कभी रहूगी ? पीगेजाबाद क मुप्रसिद्ध फाटाप्रावर श्री जगन्नाथ जी उन शब्दों का विवरण भी स्पष्ट देंगे।

विनीत  
बनारसीदास

( ၃၃၄ )

रामकृष्णपुरम् ८  
नई दिल्ली २२  
४४-७१

प्रिय श्री सुधावनदास जी

राज आदिवा पण्डित अपनी पौत्री कुमारा रणु चतुर्वेदी में कराता है। रणु कुन जमा मम उपकी नागी और मन्त्रों में जानपुर (जिना मतारम) में पत्नी है। रणु का घर का नाम गुहिया है और गुहिया चिट्ठी निम्न में बहुत हाशिया है। घर घर में मन बढ़िया पत्र का भी नहीं निश्च पाता। पत्र ममकी चिट्ठिया का पदार्थ हम आदर्य म्मा और हमने चिन्ताव बुद्धि प्रमाण में पूछा कि क्या हम पत्र निम्न में गुहिया किसी में मन्त्र लेती है पर उत्तर आया कि नहीं वह ता जा कुछ निम्न है अन मन में भुन ही निम्नता है। गुहिया की चिट्ठिया व कुछ अन ज्वा व त्या—जिना किसी परिवर्तन क—यों उद्धृत कर रहा है—

आपका बिट्टा अभी अभी मित्री । उस आपका बिट्टी निम्ना भूत  
 गया । दादा २॥ ता० का गन्तव्य म गया अब ३ का आखि । दूध सागा की  
 छुट्टी है । आप मित्री म माध यनी आखि । यनी पर मर पूवन नगा है ।  
 टमाकर निकलन नम है । रैमन म पून आ गया । मगरी गुर हा रहा है ।  
 मुनी भी निकलनी है । खूब मरान, धनिया मयी बना आदि गुर हा रहा है ।  
 २६ ता० का मध्या ही वष गाँठ की ता उम निन ममगुना उनाण । पन्द  
 निन मिमर म हृद गा उम निन पिगनाशान वाने जमा जा ओर S C  
 Gupta ता लाना लिया था । उम निन मरा नगी मुद्रिया मार गया उना था ।  
 मार बना था । यनी नाबू भा निकल रहा है । जगाता मेम मोछा नाबू मट्टा  
 नाबू खूब निरना । सान-खान जी उर गया । यनी पर ता जमा म ना हा ना  
 का नगरा नान नगा । पना गाभा अर निकलगा । यही टड मरमा नाना है ।

यहा आजकल चुनाव वाले खाने नहीं देते । खान भर चिल्लात रहने हैं । यहाँ अभी चिड़ियों का चहचहाना बहुत अच्छा लग रहा है । यहा सामने कचनार का पेड़ है । उसमें बैंगनी रंग के फूल बहुत लगते हैं । आज हमारी फोटो खिंची थी । घर में अब धूप आने लगी है इस वक्त चुन रहे हैं । हमारी गुल्लक में इस वक्त २१) ६० हैं । अभी मम्मी पर उधार हैं । मम्मी इस वक्त रामायण पढ़ रही हैं । भय्या अपने दोस्त से बातें कर रहा है । जीजी पढ़ रही है । हम सब लोग का अब को दिल्ली में ही रहने का मन है आज बूढ़े बाबा की पूजा थी । पूरा मन से पूजा की थी । यहाँ पड़ोस में फीरोजाबाद वाले शर्मा जी के यहाँ बऊ आ गई । उसने आने को खुशी में उन्होंने खूब भारी जलसा किया था । २०० ३०० आदमी बुलाय । अपने यहा के सब लोगो को खाना खिलाया । मलाई के सडहू, तिरगी बर्फी समोसा । छोला पकौड़ी खूब था । खूब पट भर के खाया । खूब साइटिङ्ग रिवाइड खूब बजा था । बड़ा मजा आया ।”

आपकी घेटी

गुडिया

कसा ६

गुडिया की दूसरी चिट्ठी भी इसी प्रकार की मनोरंजक छोटी छोटी बातों से परिपूर्ण थी । कभी वह तारु के बीज निवासन की चर्चा करती है तो कभी आलू के सेव और कचरियाँ बनाने की । एक पत्र में लिखा था— “यहाँ के कौड़े बहुत दुष्ट हैं । कौड़े भी बीज को धूप में सुखाने रखते तो आँख के सामने से उठा ले जाते हैं । एक दिन साबुन उठा ले गया और आज नारियन का तेल धूप में रखा था तो आया तेल फँस गया । गुडिया कभी कभी अपने पत्र में यह शिकायत भी कर देती है कि हमको मर मारते हैं । शायद डाट पटनार को वह मारना ही कहती है और उसकी यह बात ठीक भी है ।

गुडिया की चिट्ठियाँ को पढ़ कर हम अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ पत्र लेखक काउपर के पत्रों की याद आ जाती है । उनका एक पालतू खरगोश भाग गया था तो उसका बड़ा ही मनोरंजक वृत्तांत उन्होंने एक चिट्ठी में लिखा था । प्रथम महायुद्ध में अमरीका के जो राजदूत लंदन में रहते थे, वे भी पत्र लेखन में शिरासि थे । एक चिट्ठी में उन्होंने उन तमाम साय तरकारियों के नाम गिनाये थे, जो अमरीका में हावी थीं उन निना स्वयं राजदूत महान्य कुल जमा साठ वष के ही थे ।



माननीय श्रीनिवास शास्त्री जी के अग्रेजा पत्र के मार्के के हैं और उनका टिप्पणी अनुवाद किया जाना चाहिए। एक चिट्ठी में उन्होंने लिखा था कि एक मठ जी ने अपने ज्ञानान पुत्र का कमर में सम्मिलित कर लिया कि महामना मानवीय जी के पद्यान्त पर वह बहुत मा पना करें उन्हें ज्ञान में नए दात। एक पत्र में उन्होंने साह आतिवर्तन प्रथम मुनारान का त्रिक्र के मनारजक तथा नाटकीय दृष्ट पर किया था। उस पत्र का उद्धृत करने के लिए यही स्थान नहीं। मर नाम का चिट्ठी उन्होंने पाठक के बारे में लिखी थी उस में न जान कि उन मित्रों का मुनाया हागा। वह मुप कष्ट है और जब शास्त्री जी आगर पधार तो स्वयं ज्ञान का मुना लिया। उस पत्र के अन्त में आया था—It is a funny world Benarasidas we have to live in First bend to it make yourself great and then you can make it bend to you Did Gandhi always dress like this? If he had begun so he would have ended differently Please forgive a little lecture from one who loves you

yours affectionately

V S Srinivas Sastri

शास्त्री जी का मनु १९०४ का बड़े पत्र ४७ वर्ष बाद भी मुप मा है। यही आठवें सेंसर रामचन्द्रपुरम् के कमर में एकाकी बठ-बठ मन बना नगना ना पत्र चिट्ठी धमीट हागा है। इस कमर में घर में अवन रहन रत्न ५० नि बन गय। यह तनहाई मुक्त खन गद है और मैं उन्नी बवि का बट करिता गुनगुनाता रहता हूँ—

“या खुदा ! जन्नत में किसी हूर को भेज,  
मेरी मौता मेरी आवन नहीं तनहाई का !”  
बिल्कुल बहार हूँ—वे Car मा ! अगर वह हूर  
बार चमाना भी जानती हो तो क्या कहना !

विनीत

बनारसीनाथ

( १५० )

४ साज्जन कुल आगरा

२४-३१

प्रिय माई कृदावननाम जी,

आज ५ अग्रत है—य महागुरु का पुनर्जिपि है, जिसने अनेक गत हुए भी अन्न जीवन के २६ वष हमारे दा के लिए अर्पित कर दिए थे और

जिसके बारे में महात्मा गांधी जी ने लिखा था कि उनसे बढकर कोई भी सत्यप्रेमी विनम्र भारत भक्त इस भूमि में विद्यमान नहीं। मेरा मतलब दीनवाघु सी एक ऐण्छूज से है।

दीनवाघु का भक्त मैं मई सन् १९१४ से बना जब मैंने माहनरियू के अप्रैल १९१४ के अंक में उनका दमिण अफ्रीका से भेजा एक लेख पढ़ा था, जिसमें उन्होंने गांधी जी के प्रथम दर्शन की बात लिखी थी। बापू की चरण रज उन्होंने अपने माथे पर लगाई थी और इस कारण अफ्रीका के गारे लोग उनसे बहुत नाराज हो गये थे।

लेख का पढ़कर मैं इतना प्रभावित हुआ कि दीनवाघु से पत्र-व्यवहार करने का मैंने निश्चय कर लिया। मैंने मन में सोचा था—

*'He is my man'*

जिस व्यक्ति को मैं अपना प्रेम अर्पित कर सकता हूँ, यह वही है। इस घटना को अब ५७ वर्ष होने को आया और मैं आज भी दीनवाघु के प्रति उतनी ही श्रद्धा रखता हूँ। और मेरे सुदृढ़ जीवन में यदि अष्टाद्वै के धाँसे बहुत घस हैं तो उनके लिये मैं उसी सरपुरुष का श्रेणी हूँ।

बाबा तुलसीदास ने कहा था —

**“बिन सत्सङ्ग विवेक न होई। बिन हरिकृपा मिलै नहि सोई॥”**

मैंने सी एफ़ ऐण्छूज का प्रथम दशक मई सन् १९१८ में किये और सन् १८२०-२१ में चौन्ह महीने उनके साथ शांति निकेतन में रहा भी जहाँ मैंने उनका प्रथम जीवन खरिल लिखा जिसकी भूमिका गांधी जी ने लिखी थी। फिर ता आगे चलकर मुझे मिस मार्जोरी साइक्स के साथ उनकी अंग्रेजी जीवनी लिखने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ और उस पुस्तक की भूमिका बापू ने ही लिखी थी।

दीनवाघु की कृपा से ही मुझे कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के दशन हुए और तभी शास्त्री महाशय ( श्री विद्युत्सेखर भट्टाचार्य ) आचार्य नन्दलाल बाम और आचार्य क्षितिमाहनमेन के निकट सम्पर्क में आया।

‘दीन क्या है, किसी कामिल को इबादत करना’ चक्कस्त का यह वाक्य ही मेरा आदर्श रहा है। मैं भी यही मानता हूँ कि सुयोग्य की पूजा ही असली धर्म है। मैं किसी का उपदेश नहीं देता—उपदेश देने से बदतर कोई फानतू काम हो ही नहीं सकता—मिफ़ अपनी अनुमृतियाँ-आप जस श्रद्धालु सहायोगी का सुना देना चाहता हूँ। अपने जीवन की सबसे बड़ी कमाई मैं इसीका मानता

रहा है कि मुझे मनुष्यमाणाधी जो, बची-द्रु श्री स्वाध्याय टाकुर, माननाय श्रीनिवास शास्त्री, मण्डाकाचाय रामानन्द चट्टापाध्याय, आचाय द्वितीय जी, प्रदय मो बाद कि नामनि, अमर महीन गणन मन्दूर विचार्यो और पूज्य प० पद्मिह जी भर्मा इत्यादि व शृणुपात्र हान का भीभाग्य प्राप्त हुआ ।

गुरुमिद्व अमरीकन लेखक थारा न उन जगह लिखा था "मैं चाहता हूँ कि युवक मछली पकाना सीखें, जिससे आगे चलकर वे अपने जान में मनुष्यता का भी पैसा सकें ।"

मछली पकाना तो मैंने सीखा नहीं था यद्यपि कुछ टाकुर व तानात्र म बढ़िया कढ़ी की मछलियों पाईं जानी थीं पर पत्र-व्यवहार द्वारा मैं माहित्य जगन व अन्य मगरमच्छ पौवन में मगन हो गया ।

पत्र-व्यवहार उसका एक सर्वोत्तम माधन है यह बात मैं प्राइवट तौर पर आपकी धनदाय देता हूँ । यह मंत्र है— गावनीय गावनीय, गावनीय प्रयत्नन । परामीमी मनीषी रामां रानां व तीन पत्र मैंने इसका द्वारा प्राप्त किया और माननीय श्रीनिवास शास्त्री व आत्मीय पत्र भी । ऐसा रिश्वो व निय ममाना इकट्ठा कराना का सर्वोत्तम तरीका भी यही है । मैंने कोई भी दड़ तो रखा किन्तु प्रत्युत निय हाथ और उनमें से रितनों ही का ममाना मुझ पत्र व्यवहार में ही प्राप्त हुआ था । पत्र-व्यवहार मेरा व्यसन नामक पुस्तक का पूरा-पूरी मामूली मुझ इसी तौर तरीक से मिली, यद्यपि वह किताब अभी तक नदी किनारे जा सकी ।

यमुवर, श्री लक्ष्मीचन्द्र जी जन [ मवानक पानपीठ काशा ] न बहुत वय पहले आग्रह किया था कि मैं उन पुस्तक का उनकी ग्रन्थमाला व निष्पत्ति द और श्री राघवाहन जी [ शिवदान अग्रजान एड का० व स्वामी ] दड़ मो दय महीन पर मेरे पास एक महायक ग्रन्थ का तयार हूँ जो उन पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का मेरे निय व्यवस्थित कर द । उन मनुष्य का बनन उहोने मुझ परामो भत्र भी किया था, जिसमें मैंने चाय और पहा पर मय वग दिया । यह बात मैंने उह अभी तक नहीं बतलाई क्योंकि यह मुना दन पर मैं उनका इन्तन में मितुन गिर जाऊँगा पर आप तो मधुरा निवासो हैं और चोव नागा के पहा प्रेम में परिचिन भी । अब आप ही साचिय कि जब तक मैं चाय और पहा प्राकर जीवित नहीं रहूँगा तब तक 'पत्र-व्यवहार मेरा व्यसन' नामक किताब निज कस सकती है ।

आपका यह जानकर आश्चर्य हुआ कि दड़ मो रूपय महीन पर पारोत्राशा का उद्यान नगरी में बाद ऐसा युवक नहीं मिलता जो ६ घंटे रात

मेरे साथ काम कर सके। मेरे व्यक्ति में वह आकर्षण भी नहीं कि युवकों को प्रेरणा प्रदान कर सकूँ। शायद आज का युवक आदर्शवादी बातें सुनना भी नहीं चाहता। भारत के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी बाबा पृथ्वीसिंह आजाद ने अपने एक पत्र में मुझे बड़े पत्र की बात लिखी थी। उन्होंने लिखा था—

“आप इस तथ्य को क्यों भूल जाते हैं कि आपसे और आज के नौजवानों से दो पीढ़ी का अंतर है—५० वर्ष का—और उनके आदर्श आपसे भिन्न हैं। वे आपसे कोई उपदेश सुनना नहीं चाहें तो हमसे कोई आश्चर्य की बात नहीं। आप दूसरों की बात सुनिये और बोलिये बहुत कम। शक्ति को सजित रखिये” यह शब्द अमरश बाबा के नहीं हैं, पर उनके पत्र का सारांश यही है। पर मैं कहूँ तो आखिर क्या? मुझे गप्पाष्टक का शौक है और गप्प अकेले से कैसे लड़ाई जा सकती है?

इसलिये मैं परिव्राजक बन जाने का इरादा कर लिया है। कभी आगरे रहूँगा, कभी दिल्ली, कभी टीकमगढ़ तो कभी गानपुर (काशी)। और गुताड़े लगाकर पूर्व जमनी तथा फिजी की यात्रा करने का भी विचार है। और चूंकि आप मेरे प्रति कुछ श्रद्धा रखते हैं, इसलिये कभी मथुरा पर भी आक्रमण कर सकता हूँ।

एक बाबा जी को किसी थडालु ने प्रणाम किया तो वे बोले “बच्चा! आज भोजन तेरे यहाँ ही रहा।” सो आप अपनी धमशाला में एक कमरा मेरे लिये अभी से सुरक्षित कर रखिये।

बघुवर राजाबाबू [ श्री प्रतापनारायण अग्रवाल, रावतपाड़ा ] का आग्रह है कि मैं कुछ दिन उनके उपवन में गुजारूँ और भाई बालकृष्ण गुप्त ने तो एक नवीन बगीचे में कुछ कमरे साहित्यिक यात्रियों के लिये ही बनवा देने का निश्चय कर लिया है।

पर इस वक्त तो मैं विदेश यात्रा के भूढ़ में हूँ। यदि बन सका तो पूर्व जमनी जरूर जाऊँगा। वहाँ जाने का और एक महीने यात्रा करने का निमंत्रण मुझे सन् १९६६ में मिला था, पर पौरुष ग्रंथि की बीमारी के कारण मैं नहीं जा सका था।

मैंने बड़े हफ्ते साथ सुना कि एक ब्रजवासी को (आगरे जिले के निवासी आई ए. एस. को) फिजी के हार्ड कमिश्नर का पद शायद दिया जायगा। यदि ऐसा हुआ तो फिर फिजी पहुँचना मेरे लिये कठिन न होगा।

१५ जून १९१४ मे मैं जिन्नी का भक्त रहा हूँ २० वर्ष तक प्रवामी भाग्यतीया की कुछ गवा भी मुझमें था परी था ।

प्रातः कालीन चाय का नशा अब उतर चुका है और हम लम्बे पत्र में जो उन जड़ों चर्चाएँ मीन की हैं उनका नियम समायाचना करता हूँ । अब भाई हरिशङ्कर जी, अमृतनाथ जी तथा राधमाहन जी के घर पर चाय पिऊँगा और गण्य सहाऊँगा ।

विनीत

बनारसीदास

डॉ० बनारसीदास चतुर्वेदी के  
पत्र

कुछ अन्य  
साहित्यिक बन्धुओं के नाम



## श्री श्रीनारायण जी चतुर्वेदो को लिखा हुआ पत्र

( १५१ )

फीरोजाबाद

२२७१

प्रिय भाई श्रीनारायण जी,  
पास्तागन !

आपने इस बार एक काम बहुत अच्छा किया—यानी पूज्य पिताजी पर एक सुंदर श्रद्धाजलि छाप दी। यह श्राद्ध काय तो आज से १६, १७ वर्ष पूर्व ही हो जाना चाहिए था। क्या १० छाबरमल्ल जी शर्मा ने उन पर उन दिनों कुछ लिखा था ? इस लेख में एक कभी रह गई। पिताजी द्वारा प्रणीत तथा अनुवादित सभी ग्रंथों की सूची दे देनी चाहिए थी। उनमें कौन-कौन पुस्तकें अब प्राप्य हैं यह भी लिखना चाहिए था।

मुझे आपके विषय में थोड़े से सस्मरण हैं। शायद सन् १९१६ में वे इंदौर पधारे थे और किसी जन घमशाला में टहरे थे। मुझे पत्र भेजकर उन्होंने वहाँ बुला लिया था और दो घण्ट बातचीत की थी। प्रातः काल में काम करने की बात तब भी मुझे उन्होंने बतनाई थी। हँसाया भी बहुत था। मैं तो उम्र में काफी छोटा था, पर उनके व्यवहार में बड़े छाट की भावना का नामोनिशान न था। आग चलकर उन्हीं ने मेरी सत्यनारायण कविरत्न की जीवनी सम्मेलन से छानवाने की स्वीकृति दी थी। उसमें मेरी अज्ञानता से एक भूल हो गई थी—शायद राम फटाका तिलक के बारे में थी—और उसके बारे में उन्होंने मुझे सावधान भी किया था।

मेरा खयाल है कि श्री गोपालप्रसाद व्यास भी उन पर कुछ लिख सकते हैं। उनके पत्रों को आपने सुरक्षित रक्खा था नहीं ? घरेलू record रखने में चीनी लोग अग्रगण्य थे। उनका इतिहास भी बहुत पुराना है। क्या राघवेन्द्र की फाइल सुरक्षित है ? क्लकत्ता—समाचार की तो है ही। क्या श्री बाबूराम मिश्र कुछ लिख सकते ? शिवदत्त जी ने बहुत अच्छा लिखा था।

हस्त लिखित स्मृति ग्रंथों में तां बांग पच्चीस रुपये से अधिक खर्च नहीं होता, पर हम लोग इतने प्रमादी हैं कि कुछ भी नहीं कर पाते। हमारी एक श्राद्ध अभिनंदन मुठन कम्पनी अनलिमिटेड है। श्री छाबरमल्ल जी उसके मनीजिंग डायरेक्टर हैं। जब मैंने श्री माधवप्रसाद जी के जीवन चरित्र की चर्चा की थी, तो पूज्य पिताजी ने उसके लिये कुछ लिख देने का वचन भी दिया था।



पर वह आदरम भी जहाँ का तहाँ पड़ा गता । अब हम लोग भी वयोवृद्धा में मान जान लगे । राजनैतिक शहीदा की सानि रखा में मर पिछले पच्चास वर्ष बीत गए और माहिलियन तपस्विनी की एक प्रसार में उभरा हा हा गई । आप कम से कम इतना तो कीजिये कि पूज्य पिताजी के श्रमों का तलाश करने अपने घर पर रखिये । उनके पत्र मुक्ति में रहिये । अपना इच्छा भा । मैं भी अपने सम्मरण निम्न भजूगा । बन्दाइन या बंदन हैस्टिंग्स वाली रिताब मैं देखता थी पर तब तक उसका पढ़ने का योग्यता मुझ में न था ।

आपने मेरे बारे में जो नाट किया है तब तक रहने है । मेरा मुन्ना भी छाप ले मुक्तगुजार है । आधर पाठों की पर मैं एक बहुत ना निराशा था । भिन्नता रूपा, यदि आप तक न पहुँचा हा । जगत एक में गा एक एण्ड्रयूज की शताब्दी पर कुछ जन्म दिखें ।

विनीत

बनारसीदास

आचार्य डा० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी को लिखे गये पत्र

( १५२ )

बागनाबाद

१९१७

प्रिय द्विवेदी जी

प्रणाम । मनुष्य में कल पड़ा कि आप आगे बढ़ रहे हैं—न हम मुझी विद्यापीठ में । और इस में सम्पूर्ण ब्रह्मसूत्र के नियम परम गौमाय का ध्यान मानता हूँ । हम लोग भिन्न कर ब्रह्मभूमि की कुछ गवाता नर ही सक्त हैं ।

पहले तो मैं यहाँ आया मुनाम में रहता रहा, पर पुनर्विचार करने पर मैंने अपना विचार बन्द किया है—मय त्याग किया है । वान एत है कि भगवान् के ध्याम न जिग बराज्य [ anarchism ] की कल्पना महाभावन में की थी—

न के लक्ष्य न के लक्षिका वह फीगब्रावात में क्रमशः वापस ला रहा है और बागह भगवान् तथा हनुमान के बगल मयबा स्थापनना पूरक विचरण करत हुए दृष्टिवाचक हान हैं । वान चूनि पुनर्नव के प्रमो है इस दृश्य का लक्ष्य अवश्य प्रकृतिवत्ता । बागह यहाँ में मुन क्रमा २० मीन दूर है और नाग का ११ गुन तथा वपदा का तिगुन करान के लिये थय मुन

काशी तक नहीं जाना पड़ेगा । आगरे कम तक पधार रहें हैं ? काशी के विद्युग्ध वातावरण में आपकी मुक्ति मिलनी ही चाहिये । इधर एक आकस्मिक दुष्टता पर मैंने एक तुल्यवर्दी की है —

बड़े बड़ेन की अकल अब धरन सगी है धास ।

फोट में डी लिट बने थी बनारसीदास ॥

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

अब पूरी उपाधियों के साथ मेरा नाम यह है साहित्य आचस्पति (सम्मेलन) साहित्य बारिधि ( उ० प्र० सम्मेलन ) साहित्य मानण्ड (मधुरा) डी लिट ( आगरा विश्व विद्यालय ) बनारसीदास चतुर्वेदी—भारत साँठ ( महीन जी द्वारा प्रदत्त )

( १५३ )

फीरोजाबाद

३ २ ७१

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम । कृपा पत्र तथा दोहे में इमलाह के लिये कृतज्ञ हूँ । शांति निवेदन में दीनबन्धु शताब्दी के लिये निमन्त्रण आया है । वे एक साथी का भी टी ए डी ए देने को तयार हैं, पर मैं इतनी सम्झी यात्रा नहीं कर सकता । हाँ, गिनी जाने का विचार अवश्य है । वहाँ Nehru Museum तथा गांधी स्मारक निधि बाल प्र गिनी कर रहे हैं । मुझे शायद बोलना भी पड़े । आप शांति निवेदन जावें तो अत्युत्तम ।

अपने छोटे से संग्रहालय का मुख्य भाग मैंने National archives को सौंप दिया । महात्मा गांधी जी के सौ से ऊपर मूल पत्र, दीनबन्धु की असंख्य चिट्ठियाँ तथा जीवन सम्बन्धी सम्पूर्ण सामग्री, गुरुदेव के कुछ पत्र, रोमां रोला के तीन पत्र मणेश जी, राजेन्द्रबाबू प्रेमचंद, बड़े दादा, प० जवाहरलाल जी इत्यादि के पत्र मैंने दिल्ली भेज दिये हैं । राष्ट्रीय अभिलेखागार के दो व्यक्ति यहाँ पधारें, तो उन्हें सौंप दिये ।

साहित्यिक तथा प्रवासी भारतीयों सम्बन्धी जो सामग्री यहाँ है उसे छोट कर फिर कभी मिजबा दूंगा । मरी चिंता बहुत कुछ दूर हो गई । राष्ट्रीय अभिलेखागार बहुत कम दे सकेगा—दो सौ चार सौ रुपये वस—पर पैसे का

माह में बर्मा का छाह चुका है। पत्रगुआ म म न० १ में मदन में ही मारा दिवंगी बीन गद, न० ३ का नम्बर हा नगी आया।

दीनबन्धु न स्वामी अज्ञान जो क गाय अविद्या में जो पत्र-अवकाश किया था और त्रिभ घराह्वर क क म मन्दिर विद्यावहार न मुप मौला था, वह मान भर पहिन् हा National archives का मौप चुका था।

५७ वर्ष में एजन्सि मामला का यग सर्वोन्म टायाम हा मक्ता था। अब मैं निश्चिन्ता में यात्रा कर सकता है। अन्तिम यात्रा में अन्ना मर है— पर उमर निय में अन्ना म नन।

‘पार करना है मुक्तता सभी विपुलता का यह पारावार’

विनाय

बनारसीनाथ

श्री रामधारीसिंह जी दिनकर को लिखा गया पत्र

( १४४ )

( १९६० का पत्र )

प्रिय भाई दिनकर जी,

प्रणाम ! मैं भागान बना गया था और वही मैं सोन पर आपका हुदारन मिला। उग्र पड़कर मुझ हार्निक मर हुआ। इस बान्धावस्था में आपकी यह अनधिकार चेष्टा है कि आप बामाग पढ़ें जब कि मुझ ६८ वर्षीय मुक्क का भी यह अधिकार नहीं है ( यद्यपि मैं पर उपद्रव कुन्न ही हूँ— १६० रमचार का लिय हुए। )

I too got considerably indebted on account of the marriage of my niece and had to borrow money from the publishers that I have to pay and so I can easily understand your difficulties

पर आमान सत्र रान्' क मिदान्त्रानुसार अब नम लागों का अपना टङ्किकोण मक्का बन्न टाटना चाहिये। जनन मुगों मायियों तथा घर बारा का आप साकन्माक कह दें—

भाई माह्व ! अब मुप जोन नीदिय। अब मैं कोट भी त्रिम्भारा अपन पर नगी लूगा। बार जाने आप का काम जाने। मरा एक ही प्राधान है—Joy and laughter आनन् उन्नाम तथा विश्राम।”

नारद भगवान ने पावती को जो उपदेश दिया था—“शरीर माघ क्षुधम-साधनम्” उसे मैं आपके सामने दुहरा रहा हूँ क्योंकि आपकी तपस्या पावती से कम नहीं है ज्यादा ही है। You have passed through a terrible struggle after the death of your father at an early age and that long continued सपथ has broken your health, but you can still gather all your strength and live to a good old age like my father who lived upto 93

Cheer up my friend and change the entire outlook of your life

You ought to change your diet as well पूज्य Tandon ji told me to give up salt altogether to bring down the blood pressure

You complain of lack of friends Why not create new ones specially among the finer sex ? Do you think that Lord Krishna had 16 thousand गोपिका's in his harem ? They were all his lady admirers Akber Allhabadi observed—

“अकबर अगर मदफूस्त ए गवर्मेन्ट न होता ।  
उसकी भी आप पाते गाँधी की गोपियों ने ॥”

With a handsome personality, a wonderful voice, and a tremendous imagination you can still gather a large number of गोपिका's but you have failed to do so on account of your दक्षिणानुसी ideas

‘चाहे कोई फसल उगा ले तू जलधार बहाता चल’

Wasn't this the piece of advice you gave me on my birthday ? Isn't it pregnant with meaning ?

Everyone knows his disease and also the medicine but you prescribed a नुसखा for me and I have been using it day and night ( even during my wet dreams ) Don't publish this news at present please In my मूर्खता समा, over which you must preside you can divulge this secret to the happy crowd gathered to pay homage to a प्रच्छन्न scoundrel like me !

As regards पेस्टर्नाक I must disagree with you entirely Surely this is not Pasternack's दुष्ट You know my views I have absolutely no sympathy with साम्यवादी शासन व्यवस्था and had

the courage to give a bit of my mind in the main when I observed, "you will not rest content with Marx & Lenin, but must take up Kropotkin & Gandhi as well"

I have been misunderstood many a time and nothing pains me more than your observations, that I need not repeat because you have already made ample amends for them. I admire the courage of Pasternak no doubt but he lacked finer discrimination. His sweeping remarks his generalisations did injustice to that great country. He forgot to mention the wonderful constructive work done in Russia in the educational literary technological and cultural fields. He was really a great poet but in his later days kept aloof from the mass currents.

Do you know that I reached within two miles of his residence? Though asked by my Russian friends I refused to trouble him. I had not the heart to enter into a controversy with that great poet. Now that he is gone it will be disgraceful for me to speak ill of him. I cannot be his judge nor shall I be a judge of yourself.

May I assure you that I have still a feeling of admiration for you—the same as I had in 1935 when I observed 'यदि निरन्तर जी अक्रिया में हूँ तो भी मैं उनमें मिलन जाता' ?

But I must confess honestly that you have gone out of my orbit. The reason lies partly in my preoccupation with the Hindu's cause, and partly in your domestic difficulties, that compell you to overwork.

I cannot give you any piece of advice—perhaps you do not stand in need of it—but I can surely tell you that creation of new friends is absolutely essential for us. Sir I consider that day lost, when I do not make a new friend. observed Dr Johnson to Boswell.

You must cheer up my young friend and when you get bored come to 99 North Avenue giving up 99 का फर 'नियानव का फर' as Dadda wrote in one of his poems "बढ़ गया है नाय बढ़ नियानवैक फरम" The Anarchist Govt will liquidate our debts !

Sincerely yours  
Benarsidas Chaturvedi

## श्री अक्षयकुमार जैन को लिखे गये पत्र

( १५५ )

कोरोजाबाद

२-७ ६८

प्रिय अक्षय जी,

'नवभारत टाइम्स' के अत्यधिक प्रचार से प्रभावित होकर ही मैं उसका उपयोग अपने मिशनरी कार्य में कर लेना चाहता हूँ। टीकमगढ़ के शहीद नारायणदास खरे के विषय में मेरी एक छोटी सी चिट्ठी आपने छाप दी थी, उससे उनकी विधवा को ४०१) रुपये की मदद मिल गई।

अभी एक बड़ी ग्लिसली हुई। पटने में सड़क पर न भा टाइम्स का कोई टुकड़ा पड़ा था। उसे बिस्कुट बनाने वाले एक व्यापारी ने देखा। उसमें मेरी चिट्ठी थी। उस व्यापारी ने मुझे पत्र लिखा और शहीद खरेजी की पत्नी को कुछ रुपये भी भेज दिये।

मैं तो २२ २३ वर्ष से अपना सम्पूर्ण समय तथा शक्ति शहीदा के श्राद्ध में ही लगाता रहा हूँ। यदि नव भारत टाइम्स का उपयोग प्रारम्भ से ही कर लेता तो यह काम बहुत जग बग्न गया होता।

श्री डा पी मिश्रा ने आपने मेरी पेंशन के बारे में कहा था। वह २५०) रुपये की मिलने लगी है। उससे खाने पीने का काम चल जाता है, पर मेरा पोस्टेज का ही खर्च ४०) ६० से ६०) ६० मासिक हो गया है। लेखा से थोड़ा सा मिल जाता है—उसे मदद ही मानता ॥। पैसा मैंने कभी जमा नहीं किया। हिन्दी भवन (दिल्ली) पर मेरे ३५००) रुपये से अधिक खर्च हुए थे।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

बजन १५ मेर घट गया था, अब कुछ कुछ सेहत है। भूख भी खुलने लगी है। मुझे पूर्ण विश्राम करना चाहिए पर मज नही लगता।

( १५६ )

४ साजपत कुंज  
Civil Lines Agra  
२३ ६ ६६

प्रिय अक्षय जी

बदे। मैं साढ़े तीन महीने में—१०६ दिन से—यहाँ के अस्पताल में हूँ।

आप सब की मदभावना से मेरा Prostrate glands का आपरेशन सफल हुआ और धीरे धीरे मैं स्वास्थ्य लाभ कर रहा हूँ। ७८ वाँ वर्ष में शीघ्र ही शुरू कर दूँगा।

अब मैंने Retire जान का निश्चय कर लिया है पर ५८ वर्ष में निवृत्ति की बात आपन जल्दी नहीं छूट सकती। कभी-कभी निश्चयता रहेगा। मेरी इच्छा है कि नव भारत टाइम्स में कभी-कभी लिखूँ। मजदूरी चाहूँ आप २०) रुपये प्रति पत्र हो सके। मेरे नियम प्रचार कभी छात्र है—पैसा नहीं। आपका पत्र एक साल पसंद हुआ छपना है और हिंदुस्तान में दूर-दूर तक अपना प्रचार है। वह शीघ्र ही शुरू हो सकेगा तब पहुँचना है।

आप मजदूरी न भी लें तब भी मैं 'अपनी बात' शीघ्र विभाग में कुछ छपवाने का पसंद करूँगा। मुझे इस बात का डर था कि कभी आपरेशन असफल न हो और मैं चलेन की तलाश भी कर रहा था। बकीर महाकवि मजदूर जी चरित्र की तलाश कर रहे ताका बांधि गलत बूझ रहे हैं। माँची मान मन्त्रा पम्मा पाणिनी नव आवगायी इत्यादि पर मेरी आकांक्षा निराशर निवृत्ति। पौनःपुन नया आया। कुछ दिन अभी लिखे जगत की और भी सेवा करने का मौका मिलेगा।

आप अगर नव भारत टाइम्स में कभी-कभी मेरे लेख छापें तो फिर दूसरे छाप-साध पत्रों का मैं नया निश्चय करूँगा। पर मैं आप पर बड़ी स्वाद बना दानूँगा। जमा आप मुनासिब समझें करें। चिरजीव गुणगुण का जो मन्त्र आपन लेखी, उस में लिखेंगे भर ली भूत करता।

मैं अभी पाच दिन नव अगर में रहूँगा। फिर २० का फीरबावा पहुँच जाऊँगा। बहुत मना करने पर भी आपात की मेरा अभिनन्दन करना चाहूँ है। हनुवाद का मित्र विनाश चाहूँ है। मछुन का जान में पैमाना चाहूँ है।

विनीत

बनारसादास

( १/७ )

फोरोजाबाद

२४ १२-३०

प्रिय लक्ष्मण जी,

बच्चा। यदि महीने में मेरा एक लेख भी आप छाप सकें तो मुझे पर बड़ी कृपा हो। मैं मई १८१२ में निवृत्ति शुरू किया था और बल्लभ घमांश पमांश अब ५८ वीं वर्ष चल रही है।

मैं जानता हूँ कि हिन्दी के पाठक अब तक तग आ चुके होंगे, पर क्या किया जाय ? भाई हरिश्चन्द्र शर्मा एफ उद्गु कविता सुनाया करते थे —

धूर्तों के साथ लोग कहा तक बफा करें ।

लेकिन न मौन आये तो दूटे भी क्या करें ॥

मेरी ७८ वी वय शीघ्र ही शुरू होने वाली है । Retire हाने की बात कई बार सोच चुका हूँ पर लिखन की असाध्य बीमारी से मुक्ति मिलना कठिन प्रतीत होता है ।

आपन चिरजीव रामगोपाल के पचासा लेख छापकर उसकी और मेरी भी जा मदद की थी, उसे मैं यादजीवन नहा भूल सकता ।

मध्य प्रदेश सरकार से मुझे पेंशन मिल रही है । आपने डी पी मिश्रा से कहा भी था । यशपाल जी ने शुल्का जी से कहा था । २५०) रुपये महीने बराबर मिल रहे हैं । यह पेंशन महाराज ओरछा ने दी थी ।

बनारसीदास

( १५८ )

नई दिल्ली २२

प्रिय अक्षय जी,

वन्दे । मैं यहा १० ता० से हूँ, पर यन् स्थान अल्लाह मिया ने पिछवाड़े म स्थित है जहा से निकलना आसान नहीं । चि० गुप्तेश मुझे बस मे बठन नहीं देना और ५ ६ मील पदल चलना ७८ वी वय मे कुछ मुश्किल है । शहीदा के श्राद्ध तथा साहित्य मेवियों की कीर्ति रक्षा म मेरे क्षुद्र जीवन के बीसियों वय बीत चुके है और अन्तिम श्वास तक यही पुण्य कार्य करने हैं ।

आचार्य प० पद्मसिंह जी ने लिखा था—' इस कूचे मे भी मुर्दे मोहताज हैं कप्पन के' मैंने अपनी सीमित शक्ति ब्रजमण्डल पर केन्द्रित करने का निश्चय कर लिया है । आपका सहयोग तो मिलगा ही । यदि सम्भव हुआ तो फीराजाबाद सौटने के पूव आपके दशन कहूँगा ।

विनीत

बनारसीदास

श्री गोविन्दप्रसाद केजडीवाल को लिखा गया पत्र

( १५९ )

फीरोजाबाद

२५ ७-७०

प्रिय श्री केजडीवाल जी,

वन्दे । आप लोग ब्रजभूमि के बारे म विश्वपाद्ध निबाल रहे हैं यह जान कर अत्यन्त ह्य हुआ । अगर मुझे इसकी पूव सूचना मिली होती तो मैं भी



कुछ लिख भेजना । शायद आपसे गयान ही नहा रहा कि मैं भी एक छुद्र ब्रजवासी हूँ और मेरे जीवन के पिछले माढ़े ६ वर्ष इसी जनपद में बीत गए हैं । अभी जीवन और जाग्रत हूँ ।

आपके इस विशेषाह्वान में बंधुवर प्रभुश्याम जी मोहन की ५० वर्षीय ब्रजसाहित्य सेवा पर एक लेख होना ही चाहिये था जिसे श्री डाक्टर पचीरी से लिखाया जा सकता था । यशुवर वृन्दावनदास जी (अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल, मथुरा) तो आपका पत्र का मनधाही सामग्री भेज सकते थे । ब्रजमंडल के साहित्यिक कमिशनर तो वही हैं और इनका सम्पूर्ण समय नित्य = १० घंटे ब्रज की सेवाशीलता में ही बीत रहे हैं । वे अच्छे बरीन रहे चुके हैं पर सब काम छांटकर ब्रजभूमि के पुनर्निर्माण के काम में ही तेन मन धन लग गये हैं ।

मरा यह प्रस्ताव है कि आप अपनी सुविधानुसार उस ब्रजाह्वान का एक परिशिष्टाह्वान अवश्य निकालें । तब मुझे भी याद कर लें । मैं मकया निम्नाय भाव से—बिना एक कौड़ी निय—आपके पत्र का जवाब कर दूँगा ।

मुझे जो शय भेंट किया गया था उसमें ब्रजभूमि का काफी विवरण है—बल्कि मरा तो यह प्रस्ताव था कि ब्रज के विषय में एक सम्मेलन आयोजित कर, यदि ठीक समझें तो, मुझे अर्पित कर सकते हैं ।

स्व० हृदयानुमिह जी का एक, बन्धिया फोटा मर पाम है । वह भी ब्रजाह्वान में जा सकता था । भाई शिराह्वार जी, श्रीराम जी शर्मा पालीवान जी, आचार्य बामुन्वशरण, बानकृष्ण शर्मा नवीन श्याम पर भी लिखा जाना चाहिये था । परिशिष्टाह्वान का विवरण आप भाद वृन्दावनदास जी की मन्त्र से तयार कर सकते हैं ।

अगर अब भी कुछ जगह खाली है तो श्री प्रभुश्याम जी मातल श्री वृन्दावनदास प्रभुति के चित्र ता ही दीजिये । धृष्टता के लिये शमाप्राप्ति । श्री जाशी जी को मेरा प्रणाम कहिये ।

बनारसीदास

श्री अटल बिहारो बाजपेयी को लिखा गया पत्र

( १६० )

कोराजाबाद

३ १२-३०

प्रिय श्री बाजपेयी जी

मान्य प्रणाम । अगर की मौजिदा में आपका कृपाकर मर बारों में जा प्रणामक शब्द कहें तब मैं आपका श्रेष्ठ और श्रेष्ठ हूँ ।

मैंने बहुत बय पहले हासी की विसी सभा में आपके दशन किये थे । जब मैं दिल्ली में था तब सारा समय शहीदा के श्राद्ध को ही अर्पित करता रहा—राज्य सभा में बहुत कम जाता था ।

मेरे छुद्र जीवन के २२ बय प्रवासी भारतीयों की सेवा में बीते और पिछले २५ बय शहीदों के श्राद्ध में । विवाद-ग्रस्त राजनीति से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रहा ।

लाला हनुवन्त सहाय का यथोचित सम्मान करके जनसभ ने एक अत्यन्त आवश्यक कर्तव्य का पालन किया था । राष्ट्रधर्म के अङ्क भी काफी अच्छे निकले हैं । कभी-कभी निजी तौर पर मैंने जनसभ की आलोचना भी की है, क्योंकि मेरा आध्यात्मिक झुकाव पचास बय अराजकता की ओर रह चुका है, पर मैं राजनैतिक विवादा में कभी फँसा नहीं । अपनी तुच्छ शक्ति द्वारा जो थोड़ी सी सेवा बन पड़ी कर दी है अब ७६ वीं बय में ज्यादा काम तो हो नहीं सकता ।

जनप्रीय सगठन में मेरा हृदय विश्वास है और स्व० वासुदेवशरण जी अग्रवाल के पृथ्वी पुत्र का मैं विनम्र प्रशंसक हूँ । अपने ब्रजमण्डल के लिये जो कुछ भी बन सकेगा करेंगा ।

आप भी हमारे ब्रजमण्डल के निवासी हैं, यह हम सब के लिये गौरव की बात है । मेरे मित्र बाबू वृन्दावनदास जी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल मथुरा अपना सम्पूर्ण समय और शक्ति तथा साधन ब्रज की सेवा को ही अर्पित कर रहे हैं । उन्हें भी आपका सहयोग मिलना चाहिये ।

कृपाकाशी

बनारसीदास

श्री अमृतलाल जी चतुर्वेदी आगरा को लिखे गये पत्र

( १६१ )

फीरोजाबाद

२० ४ ६७

प्रिय बाबू पास्तागन,

उम दिन की इटीरा याता मेरे छुद्र जीवन की एक महत्वपूर्ण तीथयात्रा थी । मुझ उस उद्यान को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई । 'राजाबाबू' का पूरा नाम और पता क्या है ? उन्हें पद्यश्री से भी ऊँची पद्यविभूषण की पदवी मिलनी चाहिये । उन्हें मेरा नमस्ते कहिये । मैंने जो चित्र लिए हैं उन्हें दो

एक स्तिम टीन कर दुगा । बि० आभा का ता मेंन पहनीयार ही दया ।  
 वह गुरेदर व यही आर्द थी । मने बानी बाननी है । ब्रजभाषा भून गद क्या ?  
 डाक्टर मायुर को स्तिना आय । नाद बिना का बान नहीं मगा उहने  
 विश्वास दिनाया है । दा दूबसगन बननाय है । अभा श्री वृन्दावननाम जी  
 को निव रह है कि मने पूगे पूगे मीव छावा दे । तुम्हागी बाननीन  
 रचनाएँ छनी पडी है ?

बिनात  
 बनारसीदास

( १६२ )

११० ६८

प्रिय भाई अमृतदास, पालागन

बल राज्यदास महोदय का पत्र मिला है —

My dear Shri Chaturvedi,

I received your letter of the 21 st instant regarding the  
 orchard in district Agra I am looking into the matter With  
 kind regards

your Sincerely  
 C- Gopala Reddi

अब यह जरूरी है कि श्री विद्याशंकर जी सनिव म एक नाट उग  
 उद्यान क बारे म लिखें । राजागुरु का भी पत्र निव रखा है । वह नाम  
 मेंन बाट दूमर पत्रा का भी भेज दिया है । यदि जरूरी समयमा जाय तो हम  
 बाय के लिए मठ अचरगिह् जयनराय जी रावन जी प्रभुति क हस्ताक्षर भी  
 कराव जा सकत है । बगीची का एक हावन म बचाना है । अमर उजाना को  
 भी लिख रहा है । हिन्दा तथा अग्रणी म एक दूब बचाची क बार म छप  
 जाना चाहिए ।

बिनीत  
 बनारसीदास

( १६३ )

फीरोजाबाद  
 ३ ६ ७०

प्रिय बाबू, पालागन ।

होलीपुरा की यात्रा क तिय में १० मिनम्बर की तारीख गहन का  
 भाद शम्भुनाथ जी का लिखा है । यहाँ म बालकृष्ण जी ७ या ७। बर अपना

कार में ले चलेगे। निश्चित तिथि की खबर तुम्हें शम्भुनाथ जी से मिल जायगी। मैंने कल उन्हें लिख भी दिया है। आज फिर उन्हें स्मरण करा दूंगा। लट्टरी जी यहां से साथ में होंगे।

मैं वहां दोनवधु सी एफ ऐंड्रूज पर कुछ बोलना चाहता हूँ। उनका चित्र तो स्व० भाई शंकरलाल जी ने तैयार करा ही लिया था। २४ ता० की शाम को श्री बालकृष्ण जी तथा मोटला कासेज के प्रिंसीपल मधुरा श्री वृंदावनदास जी की बपगाँठ पर बघाई देने गये थे उनके घर पर—पर वहाँ वे मिले नहीं। घमशाला में भी तलाश किया। राजावाबू बम्बई से लौटे या नहीं? २३ अगस्त के साप्ताहिक हिन्दुस्तान में मैंने उनके बाग का जिक्र किया है।

बनारसीदास

( १६४ )

फीरोजाबाद

१६ १२ ७०

प्रिय बाबू, पालागन

आजकल उपाकालीन चायामृत पान के बाद किसी कवि की प्रतिभा इस रूप में जाग्रत हुई है।

बड़े बड़िन की अकल अब सपहुँ चरि गई पास।

फोफ़ट में जी लिट बने श्री बनारसीदास ॥

इसमें इसलाह दो।

श्री सिधल जी का पूरा पूरा नाम और पता क्या है? उनकी उदारता से मैं चकित रह गया। उनके दिये पाच सौ रुपये का उपयोग करूंगा और पैसे पैसे का हिसाब उनको भेज दूंगा। ५ दिसम्बर और ८ दिसम्बर दो दिन मेरी नाद हराम हुई। उसी के दुष्परिणाम स्वरूप अब जोरा का जुकाम है।

बनारसीदास

श्री मधुसूदन जी चतुर्वेदी हैदराबाद को लिखे गये पत्र

( १६५ )

फीरोजाबाद

१० द ६७

प्रिय भाई मधुसूदन जी,

पालागन। आपकी भेजी हुई तीनों किताबें अभी मिली। उनके लिए बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ। उन्हें मैंने सर-सरी निगाह से ही देखा है, समय मिलने

पर ध्याना पूर्वक पढ़ने का विचार है। उगम देर लग सकती है, क्योंकि मैं बेचन एवं आँग पर ही ज़ार देकर निग्रहना-पढ़ना हूँ।

स्व० आचार्यराय जी पाण्डेय व चित्र का दान कर मन में अनन्त भाव प्राप्त हुए। पाण्डेय जी को मैंने स्वर्गीय विष्मिन की सहित व स्थापना भेजा था और उन्होंने उग सहन को अपने पास में कुछ भेंट की थी। उनका अन्तिम पत्र माँगी मैं आया था। उम्र भी उतरी कुछ ऐसी स्थिति नहीं थी। उनकी स्मृति को पुनः सम्मिलित करके आपन उचित कार्य किया है।

भाई स्वामिनारायण जी मर अनुज रामनारायण के मापी हैं। मैंने गुना है कि वे अत्यन्त हैं। कहीं पर हैं? 'मेमना और बागिया अच्छा अनुवा' है। यचना की सिंगी पुस्तिका में उद्धृत करने योग्य भी है। भाई स्वामिनारायण जी जी का उरू पर भी अधिकार है यह बात मुझे ज्ञान नहीं थी। उनका दान मुझे मैनीताम में हुए व।

The Quiet Life पाप की रचना है यह मुझे मादूम न था। 'वृत्तान्त पुगन भिन्ने पर पढ़ा। कोमल-द्रवानी थीज अच्छी है शीघ्र भी बढ़िया है और 'पूत' मुन्न रचना है। "तरवार की धार प धावनी है" अच्छी पूर्ति है। 'ननी दूर रजन हुए भी आप जनभापा को नहीं भूत यह आचार्य तथा हृष की बात है। इस शरीर पर आपका अच्छा अधिकार है। आशा है कि आप सकुशल हैं।

विनीत

बनारसीदास

( १६६ )

फीरोजाबाद

२३ ४ ६८

प्रिय भाई मधुसूदन जी, वालागन,

आपका पत्र मैं अनन्त बानें अत्यन्त उत्साहपूर्ण है। दूसरों की आलोचना करने व बजाय आप रचनात्मक कार्य में निरन्तर मग्न हैं और अपने पक्ष पर लगातार अप्रमत्त हाँव जाते हैं, यह बात मर लिए भी उमाह व प्रशंसा देने वाली है।

दयकर ना कविग्ल की अद्विजनाली व नियम मुन आगरा जाना पड़ा था। कृपया श्री वृत्तान्तनाम वा ए एन एन की अध्ययन व्रजसाहित्य मण्डल मधुरा का एक बाट निम्नतर समका व्यौरा उनसे भेगा लोत्रिय। व बड़े बमठ व्यक्ति हैं। उनमें आपका मुदक सम्पर्क होना ही चाहिए।

मेरा स्वास्थ्य २, ३ महिने से खराब चल रहा है। वजन बहुत कम हा गया है। कई बीमारियाँ हैं। खैर यह सब तो इस उम्र में ७६ वीं वर्ष में स्वाभाविक ही हैं। चिन्ता केवल यही है कि जो सामग्री ५० वर्ष में इकट्ठी की है उसका उपयोग कैसे होगा। शिशु जी के ग्रन्थों का उद्धार होना चाहिए। 'काकली' अवश्य छपे। फीरोजाबाद जरूर पधारिये। मई का महीना तो काफी गरम होगा। अब ज्यादा लिखना पढ़ना कठिन है।

विनीत

बनारसीदास

( १६७ )

फीरोजाबाद

२४ ११ ६८

प्रिय, मधुसूदन जी, पालागन,

सबेरे पीने चार बजे का उठा है। चाय बनाकर पी ली है और कुछ स्वाध्याय भी कर लिया है। अब पुरानी बंद आदत के अनुसार पत्र व्यवहार के व्यसन का सेवन कर रहा हूँ। ऐसे अवसर पर मैं अपने मित्रों का स्मरण करता हूँ। उन्हें अपनी स्पष्ट सम्मति लिखता हूँ।

१ आप भविष्य में किताबों के चुनाव के बारे में अधिक सावधान रहें। कुछ किताबें बहुत साधारण कोटि की आपने छाप दी हैं।

२ रामधन को अब कुछ भी भेजन की जरूरत नहीं। उसका ग्रन्थ का आपने छाप दिया, यही बड़ी भारी मदद है। और आपके पास इतने साधन भी तो नहीं कि ऐसे अनाथों का पालन पोषण करते फिरें। मैं तो वर्षों से रामधन की मदद करता रहा हूँ।

३ 'काकली' का प्रकाशन नितांत आवश्यक है।

४ 'शिशुजी' के सुपुत्र कल यहाँ आने वाले थे, पर आये नहीं। मैंपुरी के श्री लालनसिंह जी मदीरिया ने मुझे बताया कि 'शिशुजी' के सुपुत्र को उनका ६० हजार रुपया अब मिल गया है। मुझे आश्चर्य हुआ। अगर यह बात है तो सतोष जनक है। अब वे स्वयं शिशुजी का साहित्यिक श्राद्ध कर सकते हैं। शिशुजी सर्वोत्तम रचनाओं का सार भाग एक जिल्द में छप जाय तो वह best impression create कर सकता है। आप उन्हें पत्र लिखें।

५ क्या आप एक हजार से अधिक के सम्स्करण छाप रहे हैं? तब फिर इतनी किताबें आपका यहाँ पड़ी क्यों रह जाती हैं?

- ६ स्थायी छात्र महान म तिनने बना लेन है ? मरणा भी बान रहिए । यह तो Full time job है ।
- ७ द्विती जी व पत्रा की नवन ता पहल करा भी थी, पर उम revise नहीं कर पा रहा । अन्ते-अन्त वही तन काम करे ? ७८ वां वष २४ न्गिम्बर को शुरू करेगा ।
- ८ पट व मम्मरण मैन अगन अभिनयन ग्रन्थ व त्रिण त्रिण हैं । भेरूंगा । पढ़ सीत्रिय । आप भी पट के बार म कुछ लिख सकें ता त्रिये ।

विनीत

बनारसीदास

( १६८ )

सरोजिनी मायदू अस्पताल

आगरा

१५ ६ ६६

प्रिय माई मधुसूदन जी, पासागन,

मैं ता० ७ ग यही आकर लखित हो गया हूँ । हाजरी जाँच हो रही है । आपरानन शायद करना ही पड़ेगा । मैं चिन्तित नहीं । जो होगा ठीक ही होगा ।

जन्म मे मुझे यहाँ आना पड़ा और पूर्य द्विती जी के पत्रा का रजिस्टर तलाश नहीं कर सका । रक्का ता वह टिप्पामिर है पर उम दूरा निजानन म कुछ बात लगगा । अगन भानत्र डा० मिथिनाचन्द्र चतुर्वेदी ( उम रिन्नू चौध ) का लिख रहा है कि वह उन पत्रा का मात्र निजान । पर उन्हें मून पत्रा से मिनाता हागा ताकि बाद गलता न रह जाव । द्विती जी की स्वर्गीय आत्मा भूता म पीड़ित न हानी चाहिए । जिनता कि आपकी प्रथमाना व विषय म विचार करेगा है उनतो ही यदा मर हूय म आपसी नगन तथा कार्यपालना व प्रति बढ़नी जाती है ।

सचमुच आपने कश्मिका कर लिखाया है । अपनी प्रथमाना व विषय म कुछ नाट भेजिय । मुख्य मुख्य पुस्तका के नाम विषय इत्यादि ताकि उम पर एक प्रशमात्मक लेख लिखा जाव । अभी कुछ दिन और भी यदा रहता है । आपरानन शायद २० दिन बाँध हागा । पाना बरम जाव ता कष्ट कम हा ।

विनीत

बनारसीदास

( १६६ )

२२७१

प्रिय भाई मधुसूदन जी, पातागन,

पामल कल छुटाली । मेरा सुझाव है कि भावी या Prospective ग्राहकों को ऐसे बहुमूल्य ग्रंथ आप भेंट न करें । यह तो सवधा अग्यावहारिक है । मनलन विचारे—जी ता ग्राहक बनन भा स्थिति म हैं ही नहीं । ही ए बी कालेज स उनक प्राक्वोट पड का रुपया भी नहीं मिला । नौकरी तो छूट ही चुकी है ।

हाँ श्री बालकृष्ण गुप्त पसा दे सकने हैं । कूर्माचल केमरी की प्रतियाँ श्री भुक्तव पाण्डे को भेज दी होगी । कितनी प्रतियाँ भेजें ? श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी का न भेजी हो तो मैं भेज दू । श्रीमती विद्याधरी जौहरी को सम्पादक 'अमर उजाला' बरेली को भी भेजिय । बरेली सस्करण पहाड़ी स्पानो म पहुचता है ।

'सनिक' वान भी आलोचना कर देंगे । वैसे आजकल चुनाव के दिना म स्थान मिलना कठिन ही है । निस्सन्देह आपने करिश्मा कर दिखाया है । अपना जीवनवृत्त निम्नो से लिखवा कर इस ग्रंथमाला के परिचय के साथ भेज दें तो मैं एन Sketch तैयार कर सकता हूँ प्रचाराय अपना चित्र भी भेजिए ।

बिनीत

बनारसीदास

श्री युगल किशोर जी चतुर्वेदी को लिखे गये पत्र

( १७० )

फौरोजाबाद

६६६८

प्रिय भाई युगल किशोर जी, पातागन

जा भी 'यक्ति क्रांतिकारी' बंदम उठाते हैं पहिले उनके बारे म गलत फर्मिया उत्पन्न हाती ही है । क्याकि दकियानूसी आत्मी खुद ता आगे बढ़ नहीं सकत दूसर बदन वाला की टांग खींच कर पीछ लान की कोशिश करते हैं । पर इन गनत फर्मिया की बिल्कुल भी पर्वाह न करनी चाहिये ।



पूरे असीस म मोहन के बाप में जानि म बलिष्ठ पर लिया गया था। जनक फिर बगना पत्नी और गया स्नान व निम प्रयाग भा जाना पड़ा। यह बात माय १९०१ का है। अब उम घटना पर स्वयं मुझ हँसी आता है। मैं शाकाहारी भोजन, जो शुद्धता व माय बनाया गया है। चाट जिस मन मानस व यत्नी कर गइता है। कुछ वष पश्चि यद् भी एक भयानक अवस्था माना जाना था। पुस्तक का प्रभाव तो पढ़ना ही है पर काय का जो प्रभाव पड़ता है वह स्थायी होता है।

आपन और भाई गिरीश जी न जो काम उठाया है वह भाषा समाज का पय प्रभाव बनगा। यूही शायी चाट कुछ भी बनना उन्हें उमका पराट हगिज न करना चाहिये। They say, what they say let them say—ये तीन बातें निम पर अपने स्थाप्याय कर म जीव न राटिये। बनारस का यही कथन है।\*

बिनीत  
बनारसीदास

( १७१ )

पाणिनाबाद  
४ १० १९

प्रियवर, पालागन।

मैं ता० २॥ का घर तो आया है। यद्यपि कमजोरी बारा है, फिर भी चिन्ता की कोई बात नहीं है। ३, ४ महीने विधाम करना होगा। reprints यही भंग सकत हैं। ३८ वीं वष पाछ ही प्रारम्भ न आयगी और मैं retire न जाऊँगा। नीलकण्ठ गार्गी नामक ट्रेड मैग हैन्गमग म सुपाया है। मृ० ८० पस है।

मैंन अपना यह विचार मावजनिक तो पर प्रर भा कर लिया है कि अब नैनन व तोर तगेका मे ही इस मुन का न्दर होगा। वग मर

\* चतुर्वेदी समुदाय में बहुत भीरे व दो मेर मन्थियों म घने आ रू २ और उनमें रोगी बेगी का कोई सम्बन्ध नहीं होता था। मर द्वितीय पुत्र व मुम विवाह में दोनों समुदाय वालों न इस युगनी न्दिक का सादा या अन चतुर्वेदी जी मे हय प्रगट करत हुए उक्त काय का मराहना का है। इसम उन्होंने अपने प्रति किये गये व्यवहार का भा उल्लेख किया है।

—युगनविहार चतुर्वेदी

विचारा का कोई महत्व नहीं पर अपनी ईमानदारी की राय जाहिर कर देनी चाहिये ।

विनीत  
बनारसोदास

श्री प्रभुदयाल जी मोतल को लिखा गया पत्र

( १७२ )

फीरोजाबाद  
१४-७-७०

प्रिय मोतल जी,

बाद ! बाबू अभी मिला । मैंने तीसरी प्रति रजिस्ट्री द्वारा भेजने के लिये तलाश कर ली थी । यह अच्छा हुआ कि दोनों प्रतिया मिल गई । मुझे याद पड़ता है कि आप मेरे अभिनन्दन उत्सव पर दिल्ली पधारे थे । चूँकि उस समय मैं अत्यन्त व्यस्त था, इसलिये ध्यान नहीं दे सका । यदि मेरा खयाल ठीक है तो इस बात को भी जोड़ देना मुनासिब समझता हूँ ।

मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ में अमवाला का जबरदस्त हाथ रहा—६॥ हजार में ४ हजार अग्रबाना ने ही दिया । यह आश्चर्य की बात है पर है सच । प्राचीनकाल में ( और शायद अब भी ) चौबे लोग अपने यजमानों के पास साल में एक बार चक्कर लगाकर अपना टैक्स वसूल करत थे । इस प्रथा का मैं भी अपने शेष जीवन में चरिताम्य करना चाहता हूँ । इसलिये आपको तथा भाई वृन्दावनदास जी को अग्रिम सूचना भेज रहा हूँ । बिहारों के जो आराम चरितात्मक दोहे इंदौर में मुझ मिले थे उनमें भी वर्षागिन वसूल करने की बात लिखी गई थी । हा, अपनी दक्षिणा के रूप में मैं काई छपी छपाई पुस्तिका [ ब्रजसाहित्य सम्बन्धी कोड ट्रेक्ट ] सेना पसन्द करूँगा । मसलन् जब आचार्य वामदेवशरण के पत्रों का संग्रह छप जायेगा तब मैं मधुरा आने की सोचूँगा । आप लोगों की सद्भावना से अभी मैं कम से कम ५, ७ वर्ष और भी स्वस्थ और सजीव रहना चाहता हूँ—यद्यपि यह आसान नहीं । किसी चीज से यह आशा करना कि वह जिह्वा पर समय कर सकेगा, निरर्थक ही होगा ।

आप जुगलेश जी का पता निमल जी [सम्भेता] से लगवाइयें । रीवाँ के स्व० सरदार नमदाप्रसादमिह के कुटुम्बियों को कुछ मालूम हो । उनका कायसंग्रह सरदार नमदाप्रसादमिह का ही भेंट हुआ था । आधुनिक ब्रजभाषा कवियों पर एक सचित्र लेख कृपया लिखिये । चित्र तो सभी मँगाकर रख लीजिये । बंधुवर

नबोरी जो का माघ घायल बर तब छाना ? मैं रत्नाकर जा पर दा लग  
निघ य । वे भी ठेकावार म छप गता हैं ।

मैं चाहता था कि सर्वश्री मत्स्यद्र वृत्तान्त वृत्तान्तनाम और राजद्वर  
य परामर्श कर अपन लग म एक दा गृह आपका माहिय माघा पर जाड  
दा पर गमय नही मिला । चीज अगूरी रह गई ।

दिनीत  
बनारसाबास

## डा० सत्येन्द्र को लिखे गये पत्र

( १७३ )

वीरोजाबाद  
२६ = ७०

प्रिय सत्येन्द्र जी,

पत्र मिला । आपका पट्टेक मर आपका बना बगबर रही । मैं  
निक्र किया, जगन्नीश जी न भा उन्नय किया और आपकी मरानिभी मभी का  
भरती । मर लग म आपका चित्र फिर बठ गया है । आपन लग म  
ही होगा ।

आपके भादू माह्व की भी जा विनायन चल गय हैं मैं नर्षा की  
थी । उनम मैं मिलना भी जान्ता था, पर था गणेश और न मना कर दिया ।  
व विनायन नहीं चाहत' यद् तक था । अनन्यनयनीय परिपद् का पुनर्जीवित  
करना जरूरी है । मुश्किल ता यही है कि भाद वृत्तान्तनाम जा की मरह के  
कायकता आय जनपत्नी म दुःख हैं—स्वयं ब्रज म भी व अद्वितीय हैं । फिर भी  
जो कुछ बन मके शीघ्र ही कर दना चाहिये । आपका ॥ व जन्म की छप  
जाय ता उसम भी काम म मन्त्र मिलनी क्याकि नाश-वाना व क्षत्र म आपका  
Contribution महत्वपूर्ण रहा है । ' जो काम शीघ्र नही रिय जात, वान  
भगवान उनका रम पी सत हैं' यह पुरानी उक्ति है — 'अनिग्रम्य कायमाणम्य  
काला पिवन्ति तद्रम' क्या मथुरा म कोई प्रवच उम श्रय व छानन का ता  
हां मवता ।

आपके नाशनिक दृष्टि काण म मन्मन हान ह्य भी मैं यद् उक्ति  
समझता हूँ कि यद् श्रय शीघ्रानिशाघ छप । उमम अपन उद्दय की पूति म  
मन्त्र मिलेगी ।

मैं अपना मापण लिखकर ले गया था। पर वह देर में छपेगा। मयुरा के प्रतिष्ठित साहित्यिक उपस्थित थे।

नव 'भारत टाइम्स' को कभी-कभी अपनी बात लिख भेजा कीजिये। उसका प्रचार अपने जनपद में काफी है। वैसे सैनिक तथा 'अमर उजाला' भी खूब चलते हैं। लम्बे लेख न सही छोटे छोटे पत्र भी लाभदायक होंगे।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

आपकी ग्राम रचना वाली योजना अब भी सामयिक है पर उसे कार्य रूप में परिणत करना आसान नहीं। आप जब कभी अपनी ब्रजभूमि को स्थायी निवास के लिये लौटें तो किसी न किसी ग्राम में उसका प्रयोग करें। मुश्किल यही है कि समानशील तथा परस्पर पूरक Complimentary व्यक्तियों का हमारे यहाँ प्रायः अभाव है।

हमके सिवाय छोटे छोटे फालतू कार्यों में हमारे वक्त की बर्बादी हो जाती है। अग्रवाल जी ने 'तृणावत' पर एक अच्छा पत्र मुझे लिखा था। कृपया पढ़ लीजिये।

मरा व्यावहारिक सुझाव यही है कि अग्रवाल जी के सवा सौ सर्वोत्तम पत्र ब्रजभारती में एक विशेषाङ्क में छाप दिय जावें। आप भाई वृंदावनदास जी को यही बात लिख दें।

Best is the enemy of good यह पुरानी कहावत है। सर्वोत्तम काम करने की धुन में हम उत्तम कार्य भी नहीं कर पाते। क्या कोई प्रकाशक सना कविरत्न के ग्रन्थ को नहीं छाप सकता?

( १७४ )

फीरोजाबाद

६ ६ ७०

प्रिय सत्येन्द्र जी,

बंदे। कृपापत्र अभी मिला। सूर पंचशती योजना निस्संदेह बड़ी व्यापक है और उसके एक अंश को भी काय रूप में परिणत किया जा सके तो बड़ी बात है। यह मैं इसलिए कहता हूँ कि अपने यहाँ कायकर्ताओं का अभाव है और साधन सम्पन्न व्यक्तियों का सहयोग हम ले नहीं पाते। श्री दुब जी का Transfer मुरादाबाद का हो गया और अबले भाई वृंदावनदास जी क्या-क्या

कर सनत है। रुकना म कुछ हा जाय तो हा जाय। वार्ड कमी सन्ती मूर का विषय अध्ययन कर रही थी। सन्त म भी एकाध विद्यार्थी रुचि रख सकते हैं। यदि हिन्दी भाषा भाषी प्रस्था की सरकारें कुछ कर सकती तो काम आग बढ़ना, पर व सत्तात्मक राजनीति व पत्र म कमी हुई है। इस कारण से हमें अधिन आशा तो नही रखनी चाहिये। फिर भी अपने कृतव्यय का पालन हम कर रहे हैं।

मेरा अनुमान है कि ब्रजभूमि का वार्ड प्रमाणक आपका अभिनन्दन प्रथम का छपा गया यदि उक्त कुछ Advance कर दिया जाय। बाबा गृहीतिह आजाद की आरम्भ क्या शिवान अग्रवाल न चार हजार रुपये एडवांस म उधार लेकर छाप दी है और व रुपये उहने लौटा भा दिया है।

नवभारत टाइम्स १ लाख ६७ हजार छपता है। उसमें अपनी बात गद्य म लिख दन से छप सकती है, पर उसकी मजदूरी नहीं मिलती। ब्रज जनपद म उसका पचास प्रचार है। वक्त गतिर तथा अमर उजाला भी अपना साथ देंगे।

श्री हरिप्रसाद अग्रवाल (Ram Prasad and Sons) का मैं बखिरत जी के प्रथा व बारे म निम्न है। माननी माधव का प्रथम गस्वरण स्वर्गीय रामप्रसाद जी न हा छपाया था। आप भी उह नियें।

वन में हानीपुरा जा रहा है। वही व वानज म कुछ बातना है। ११ ता० की शाम तक लौट आऊंगा। रात की कलम म निम्न म तीन प्रतियां हा जाती है। Kores का २०१४ न० का कारखान कारगर हुना है।

विनात

बनारसीदास

( १७/ )

फीरोजाबाद

दि ११ ७०

प्रिय भाई सत्येन्द्र जी,

यह तो आप जानते ही हैं कि रावण चतुर्वेदी ब्राह्मण था [ इन्द्रिय लक्ष्मी पर चोना का अधिनार हुना चाहिये। इस अंतरांगीय प्रश्न का यही नही उठाना चाहता। ] रावण न एक बान बडे पन की कनी थी— शुभ काम म दरा न करें और अशुभ काम का पाग्लपान करें” फिर आप म्य० आचार्य बागुवशरण अग्रवाल के पत्रा का सलाह करान म इतना विनम्र क्या कर

रहे हैं ? वह महत्वपूर्ण संग्रह आपके पास के पत्रों को शामिल किये बिना छप जाय और भूमिका में आपके प्रमाद का उल्लेख हो, यह बात कैसे गवारा की जा सकती है ? कृपया तुरन्त ही उन पत्रों की खोज कराइये ।

विश्व विद्यालय के लिये पुराने पत्रों की फाइलों के मामले में क्या हुआ ? 'विशाल भारत' की फाइलें तो मैं अपने पास रखना ही चाहता हूँ—मधुकर की भी—शेप को बेच सकता हूँ । पर वे अवस्थित हैं और पूरी हागी भी नहीं । आपका कोई आदमी उन्हें देख ले और फिर यदि आप चाहें तो उन्हें विश्व विद्यालय के लिये ले सकते हैं । मैं यह नहीं चाहता कि मेरा खयाल करके ही आप खरीदें ।

मेरा अतजनपनीय विषयक वक्तव्य व्रजभारती में आ रहा है । न ता० को आगे से वृन्दावनदास जी का स्वागत हुआ था, उस अवसर पर अमर उजाला में मेरा एक लेख छप गया है । उसे भी कृपया पढ़ लीजिये ।

विनीत  
बनारसीदास

श्री वेंकटलाल ओझा को लिखे गये पत्र

( १७६ )

टीकमगढ़ जिला भाँसी

२० १४०

प्रिय ओझा जी,

बदे ! १७ का कृपापत्र मिला । कृतज्ञ हूँ । पत्र प्रदशनी के सयोजक का भाषण भी मिल गया । धन्यवाद ! भाषण में अनेक अशुद्धियाँ रह गई हैं । ऐसा क्यों ? स्वर्गीय बालकृष्ण भट्ट का जिक्र जरूर होना चाहिए था । स्वर्गीय गणेश शंकर जी विद्यार्थी का आपने नाम नहीं लिया । यह तो जबरदस्त भूल हुई । आप 'उदित मातण्ड' के बाद एकदम बनारस अखबार' पर पहुँच गए हैं । बीच में मेरा खयाल है कि कई अन्य पत्र भी निकले 'विशाल भारत' की पुरानी फाइल में उनका उल्लेख है ।

भाई श्रीरामजी की योजना मुझे व्यावहारिक नहीं जँचती । जसा कि मैंने अपने लेख में लिखा था लेखकों की भिन्न भिन्न श्रेणियाँ हैं, और उन्हें एक सूत्र में बाँधना सम्भव नहीं । एक सहस्र सदस्यों का बनाना क्या आसान काम है ? और फिर रुपया उगाहना कैसे हो सकेगा ? आदर्शों की एकता ही वास्तव स्थापित कर सकती है । इसलिये सर्वोत्तम उपाय यही है कि समानशील

लगाया वे घुप बनें और वे एक दूसरे की सहायता करने तथा गांधी सम्मान व्यक्तियाँ हाथ में लिखावट का उपयोग करें। इस तरह तो कुछ काम हो सकता है। मुख्य प्रश्न इस समय यह है कि देश की रक्षा के विषय में सरकारधारण का पान कराया जाय और स्वयं लोगों को भाषण में बचाया जाय।

‘विशाल भारत’ में इस बार में ८ लेख छापे हैं। इन में ६ लेखों के लिए पत्रा दत्ता गया है। श्रीगुरुजी तथा मैं कि भाग में एक पत्रा भी नहीं लेते। गांधीजी पाठकों की तरफ से एक-एक विषय पर अनेक लेख पढ़कर ऊँचा उठती है कि भी मैंने इस बार में पत्र का पान कर दिया कि मक्का करने की कोशिश की है। समाचार एक आत्मीय या एक पत्र पर नहीं छोड़े जा सकते। आप तथा अन्य धनुर्वेदी का सम्बन्ध है कि वे इस विषय में आप बढ़कर कुछ कर लिये। व्यक्तिगत रूप में मैं भी कुछ करना ही रहता हूँ।

मौजबी अच्युतदास साहब के स्थान करने सभी हैरतवाज आने का विचार था। उस में उनका साथ पानीपत की तीस यात्रा हानी शास्त्री के अवसर पर, वह चुका है और अभी हिन्दी में मैं उनका स्थान कि भी था। हिन्दी में उनका जाट का कोई आदमी मुझे तो लगता नहीं। उनका सभी विचारों में मैं सम्मन नहीं, पर उनकी लगन का कायम अवसर है।

हैरतवाज की हिन्दी सम्बन्धी साहित्यिक जाग्रति के विषय में यदि आप मुझे कुछ विमर्श भेजें तो बहुत फायदा होगा। वहाँ हिन्दी के लिए काम करने वाले कौन कौन हैं? उनका नाम तथा पता जानना चाहता हूँ। सभी अवसर मिलने पर उधर आने की इच्छा है। पर जाऊँगा तब मौज पर जब मौजरी साहब भी हों।

मर एक भाई श्रीगुरु बनारसीदास जी धनुर्वेदी इलाका जाने हैरतवाज राज्य में एकमात्र विभाग में हैं। कार्याधिस के कारण पत्र कम ही लिख पाता है। समय पर उत्तर में दे सकते हैं क्षमा कीजिए। मैं इस वर्ष प्रायः यात्रा पर ही रहता चाहता हूँ।

क्या ‘विशाल भारत’ हैरतवाज में कहा जाता है? अन्य पत्रों से अपने लेख की प्रतियाँ भजता हूँ। कृपया उन्हें सहायकी धनुर्वेदी में भी दीजिए।

कृपारांभी

बनारसीदास

( १७७ )

टीकमगढ़, जिला शासी

२०-५-४२

प्रियवर,

बन्दे । आपका १७ ता० का कृपापत्र, जो ट्रेन से भेजा था, मिला । आप इधर नहा प्यार सके इसका मुझे खेद है । खैर, कोई बात नहीं । जब भविष्य में उत्तर भारत की ओर आबें टीकमगढ़ का भी प्रोग्राम रखें ।

हैदराबाद की हिन्दी सम्बन्धी नीति मेरी समझ में नहीं आती । कृपया उसके सन्ध में पूरा-पूरा कृतात मुझे भेजिय । बहतर यह होगा कि आप श्रद्धेय टडन जी श्री सम्पूर्णानन्द जी, और भिन्नु आनन्द को भीता दीजिए । इन लोगों के मार्ग-प्रय का प्रवर्ध तो आप लोग कर ही देंगे । मेरे जैसा साधारण कार्यकर्ता आपके किस काम का ? हाँ श्रीराम जी का उपयोग हो सकता है ।

भाई बनवारीलाल जी श्रीयुत जगमोहन जी के घर के ही हैं—शायद उनके चाचा हैं । आप कभी उनसे जरूर मिलिये । अबकी बार मैंने इटावे में उनके दशन बहुत बंध माद किय थे ।

हैदराबाद आने की अभिलाषा तो अवश्य है पर मैं जल्दी में नहीं हूँ । यह सब काल लम्घि का मामला है । रेल की यात्रा में मुझे बहुत कष्ट हो जाता है, इसलिए यथासम्भव उससे दूर ही रहता हूँ ।

मेरा उद्देश्य अब सवसाधारण के लिए छोट छोट ट्रेकट छपाना है । 'मधुकर' के नवें अंक का सम्पादकीय आप पढ़ लीजिय । उसमें आपको मेरी वर्तमान प्रभावृत्ति का पता चल जायगा । ८, ९, १० तीन अंक भिजवा रहा हूँ । साधना मंदिर के पम्पलेट सस्ता साहित्य मंडल कनाट सरक्स, नई दिल्ली से भगा लीजिये । प्रत्येक का दाम एक एक आना है । शायद आपका पसंद आ जावें ।

श्री मौलवी अब्दुलहक साहब से अभी दिल्ली में मिला था आबोहर से लौटने के बाद । उनका पत्र तो अनेक बार बहकी बहकी से वातें कहता है । मुझ तो वह इफिरीयारीटी कम्प्लेक्स का मामला दीखता है । उर्दू वालों को शायद यह अम हो गया है कि उर्दू बहुत पिछडी हुई है और हिन्दी का क्षेत्र बहुत बड़ रहा है । हैदराबाद स्टेट की नीति का दुष्परिणाम इधर उत्तर



भारत में अवश्य पड़ेगा। यहाँ पर उर्दू विरागी वायुमदन तैयार हो जायगा और इसमें उर्दू बानों का घाटा हो रहेगा। मैं तो हिन्दी उर्दू में बार्द भेन नहीं करता, उर्दू का हिन्दी का ही एक रूप मानता हूँ, बल्कि मगर तो यह मत है कि प्रत्येक हिन्दी सत्य के लिए उर्दू पढ़ना अनिवार्य हो जाना चाहिए। उर्दू वाले यदि हिन्दी न पढ़ें तो वे घाट में रहेंगे। पर जहाँ बनों भी अयाय होगा चाहे वह उर्दू पर हो या हिन्दी पर उसकी प्रतिक्रिया अवश्य होगी। इस अभाग देश में वस ही कौन कम झगड़े हैं जो नये झगड़े खड़े किए जाते हैं। हिन्दी सम्मेलन पर राक लगा कर हैदराबाद रियासत ने उर्दू का ही जड़ पर कुठाराघात किया है। आप सम्पूर्ण मसाला मुझ भेंटिय। तमाम फलफूल सब फलित चाहिये। कोई बात अयुक्तिमय न हानी चाहिये। मादन रिप्यू में मैं लिखना चाहता हूँ। आशा है कि आप सुनते हैं।

कृपाकारी

बनारसीदास

( १७८ )

टाकमगढ़ जिला जामी

२६.६.४२

प्रियवर,

बन् ! आपका कृपापत्र मिला। यदि आप मुझे निश्चित निधि निश्च सकें तो ठीक हो। वैसे मैं नहीं जान वाला नर, पर यदि सम्भव हुआ तो १२ अक्टूबर का ३ दिन के समय यहाँ के एक स्थान जंगल जान का विचार है निश्चय नहीं। आप कब तक पधारेंगे ?

सतितपुर मे सवर ६ ६॥ बज माटर मिनी है। कुठरकर टीकमगढ़ स पन्ने ही नती तट पर है। मैं बट बगाच में रहता हूँ, माटर बगीच व निकट सड़क पर खड़ी कर लीजिये। यहाँ माटर करीब १० बज आ जाती है।

हमार सड़कारी सम्पत्ति अब तक बीमार ही है। एक ममहरी जंगल सादप और कुछ फल भी। मच्छर यहाँ बहुत हैं। सतितपुर में मूनिमिडिटी के श्रेष्ठरी चतुर्वेदी श्यामसुन्दर जी मर गइया है। सतितपुर में आगला राज्य के एजेंट रानीबाग में रहते हैं। (१०) राज्य का मनीबाल मिला था और बन्द भी। यहाँ सब मलेरिया में बीमार पड़े रहे। कृपा व लिए कृतज्ञ हूँ।

विनाय

बनारसीदास

## श्री रमेशचन्द्र जी दुबे को लिखे गये पत्र

( १७६ )

कोराजाबाद

१६-२-६६

प्रिय दुबे जी,

प्रणाम ! आप उस दिन इतनी देर से प्यारे कि मैं आपका कोई आतिथ्य न कर सका । इसका मुझे खेद है । अभिनदिनी की सशोधित प्रति मिल गई है । तदर्थ धन्यवाद । उस पुस्तिका में मेरी प्रशंसा के इतने पुल बाधे गये हैं कि उन्हें देखकर स्वयं मुझे आश्चर्य होता है । अब मैं भली भाँति समझ सकता हूँ कि सुधासिन्धु अमृताजन तथा डोंगरे का बालामृत की इतनी विक्री क्या होती है । यह सब विज्ञापन का शुभ ( या अशुभ ? ) परिणाम है । मैं सन् १९१२ से निरंतर क्लम घसीटता रहा हूँ और पिछले ५७ वर्षों में न जाने कितने ऊट पटाग लेख लिख डाले होंगे । वास्तव में बहुत अधिक विज्ञापित हो चुका हूँ । मौलवी अब्दुलहक साहब एक कविता गुनगुनाते रहते थे ।

मेरे साथी मुझे न डेलें उनको गर भासूम हो ।

उनसे क्या कहता रहा और आप क्या करता रहा ॥

अभिनदिना की कितनी प्रतिमाँ आपन छपवाई थी । कुछ पत्तों पर भिजवाना चाहता हूँ ।

विनीत

बनारसीबास

( १८० )

२३ २ ६६

प्रिय दुबे जी

मादर प्रणाम ! कृपापत्र मिला । आगरे पहुँच कर मैं आपके दर्शन नहीं कर सका, इसका मुझ खेद है ।

मेरी पुत्री सौ० देवकी का आपरेशन होने वाला है इसलिए चिन्तित हूँ । जामाना श्री मुरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, ४ लाजपत कुँज मिश्र लाइन्स पर रहते हैं । बी० आर० काबेज में बीटेना के अध्यापक हैं । चकि प्राइवेट बाड खाली नहीं इसलिए नर्सिंग होम ( राजाभण्डो स्टेशन के निकट ) में रहना होगा । मेरे लिए तो यात्राएँ अत्यन्त बहप्रद होती हैं, इसलिए आना सम्भव नहीं ।

८ माच का स्व० भाई हरिनाथ जी की पृथ्वी निधि है। यदि स्वास्व्य ठीक रहा तो हानि न पड़ेगा। पुष्पिका में पूज्य पिताजी का नाम अगुद छप गया है। उनका नाम था गणजीनाथ।

आप बभ्रुवर मधुगान्त जी नाम्नी से मिल आये नये में भी आपका बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ। महात्मा गांधी तो एक कुछ राशो परचुर दाम्नी के पैरों की मानिश करने थे। उनसे जाना ही क्या था यदि हम भाग्य के ५० लाख कारियों के प्रस्ताव पर कुछ ध्यान दें तो यह सर्वथा उचित ही होगा। वन २४ ता० सत्यनारायण जन्म दिवस है।

विनीत

बनारसीदास

( १८१ )

फाराजाबाद

१५.४.६६

प्रिय कुशे जी,

पुष्पतिथि के दिवस पर सत्यनारायण बविरत्न का स्मरण करने के लिए मेरा धन्यवाद स्वीकार कीजिये। उनके समस्त प्रयासों के पुनर्मुद्रण का क्या हुआ? श्री वित्तमन्त्रा यहाँ पधारे थे। उन्हें मैंने श्रीधर पाठक सप्रधानय तथा बविरत्न सत्यनारायण के मन्दिर के सञ्चार के विषय में कहा था। अपना भाषण छानने में रूका हूँ।

आप भी श्री लक्ष्मीरमण आचार्य का धांगूरा के मन्दिर के जीर्णोद्धार के लिए लिले। श्रीधर पाठक की ठुकर गन्त वाली काटी निकाल है। भागेनू उस खाली नहीं करता। उस भी श्रीधर पाठक सप्रधानय बनाया जा सकता है।

विनात

बनारसीदास

( १८२ )

मई दिल्ली २२

१३.५.६६

श्री कुशे जी,

प्रणाम। परमों धांगू वृत्तवन्तम जी मधुरा से पत्रारथ। आपके शुभनाम की भी चर्चा करनी।

आजकल आप क्या साहित्यिक कार्य कर रहे हैं? स्व० ज्ञानान्त गमा मुरावादा के ही थे। हिन्दी के प्रतिष्ठित संप्रदाय थे और उद्गु के अच्छे

जानकार भी । उन पर कोई शोध ग्रन्थ तयार करना चाहता था, फिर पता नहीं लगा कि वह काय कहीं तक आग बढा ।

२४ फरवरी को सत्यनारायण कविरत्न की जन्मतिथि थी । नवभारत टाइम्स तथा अमर उजाना में छोटा सा लेख भेज दिया था । आपके आगरे से चले जाने के बाद वहाँ के साहित्यिक काम में कुछ जिथिलता आ गई है । पर आप तो जहाँ भी रहें अपनी साहित्यिक साधना को जाग्रत रखेंगे ।

सासनी के जन इन्टर कालेज व श्री राजेन्द्ररजन चतुर्वेदी उक्त स्थान पर विशेषाङ्क निकाल रहे हैं । मुरादाबाद के किसी कालेज को उस जिले की साहित्यसेवा पर विशेषाङ्क निकालना चाहिये ।

राजा जयकृष्णदास जी जिन्होंने स्वामी दयानन्द के सत्याय प्रकाश को छपाने में मदद दी थी, मुरादाबाद के ही थे ।

विनीत  
बनारसीदास

श्री राधेश्याम जी रावत को लिखा गया पत्र

( १८३ )

फीरोजाबाद  
१४ व ६६

प्रिय रावत जी,

जब 'उत्तर प्रदेश' के वित्तमन्त्री श्री लक्ष्मीरमण आचार्य जी फीरोजाबाद पधारे थे तो मैं उनकी सेवा में उपस्थित होकर जा निवेदन किया था । उसका सार यह है ।

पिछले २०-२१ वर्षों से मेरे छुट्टी जीवन का सम्पूर्ण समय शहीदी के आदर्श में ही व्यतीत होता रहा है । और उस विषय पर थोड़ी सेवा भी मुझसे बन पड़ी है । यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि सरकार तथा जनता द्वारा यह पुण्य कार्य उपेक्षित रहा है । अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की पूज्य माताजी सत्रह वर्ष तक भुखो मरती रही तब कहीं अपने जीवन के द्वाइ वर्षों में उन्हें पेंशन मिली ।

शहीदे आजम अशफाकुल्ला के बड़े भाई रियासतुल्ला खाँ बहुत दिनों तक तकलीफ में रहे, फिर निदबई साहब की मिहरबानी से चुगी में उन्हें नौकरी मिली थी । उसके छूटने पर उन्हें ७५) की पेंशन करा दी गई थी । वे अब स्वगवासी हो चुके हैं, और उनके कुटुम्ब के ५ प्राणी अब घोर आर्थिक संकट

का सामना कर रहे हैं। अगर उत्तर प्रांतीय सरकार 'गद्दीद अगस्त' के भतीजे इन्सुलानासी को सहारा नहीं देती तो उस कुटुम्ब का खानमा समय सीत्रिय। अगस्त' न अपन एक अनिम पत्र में वतनी भाटपों में यह प्रार्थना की थी कि वे उनके भाइयों का खयाल रखें। अब आपका सन्देश मिला कि अगर वे चाहें तो उन्हें दफ्तर पर कर दिया जाय तो उन्होंने माफ माफ कहा था—

'अब भाद। एक मुमकिन का भी फामी चयन' और वही मुनी के साथ वे फामी के नष्ट पर नून नय—कुन जमा २७ वर्ष की उम्र में। अमर गनी गफा जी तथा अद्वैत टहन जी अगस्त की आशीर्वादन ममात्रि बनाना चाहते थे पर वे ऐसा न कर सके। पर अगस्त के मरने के स्मारक तो उनके कुटुम्बी हैं जिन्हें भूखा मरने में बचाना है।

स्वाय और परमाय दोनों दुनिया में हमारा यह पत्र है कि गद्दीदों की स्मृति रखा तथा उनके कुटुम्बियों के भरण-पोषण का हम मुतामिक इतजाम करें। जम्बस्थ हान हुए भी मैं सिर्फ यही अर्ज करन के लिए आपकी शिम्मत में हाजिर हुआ हूँ।

बिनीत

बनारसादास

श्री मलखानसिंह जी सीसोदिया को लिखे गये पत्र

( १८४ )

फीरोजाबाद

५ ६ ६०

प्रिय श्री मलखानसिंह जी

यह पत्र अत्यन्त हृष हुआ कि 'गद्दीद महावीरसिंह' अक्टू २० जून को निवृत्त जायगा। अब मैं समझता हूँ कि मरी एटा-यात्रा पूरा रूप में सफल हुई।

मैं यात्रा प्रायः नहीं ही करता और अब बाग भादें बान्हान गुप्त के आग्रह से मुन एटा पहुँचना पया। बाग भादों के आतिथ्य तथा उमाद में वन प्रभावित हुआ। निम्नन्ट एटा में काम करन के दिन फीरोजाबाद की खाना की अधिक उमाद है। यहाँ तो औद्योगिकता न मालूम तथा मकृति का दबाव कर रख दिया है। और सूची और शान्ति अब तक छन जायगी।

आप श्री बृन्दावनदास जी श्री ए एल एल वी अध्ययन व्रजसाहित्य मण्डल मथुरा से सम्पर्क स्थापित करें। उनका भी पत्र भेज रहा हूँ व्रजसाहित्य मण्डल के उद्धार के लिये वे प्रयत्नशील हैं।

बिनीत  
बनारसीदास

( १८५ )

फरीदाबाद  
१६ ११ ६७

प्रियवर

शहीद महावीरसिंह के विषय में अथ सख भी कुछ मिल ? डा० मुशीराम जी का तो वही मिल गया था। क्या 'पराग' जी ने भी भेज दिया ? अब बिना विलम्ब उन सबको छपा देना चाहिये। कृपया अरुन्धती की एक प्रति डाक्टर हरिदत्त पालीवाल साहित्याचार्य उपमन्यु भवन कायम गज कर्त्तृत्वाद् को प्रेंट स्वरूप भेज दीजिये। वे संस्कृत में काव्य लिखते हैं। भगवत्सिंह विषयक कविता में उन्होंने महावीरसिंह का उल्लेख किया है। आपका शोध कार्य कैसा चल रहा है।

बिनीत  
बनारसीदास

( १८६ )

फरीदाबाद  
१८ १ ७१

प्रिय भाई मलखानसिंह जी,

कल सीमाव्यवश स्व० रामचरणलाल जी विषयक सामग्री अकस्मात् ही मिल गई। उधे मैंने आपके अध्यापक महोदय को सौंप दिया है।

कृपाकर स्व० शिवचरणलाल तथा डा० युद्धवीरसिंह के पत्रों की ५, ५ प्रतियाँ टाइप करा लीजिये और ३, ३ प्रतियाँ मूल पत्रों के साथ मुझे रजिस्ट्री द्वारा भेज दीजिये।

स्व० रामचरणलाल जी का चित्र बम्बई भेजा गया है। लोटने पर उससे तल चित्र बनवाया जा सकता है। आपके महाविद्यालय ने शहीद महावीरसिंह पर विनेपाङ्क निकासी और अब स्व० रामचरणलाल पर अङ्क निकाल सकते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि इसे अहमान—अङ्क बना दें। तब

अपना सागा व लक्ष्मी भी—बहुत बढ़िया सेवक—उमम न्यि जा सकत हैं। यह थोड़ा कम आपके न्यि ही सुरक्षित था।

आपका पृथ्वीसिंह, विजयकुमार मिश्रा, प० परमानन्द इत्यादि व लक्ष्मी मिल जावेंगे। भाई परमानन्द वागीन आप व पुत्र लक्ष्मी ले लें।

बनारसीदास

( १८७ )

फाराजाबाद

१६-१७१

प्रिय भाई मल्लानसिंह जी,

बद। मर अनक स्वप्न पूर हुए हैं और सा भी विन्दुन आकस्मिक दृष्टि पर। गद्दी महावागमिह विपाक का स्वप्न भी उही म स एक था। मैं आपके कालेज का शुभ नाम भा नहीं मुता था, जरा भाई वागमिह जी गुप्त व नाम एटा के भूतपूर्व एम एन ए का फान आया कि मुक्त आपके कालेज व कवि सम्मेलन का प्रज्ञान बनना है उमी व परिणाम स्वल्प महाद महावीरसिंह की कीर्तिना हा मद।

स्वयं मुक्त इस बात का पत्र नहीं था कि रामचरणान जी एटा व थ। यह पत्र लिखि भी [ जा अब ५, ६ दिन बाद National archives लिखी का चली जावा ] विन्दुन अकस्मात् का मुक्त मिल मद। साप्ताहिक हिन्दुस्तान में उमक नेल छप भी मद।

यदि आप अपने कालेज की पत्रिका का रामचरणान अष्ट निकान मकें ता यन्त्रिचित्त आपिक सहायता में भी द सकता हू। उमक न्यि अतिरिक्त चला किया जा सकता है। आज व मना-मानुष मीनों का रामचरणान के नाम तक का पत्र न हागा। मुक्त इस बात म मद है कि एटा व एम एन ए या एम पी न उनका या महावीरसिंह का नाम भा मुता हागा। पत्र स पान बना लीजिय। बद में वागमिह जी गुप्त भी १००) स्पष्ट दे हा देंगे। अपने गद्दी कल का भी निमाग कर लीजिय। आपके विद्यापिया का गद्दी के विषय म कुछ न कुछ पान हाता ही चाहिय। आपकी पत्रिका के टप नवान अक का मूपाकन आ चर कर हागा। बाबा पृथ्वीसिंह [ गिणु विहार भाव नगर, मीरठ ] का अभी स पत्र लिखकर उम अष्ट व विमाचन सम्कार व निर मुतादय।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

अभी श्री बालकृष्णगुप्त ने १०१) रुपये देने का वचन दे दिया है। आप धनवाद का पत्र उनको हनुमानगज, फीरोजाबाद के पते पर तुरन्त भेजिये।

बनारसीदास

श्री रामाशङ्कर द्विवेदी एम ए उरई को लिखे गये पत्र

( १८८ )

फीरोजाबाद

२-१ ६५

प्रियवर,

आपके सद्भावना युक्त पत्र के लिये कृतज्ञ हूँ। सबसे प्रथम आप अपने साध निबन्ध की स्वीकृति के लिय प्रयत्न कीजिये। पहले तो डा० सरयेन्द्र जी मे इस विषय मे मदद मिल सकती थी, पर वे तो अब राजस्थान चले गये। बिना धूमे फिरे यह काम नहीं बनने का।

हिन्दी सस्मरण साहित्य विषय म्वय मे कुछ महत्व रखता है और डाक्टरेट के लिय न सही बसे ही स्वात सुखाय इसका अध्ययन मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद होगा।

सस्मरण जिन जिन ने लिखे हो, उन्हें पढ़ लीजिए। बालमुकुन्द गुप्त, पद्मसिंह शर्मा, धनीपुरी जी, प्रेमचन्द्र जी, शिवपूजन जी उग्र जी प्रभृति पञ्चामा "यक्तियो के" लिखे सस्मरण साहित्य क्षेत्र म बिखरे पड़े हैं। पुराने पुस्तकालया मे जाकर उन्हें पढ़ा जा सकता है। रेखाचित्रा और सस्मरणो म आखिर मानव चरित्र का चित्रण ही रहता है, इसलिये दोनों का परस्पर सम्बन्ध है। उबू तथा अंग्रेजी म भी और बगला इत्यादि मे भी इस विषय पर काफी मसाला होगा। बाव ए उबू मौलवी अब्दुलहक साहब के कई सस्मरण लाजवाब बन पड़े थ—एक डेढ माली नामदेव का और दूसरा एक सिपाही का। सबका यथासम्भव खोजकर पढ़ लेना चाहिए। डाक्टरेट मिले या न मिले उससे कुछ ज्यादा बनता बिगड़ता नहीं पर किसी एक विषय का विशेषज्ञ बन जाने से लाभ ही लाभ है। विशाल भारत के पुराने अकी मे स्व० रामानन्द बाबू के तीन सस्मरण बहुत बढ़िया हैं—कबीर जी रवीन्द्र के, बालकृष्ण भट्ट के और सिस्टर निबन्धिका के। Modern Review म भी कितने ही उत्तमोत्तम सस्मरण छन ये। अंग्रेजी म तो इस विषय का अचण्ड भंडार है।



‘एकहि माध मय गध’ वाली कगवन आपन मुनी होगी। ‘मत्र माघे सब जाइ’ मुनिया भर क विषय की चिन्ता छाड़िये। गमान-वातू के स्मृति प्रय के निय कनकते का हिनी भाषा भाषा ममात्र कुठ कर मकता है, यदि मैं २ महान बही जाकर रहूँ पर मरा स्वाम्य ठाक नही और मैं बनी जा नही सकता। और किसी को हम थाल का विषय चिन्ता नहीं। स्व० बट वातू क मुमुत्र यदि चाहें ता हम बीम हजार मय हम म म थच कर मकत हैं पर व करेंगे न। हमरिए जा कुठ भी बनी म बट-बट कर मकता है कहेगा।

तम्यो बोही आयाजनागे निरयक है। न पना है न काम करन वात निर आयाजना बनान मे क्या साम ? आप अपना ममूण ध्यान हिमी एक विषय पर लगाइय ओर उमक विषय बन जाइय। यद् युग Specialization का है।

स्व० पयमिह ममा क पत्रों पर अवसर निम्न। उनक कुठ पत्र हिन्दुस्तानी एक्नेमी प्रयाग न भी छायाय थ— द्विबन जी तथा ममकानाना के पत्र 'नामक पुस्तक म जा था बीजनायमिह विना न मकत करक छाई थी। मून्य ५) है। स्वय पत्र माहिय एक महान ममुन है जिसम मोन लगान म अनक रन प्राप्त हो सकन है।

अपनी जीविका क वात बाकी थच वक्त में आप घूम घूम कर मम्मरण साहिय तथा पत्र माहिय पर ममासा नकटा करन रहें और पुत्रकर ननों क लिये बुन्तबही ग्रामगान इराति का भी मग्रह करें। ४ / वय म आपक पाम अच्छी सामग्री इकट्टी हो जायगी। कमरा माय म हो नब ता क्या कन्ता। परिव्राजक ही हमार दग म कुठ कर सकन है। हमरों का कानि रगा एक अत्यन्त उपयोगी पुष्पवाय है।

ज्याना में निम ननी मकता। निफ एक आत्म म ही काम लेना पड़ता है। Dictate करान का अम्याम न। पत्रोत्तर दन म मुन थम पढ जाता है। आप पत्र भेजत रहें, जब कभा छुटी मिनेगी, इन्हें हो मी त उत्तर द दूगा।

अपन पत्रों की वावन वापी बगवर म म हैं। जरा मा जोर कर निमन स वह बन सकनी है। मेरी चिट्ठियां बीच में गायब हो जाती है। डाक इतनी अधिक आती है कि पना ही ननों चन पाता। हैंगवात म एक सटकी इसी विषय पर पी एच टा करना चाहती था। श्री कौण्डर जी विद्यालकार न मुने लिखा था पर फिर ठगन कुठ किया नहीं।

( १८८ )

फीरोजाबाद

२७ १-६५

प्रियवर,

संस्मरण विषय पर अंग्रेजी में एक ग्रन्थ है वह शायद अभी कालेजा में पढ़ाया जाता है। उसे पढ़िये। शायद स्व० अमरनाथ जी द्वारा संप्रहीत था। मौलवी अब्दुलहक साहब ने संस्मरण बहुत बढ़िया थे। सर रास भसूव के विषय में उनके संस्मरणों को देव नागरी लिपि में बि भा में मैंने ही छपाया था।

यह एक विषय ही बहुत पर्याप्त है। हाँ, पत्रों का सग्रह साथ साथ करते चलिये। बेलनगज (आगरे) में पालीवाल जी का पुस्तकालय बहुत अच्छा है। वहाँ बैठकर मकल कर सकते हैं।

६ ता० को हम लोग वसंत पंचमी मनावेंगे। उस दिन ५ तारीख की शाम को आप आ सकते हैं। यात्रा में एकाध दिन से अधिक ठहरने का प्रबंध मुश्किल से हो सकेगा। न किमी क पास इतने साधन हैं, न वक्त, इसलिए एक दिन से अधिक का प्रोग्राम कही का भी न रखिए।

बड़े नगरो में जहाँ घमशाला या होटल हा, वहाँ की बात दूसरी है। आजकल अतिथि मत्कार में लागो की श्रद्धा नहीं रही।

भाई श्रीराम जी शर्मा अब आँखा से बिल्कुल नहीं देख पाते। उनका नव जीवन काम यहाँ से ७, ८ मील दूर है। वस उसाइन तक जाती है, वहा से २ २॥ फलिंग होगा। वस वाले शायद कहने से खड़ी भी कर लें। श्रीराम जी का पना बल्ला बस्नी आगरा। पहले से समय निश्चित करके जाइये और यह भी लिख दीजिये कि इतनी देर ठहरें। शिवपूजन जी के पत्रों का सग्रह तो उनके सुपुत्र ही कर रहे हैं। आप तो संस्मरण साहित्य के ही विशेषज्ञ बन जाइये।

Some autobiographies यह नाम है स्व० अमरनाथ झा द्वारा संप्रहीत पुस्तक का। आयनगर कानपुर में रामराज्य के सम्पादक श्री रामनाथ गुप्त जी से जहर मिलिये। नरेशचंद्र चतुर्वेदी से भी। श्री सनेही जी के ग्राम की तीथयात्रा भी कर आइये। प्रकाशका पर मेरा प्रभाव नहीं। पत्र भेजते समय पते के साथ लिफाफा रख दें तो शायद उत्तर जल्दी मिले। जिस किमी से मिलें, प्रश्नावली पहले से भेज दें ताकि वह उत्तर देने के लिए प्रस्तुत रहे।

विनीत  
बनारसीदास

'एकहि साथ सब साथे' वाली बगवत आपन गुना हंगी। 'सब साथ सब जाई' दुनिया भर क विषया की चिन्ता छोड़िय। रामानन्द बाबू क स्मृति ग्रन्थ के निय कलकत्ते का द्विती भाषा भाषी समाज कुछ कर सकता है, यदि मैं २ महीन वहाँ जाकर रहूँ पर मग म्याम्प टीक नदी और मैं वहाँ जा नहीं सकता। और विगी का इस आड का विगण चिन्ता नहीं। स्व० बटे बाबू के सुपुत्र यदि चाहें तो दम बीम हजार रुपय दम यन में खर्च कर सकते हैं पर वे करेग नहीं। इसलिए जो कुछ भी यहाँ में बट-बट कर सकता है करेगा।

सम्झा चौटी आयोजनाएँ निरयक हैं। न पगा है, न काम करने का न फिर आयोजना बनान में क्या लाभ? आप अपना सम्पूर्ण ध्यान किसी एक विषय पर लगाइय और उमक विगण बन जाइय। यद् युग Specialization का है।

स्व० पदमिह जर्मा क पत्रों पर अवश्य लिखें। उनक कुछ पत्र हिन्दुस्तानी एकमेरी प्रयोग न भी छापाय थे— 'द्वितीया या तथा समकालीन क पत्र' नामक पुस्तक में जो श्री बजनावमिह विना न गहर करके छाई थी। मूल्य ५) है। स्वयं पत्र माहिय एक महान समुद्र है जिनमें मोन लगान से अनक रत्न प्राप्त हो सकते हैं।

अपनी जीविका क चान धाका सब वस्तु में आप धूम धूम कर सम्मरण साहित्य तथा पत्र साहित्य पर समालोचक बन रहें और पुस्तकें खरीदें क लिय बुक स्टल की सामग्री इत्यादि का भी गहर करें। ४, / वष में आपन पाम अच्छी सामग्री इकट्ठी हो जायगी। कमरा माय में ही तो ता क्या बढ़ता। परिभाजक ही हमारे दम में कुछ कर सकते हैं। दूसरों का कीर्ति रत्न एक अत्यन्त उपयोगी पुण्यकाय है।

ज्यान्त में निम्न नहीं सकता। निम्न एक आँख में ही काम लना पड़ता है। Dictate करने का अभ्यास नहीं। पत्रोत्तर दम में मुझ श्रम पड़ जाता है। आप पत्र भेजते रहें जब कभी छुट्टी मिलेगी, इकट्ठी हो सगिस्त उत्तर दे दूंगा।

अपने पत्रों की कार्बन कापी बराबर रखें। जरा सा जार रख लियेने से वह बन सकती है। मरी चिट्ठियाँ बीच में गायब हो जाती है। डाक इतनी अधिक आती है कि पना ही नहीं चर पाना। हैंगामा में एक लटकी इसी विषय पर पोणव डा करना चाहती थी। श्री वशीधर जी विद्यालवार न मुझे लिखा था, पर फिर उमन कुछ किया नहीं।

( १८८ )

फीरोजाबाद

२७-१-६५

प्रियवर,

संस्मरण विषय पर अंग्रेजी में एक ग्रन्थ है वह शायद अभी कालेजों में पढ़ाया जाता है। उसे पढ़िये। शायद स्व० अमरनाथ जी द्वारा संग्रहीत था। मौलवी अब्दुलहक साहब के संस्मरण बहुत बढ़िया थे। सर राँस मसूद के विषय में उनके संस्मरणों का देव नागरी लिपि में बि भा म मीने ही छपाया था।

यह एक विषय ही बहुत पर्याप्त है। हाँ, पत्रों का संग्रह साथ-साथ करते चलिए। बलनगज (आगरे) में पालीवाल जी का पुस्तकालय बहुत अच्छा है। वहाँ बैठकर नकल कर सकते हैं।

६ ता० को हम लोग वसंत पंचमी मनावेंगे। उस दिन ५ तारीख की शाम का आप आ सकते हैं। यात्रा में एक-दो दिन से अधिक ठहरने का प्रबंध मुश्किल से हो सकेगा। न किसी के पास इतना साधन है, न वक्त, इसलिए एक दिन से अधिक का प्रोग्राम वही का भी न रखिए।

बड़े नगरों में जहाँ घर्मशाला या होटल हों, वहाँ की बात दूसरी है। आजकल अतिथि सत्कार में लागू की श्रद्धा नहीं रही।

भाई श्रीराम जी शर्मा अब माँझा से बिल्कुल नहीं देख पाते। उनका नव जीवन फार्म वहाँ से ७-८ मील दूर है। वस उसाइनकी तक जाती है, वहाँ से २, २। फर्मांग होगा। वस बालि शायद कहने से खड़ी भी कर लें। श्रीराम जी का पत्रा बल्कि बम्बी जागरा। पहले से समय निश्चित करके जाइये और यह भी लिख दीजिये कि इतनी दूर ठहरेंगे। शिवपूजन जी के पत्रों का संग्रह तो उनके सुपुत्र ही कर रहे हैं। आप तो संस्मरण साहित्य का ही विनोद बन जाइयें।

Some autobiographies यह नाम है स्व० अमरनाथ जी द्वारा संग्रहीत पुस्तक का। आयनार कानपुर में रामराज्य के सम्पादक श्री रामनाथ गुप्त जी से जल्द मिलिये। नरेशचन्द्र चतुर्वेदी से भी। श्री सनही जी के ग्राम की तीर्थयात्रा भी कर जाइयें। प्रकाशकों पर भरोसा प्रभाव नहीं। पत्र भेजते समय पते के साथ लिफाफा रख दें तो शायद उत्तर जल्दी मिले। जिस किसी से मिलें प्रस्तावली पहले से भेज दें ताकि वह उत्तर देते क लिए प्रस्तुत रहे।

विनीत

बनारसीबास

( १६० )

नई दिल्ली २२

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम ! आपका वाट मिना । मैं १० फरवरी में यहाँ हूँ और अभी कुछ दिन ठहरने का विचार है ।

आप मरे अभिनन्दन ग्रन्थ की विमृष्ट समीक्षा निम्नरूप अपने बहुमूल्य समय को बर्बाद करना चाहते हैं यह जानकर बिना हृदय । मैं तो आवश्यकता से अधिक विचारित हो चुका हूँ और अपनी प्रशंसा पढ़ने पढ़ने का पुत्र हूँ । सन् १९२४ में मरे साप्ताहिक मन्त्रालय गाँविक [ S G Vaze Editor Servant Of India, Poona ] ने जो पूर्व अखिरा गय व मुझे over—advertised की उपाधि से अलङ्कृत किया था । उसके ४७ वर्ष बाद तो मैं तब से कई गुना विचारित हो चुका हूँ । भगवान् आह्वान का उपदेश है— 'अनुन । दक्षिण का पानन करो, धनवान् का पना मन न ।

‘वरिष्ठान् भर कौन्तय, मा प्रयच्छेश्वरधनम्

पर हम बात पर कौन ध्यान देता है । अपने ग्रन्थ के बहुत से लोग मैं पढ़ भी नहीं सका । हनुवाई को मिठाई खाने का रस नहीं होती । मैं तो कौन्ती की मिठाई दूसरों का निरन्तर खिलाता रहा हूँ । उस मिठाई का खान की कोई इच्छा मरे मन में विद्यमान नहीं, बल्कि दरअसल यह है निरन्तर ५८ वर्ष से लिखने के कारण मेरा नाम बराबर हिन्दी जनता के सम्मुख आता रहा है । मेरा प्रथम लेख १८९२ में छपा था—मर्द में—और तीन महीने बाद मेरे लेखक जीवन की ६० वीं वर्ष शुरू हो जायगी । मेरे लग १६०-१७० जनता तक आ गई होगी, इसलिये अब अपने लिखा हुआ लेख लिखाना चाहता हूँ । लेख की बात तो यह है कि मेरी ८ किताबें अब लिखी पड़ी हैं और ७६ का वर्ष में मैं अब उन्हें Revise भी नही कर सकता । मुझे Retire हो जाना चाहिये, पर बद आर्मे जल्दी नहीं छूटती ।

आप किसी विषय पर Specialise क्यों नहीं कर लें ? ममलन् बच्चा के विषय पर । सत्कार के भिन्न भिन्न दशा में बानस धानिनाश्रा के लिये जो अच्छे काम हो रहे हों उन पर विचार्य । यह युग विचारणा का है । बमरा तो आपका पाम हाना ही चाहिए । बानस विषय (Relieving subject) मान्त्रिय सविद्या का कीर्ति रखा रख सकते हैं । डाक की व्यवस्था के लिये पढ़ने कोतल घोट रख जात थ ।

मुझे गण्य नगान और चिट्ठी लिखन की बीमारी है—दोनों एक ही हैं—  
और काम कर कम पाता हूँ—वातें ज्यादा करता हूँ। यह वास्तविक सत्य है।  
यदि मैं मोन रह सकता और पत्र न लिखता तो तिमिनी सेवा कर सकता। यह  
सम्बन्धी चिट्ठी भी सोचा करते हुए गुताह करने का उदाहरण है।

बड़े बड़ेन की अकल अब चरन सम गई घास।

फोफट मे डी लिट बने श्री बनारसीदास ॥

बनारसीदास

डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी को लिखे गये पत्र

( १८१ )

फीरोजाबाद

१२ ६-६४

प्रिय भाई राजेश्वर जी,

पालागिन १ कृपापत्र मिला। अपने स्वास्थ्य को देखते हुए मैं कह नहीं  
सकता कि मैं आगरे कब आ सकूंगा। अपने मुँह पर अपनी प्रशंसा इतनी बार  
मुन चुका हूँ कि उससे तबियत ऊब गई है। हाँ, अमृतलाल जी ( उफ बाबू )  
कुछ खरी छोटी सुनाने को तयार हा तो दूसरी बात है।

बाद कमरों में बठ कर गुणगान—यह सब मुझे अरपन्त कृत्रिम लगता  
है। क्या न किसी प्राकृतिक स्थल की पैदल यात्रा की जाय। औपचारिकताएँ  
बिल्कुल व्यर्थ हैं। वर्तमान परिस्थिति में एक गिलास ठण्डाई या दो प्याले  
चाय और एक पापड बस इससे ज्यादा खच करना महज हिमाकत है। बड़ दो  
घण्टे से अधिक इन अव्यापार में खच न किया जाय। कब तक आप लोगो के  
दशन कर सकूंगा इसका अभी निश्चय नहीं। श्री ठाकुरप्रसाद शर्मा यहाँ पधारे  
थ। बाबू ने कविता पाठ द्वारा रगत सादी, और भी कवि थे।

विनीत

बनारसीदास

( १८२ )

मनोताल

६ ७ ६५

प्रिय श्री राजेश्वर जी,

१ पत्र तभी जानकार बन सकता है जब कि कोई उसे पूरा-पूरा समय तथा  
शक्ति प्रदान करे। चूँकि आप नियमित २, २॥ घंटे में अधिक नहीं दे  
सकेंगे, इसलिए पत्र का सजीव बनाना सम्भव न होगा।

( १६० )

नई दिल्ली २२

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम ! आपका काट मिना । मैं १० फरवरी में यहाँ हूँ और अपना कुछ न्तिन टहरन का विचार है ।

आप मरे अभिनन्दन ग्रन्थ की विस्तृत समीक्षा लिखकर अपने बहुतमूल्य समय को बर्बाद करना चाहते हैं, यह जानकर बिना दुई । मैं तो आवश्यकता से अधिक विभावित हो चुका हूँ और अपना प्रणाम पढ़ने पढ़ने ऊब चुका हूँ । सन् १९२४ में मरे साथी जीवन्त मन्नासिंह गाविस् बम् [ S G Vaze Editor Servant Of India, Poona ] ने जो पत्र लिखा था वह मुझे over—advertised की उपाधि से अवहृत किया था । उसका १७ वर्ष बाद तो मैं तब से कई गुना विभावित हो चुका हूँ । भगवान् याज्ञिक का उपाध है—“अर्जुन ! दक्षिण का पानन करो, घनवाना का पान मन दो ।

‘दरिद्रान्तर भवन्ति, मा प्रयच्छेत्स्वरूपम्’

पर हम बात पर कौन ध्यान देता है । अपने ग्रन्थ के बहुत से लोग मैं पढ़ भी नहीं सका । हनुवाह का मिठाई खाने का रस नहीं होनी । मैं तो कौन्ती जी मिठाई दूसरा का निरन्तर खिलाना रहा हूँ । उस मिठाई का खान की कोइ इच्छा मरे मन में विद्यमान नहीं, बान्दव्यवस्था यह है निरन्तर १६ वर्ष से निम्न के कारण मरा नाम बराबर टिप्पणी जनता के सम्मुख आता रहा है । मरा प्रथम लेख १८१२ में छपा था—मद म—और तीन महीने बाद मर खम्बक जीवन की ६० वीं वर्ष शुरू हो जायगी । मर तब पढ़ने-पढ़ने जनता तक आ गई होगी, इसलिये अब अपने लिखा हुआ लेख लिखाना चाहता हूँ । लेख की बात तो यह है कि मरी ८ किताबें अब लिखा पही है और ७६ वा वर्ष में मैं अब उन्हें Revise भी नहीं कर सकता । मुझ Relire ही जाना चाहिये पर बदलाव जल्दी नहीं छूटता ।

आप किसी विषय पर Specialise क्यों नहीं कर लेते ? यमनद्वय के विषय पर । ममार के भिन्न भिन्न दावा में बान्दव्यवस्था के लिये जो अच्छे काम हो रहे हों उन पर विशेष । यह युग विभावनों का है । बमरा तो आपका पाम होना ही चाहिये । बान्दव्यवस्था (Reliving subject) मानविय सविद्या का कौन्ती रखा रख सकते हैं । दाव की व्यवस्था के लिये पढ़ने काठन घोट रख जात था ।

मुझे गप्प लगाने और चिट्ठी लिखने की बीमारी है—दोनों एक ही हैं—  
और काम कर कम पाता हूँ—बातें ज्यादा करता हूँ। यह वास्तविक सत्य है।  
यदि मैं मौन रह सकता और पत्र न लिखता तो तिगुनी सेवा कर सकता। यह  
सम्बन्धी चिट्ठी भी तौबा करते हुए गुनाह करने का उदाहरण है।

बड़े बड़ेन को अकल अब धरन लग गई घास।

फोकट में डो लिट बने श्री बनारसीदास ॥

बनारसीदास

डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी को लिखे गये पत्र

( १६१ )

फीरोजाबाद

१२ ६-६४

प्रिय भाई राजेश्वर जी,

पालागन ! कृपापत्र मिला। अपने स्वास्थ्य को देखते हुए मैं कह नहीं  
सकता कि मैं आगे कब आ सकूंगा। अपने मुँह पर अपनी प्रशंसा इतनी बार  
सुन चुका हूँ कि उससे तबियत ऊब गई है। हाँ, अमृतलाल जी ( उफ बाबू )  
कुछ खरी छोटी सुनाने को तयार हो तो दूसरी बात है।

बन्द कमरो में बठ कर गुणगान—यह सब मुझे अत्यन्त कृत्रिम लगता  
है। क्या न किसी प्राकृतिक स्थल की पवत यात्रा की जाय। औपचारिकताएँ  
बिल्कुल गय हैं। वर्तमान परिस्थिति में एक गिलास ठण्डाई या दो प्याले  
चाय और एक पापड़ बस इमसे ज्यादा खर्च करना महज हिमाकत है। डेढ दो  
घण्टे से अधिक इस अव्यापार में खर्च न किया जाय। कब तक आप लोगों के  
दर्शन कर सकूंगा इसका अभी निश्चय नहीं। श्री ठाकुरप्रसाद शर्मा यहाँ पघारे  
में। बाबू ने कविता पाठ द्वारा रगत लादी, और भी कवि थे।

विनीत

बनारसीदास

( १६२ )

मनीताल

६-७-६५

प्रिय श्री राजेश्वर जी,

१ पत्र तभी जानदार बन सकता है जब कि कोई उसे पूरा पूरा समय तथा  
शक्ति प्रदान करे। चूँकि आप नित्यप्रति २, २॥ घंटे से अधिक नहीं दे  
सकेंगे, इसलिये पत्र का सजीव बनाना सम्भव न होगा।



( १६० )

नई दिल्ली २२

प्रिय द्विवेगी जी,

प्रणाम । आपरा कार्ड मिला । मैं १० दम्बरी में यहाँ हूँ और बना कुछ न्ति टहरन का विचार है ।

आप मर अमिनन्तन ग्रन्थ की विम्लृत समाना निम्नकर अपन बन्धुसमय को बर्बाद करना चाहते हैं यह जानकर बिना दुर्द । मैं तो आवश्यकता न अधिक विचारित हो चुका हूँ और अपना प्रणाम पन्न पन्न कर चुका हूँ । सन् १९२४ में मर माया योशुन मर्गावि गाविन् वन [ S G Vaze Editor Servant Of India Poona ] ने जो पूव अस्मिता मर य मुझे over-advertised की उपाधि से अनकृत दिया था । उनक ४७ वर्ष बाद तो मैं तब से कई गुना विचारित हो चुका हूँ । भगवान् थागात् का उपात्त है— 'अनुन । दरिद्रों का पालन करो धनवानों का पैसा मत लो ।

‘दरिद्रान मर शौनय, मा प्रसन्दापरधनम्’

पर हम बात पर कौन ध्यान लाते हैं । अपन ग्रन्थ व बन्धुन मनेन मैं पद भी नहीं सवा । उनकाद का मिटाई मन की चिन्ता नहीं होती । मैं तो कार्ड लपी मिटाई हमरों का निम्नकर विचारता हूँ । उस मिटाई का मान की काद इच्छा मरे मन में विद्यमान नहीं बान् प्रमन य है निम्नकर ५६ वर्ष से निम्नकर कारण मर नाम बरगमर दिन्नी जनता क मन्मुख बात ला है । मर प्रथम लव १९१० में छा था—मर्द म—और तीन मर्दान बाद मर नेलक जीवन की ६० वीं वर्ष शुरू ला लाणी । मर लव पन्नमन्त जनता लग आ गई होगी । इमनिन अब अपन स्मिता द्वारा लव निखाना चाहता हूँ । वेद की बात तो यह है कि मर ८ दिनाबे अर मिश्री परो हूँ और ७६ वीं वर्ष में मैं अब उन्हें Revise भी नहीं कर सकता । मुझ Relire ला जाना चाटिप पर व ला लो जनी नहीं छूनी ।

आप किसी विषय पर Specialise क्यों नहीं कर लेते ? ममनन् बन्धों के विषय पर । मरार क निम्न निम्न ला में बानक बातिक्षाओं के दिने जो बलक कान हो रहें हैं उन पर विधि । यह मुा विम्लर का है । कैमर तो आरके पास होना ही चाहिए । कानन विषय (Reliving subject) मास्त्रि मेवियों की कौति ला रख सकन है । डाक की अवस्था क निन पहन कौतन घोट रखे जन य ।

दो पौण्ड बढ़ा है। पहिले २०, २५ पौण्ड घट गया था। थो सोहनाना खिबेदी  
एक व लिय कुछ लिखना पसन्द करोगे।

विनीत

बनारसीदास

पुनरु—

भाई हजारीप्रसाद जी अबदूबर में रुपर जाने की सोच रहे हैं। मैंने उन्हें  
मना लिख दिया था कि इस रौरव तथा कुम्भीपाक नगरी में न पधारें। आप  
इष्टरयू के लिये नहीं गये। वे शाम पूछ सकते हैं। क्या कहें? ब्रजनाहित्य  
महल वालों को सब जगह निमन्त्रण पत्र भेजने चाहिए थे।

"चतुर्वेदी" का "यायभूति प्यारेलात जी विषयक स्मृति अक्षु दत्ता था ?  
उमका सक्षेप करके १०० पृष्ठों की जीवनी के रूप में छपा देना चाहिये।  
Shri Pyarey Lal Ji was a great man undoubtedly कमतरी है रावाद  
के मधुसूदन जी पधारें थे। अच्छा काम कर रहे हैं, यद्यपि ग्रन्थों के अनुान में  
सावधानी नहीं करते।

५ ७ वष लगा के किसी अच्छे साहित्यिक ग्रन्थ का निर्माण कीजिये।  
ये 'भूतपरिक' काम तो बस बर्बाद कर दत है। जब बाबू की सवीयन ठीक हो  
जाय तो राजाबाबू को फोन करा देना कि वे एक छोटी सचित्र पुस्तिका अपने  
उपवन पर जरूर छपावें—सर्वोत्तम प्रम म, बगिया कागज पर वसमे बाबू की  
उपवन विषयक कोई कविता भी रहे। भाई अमृतसान जी न अब तक जो  
कुछ लिखा है उसको व्यवस्थित करके उस पर एक एक विस्तृत निबन्ध लिखा  
जा सकता है।

डा० भगवानसहाय पचौरी को लिखे गये पत्र

( १८४ )

फीरोजाबाद

२४ ६-७०

प्रिय पचौरी जी,

बड़े। आपका २० ता० का कृपापत्र मिला। मेरे हृदय में श्री प्रमृदयाल  
जी मोतल के साहित्यिक कार्य के लिये बहुत श्रद्धा है। निष्पदेह चाहने जो  
महत्पूर्ण सेवा बजमाया की भी है, वह एक मस्या का कार्य था निरन्तर लगन  
और अध्यवसाय के बिना कोई भी व्यक्ति इतना काम कर ही नहीं सकता।

- २ दूसरा के सखा का गणधन करने में समय व्यय करने की ओरता यह वहीं अधिक उत्तमतर है कि स्वयं महीन में दो तान बड़िया सख सिधैं, जिनके मग्रह से बार्द ग्रन्थ बन सक ।
- ३ मैं पत्रा के Birth Control के पत्र में हूँ पर जो भी उत्पन्न हों, उनको दीर्घायु बनाने की आवश्यकता है ।
- ४ प्रकाशक के ३, ४ हजार रुपये इस प्रयोग में नष्ट हो उमम कहीं बहता है कि वे कोई उपयोगी ग्रन्थ निगालें । उनमें मात्र साफ बात हो जानी चाहिए ।
- ५ इतने पर भी पत्र निगाना ही हो ता गुनगुन की तरह की चीज—Digest बन ही निगालें । Best reading material दें । मुझे इतना ही बहता है । कृपया इस पत्र को प्रकाशक को स्थिरता दायिय ।

दिनांक

बनारसीदास

( १८३ )

३ न ६८

प्रिय माई राजश्वर पालागन,

माई बाबू की बीमारी की हालत जानिकें कुछ फिकिर तो हो ही गई पर बुधवार अब कम है जि जानिक सन्नाम भयो । मात्रीमरा हमें सन् १८०४ में निकरा ११ । ६४ वष पने ।

जाम आराम की मोत जरूरत है और बाद गरिब चीज हर्गिज नह खानी चय । बभऊ कमऊ मात्रीमरा जान बखन कमशाय ठाडि जानु है—आख प, स्नि प । ताम भौन मावधाना बतना चणे ।

बाबू जम हंसन और दैमाठन बार ब्राह्मी की तो बीमार पगनीई नई चणे । जि बिट्टी हमन बि० आमा की प्रजनामा मुनादव को निधि ए ।

अब खही बात —

ना प्र मभा का काम छाड दिया यह बहुत अच्छा किया । एम तब त्रिविध जा आग चक्कर पुष्पराजार में मग्रह किय जा सकें । पूढामणि जा वाला लेख बन्धिया था और श्रीनारायण जी वाला भी । पर ये किम सग्रह में जा सकन है ? दूगैरा का उखन आप भी पानी बरमन पर दम आहय । राजाबाबू अपनी जीप में ले जावेंगे । मरी तगियत मम्हूत रही है । भूम छुन रही है । मरर टहनन जाना हूँ । ३, ४ महीन में स्वाम्य्य साम हागा । वजन

दो पीण्ड बढ़ा है। पहिले २०, २५ पीण्ड घट गया था। श्री सोहनलाल द्विवेदी ग्रन्थ के लिये कुछ लिखना पसन्द करोगे।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

। भाई हजारीप्रसाद जी अबदूबर मे इधर आने की सोच रहे हैं। मैंने उन्हें मना लिख दिया था कि इस रोरब तथा कुम्भीपाक नगरी मे न पधारें। आप इण्टरव्यू के लिये नहीं गये। वे शायद पूछ सकते हैं। क्या कहूँ? ब्रजसाहित्य मंडल वालों को सब जगह निमन्त्रण पत्र भेजन चाहिए थे।

"चतुर्वेदी" का "यायमूर्ति प्यारलाल जी विषयक स्मृति अङ्क" देखा था? उसका संक्षेप करके १०० पृष्ठों की जीवनी के रूप में छपा देना चाहिये। Shri Pyarey Lal Ji was a great man undoubtedly कमतरी है रावाद के मधुमदन जी पधारें थे। अच्छा काम कर रहे हैं यद्यपि ग्रन्थों के चुनाव में सावधानी नहीं बरतते।

५ ७ वर्ष लगा क किसी अच्छे साहित्यिक ग्रन्थ का निर्माण कीजिये। ये 'मुतफरिफ' नाम तो बस बर्बाद कर देत हैं। जब बाबू की सबीमन ठीक हो जाय तो राजाबाबू को फोन करा देना कि वे एक छोटी सचिव पुस्तिका अपने उपवन पर जरूर छपावें—सर्वोत्तम प्रेम में बढ़िया कागज पर उसमें बाबू की उपवन विषयक कोई कविता भी रहे। भाई अमृतलाल जी ने अब तक जो कुछ लिखा है उसको व्यवस्थित करके उस पर एक एक विस्तृत निबंध लिखा जा सकता है।

डा० भगवानसहाय पचौरी को लिखे गये पत्र

( १९४ )

फीरोजाबाद

२४ ६-७०

प्रिय पचौरी जी,

बंद। आपका २० ता० का कृपापत्र मिला। मेरे हृदय में श्री प्रमुदयाल जी मोतल के साहित्यिक कार्य के लिये बहुत श्रद्धा है। निस्सन्देह उन्होंने जो महत्वपूर्ण सेवा ब्रजभाषा की भी है वह एक संस्था का कार्य था निरन्तर लगन और अध्यवसाय के बिना कोई भी व्यक्ति इतना काम कर ही नहीं सकता। श्री मोतल जी के काय के यथोचित मूल्यांकन के लिये जितनी योग्यता की

आवश्यकता है, वह मुझ में है ही नहीं। एमी म्यनि में मर द्वारा भूमिका का लिया जाना सामान्यतः होता है। इस कृत्य का भाई आनारायण जी घनुवें। ही विधिवत् निष्ठा करने हैं पर वह न तो टुटनाया व निरार हो गए हैं। उनका मनोबल और अनुभवाना पट्टह निम्न में चल बस।

हो मूत्र Sketch-writing का जोर रहा है और कभी फुलन मिने पर ५, ६ निम्न मोतन जी में बान चीत करके उनका रणचित्र प्रस्तुत करने। इस समय तो मर लिये यात्रा करना सम्भव नहीं। १० महीन पढ़ते मरा आपरेशन हुआ था पर इस बाब मुझे विश्वास बिल्कुल नहीं मिला। मर ७८ बी वय में मैं बहुत कम लिख पढ़ पाता हूँ। एक प्रकार से रिटायर हो गया हूँ।

आ मोतन जी पर या तो पृष्ठ निम्न न्ना कुछ कठिन नहीं पर उमर मोतन जा के व्यक्तित्व का अपमान हो जायगा और स्वयं में भी अपनी इज्जत में गिर जाऊँगा। मोतन जा जब माघक के प्रति पूरा योग्य होता ही चाहिये। टरकीशन दृष्ट पर बाकी भी चीज उनका धार में न लिखा जाय। उनकी जीवन व्यापारी माघना का चित्रण पूरा महत्त्वता में ही होना चाहिये। मरा स्वास्थ्य ठीक होता तो १०, १२ निम्न इस पवित्र काम में सहायता, पर क्या कहें साधारण हूँ।

अपनी बात मैं स्पष्टता निम्न ही कि भी आपका यदि आग्रह होगा (और भाई मोतन जी का भी) तो मैं अवश्य कुछ निम्न नूना पर उनमें मूत्र मन्ताप नहीं होगा।

विनीत

बनारसादास

पुनश्च—

अभी मैं एक सामान्यवाणी मजदूर के उपयोग की आलोचना में मर बारह निम्न मरा निम्न। बहुत धीरे धीरे हा मैं कुछ निम्न पढ़ पाता हूँ। अपनी निम्न की ८ विचारों revise होना का पटी हैं।

( १८१ )

फीरोजाबाद

२० १७१

प्रिय पचारा जी,

बद। कृपाकर के निम्न कृतन ३। बहुरीर मोतन जी विषयक ग्रन्थ भी मिल गया, तत्पश्चात् घानवा। मैं करना करना ३ वि. कमा न कमा ब्र

विश्व विद्यालय बनगा—चाहे वह आगरा विश्व विद्यालय का परिवर्तित रूप ही हो—और तब श्री भीमजी के अद्भुत साहित्यिक कार्य का उचित मूल्यांकन हो सकेगा। वर्तमान परिस्थिति में, जब कि हमारा उत्तर प्रदेश इतना विस्तृत है, इस प्रकार का appreciation असम्भव ही समझिये।

मैं अलग ब्रज प्राप्त बनाने के आन्दोलन के पक्ष में नहीं हूँ पर विशाल हरियाना की आठशाही के विरोध में यह आन्दोलन अनिवार्य हो गया है। कसे खद की बात है कि श्री लक्ष्मीराम आचार्य भी अपने ब्रजसाहित्य मंडल के लिये कुछ भी न कर सके।

ब्रजमण्डल में भाई वृंदावनदास जी का दम गनीमत है। फीरोजाबाद में तो कम से कम ५०० लक्षपती हैं पर किसी का भा ध्यान ब्रज जनपद की सेवा की ओर नहीं है। अकेले श्री बालकृष्ण गुप्त कभी कभी सहायता दे देते हैं और उन पर भी मेरी आशा के द्रव्य है।

भाई वृंदावनदास जी के नाम का सहारा लेकर हम पोद्दार ग्रन्थ का एक पूरक ग्रन्थ निकाल सकते हैं। इस समय अर्थात् जनपदों का अपक्षा ब्रज जनपद साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य में काफी आगे बढ़ा हुआ है। When we have got the wind let us sail on sail on इस अनुकूल वातावरण में हम छूब आगे बढ़ना है। आपका ग्वाल महारवि विषयक शोधग्रन्थ कब तक छप जायगा? उसके प्रकाशन का प्रबन्ध होना ही चाहिये। बंधुवर भीमजी इस पुण्यकार्य को भी हाथ में ले लें तो सर्वोत्तम हो।

एक निजी संग्रहालय के लिये मैं भाई वृंदावनदास जी से आग्रह करता रहा हूँ। और वे तैयार भी हैं पर वे उस अपने घर से अलग किसी नवीन भवन में रखना चाहते हैं। वह तो बहुत व्यय साध्य कार्य होगा।

“ओ धनि आव सहज मे ताही मे बित देइ”

आज दिल्ली के National archives केंद्राय सरकारी अभिलेखागार में दो व्यक्ति यहां पधार रहे हैं जो भर धुंध संग्रहालय की मूल सामग्री को ३ दिन बाद दिल्ली ले जावेंगे। थोड़ा बहुत जो भी सरकार मुझे देगी (वह अत्यल्प हो सकती है।) उसी से मुझे सन्तोष होगा। एक सौ से ऊपर तो अनेक महात्मा जी के ही पत्र हैं। पचासा C F Andrews के चालीस श्रीनिवास शास्त्री (भारत के सर्वश्रेष्ठ पत्र लेखक) के ७० ८० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी के, गणेशदास विद्यार्थी के, २० २१ प्रेमचंद जी के बीसियों सम्पूर्णानन्द जी के गुप्त जी के इत्यादि इत्यादि। इनकी प्रतियाँ ब्रजसाहित्य

महल में मण्डानय में रखी जा सकती हैं। मुझे विश्वास है कि कभी न कभी वह प्रान्त बन कर रहेगा, उत्तर प्रान्त विभाजित होन में वह मर्ती बनता। हम लोगों का माहियिक तथा माह्युनिक काम का पूरी सगन व माय करना है।

विनाग

बनारसीदास

श्री गौरीशङ्कर द्विवेदी 'शायर' को लिखे गये पत्र

( १८६ )

श्रीगौरीशङ्कर

२२ १२ ६५

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम। माह्यिक मोरम की प्रति भिजा हाथा। कृपया पढ़कर उस पर विस्तार पूर्वक त्रिखण। पुस्तक का मैं स्वर्गीय कृष्ण चन्द वर्मा जी का समर्पित किया है और मुझे विश्वास है कि यह समर्पण आपका पगल आदगा।

आप ता श्री कृष्ण चन्द जी को मनी भौति जानन थे। अपने सत्य में, मैं आपका त्रिख गण पत्रा का उन्मल किया है। स्व० ब्रजमाधन वर्मा उनका मनीर थे, उनका स्वर्गवास मनु १६३७ में हो गया था।

२६ वय था उनका यह माह्यिक आद गणन हा गया है। जब वमा जा अपने यह गरीर में २६ वय था पछार हैं ता गुरुम चाय व माय उनका स्वागत होना चाहिए। क्या ही अच्छा हो यदि आप, रावत जा और माहीर जी आपसे म चाय व माय उनकी सेवा करें।

एक छोटी-छोटी लम्बव शून रहन चाहिए एक प्रति था गवत जी का और एक माहीर जी का नम स्त्री गई है।

विनीत

बनारसीदास

( १८७ )

श्रीगौरीशङ्कर

१६ ११ ६६

प्रियवर,

भारती में आपसे जाना सख मुझ पगल आण। मन्नागत्र तथा 'पणिपत्र' का पगल कर लेना अच्छी भी था। कृपया का यह नमना था। यदि स्वर्गीय बम्हा जू पर भी एक मन्त्रिण सख रहता तो और भी ज्यादा अच्छा होता।

यह दुर्भाग्य की बात है कि वर्तमान महाराजा साहब का इस ओर कुछ भी ध्यान नहीं है। वे चाहें तो अब भी बहुत कर सकते हैं, पर उनकी शिक्षा दीक्षा जिस ढङ्ग पर हुई थी उसने उनकी इस योग्य ही नहीं छोड़ा कि अपने पूर्वजों की कीर्तिरक्षा में कुछ भी सहयोग दे सकें। लेकिन श्री मधुकरशाह ( राजा बहादुर ) बहुत समझदार युवक हैं। वह अमरीका में पढ़ रहे हैं, पर अब तो Privy purse ही खतम होने वाली है—२०, २५ वर्ष भी शायद ही चले, इसलिए वर्तमान नरेशों से कुछ भी आशा रखना व्यर्थ ही होगा।

महाराज बीरसिंहदेव अपनी कोटि के अंतिम उदाहरण थे—आपका कथन यथायथ है।

श्री द्वारिकेश जी ज्ञासी में ही हैं ? मध्यप्रदेश का प्रयोग असफल रहा। छात्राभ्यास का भत्ता कौन मुकाबला कर सकता है ? प्रातः निर्माण इस समय अस्वाभाविक है, पर बुन्देलखण्ड के लिए जो कुछ कर सकें करें।

विनीत

बनारसीबाबू

( १८८८ )

फीरोजाबाद

५ म ७०

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम। साप्ताहिक हिन्दुस्तान अपना ब्रजाब्द २३ ता० को निकाल रहा है। उसकी पूर्व सूचना भी उसने मुझे नहीं भेजी थी। जब मैंने लिखा तब एक लेख लिखन का आग्रह किया। मैंने लेख 'नवीन ब्रज के निर्माण पर' भेज दिया है।

एक निजी पत्र में मैंने साप्ताहिक हिन्दुस्तान वाला मे प्रार्थना की है कि वे बुन्देलखण्ड-अब्द भी निकालें। ब्रज-अब्द निकल जाने पर आप उसकी विस्तृत आलाचना करें और बुन्देलखण्ड-अब्द के लिए अनुरोध भी करें।

भाई द्वारिकेश जी श्री रामसेवक रायत डा० भगवानदाम माहीर मित्र जी बादल जी प्रभृति सभी को पत्र भेजकर बुन्देलखण्ड-अब्द के लिए अनुरोध करना ही चाहिए। कोई मौका अपने जनपद को आगे बढ़ाने का हाथ न जाने देना चाहिए।

साप्ताहिक हिन्दुस्तान ६५ हजार छपता है। मैं उसके सम्पादक को लिख दिया है कि मैं बुन्देलखण्ड-अब्द के लिए भरपूर मन्त्र दूंगा। आप लोग भी ऐसा आश्वासन दें।



आप कौन सी पुस्तक भज रहे थे ? वह नहीं मिली । श्री द्वारिका जा  
का मेरा प्रणाम कहिए ।

कुण्डेश्वर विद्यालय में श्री रमिया जी का Transfer हो गया है ।  
यह एक दुर्घटना है । मेरा स्वास्थ्य माध्याह्नक ठीक चल रहा है । जमाष्टमी  
पर मधुरा पहुँचने का निमन्त्रण भाई वृन्दावनराम जी से मिला है । वे ब्रजभागी  
गुरु निवास रहे हैं ।

ब्रज भारती आपका मिलती है या नहीं ? उस मैला का काम चर्चित  
हो गया है क्या ? भाई मयदेव ने उसकी प्रति भेजा नहीं । मित्र जी की  
व्याम जी विषयक पुस्तक मिलती हो चुकी है ?

विनीत

बनारसीदास

श्री राजेन्द्र रजन एम ए को लिखा हुआ पत्र

( १८८ )

पौरोजाबाद

५ ११ ७०

प्रिय रजन जी,

पालासन । बाबू वृन्दावनराम जी का एक अभिनन्दन ग्रन्थ अवश्य भेंट  
किया जाय, यह प्रस्ताव भाई अमृतनाथ जी ने किया था और मैं अपना  
हार्दिक समर्थन किया है । उस ग्रन्थ में किस प्रकार का उत्तम तथा चित्र बहुत  
और उत्तम रहे । इस बारे में आप अपनी धिन्नी भेजकर विचार परितुलन कर  
सकते हैं ।

भाई वृन्दावनराम जी का कीर्ति अथवा विनायन की विस्तृत जर्जन  
महो है और आविका के विषय में भी वे विस्तृत निश्चित हैं । हम लोग उनके  
शुभनाम की आश्रय लेकर ब्रजभूमि के विषय में एक मन्त्र ग्रन्थ तैयार कर  
सकते हैं । हमारे ब्रजमठन में जहाँ जहाँ भी जिस किमा क्षेत्र में जननि के कुछ  
विरव दोस्त पड़े उन्हें सचित कर उन्हें पन्नचित करना है । यह मन में  
विचार इस समय आ रहा है, उन्हें बिना किसी क्रम के—छाट कर का घरात  
किय बिना—यहाँ निश्चित है ।

मरा पन्ना विचार तो यह है कि मधुरा, आगरा एग, मनपुरी,  
अलीगढ़ तथा इटावा इन छे जिला के भिन्न भिन्न भागों का सर्वे (सर्वेक्षण)  
करा दिया जाय । जिस किम स्थान पर कौन कौन माट्टियक मस्या—

पुस्तकालय इत्यादि—काम कर रही है उनका सक्षिप्त रैकडें तो इस ग्रन्थ में दिया ही जाना चाहिये ।

मेरा दूसरा विचार यह है कि स्थानीय विद्यालयों की पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग जनपदीय विषयों के लिये किया जा सकता है । मेरा तीसरा विचार यह है कि अध्यापकों तथा विद्यार्थियों की टोलियां बस त त्रुटि में ब्रज मण्डल के भिन्न भिन्न स्थानों की यात्रा करके उनके बारे में सचिन लेख लिखें छत्तेसर [ जिला आगरा ] में भूमि कटन को रोकने के लिये जो सफल प्रयोग किया गया है—जंगल में जो मगल उपस्थित कर दिया गया है—उसका ज्ञान तो ब्रजभूमि के प्रत्येक छात्र छाना का होना ही चाहिये ।

आगरे से ८ मील दूर श्री राजाबाद [ श्री प्रताप नारायण अग्रवाल ] का जो उपवन है वह भी एक तीर्थ स्थल माने जाने योग्य है । उसमें ६ हजार पेड़ तो केवल आमों के ही हैं और कई फराग तक जामुन के पेड़ ही पड़ हैं । मैं दो बार उसकी तीर्थयात्रा कर चुका हूँ । सूर कुटी तो तीर्थ स्थल बन ही चुकी है ।

होलीपुरा तथा कोटला के कालेज भी शिक्षा सम्बन्धी तीर्थ मान जा सकते हैं । मैंने दोनों के ही दशन किये हैं और उनमें प्रभावित हुआ हूँ । होलीपुरा का कालेज तो एक ऐसे क्षण में स्थित है जो पच्चीस वर्ष पहले बिल्कुल ही उपेक्षित था ।

पर हम शिक्षा तथा साहित्य के साथ साथ उद्योग छत्रों की ओर भी ध्यान देना है । फीरोजाबाद के काँच के व्यापार अथवा अलीगढ़ के साले चादू इत्यादि के व्यापार को भुलाया नहीं जा सकता । हम लोग जा अपने को साहित्यिक कहते हैं उद्योग इत्यादि की प्रायः उपेक्षा ही करते हैं । फीरोजाबाद निवासी होने पर भी हम इस नगर के व्यवसाय के बारे में बहुत कम जानते हैं । इस विषय पर श्री बालकृष्ण गुप्त न रेडियो पर जो वार्ता दी थी, उसे सुनकर हम आश्चर्य हुआ था, यद्यपि वह वार्ता हममें अघूरी ही सुनी थी । आगरे के श्री भार्गव जी के उद्योग की एक शलक ही हमने देखी थी ।

प्रवासी ब्रजवासियों को भी हम न भूलें । कलकत्ता बम्बई इत्यादि में बस कर ब्रजवासियों का जा उन्नति की है उसका लेखा जोखा भी हमारे पास रहना चाहिये । भाई मधुसूदन चतुर्वेदी सुदूर हैदराबाद में बड़ा उपयोगी काम कर रहे हैं । ब्रज की पत्र पत्रिकाएँ ब्रज के कवि, ब्रज के साहित्यिक और चित्रकार इत्यादि विषयों पर भी शोधपूर्ण लेखों का संग्रह हम करना ही है ।

आचार्य प्रमुत्त जी ब्रह्मचारी के महत्वपूर्ण काय से हमारे कितने छात्र परिचित हैं ? स्वर्गीय हरदयानुमिह तथा कौण्डिन्य जी के जीवन के विषय में बहुत कम लोग जानते हैं। और हमारी ब्रजभाषा तो कभी राष्ट्रभाषा रहे चुकी है और उसमें कविता करने वाले भिन्न भिन्न प्रदमा में उत्पन्न हुए हैं।

ब्रजभूमि के खयालवाला लोगों को भी भुलाना नहीं होगा। सुर्ज के एक प्रसिद्ध खयालवाले—गायक उनका शुभनाम रचित था—न कहीं अन्ध गिद्य सँवार किया थे। फीरोजाबाद के श्रीयुक्त नैकाम ने उन्हीं में प्रेरणा ली थी। हम प्रेम में सबकी स्पर्शशोर तथा पत्रालाल को कौन भूल सकता है। भाई अयोध्याप्रसाद जी पाठक तो खयालवाला की मदन की प्रधान थे।

ब्रजभूमि मल विद्या के विशेषज्ञों—पहनवाना—का भी केंद्र रहा है। बकौल बल्लभ गुरु स्वयं भगवान् कृष्ण इस विषय के आचार्य थे और सुप्रसिद्ध पहलवान गामा भी प्राइवेट तौर पर उन्हें अपना गुरु मानते थे।

गायका के विषय में यह मदन विद्या स्थान रखता है। ब्रज की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक उन्नति के विषय में भाद प्रमुत्त जी मानते थे काय अत्यन्त प्रशंसनीय है।

पादार्थ ग्रन्थ तो एक प्रकार से ब्रज का एक विश्व काय ही बन गया था। डाक्टर सत्यनारायण का काय भी बहुत प्रशंसनीय रहा है और श्री कृष्णानन्द बाजपेयी जी का भी। अभी बहुत से यों हम करने हैं—

जब घाँसपुर में मदनारायण कविरत्न के स्मारक का निर्माण। श्रीधर पाठक की जीनरी भी विस्तृत उपनिषद् ली रखी है। हमारे लिए यह घाँस लज्जा की बात है कि फीरोजाबाद में भी जहाँ के वे छात्र थे, पाठक जी का कोई भी स्मारक नहीं।

इसके बाद मदन मदनारायण अग्रवाल ने समाज सेवा के जो काय किये हैं उनका भी थोड़ा थोड़ा वृत्तचित्रग्रन्थ में रहे। स्टाव का ब्रज में हमने शुद्ध सेवा की भावना में ही शामिल किया है और बुनारगढ़ के एक भाग में तो ब्रजभाषा बोली भी जाती है। आचार्यवर जीवनान्त जी नगरवाला के विषय में स्मृति-ग्रन्थ की आयाजना बन चुकी है।

ब्रज की सर्वांगीण उन्नति के लिए बागियों कायजनाओं के पारम्परिक सहयोग की आवश्यकता है। यह जनप्रीय कार्य केवल सुविधा के खयाल में ( अपनी सीमित शक्तियाँ पर ध्यान दत्त हुए ) किया जाना चाहिये। प्रथमतः हम सम्पूर्ण भारतवर्ष को ही अपने हृदय में सर्वोच्च स्थान देना है—उमक

समग्र रूप की ही आराधना करनी है—और अपने जनपद की सेवा भी वस्तुतः उसी की मेज़ा है। हम लोग तो 'बगुर्छव नुटम्बवम्' की नीति के अनुयायी हैं इसलिए क्षुद्र प्रान्तीय भावना को कभी भी अपने हृदय में स्थान दे ही नहीं सकते। विश्व विख्यात रूसी लेखक गोर्की का कथन था कि हर एक जनपद की एक आत्मा होती है। हमें ब्रज की आत्मा को पहचानना है।

और ससार के सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखक चम्बर का कहना था "यदि प्रत्येक आदमी उस भूखंड को [ जमीन के उस टुकड़े को ] जो उसे मिला हुआ है सुन्दर बना दे तो यह विश्व कितना सुन्दर बन सकता है।" ब्रजभूमि के प्रत्येक छोटे से छोटे स्थल को हमें सुन्दर बनाना है। आचार्य विनोबा जी ने घोषणा की थी "आओ हम अपने प्रत्येक ग्राम को गोकुल बनायें" हम ब्रजवासियों के सामने यही एक महान् काम करने को पड़ा है।

विनीत

बनारसीदास

श्री गणेश चौबे पो० बगरी (चम्पारन) को लिखे गये पत्र

( २०० )

टीकमगढ़,

१३.६.४६

प्रियवर,

बन्दे ! कृतज्ञ होऊँगा यदि आप कृपाकर साथ के लेख के विषय में अपनी सम्मति निख भेजने का कष्ट स्वीकार करें।

ब्रजसाहित्य मंडल ने एक जनपदीय कार्यक्रम बनाया है उसकी एक प्रति आप 'ब्रजभारती' कार्यालय मथुरा से भगा लीजिये, और भोजपुरी भाषा के संगठन के लिये उसने आवश्यक अंश ले सकते हैं। आशा है कि आप अब स्वस्थ होंगे।

विनीत

बनारसीदास

( २०१ )

कुण्डरवर

टीकमगढ़

१३.१.४६

प्रियवर

बन्दे ! कृपापत्र के लिए कृतज्ञ हूँ। बापू के एक पत्र की प्रतिलिपि आपकी भेंट है। आप उस भेंट के पूरा अधिकारी हैं, क्योंकि आप उस मार्ग के

पथिक बन रहे हैं, जिसकी ओर बापू न इशारा किया था। पर एक प्रश्न में पूछना चाहता हूँ। क्या खेती में किया हुआ नागरिक श्रम—यदि उमरा माना अधिक हो जाय—मस्तिष्क पर हानिकारक प्रभाव तो नहीं डालता? वागजानी और साहित्य का भी Emerson नहीं मिला पाता था, पर यही और साहित्य तो और भी कठिन है। पर यही बापू आज तो हमें ग्रामा में ही साहित्य पैदा करना है। तन्त्र में अपन को उपयुक्त नहीं पाना। मुझे तो सर्वोत्तम मानसिक भोजन नित्य प्रति चाहिये। अच्छे से अच्छे अंग्रेजी ग्रन्थ आत ही रहने चाहिये, यद्यपि मेरे प्रिय ग्रन्थकार ७, ८ से अधिक नहीं।

आप मरी रचनाओं के लिये विध्यवाणी के ग्राहक बन हैं, इसलिये मेरी जिम्मेवारी और भी बढ़ जाती है। अपन कुछ लेखा की प्रतियाँ भज्जगा।

विध्यवाणी का स्थल गांधी अछू निगानना है। उमी में व्यस्त हैं। कभी अतजनपनीय सम्मनन करना है। उमम ब्रज, भाजपुर चुन्तलखंड, मालवा इत्यादि के प्रतिनिधि चुनान हैं। दक्षिण वर अवसर मिलता है। शप फिर किसी पत्र में।

बिनीत  
बनारसीदास

( २०२ )

टीपमगढ़  
२६ ७ ४६

प्रियवर,

बन्ने। १८ ता० का कृपापत्र मिला। उसमें कुछ अंशों का टांग कराने समानशील लेखकों तक आपके नाम तथा पत्र के साथ पहुँचा दूँगा। निम्नलिखित आपका काय अत्यन्त प्रशंसनीय है। प्रकाशन मिलता इस समय तो कठिन ही है। वस मुझे उस क्षेत्र का पता भी नहीं। क्या सम्मनन करने आपका एक ग्रन्थ न ले सकेंगे? यदि आप भगवन्तिन राट्टन माहुरायन जी से प्रायना करें तो शायद काम बन जाय। अद्वेय रहन जा का भी दिग्ग मकत है। यदि आप अपन बार में कुछ नात्म भज दें—कच में काम प्रारम्भ किया, कितना कठिनाइयाँ के साथ में में निवतना पडा इत्यादि इत्यादि ता किसी पत्र में भी कुछ दिग्ग मकता है। साहित्यिकों की कठिनाई में मना भौति जानना है। मैं स्वयं १८१० में निवृत्त रहा हूँ। और मर मागन भी व मज कठिनाई विद्यमान हैं। पर हम निम्न नही हारनी है। पारम्परिक सहयोग तथा सोहान का यदि

श्री गणेश धीरे धी० बगरी (चम्पारन) को लिखे गये पत्र 3928 २४६

हम स्थापित कर सकें ता जीवन म कुछ सफलता भी अधिक मिलेगी और आनन्द की भी वृद्धि होगी । विस्तार से फिर लिखूंगा ।

बनारसीदास

( २०३ )

फीरोजाबाद

२१-१-६७

प्रियवर,

प्रणाम ! आपका कृपापत्र बहुत दिना से नहीं मिला । भाई जगदीश प्रसाद जी ने कभी कभी आपके दिस्ती पहुचने की बात लिखी थी । अन्तर्जन प्रणोय परिपद के पुनरुद्धार करने की जरूरत है । आपको शायद पता ही होगा कि मैंने उसकी स्थापना हायरस के अजसाहित्य भंडस के अधिवेशन पर कराई थी । लाख कथाओं के सम्पादन का काय कहां तक अग्रसर हुआ ? आप, डा० श्याम परमार, जगदीश क्षत्रवर्दी गौरी शङ्कर द्विवेदी, राकेश जी प्रभृति मिलकर जनपदीय कार्यक्रम को आगे बढ़ावें तो उत्तम हा । भोजपुरी भाषा मे कहीं कुछ हो रहा है क्या ? शायन राजस्थानी लोग सबसे आगे हैं । अवधी वाले क्या कुछ कर रहे हैं ? डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की मृत्यु सबमुच बड़ी दुःखटना है । मैं उन पर लेख साप्ताहिक हिन्दुस्तान मे लिखा था । आज उसे अग्र पत्रा को भी भेजा है । उनके १०० एक सौ से अधिक पत्र मैंने टाइप करा लिये थे और उन्हें सम्मेलन परिषद मे छपने के लिये भेज दिया है । कसकते से निकलने वाले Folk lore के मैं दशन भी नहीं किये और न करेट इन्डियन प्रेम के । भाई कृष्णानन्द गुप्त ( पता—गरीठा जिला साँसी ) ने लोकवार्ता के चार अङ्क निकाले थे और इस विषय पर काफी ममासा इकट्ठा किया था । कोई न कोई व्यक्ति ऐसा होना चाहिये जो अपने को केन्द्र बनाकर इस विषय के अग्र लेखकों से निकट सम्पर्क रखे ।

विनीत

बनारसीदास

साहित्याचार्य श्री श्यामसुन्दर वादल को लिखे गये पत्र

( २०४ )

टीकमगढ

७ ११ ४६

प्रिय वादल जी,

सादर प्रणाम । कृपापत्र मिला । थड्डेय गुरु जी का जीवन चरित तो वर्षाग्रन्थ के लिये भेज ही दिया गया है । अग्र कोई चीज जो अभी कही छपी

न हो भेजिय । श्री सम्पूर्णानन्द जी की शिक्षा सम्बन्धी नीति से मर अनेक मित्र जा इस विषय के जाता हैं, अमनुष्ट हैं । मैं उन्हें निम्ना भी कि वे निम्नछोच उनकी आलोचना करें, मैं प्रशान्ति कर दूंगा । पर इस अवसर को उन्होंने ही अनुपयुक्त समझा । मरा कवन एक ही मिद्वान इस बार म रहा है वह यह कि इस प्रकार कुछ अच्छे लेखा का मग्रह हा जायगा । सम्पूर्णानन्द जी से अपना सम्बन्ध मन् १८१५ स है पर अभी तक वह धरतू सम्बन्ध ही रहा है । हम लोषा के राजनतिक विचारा म बहुत अंतर है । व शासक हैं और मैं शासक मात्र का विराधी । कवि का आत्मघात नामक लेख कृपया पन् सीजिय ।

चतुरन्ज जी यहाँ नहीं पधारे इसका मुप पठनावा रहगा । स्वामी जी की सेवा म मरा प्रणाम निवदन काजिय । इधर मैं व्यस्त रहा हूँ ।

बनारसीदास

( २०५ )

१२३ नॉय ऐवेयू

नई दिल्ली

२० ५ ६५

प्रिय दादल जी,

प्रणाम । आचार्य श्री पद्मिह जा अपनी प्रत्येक पुस्तक की २००-२५० प्रतिर्या भेंट में द दन थ । उनका कवन था कि पुस्तक पन्न क अधिकारी नहीं पात और जो खरीन्त हैं व अधिकारी नहीं हान । न्य मिद्वान्त का आप भी पासन कीजिय—पूजनया न सही भान ही सही ।

आपकी पुस्तक की कम मैं एक प्रति श्री विष्णु प्रभाकर जी का और एक श्री देवराज जी दिना का भेंट कर गी और सम्मति के निय भी अनुरोध कर लिया । मैं भी समय मिलन ही कुछ निम्नगा । इस समय ता अत्यन्त व्यस्त हूँ ।

विनान

बनारसादास

( २०६ )

६६ नॉय ऐवेयू

नई दिल्ली

२१ ४ ६८

प्रिय दादल जी,

प्रणाम । दीवान सान्ध का पूण अभिनन्दन ग्रन्थ मिला । निम्न यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति है और आप तथा आपके साथी हान्कि बचाई व

पात्र हैं। जनपदीय खण्ड को मैं अभिनन्दन ग्रन्थ से कम गौरवयुक्त नहीं मानता। सफन और साधन सम्पन्न व्यक्तियों का अभिनन्दन करना आसान है पर, उन उपेक्षित 'तथाकथित' छोटे छोटे कार्यकर्ताओं को स्मरण करना कठिन है, जो नींव की पत्थर की तरह दबे पड़े हैं। कई दिन में ज्वर आ रहा है। मलेरिया है। कोई बिता की बात नहीं।

स्व० गहोद खरे जी को भी आपने याद कर लिया है, यह देखकर सतोष होता है। आप कुण्डेश्वर को भी नहीं भूले। अमर्य सैनिका को श्रद्धाजलि अर्पित करके आपन निम्न-देह एक स्वस्थ परम्परा कायम की है आशा है कि कभी मुझे भी दीवान साहब के दर्शन करने का सुअवसर मिलेगा।

विनीत  
बनारसीदास

डा० विष्णुदत्त पाठक को लिखे गये पत्र

( २०७ )

फीरोजाबाद  
२५ ६ ७०

प्रिय पाठक जी,

प्रणाम। आपका १६ ता० का कृपापत्र यथा समय मिल गया था पर वह कहीं घर का उभर पड़ गया और बल ही तन्नाश करने पर मिला है। विलम्ब के निय क्षमा प्रार्थी हूँ।

आपके काठ को मैं बधुवर वृन्दावनदास जी बी ए एल-एल बी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल मधुरा को भेज रहा हूँ। वे आपके काय में भरपूर सहयोग देंगे। मैं तो ७८ की वय में retire हो चुका हूँ बहुत कम काम कर पाता हूँ। वने भी अपनी ब्रजभूमि में ५० वर्ष अलग रहने के कारण मैं अपने जनपद तथा अपनी मातृभाषा की अधिक सेवा नहीं कर सका। आप अवश्यमेव भरतपुर, जनपद के लिय यथाशक्ति काय करें। श्री वृन्दावनदास जी इस समय हमारी ब्रजभूमि के सर्वश्रेष्ठ कायकर्ता हैं। उनको पूरा-पूरा सहयोग दीजिये।

स्व० डा० वामुदेवशरण अग्रवाल की पुस्तक पृथिवी पुत्र तो आपने देखी ही होगी। रामप्रसाद एण्ड सन्स पुस्तक विक्रेता हास्पिटल रोड आगरा से ५) रुपये में मिलती है। उसमें वर्णित जनपदीय कार्यक्रम को आप भरतपुर जनपद में लागू करें।



कबोत गाँवों Every region has its soul भरतपुर की भी एक आत्मा है। उस जागृत कीजिये। मैं ११ बार भरतपुर की यात्रा कर चुका हूँ। एक बार तो मम्मनन म दूसरी बार आचार्य गिदबानी क साथ। उन मम्मनन में कबीर खोदनाथ ठाकुर भी शामिल हुए थे।

बिनात

बनारसादास

पुनश्च—

मैं ज्यादा निख नहीं पाता।

( २०८ )

कीरोत्रादास

१६-७-७०

प्रिय पाठक जी,

प्रणाम। आपका कार्ड कब मिला। मुझे यह अधिकार तो है नहीं कि आपका कुछ उत्तर दे सकूँ। हाँ इतना अवश्य निम्न सकता हूँ कि यदि मैं आपकी नियति में हाथ तो क्या करता।

मैं अपने विद्यार्थियों का स्व० बामुन्वाण अग्रवाल क महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'वृषिवी पुत्र मूल्य ५) पना—गमप्रमाण एण्ड सत्य ह्यमिटेड राउ आरर को पन्न का आग्रह करता। अपने प्रत्येक छात्र में निश्चय करता कि वे जनपनीय कार्यक्रम के अधीन अपने-अपने स्थानों में कुछ काम तो अवश्य करें—नाकवाता सग्रह ग्रामीण कहानियाँ लोकान्ति सग्रह इत्यादि।

मधुकर का जनपद अष्टु शायद डा० सयद्र क यही पन्न का मिल जाय। उसकी बहुत सी प्रतिमाँ मैंने जयपुर मम्मनन पर वितरित की थी। अब वह सबका अप्राप्य हो गया है—यहाँ तक कि मास्का के डा० चर्नीदास का उसकी मरका निम्न करनी पड़ी।

भरतपुर का साहित्यिक इतिहास लिखा जा सकता है। मम्मनन स्व० मयागड्डर यात्रिक का पुस्तकालय तो हिंदू विश्व विद्यालय या ना प्र मभा का न दिया गया था नर्तों तो बहुत सी सामग्री वहीं मिल जाना। प्राचिन जीवनदास यात्रिक आगरा कालक्रम मर अध्यापक थे। अब वे हिंदू यूनावर्मिनी में retired life व्यतीत कर रहे हैं। स्व० मयागड्डर जी उनका काका थे।

स्व० जगन्नाथदास अधिकारी का भी मैं जानता था। कबीर या खोदनाथ ठाकुर हिंसा सम्मनन के केवल एक ही अधिकार में गये थे—याना भरतपुर क मम्मनन में।

भरतपुर की साहित्य समिति बहुत पुरानी है—शायद १८११ के करीब उसकी स्थापना हुई थी। वहाँ शायद कुछ पुराने Record सुरक्षित हों। ब्रजभारती के पुराने अङ्क ( जितने भी मिल सकें ) खरीद लीजिये। ब्रजभूमि का हमें पुनर्निर्माण करना है। ब्रजमण्डल में जहाँ कहीं जो कुछ अच्छा काय हो उसका रिकार्ड आप रखिये। अधिक क्या लिखू।

श्री प्रभुदयाल भीतल जी के विषय में एक ग्रन्थ शीघ्र ही छपेगा। डा० पचौरी ने उसे लिखा है। डैम्पियर पार्क मथुरा में भीतल जी रहते हैं। उनसे पता लग जायगा।

विनीत  
बनारसीदास

श्री त्रिलोकीनाथ ब्रजवाल को लिखा गया पत्र

( २०६ )

नई दिल्ली २२  
२६ २ ७१

प्रियवर,

बंदे। आपका कृपापत्र मिला। अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। आप ब्रज जनपद की साहित्यिक समस्याओं के विषय में एक Reference Book निकालना चाहते हैं यह पढ़कर हृष हुआ। यद्यपि मैं ७६ वीं वर्ष में अधिक काम नहीं कर सकता तथापि जो थोड़ी सी सेवा मुझसे बन पड़ेगी स्वस्थ होने पर अवश्य करूँगा।

किसी भी यज्ञ को प्रारम्भ करने से पहले उपयुक्त साधन जुटा लेने चाहिए। भले ही देर लग। सदैम ग्रन्थ के लिए आप विज्ञापन भी लें ताकि कुछ खर्च तो उनसे निकले। चित्र भी ग्रन्थ में काफी हान चाहिए। उसे आप ब्रज की Directory ही बना दें। क्यों न उसमें उद्योग धंधा पर भी लेख रहें? मेरा सुझाव है कि यदि ब्रजमण्डल की Directory निकाली जाय तो वह शीघ्र खप सकती है।

श्री गणेशलाल शर्मा 'प्राणेश' एम ए ने मेरे आग्रह पर फीरोजाबाद परिचय नामक ग्रन्थ निकाला था। मूल्य था ५) ६०। इस ग्रन्थ में उन्होंने काफी विज्ञापन दिए थे, जिससे उन्हें अथ प्राप्ति भी हुई थी। साहित्य सेवियों के परिचय वाला ग्रन्थ बिकेगा नहीं।

ब्रज का माहित्यिक तथा सांस्कृतिक सर्वेक्षण कराइये। इटावे को भी ब्रज में ही शामिल कीजिए। इस ग्रन्थ के लिए परिश्रम काफी करना पड़ेगा। धूमना भी पड़ेगा। पुस्तक छपे तब छपे, पर मसाला (Matter) तो सफ़ा कर ही लीजिए।

ब्रज जनपद की सर्वांगीण उन्नति हमारा लक्ष्य होना चाहिए। स्व० डा० दासुदेवगिरण अग्रवाल का ग्रन्थ 'पृथिवी पुत्र' हमारे लिए बाइबिल है। अधिक क्या लिखू।

बनारसीदास

श्री उमाशङ्कर जी बोक्षित को लिखा गया पत्र

( २१० )

कीरोजाबाद

१२ १० ६७

प्रिय बोक्षित जी,

प्रणाम। कृपापत्र मिला। ब्रजभाषा की परीक्षाओं के प्रारम्भ करने के पहिले उसके सभी पहलुओं पर विचार कर लेना है। इन परीक्षाओं के पाम करने वाला का कुछ प्रलाभन तो हमें नहीं सकत और आज का विद्यार्थी वग इतना स्वार्थी बन गया है कि सबका निस्वाय भाव से वह कोद काम—चाहे वह उनकी बौद्धिक उन्नति का ही क्यों न हो—करेगा नहीं। यदि ब्रजभाषा से प्रेम उत्पन्न हो जाय और ब्रज जनपद में पर्याप्त साहित्यिक तथा सांस्कृतिक जाग्रति पैदा हो जाय तो इन परीक्षाओं का गौरव भी धीरे धीरे बढ़ जायगा। इन परीक्षाओं से कुछ हानि तो होन से रही।

“अल्पं वि अल्पं धर्मस्य ज्ञायते महतो भयात्।

ब्रजभाषा की परीक्षाओं में उत्ताण व्यक्तियों को यदि प्राइवट सम्पाठों कुछ तरजीह दें तो भी उनकी लोकप्रियता बढ़ सकती है। इतना लाभ तो तुरन्त ही होना शुरू हो जायगा कि विद्यार्थी ब्रजभाषा के ग्रन्थ पढ़ने लगेंगे।

१६ अप्रैल १९६८ को सत्यनारायण बविरत्न की ५० वीं श्राद्धतिथि है। क्या न उस समय इस पुण्य काय का श्री गणेश किया जाय। कृपया यह पत्र श्री कृष्णवन्धन जी का भा दिखाना दीजिये। उन्हें मेरा प्रणाम कहिए।

बिनीत

बनारसीदास

## श्री कृष्णगोपाल जी चौधरी ईटावा को लिखा गया पत्र

( २११ )

फोराजाबाद

२६-११ ७०

प्रिय चौधरी जी,

प्रणाम । विस्तृत पत्र के लिए कृतज्ञ हूँ । मेरा तो खयाल है कि उपवन लगाकर आपने जो महत्वपूर्ण कार्य किया था वह किसी भी हालत में साहित्यिक कार्य से कम गौरवजनक नहीं था । Perhaps that was of much greater importance than any literary work साहित्य क्षेत्र और कृषि क्षेत्र दोनों को पूरा पूरा समय चाहिये और बहुत कम व्यक्ति ऐसे हुए हैं जो दोनों काम साथ साथ कर सकते थे । एडवर्ड कारपेण्टर उन व्यक्तियों में एक थे मलाबार फार्म के लेखक ने भी वह करिश्मा कर दियाया था । एमसन ऐसा न कर सके । श्रीराम शर्मा ने निस्सन्देह कुछ हद तक किया ।

महात्मा जी के एक पत्र की नकल भिजवाऊँगा उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया था कि खेती की ओर वे बहुत कम ध्यान दे सके । इस कारण उन्होंने अपने को 'मूरख' कहा था । That letter he wrote to Mr. Tota Ram Sanadhya It has been in my possession all along and will now find its rightful place in the National archives

शिशु भवन' को प्रभावशाली साहित्यिक केंद्र बनाइये । अपने घर पर ही आप एक छोटा सा संग्रहालय क्यों नहीं कायम कर लेते ? I begin my 79th year on Dec 24th and there is not much time left to me, but all the same I am determined to sow as many seeds of good ideas as possible भाई श्री सत्यनारायण चतुर्वेदी एक विभूति हैं— a most remarkable personality indeed Write out an article about him please—

अपने लेखों की प्रति श्री वृंदावनदास जी—ब्रजसाहित्य मंडल को भी भेजते रहिये । वे हमारे साहित्यिक कमिश्नर हैं ।

विनोद

बनारसीबास

## डा० प्रभाकर माधवे को लिखा गया पत्र

( २१२ )

१० १-७१

प्रिय माधवे जी,

मैं आपको हार्नि बघाई का पत्र भेजने वाला ही था कि आपका काह मिल गया। निम्नलिखित कार्यकारिणी ने आपका नियुक्त करके बहुत बुद्धिमानी का काम किया है। हिन्दी बानों का भी इसमें परम मनाप होना चाहिये।

मैं चाहता हूँ कि एक बनिया लेखत्री कृपानाथी जी का प्रियम में निम्न। शान्ति निवेदन के त्तिनों में मैं उनमें परिचित हूँ और उनके सहायकदार, साहित्यिक योग्यता तथा क्रियात्मक बन्धना शक्ति का कायम भी हूँ। उन्होंने अकादमी की जो सेवा की है उस पर अविचार पूर्वक बंधुवर हूँ प्र द्वितीय तथा आर ही लिख सकता हूँ—क्योंकि इधर ७ वर्ष में मैं त्तिनी में दूर ही रहा हूँ—पर पुरान परिचितता में मैं भी एक हूँ। मेरा मवप्रयम कतघ्य भी है।

आप जानते ही हैं कि भर विचार राष्ट्रभाषा के विषय में अब सांगों के विचारों में मिले हैं। भारत की सभी मुख्य मुख्य भाषाओं का मैं राष्ट्रभाषा मानता हूँ और किसी भी हानत में किसी पर भी हिन्दी सामना नहीं चाहता। गुस्से के व मल्ल अब भी भर बाना में गुँज रहा है—‘Why do you hang the sword of Hindi over our heads? Produce great literature and we will all learn Hindi’

हिन्दी जगत् का बनमान नृत्त्व बहुत ही गहन हाथों में रहा है। They have made a mess of whole thing

विनम्रता में और सबकी सेवा करने हुए ही हिन्दी सभी भाषाओं में अग्रणी बन सकती था पर इतनी समझदारि त्तिनी बातों ने नहीं लिखाई। एक बार श्री रामकृष्णन् की काठी पर Currents & Cross Currents of Hindi Literature इस विषय पर मुक्त अग्रेश में बानना पड़ा था। दरअसल भाषण तो आचार्य नरद्वय जी का बना था, पर व बामार पढ़ गय और मोनाना आजात ने प्रा० हुमायूँ कबिर का भेजकर मुझ हुक्म दिया कि मैं ही बोनु क्योंकि मैं ‘right tone’ दे सकता था। प्रा० कबिर ने भर पर आकर मोनाना का मह आदग मुनाया था।

मत्ररून मुझे बानना पड़ा। मनावनानिक त्तिनी पर मैंने अब राष्ट्रीय भाषाओं की जो खानवर प्रगता की मगदी गुजगनी बगना और उठू तब

की ओर अन्त में सक्षम में हिन्दी के विषय में भी विनम्रतापूर्वक आशाप्रद दो चार बातें कह दी। हिन्दी वाले बार व्यक्ति उस भीटिङ्ग में मौजूद थे। उनमें से एक ने राष्ट्रकवि मयिली शरण जी गुप्त को लिख दिया “चीन जी ने हिन्दी की लुटिया दुनो दी।” हम लागान अपनी मूखता से सुनीति बाबू जैसे हिन्दी समर्थक की सहानुभूति खो दी। मैंने सुना था कि अहमदाबाद के श्री जोशी जी भी हिन्दी वाला की स्वाधप्रियता से कुछ खिन्न से हो गये हैं। हम लोग पड़पत करके उच्च पद पर हिन्दी वालों को ही ठिठला देना चाहते हैं।

अंग्रेजी के तज्ञा का उखाड़ना जैसी मूखतापूर्ण कायवाही जो लोग कर सकते हैं उनकी अरल पर तरस आता है। आज से तीस बत्तीस वर्ष पहले मैंने एक लेख लिखा था कि हम हिन्दी प्रचार का काम छोड़ ही देना चाहिये। उस लेख के विरोध में श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू तथा पूज्य टडन जी ने भी लिखा था। पर मैं समझता हूँ कि मेरी बात गलत नहीं थी। श्रेष्ठ साहित्य की सृष्टि ही हम लोगों का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। शेष बातें अन्य भाषा वाला पर छोड़ देनी चाहिए। हिन्दी भाषा भाषियों का ममूह इतना बड़ा है—इतना साधन सम्पन्न तथा इतना शक्तिशाली कि वह साहित्य सृष्टि के मामले में करिश्मा—miracle कर सकता है। पर जैसा कि मैं लिख चुका हूँ कि नासमझ अदूरदर्शी तथा आत्म केन्द्रित नेताओं ने हिन्दी का कचूमर निकाल दिया है। और सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात यह है कि हिन्दी वाले चुपचाप इन अनाचार का सहन कर रहे हैं।

७६ वीं वर्ष में मैं तो Retire हो चुका। कुछ कर धर नहीं सकता फिर भी अपनी बात आपस निवेदन कर दी है For you cannot misunderstand me जब आप आगेरे थे तभी से आपस परिचय है। आप यहाँ पधार भी चुक हैं। फरवरी के प्रारम्भ में निली आने का विचार है।

बनारसीदास

पुनश्च—

इतनी लम्बी सिट्टी भेजने के बाद मुझे Pliny का यह वाक्य याद आ गया—“I have not time to write you a short letter therefore I have written you a long one”

प० झावरमल्ल जी शर्मा को लिखा गया पत्र

( २१३ )

फीरोजाबाद

२० ६ ७०

श्रद्धेय पंडित झावरमल्ल जी,

सादर प्रणाम ! बहुत दिनों बाद आपका विस्तृत कृपापत्र मिला।

तदर्थ कृतज्ञ हूँ। २० अगस्त १९६६ को मेरा आपरेशन हुआ था और डाक्टरों

का आदेश था कि मैं ८५ महीने विधायक बनूँ, पर अपनी उम्र आन्तों के कारण वैसा कर नहीं सका। प्रातःकाल ८, ४॥ बज उठकर चाय बनाकर पाना और तलाक़ान् कुछ स्वाध्याय और फिर पत्र व्यवहार का व्ययन। किसी उठूँ कवि न कहा था—

“चंद तस्वारे सुनाँ चंद हसीनों के पुनून।

बार भरने के मेरे घर से ये सामाँ निकले ॥

भन ही उस उठूँ जायर न अपन विषय म कुछ अनुक्ति की हो पर मर बारे म बटूँ कविता मानद आन मच मिद्ध हानी है। नै गुनाँ तथा हमीन क अथ मर यनी थोष्ट पुरुष तथा कवि और मार्गिक हा गय हैं। १० १४ मद्रूका म निर्गटव तथा पाग भर प है—मवथा अन्वस्थित और चिट्टी पत्रियों म ता कमर क कमर भर हुए हैं। इन सब का विनिवन् प्रीना अयन्त ही कठिन काय है।

नीम जीवन का य् अभिगाप है कि किन्तु न मित्र, ना उम्र म छाट थ, थन जान हैं और उनका थदाजनि अपन करना भी कठिन न जाता है। जा उम्र में बट थ उनका जाना ता स्वभाविक है—यद्यपि अयन्त थप्र—पर छाटा का जाना ता ह्म्य विचारक हा जाता है। पानीवान जी नवीन जा तथा श्रीराम जी छाट थ—यदीं तक कि यदून जी तथा निवपूजन जा भी अनुग्रथ। मुग्गन जी भी उम्र म छाट थ। हमचन्द्र जा भा छाट थ निली क गांधामार्ग में काम करने वाले एक मग्जन गजबन्तुर्गम जा कनकता समाचार में भी काम कर चुक थ और मनें जी क माथ भी अभी स्वगवामी हुए हैं।

परमों स्व० युगिष्ठिर भार्गव की एक पुस्तक मिली है। मस्कति और जनजीवन। व कुन जमा ५८ वष की उम्र म ही परमाव पधार। बटून बन्धिया माया निवत थे। परिचितों म थे। अब मुन भी अपना नाम ममना चाहिय। वहीन नशीर नकवगवादी—

सब टाठ पहा रह आवेगा, जब लाइ चनगा यजारा।

अपना महीर्ण सम्बर्ण काय मैं वगुवर शक्य समवानान मानेर, शोमी तथा श्री रामाग्न विद्यार्थी एन्वारट आनन्मठ मठ का मोप दिया है।

ब्रजमन्त्र का काय वगुवर वृन्दावन्तान जी व मन्त्रापजनक दृष्ट पर कर र है। ह्रीं प्रवामी भाग्याता का काम करने वाला कार्द नग मिता। यापान जी धूम फिर ता आवे, पर उनक काम अवकाश नहीं कि व हम काय का आग बदा सकें।

भाई धृन्दावनदास जी ने अपनी कम्पनी के नाम मुडन शब्द पर कुछ ऐतराज किया था। तब मैंने उन्हें बतलाया कि मजाक मजाक में नवीन जी ने श्राद्ध-अभिनन्दन शब्द के साथ मुडन जाड़ लिया था। जब मैंने उसका मतलब पूछा तो बोले—‘भार ! तुम्हारी कम्पनी बिना घनवानो को मूँडें, चलेगी कैसे ?’

पर मुडन शब्द को साथक तथा यथाथ करना हम लोग के लिये कठिन हो है। पोस्टेज इतना बढ गया है कि चीजाँ को रजिस्ट्री द्वारा भेजना मुश्किल हो गया है। मामूली डाक से भेजने में उडा लिय जाने का खतरा है और रजिस्ट्री में बहुत पैसा खर्च हो जाता है। क्या किया जाय ?

मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि भारत सरकार के नेशनल ओरकाइव्स (राष्ट्रीय अभिलेखागार) में बहुमूल्य पत्र—गांधी रवीन्द्र, शास्त्री और ऐण्डरस ज प्रभृति के—सुरक्षित करा देने चाहिये। वगानिक ढङ्ग पर वही सुरक्षित रह सकते हैं पर न तो जवाहरलाल नेहरू म्यूजियम और न भारत सरकार का वह विभाग उस सामग्री के लिये कुछ भी दे सकता है। अजीब घम सकट में हूँ। खैर भाई हरिश्चन्द्र जी के ४०० पत्रों की ५।५ प्रतिपा टाइप करादी हैं। उनके स्मृति ग्रंथ के लिये कुछ भी नहीं हो सका। श्री सम्पूर्णानन्द स्मृति ग्रंथ के लिये भी कुछ नहीं हुआ। श्री मुखाडिया जी ने रजिस्टर्ड पत्र का उत्तर तब नहीं दिया।

ना प्र मभा वाशी का सम्पूर्णानन्द अङ्क सवथा असतोप जनक है। केवल कुछ पृष्ठ ही उस महापुरुष के बारे में हैं। एक मख मेरे खिलाफ ज़रूर है। मैं अब सब काम छाड़कर विश्राम करना चाहता हूँ पर मन नहीं मानता। हाँ कूर्माचन केसरी बन्नीदत्त जी के सस्मरण, जो मैंने आग्रह करके लिखवाये थे, १० जुलाई तक छप जावेंगे। हैदराबाद में छप रहे हैं। श्री शुक्देव पाण्डे जी ने ६००) रुपय वहा भेजे हैं।

विनीत  
बनारसीवास

पुनश्च—

२१ ६ ७०

कन लू चल रही थी, सो कुछ तबलीफ हो गई और बस पत्र डाकखाने नहीं जा सका। अब बस सोमवार को जावंगा।

मेरा सुझाव है कि थप में दो बार तो हम लोगों को एक एक सप्ताह के लिये मिल ही लेना चाहिये। नवम्बर में दिल्ली का मौसम ठीक रहता है





साधु के रूप में रहा करते थे। उस बृद्धा माता ने जो विलाप किया उसका यणन शब्दों में नहीं किया जा सकता है।

आजाद के पांच भाई बहिन थे ३ भाई और दो बहिन कोई नहीं बचा एक भाई सात वर्ष की उम्र में चला गया, दूसरा पोस्टमन बनकर २०, २१ वर्ष की उम्र में चल बसा, बहिनों में उसी मांग की पथिक हुई और फिर २८ फरवरी १९३१ को आजाद अलफ्रेड पाक इलाहाबाद में शहीद हो गए।

अभागी बृद्धा इस समय ७० वर्ष की है। आजाद के स्वगवास होने पर मिर पट्ट पट्ट कर उसने अपनी एक आँख खोदी थी। आजाद के पिताजी सीताराम जी तिवारी उन्नाव जिले के थे। उनके स्वगवास को भी ग्यारह वर्ष बीत गये। कहीं से कुछ भी सहाय नहीं। यू पी और मध्य भारत की सरकारों ने पच्चीस पच्चीस रुपये महिने की पेंशन देन का स्वीकृति कई महिन पहले से मुम भेज दी थी, पर सरकारी मशीनों की बिसाई के कारण जब तक एक पैसा भी माता जी के पास नहीं पहुँचा।

जरा बल्पना कीजिये उस बुढ़िया की दुदशा की, वे एक ऐसे ग्राम में बौले पर रहती हैं जहाँ मुख्य जन सख्या भीलो और मुसलमानों की बस्ती है। शरीर जजर हो गया है। ज्वर आता है, खाँसी भी है। धूँक वे पुराने खालों की है इसलिये ब्राह्मण के हाथ की ही बनाई रसोई खा सकती है और ब्राह्मण घर उस गाँव में एक ही है। कई दिनों फाँके हो जात हैं। पत्रों में मैं एक लेख छपाया था और उसके कारण जो २५०) रुपये मेरे परिचित मित्र तथा सहृदय पाठकों ने भेजा था उसी से आठ नौ महीने से काम चलता रहा है। भारत के सर्वश्रेष्ठ क्रांतिकारी शहीद की माता जी को अपन जीवन के अंतिम दिन इस प्रकार बिताने पड़े हैं।

उन क्षणों को जब वह बृद्धा अपनी अंतिम सत्तान आजाद की छोटी सी काठरी में विलाप कर रही थी “बेटा तू मुझे अकेला क्यों छोड़ गया,” “नाराज क्या हो गया” न जाने क्या क्या कहती रहीं उनका यह वरुणा क्रन्दन सुनकर हृदय विदीर्ण हुआ जाता था काश उस लिपि की ध्वनि हमारे कुछ शासक भी सुन पाते बड़ी मुश्किल से हम लोग उन्हें धैर्य बधा पाये। उस समय यदि कोई सहृदय बहिन वहाँ होती हम पुरुष लोग तो कठोर हृदय वाले होते हैं।

उस समय माता जी अद्ध विविध अवस्था को पहुँच गई थी कहती थी आजाद यहाँ कहीं होगा। आता क्या नहीं मुझसे मिलता क्यों नहीं मैं तो बड़ी दूर से आई हूँ।

हमार मना बग्न पर भी आजाज ब पुरान साधी मास्टर रत्नारायण जी माना जी का बतमान जान ब कि हम जगत म आजाद न तेंदूवा मारा था, यहाँ ब गिनार धनन थ, यहाँ मैं साइक्स पर उहें साया था, इत्यादि इत्यादि । मानु हृदय की बहु उत्पुक्तता तथा बरगा पूण अनुमय झलक का दमना आमान नहीं था यदि ब आंगू हमार हृदय ब पाप प्रमादा और निवसताओं का घा दन, मास्टर रत्नारायण जी धय बघान हुए बह रहे ॥ ।

मानाजा यह सब आजाद की ही तो भूमि है, यहाँ उती ब तो दशन हो गह है । योन उन भासी भासी माना को समझाता कि हमारा एन अज आजाज हो गया है और उगका बटा चन्द्रशेखर आजाज अमर है और जय उगका मुध्निमुध्नि उन बाना कोई भा नहीं ता हमारी जिनामफी पर वह यकीन भी बम करनी ।

रामन भर मैं यही सोचना रहा कि क्या हमारा एन सचमुच आजाज हो गया है श्री पन्नि जवाहरनाथ जा न भायन अपनी जीवनी आम-चरित में आजाद का जिक्र किया हा आजाज उनम मिनन गया था, यन बान मनु १८३० या ३१ का है उन वृत्तान्त का आप नहूँ अभिनन्दन ग्रन्थ म पढ सीजिय ।

आजाज कहा करत थ कि मर माना पिता ब लिय बम एक एन गानी काफा है ब दशकामिया की भावनाआ म परिचित थ, जानन थ कि उनक बाज उनक माना पिता की छाज खबर लन बाना कोई न होगा और हम लागे ॥ आजाज की भविष्य बाणी को सत्य ही मिट कर लिया ।

एक बार मन म आया कि माना जी का आपक पाम तिली ल आळें और श्री जवाहरनाथ जी ब पास से जाळें, पर हिम्मत न पनी आप तो माता जा की पूरी पूरा सेवा करती पर माना जी का स्वाम्य टान नहीं और हम प्रकार का प्रशंगन मुझ अनुचित भी जेंचा, उनकी जिन्गी ब हम बारन महीन जा बाकी है उहें ब किसी न किसी प्रकार काट हा सेंगा ।

सम्भवन माना जी कुंहेश्वर टीकमगढ भी पघारें पर उमम भी मुन डर लगता है कि वही माग ब कथा म उनकी तमियन और भी खराब न हो जाय ।

क्या हा अच्छा होता यदि हम आजाज के जन्म स्थान पर एक चतूरा हो बनवा दन और उन स्थान पर जहाँ उन्हनि साधना की की कोई म्मारक बनान का आयाजन करत पर किम हम बार ध्यान दन की पुर्मत है ।

और नहीं तो आजाद के सम्मरणा का एक छोटा सा ग्रन्थ तो छप ही जाना चाहिए था ।

आजाद जब जिन थे तो मास्टर रुद्रनारायण जी उनकी सेवा में उपस्थित हुए थे । उस समय उन्होंने अपनी तीन उमली बाँध रखी थी, इस आशा के साथ कि जब कोई आजाद की खबर देगा तो वे उसे खोलेंगी और चलत वक्त उन्होंने मास्टर जी को बठन्नी देते हुए कहा था, इसकी बर्फी खरीदकर मेरे बेटे आजाद को खिला देना, उसे बर्फी बहुत अच्छी लगती है । एमी ही बीतियों स्मृतियाँ हैं जौन उनका संग्रह करे और उनका मूल्य अँक़े और रहा आजाद का स्मारक तो जिस जीवित स्मारक ने आजाद को नौ माह पेट में जीवित रक्खा था उसी की हम रक्षा नहीं कर पा रहे हैं तो ईंट पत्थर की स्मारकों की चर्चा धार बिडवना है, अधिक क्या लिखू ।

विनीत

बनारसीदास

डा० वारान्निकोव लैनिनग्राड को लिखा गया पत्र

२१५ )

कीरोजाबाद

६ १ ७१

प्रियवर,

प्रणाम ! आपका नवम्बर का कृपापत्र ६ जनवरी को मिला । इतनी देर किस कारण हुई पता नहीं । श्री यक्षपाल जी को मैं अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये लिख रहा हूँ । न हो तो समुद्र के रास्त ही भेजें । वैसे श्री वृन्दावनदास जी की ए एल-एल बी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल मथुरा भी भेज सकते हैं । वे बहुत अच्छे काम-वर्ता हैं । उनमें आप सम्पक स्थापित करें ता वे आपके शोध कार्यों में बहुत सहायक सिद्ध होंगे । चर्नीशोव को भी वे बहुत मसाहा भेजते रहे हैं ।

पुत्री के विवाह का शुभ समाचार मिला । उसे मेरा आशीष कहिये । पूज्य माता जी का देहान्त एक वष पूर्व हो गया यह दुःखप्रसू समाचार आपने इतने ज़िना वाद भेजा है । उनका कोई चित्र हो तो जरूर भेजें और उनके सम्मरण भी । अलबत्ते को मेरा आशीर्वाद कहिये ।

अग्नेजी भाषा का भारतीयकरण तथा हिन्दी का अग्नेजीकरण दोनों विषय मनोरञ्जक हैं । उन पर जरूर लिखें । आपने क्यानुसार मैं भी

सत्तगानिक में पत्र व्यवहार करेगा। अब मर हाल भी मृत साजिये। आगरा विश्व विद्यालय में मुझे मरवा अयाचित हो निट की आनखी सम्माननाय उपाधि प्रदान का है—८ निम्म्बर का। उमम पूर्व हिन्दी साहित्य सम्मानन न माहित्य वाक्यप्रति की उपाधि ले थी। मैं इस पर एक तुक्कने की है—

खड़े बढेन की अकल अब घरन लगी हे घास।

फोक्ट म हो निट बने थी बनारसीदास ॥

आज पूरा पिताजी की ममाधि पर जा रामायण का दादा अखिल है उस ममाधि का फाटा टुटया मुझ भक्त शीत्रिय। उनका जीवन चरित अब तक पूरा क्या नहीं किया? उनकी दर क्या कर नी? मरा ७६ वीं वष पिछली २४ निम्म्बर का गुरू हा गई है। गनवष मेरा पोम्पग्रिय Prostrate gland का आवरशन २० अगस्त का हुआ। तपस्वान् मुझ विद्याम करना था पर कर नहीं सका। अब आराम करना चाहता हूँ। एक बार आपके दान की शीययात्रा करन की आवाजा मन में थी, पर अब वह अशक्त कठिन हो गई है। मन्त्रवि नजार अफसरानी की बह कविता मैं गुनगुना सेना हूँ—

“जा पड पाद में उस शान्त की जिस अस्ता में

वही गोकुल है हमें वही घृणवन

वही है तपन, वही फरा, वही सिहामन।

जही वहीँ हम का अस्मानु रगता है वही हम है। १८१८ में हम का भन रहा है।

विनीत

बनारसागम

बाबा पृथ्वीमिह जी आजाद को लिखा हुआ पत्र

( २१६ )

फोरोजाबाद

७ ११-३०

श्रद्धेय बाबा,

प्रणाम। आपका कृपापत्र मिला ज्मार नवपुत्रों में और लहजियों में भी ज्ञ प्रेम तथा समाज सेवा की भावना का मौजूद है, पर उनका उपनाम करने वालों की कमी है।

आप अपने विचारों को बराबर लिखत रहें। बाल पन से लिखने पर तान प्रतिष्ठा बन जाती हैं जिनमें दो तो अच्छी होती ही हैं। तीसरी भी पढ़ी जा सकती है।

आपने जो नौ विचार भेजे हैं उनमें प्रथम तो छपाया भी जा सकता है। दूसरा एक बात याद रखिये कि आपका Strongest Point कात्तिकारी जीवन के अनुभव हैं और युवक संगठन मन्दिर दो पर आता है। इनके मूल में आत्म नियंत्रण तो है ही।

यदि आपकी आत्मबला का एक मॉडल सम्मरण १५० पृष्ठ का छप जाय तो वह प्रचार काय में आपकी सहायता कर सकता है।

जग देव में सहज की इतनी कमी हो गई है कि लोग दुस्माहम के क्रिस्तो का मुनन में अत्यधिक आनन्द का अनुभव करते हैं। रेल में आपकी छत्रांगिका का वृत्तान्त सुनकर युवक गुप्त हो जाते हैं यद्यपि वे खुद धीमे चलते हुए इन्के में भी नहीं बूट सकते। Sugar Coated Pill की तरह आप उन घटनाओं का सुनाकर युवकों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं तत्पश्चात् मतलब की बात कह सकते हैं।

पत्रों में प्रचार काय एक कला है जिसका मैं ५८ ५८ वर्ष से अभ्यास करता रहा हूँ। गुण्ठर कानफ़्लेम में भगवानदाम माहीर जी भी जायेंगे। उस कानफ़्लेम के कायकर्ताओं के चित्र भगाकर उन पर लिखा जा सकता है। आशा है गुजराती आत्मचरित का प्रचार ठीक तरह होगा।

मथुरा में बाबू वृन्दावनदास जी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल (मथुरा) भी बहुत भले आदमी हैं। उन्होंने ही प्रयत्न करके ५ हजार रुपये श्री यशपाल जेठ [ सत्ता साहित्य मंडल ] का किया थे, तब मेरा अभिनन्दन ग्रन्थ निकल पाया था। कभी बम्बई से सौदत वक्त मथुरा उतरिये। भार्द वृन्दावनदास जी की घमशाला भी है, बहा ही ठहरिये।

श्री जगन्नाथ लहरी [ गोशाला फीरोजाबाद ] तथा श्री रतनलाल बमल हनुमानगज फीरोजाबाद को आपके पत्र मिल गये हैं।

लहरी जी का पत्र लिखने का अभ्यास ही नहीं है। वे कहते हैं कि यह तो बीमारी है जो मेरे पचास रुपये महाने खर्च करा देती है। वे इस बीमारी से दूर भागते हैं। वे इस बात को नहीं जानते कि पत्र लेखन भी लेखन की एक कला है। एक हथियार है। आनन्द वितरण करने का एक तरीका है।

अगर पत्र लिखना उपयोगी न होता तो मन्त्रात्मा गांधी एक लाख पत्र लिखकर अपना बन्धन मोचन न करत । और मजिनी न तो १०-२० लाख पत्र लिखे हाग ।

आपका भेज पत्र मैं पढ़ूंगा । वापू तो एक एक दिन म दम दम छाट छाट पत्र रख दत थे । मर त्रिफाकम आप गुम जी बमन जा, तंगी जा, नाजुक माहव का छाटी छाटी विद्वियां रख मदन हैं ।

विनीत  
बनारसादास

श्री जगन्नाथप्रसाद जी मिलिन्द को लिखा गया पत्र

( २१७ )

कारोनाबाद  
२-१७१

प्रिय मिलिन्द जी,

प्रणाम । पत्र मिला । वनमें कुछ चित्र Illustrated Weekly के नियतनाम कर रहा था कि आपकी मन्त्रवपूण पुस्तक भूमि का अनुभूति अक्स्मान् मिन गई । १०० मन्त्रों का तथा २०० पादत्रय चौकस में भरी पन्ना अन्यवन्धन मामग्री न समुद्र का रूप धारण कर लिया है जिसमें गाना लगान पर कभी कभी रत्न भी मिन जान हैं ।

मैंने काम-आवश्यक वस्तु-छाहकर भूमि का अनुभूति का कुछ क्षण अर्पित करने पड़े । निम्न-रूप आपका यह कृति मर निय भी बन्धन स्फूर्तिप्रद है । आज के युग के निय और भावा युग के निय भी उसमें एक अमर मन्त्र है । मैंने उस पर लिखने के निय तथा नाटस निय के पर निम्न नहीं पाया । मरा जीवन मन्त्र अन्त-व्यम्न रहा है । अब फुर्तन मिनन पर निम्नगा । मानक' जा का मान आ गद ।

विद्वत् भागनी वाला मैं आपसे कहूंगा कि दीनबन्धु गतांग पर व आपका किशोरा दक्ष निमन्त्रित करें । मैं तो ७८ वीं वर्ष में यात्रा कर नहीं पाता । जिस हिन्दी अन्वयन की नींव आपने तथा अन्य भादया न बर्तनी थी वह अब विमान बन गया है । विश्वमारनी वाला का वस्तु है कि सम्मान्य अतिथि के रूप में व आपका निमन्त्रित करें ।

मैंने त्रिदश चक्र म मैं बाजार पठ गया । १५ दिन बचा हुआ गया । जीवन सगात का तो जमान्यव मैंने मगस पर मनाया था—जामनर तथा

जमदार दो नरिया के मिलन-म्यल पर । भाई मुधीन्द्र जी उस समय उपस्थित थे । आपको चिरजीव को कोई काम मिला ?

बिनीत  
बनारसीदास

श्री काशीनाथ त्रिवेदी सम्पादक 'गांधी शताब्दी सन्देश' इंदौर  
को लिखा गया पत्र

( २१८ )

फरीदाबाद  
१० ७ ७०

प्रिय भाई काशीनाथ जी,

बन्दे । मैं आपका पत्र भेजना ही चाहता था कि आपका काठ मिल गया । मत्स्य शिवलाल अववाल प्रकाशक आपका पत्र भेज दूंगा कि व 'क्रांतिपथ के पथिक' की प्रति आलोचनाएं आपको भेंट कर दें ।

आपके निमंत्रण के लिये हृदय से कृतज्ञ हूँ, पर मेरा स्वास्थ्य इस काबिल नहीं कि इतनी लम्बी यात्रा कर सकूँ । ७८ की वय में यात्रा की थकान सहन नहीं कर सकता । एक इच्छा मन में अवश्य शेष है—यानी रुम की मृतीयु वार माना करन की । उस यात्रा में मैं लैननिंग के जन्म स्थान की तीसरी यात्रा करना चाहता हूँ और उसके पूर्व पारखंदर की भी । यद्यपि अब मरा यह विश्वास हो गया है कि लैननिंग के तीसरी तरीके से ही इस अभागि भूमि का कल्याण होगा क्योंकि ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त फेल हो चुका है और बिना कुछ हिमा किसे यहाँ का पूँजीपति वग अपने अयाय से कमाय हुए धन को हस्तान्तरित न करेगा । यह मेरी भावना है, यद्यपि मैं इसे तक से सिद्ध नहीं कर सकता । मैं तो रिटायर हो चुका हूँ—कुछ करने घरने से रहा । शरीर में शक्ति नहीं और सावजनिक जीवन बितान की इच्छा भी नहीं ।

इन्दौर का तो मैं अत्यन्त श्रेणी हूँ । इसका एक मजाक मुन लीजिये । मैं प्रायः अंग्रेजी ग्रन्थों से ही मानसिक भाज्य लेता रहा हूँ और अंग्रेजी में think करने की भी आदत कुछ कुछ पड गई है । इसका एक मनोरंजक दुष्परिणाम हुआ ।

अपनी पिछली इन्दौर यात्रा में, जब श्री सम्पूर्णानन्द जी होम मिनिस्टर ए पी के साथ इन्दौर के Municipal Board या Corporation ने हम



दाना का स्वागत किया, तो घण्टाबाद तब समय मग भुँह म गर बाक्य निरल गया—'मैं अपने पिता पुत्रा व त्रिय इन्दौर का श्रमो हूँ।' मैंने दया नि सम्पूर्णान् जो न दाता भीव लो है और नवान जा का भृकुगी रह गई है। मैं समझ नहीं सका कि मैंने क्या गवनी को है। मार्तिङ्ग समाप्त तान पर सम्पूर्णान् जो न मुन टाटवननाद और नवीन जो न भी प्यराग। नवान जो वान अर मूरख। तब समय म यट नवा धाया कि इस वयन म म क्या ध्वनि निकलनी है ? मैंने उनर म क्या ध्वनि का वान ता यदि लाग जाँने मैंने ता अग्रजा व तम बाक्य का I am indebted to Indore for both my sons तनु मा कर दिया था। पिता मूव तम। दशम्वन बि० बुद्धिप्रकाश तथा बि० रामकायान का जन्म तमा दूरा था, जब मैं इन्दौर म था—१९१७ व १९१९ म। मैं तब कातज म १८१४ म २० तर रहा था।

यदि कभी स्वाम्य तम बाजिन दुआ कि लम्बा यात्रा कर सकूँ ता जल्द इन्दौर आऊँगा। अभी ता मुग अपने जनपद ब्रजमन् व नी अनक स्थला की यात्रा करता है।

जमिन तन ग्रथ म भरी प्रगमा व जा पुन बाँध गय हैं उनम प्रसीत जाता है कि किसी जगत् म मार्तियन इन्वीनिमग का क्या नहा। तिम बनारसीनाम व गुणा की चचा उतम भी की गई है उस मैं नहीं पहचानता। परन्तु यात्रा व तम वाम वष बाँ ही किसी साहित्यिक का उचित मूल्यांकन हो सकता है उसम पत्ति हगिज नहीं। मर मना करन पर भी भाद मगान जो, वृत्तवननाम जो प्रभृति वानु नहीं मान और एर वृथा पुष्ट पाया तैयार कर नी दिया। उसम ब्रज जनपद का जा वणन है वही मायक है बाकी सब गान गपान है। 'लाग मुन किम रूप म तमना चाहन हैं' इस भावना म मैंने उस स्वीकार कर दिया है।

बिनान

बनारसीदास

श्री गोपालदास रावतपाटा आगरा को लिखा गया पत्र

( २१८ )

घर न० १११७ सक्कर ८

रामकृष्णपुरम् नई दिल्ली

प्रिय श्री गोपालदास जी,

बद। आपकी कृपापत्र मिला। जो खयाल आपन भवा है उस मैं छत्रा चुका हूँ। 'विगत भारत' के किसी पुगन अद्ध म ४३ वष पहन हा यह छत्र चुका है।

आप बाबू वृन्दावनदाम जी की ए एन एल की अध्यापक प्रज्ञासिद्धि मंडल से कभी मिलिये। मथुरा में उनका घमशाला भी है। पाट्टार अभिनंदन ग्रंथ में खयाला पर एन लेख श्री बमल का है जो हनुमान राव फीरोजाबाद का निवासी हैं।

फीरोजाबाद के श्री जयनाथ लहरी ( गाशाला फीरोजाबाद ) प्रतिबन्ध रामलीला का अवसर पर खयाल सम्मेलन कराया करते हैं। उनमें पता लग सकता है। स्वामी नारायणनन्द की पुस्तक खयाला पर छप चुकी है। उन्होंने १९२६ में जो लेख खयाला पर नागरी प्रचारिणी सभा आगरे में पढ़ा था उस मैंने विशाल भारत में छपा था।

स्व० अयोध्या प्रसाद जी पाठक की जगह अब खयालगा लोग का प्रेमीडेंट कौन है? नकसा तो अब रियायत हो चुका है। उसका सङ्का भी एम-सी में पढ़ रहा था। खयालगो लोग के संगठन का काम कठिन है। जब तक कुछ साधन सम्पन्न व्यक्ति हममें सहयोग नहीं दें तब तक यह काम हो नहीं सकता।

नकसा के पास एक भाटा रजिस्टर था। उसमें मैंने खयाल नकल कराये थे। वर्तमान खयालगो लोग का चित्र और चरित्र लिखे जान चाहिये। हमारी जानि का एक सज्जन बानूराम जी अच्छे खयालगो थे। उनका सङ्का प्रेमनारायण सेनिटरी इंस्पेक्टर था।

बानपुर में भी खयालगो लोग का एक अंदा था। वहाँ की घमशाला में हमें खयाल सुनने का मौका मिला था। स्व० नारायणप्रसाद जी अरोडा में उसका प्रबंध किया था।

मैं तो अब ७६ की वय में काम कर नहीं सकता। आगरे में कुछ युवकों को यह काय उठा लेना चाहिए। आप फ्राफमर कुलगीप जी से मिलिये। ६ गांधी मार्ग पर बिभव जी के यहाँ मिल जायेंगे।

रूपकिशोर फन्नालाल का चित्र तो अब क्या मिल सकता है? विशाल भारत से श्री अयोध्याप्रसाद पाठक जी का लेख नकल कराया जा सकता है। नारायणनन्द जी की किताब भी कहाँ मिल जायगी। मैं ज्यादा लिख पढ़ नहीं सकता। आप स्वयं ही इस पवित्र काम को अपने हाथ में ले लें।

विनीत  
बनारसीदास

## चतुर्वेदी जी का अपने पाठकों के नाम पत्र

‘प्रकाशित सन्निव’ १७ १० ६६

( २२० )

प्रियवर

मैं गान जून का आगर क अस्पताल में भरती हुआ गया था। मैं महीने के बाद २० अगस्त का पाण्डे प्रिय का आपरान्त हुआ जो आप तागा की मदभावता में गहरा हुआ गया। बीराम मित्रस्वर का मुझ अस्पताल में छुट्टा मित्र गद्द और उन्नीस का घर आ गया। मुझ टम बाल का आका था कि कभी आपरान्त अमरुत न हो और मुझे परनाक धात्रा का टिकन न कटवाना पड़े। ७७ वर्ष की उम्र में वह बाद टुपटना तो न हाती पर मर बहने का काम बहुत पड़ा रह जाता।

यद्यपि कमजारी बहुत ग्याना है—जो इन उम्र में स्वाभाविक है— तथापि कुछ निष्ठ पद बिना मन नहीं मानता। उन्नीस व विषय पर कुछ विमल की श्रद्धा है उनका खम-कू, बनारजन गिना तथा स्वाभ्य पर। वर्षों में धरी आन्त रही है कि राज मरर बार बार उठकर अपनी चाय छुट बनाना फिर कुछ स्वाभ्याय और तपस्वान् पत्र या पत्र मित्रता। मर प्रथम मर मर १८१० में कागा व मर जावन में छगा था, और तब मैं निम्नर विमलता की रग हैं। मर तबक जीवन का अब अट्टावनवा वर्ष चल रहा है। मैं बीच न जात विमलता उल जून में निम्न श्रद्धा, मर पाठक भा तग आ गय हगि।

अगले २६ अगस्त का मरी ७८ की माय गुरु न जायगा और मैं य निम्नय कर दिया है कि मैं भावजनिक मास्त्रि धन में गियावर न पाउंगा। पन्तर मैंने कि शिमाग पित्रपिता न जाय और जमुना जी क कपुव गम्रा मरन नगें। मुझ गियावर हा हा जाना चाहिए।

पर गियावर श्रद्धा बाद आमान काम नहीं। पचास-साठ वर्ष में पही हू बद आन्ते एक मर नहीं छूट मरनी। मैं हू महान पचास मर पाण्डे पर मर करता रहा है। चानाम मर टास्त्रिस्ट पर और घट न घट क निग मुप नान मरपक भा रमन पन थ।

अपन में पत्र व्यवहार करन बात किसी मरजन की मैंने कभी टपगा नग की। पत्रा का उत्तर मर यही म बराबर भेजा जाता है। अब मैं चरना गुर न का पन माय गेक नग मर निव कटिग न रहा है।

आपका यह मुनकर आवश्यक होगा कि मेरी सान आठ किताबें अघूरी पड़ी हुई हैं और 'पत्र व्यवहार—मरा व्यसन' नामक पुस्तक का सब मसाला इकट्ठा हो चुका है मगर उसके लिखने के लिए पाच-मात महीन तो चाहिए हो। मेरे एक आत्मीय न मजबूत म कहा था तुम तो महीन म इक्तीस रोज चिट्ठिया लिखन म ही बितात हो। पत्र-व्यवहार से मुझे घाटा ही रहा हो सा बात नहीं। पत्रों का जसा, अमूल्य सग्रह मेरे पास इकट्ठा हो गया है यद्यपि वह सब अपवस्थित पड़ा हुआ है वसा हिन्नी जगत म थाड़े स ही व्यक्तिया के पास होगा।

चिट्ठी पत्री फोटोग्राफी और चाय के साथ गप्पाएक इन तीन व्यसना म मेरे समय, शक्ति और पैसा की बहुत बर्बादी हुई है। फोटोग्राफी पर दस बारह हजार से कम खच नहीं हुए हंग और उनसे त्रिगुनी चौगुना रकम पत्र व्यवहार पर।

बीम अगस्त क आपरेसन के बाद कमजोरी इतनी अधिक आ गई है कि तीन महीन पूरा बिधाम करना अनिवार्य हो गया है। जब चिट्ठिया का ढेर लग जाता है और मैं उनका उत्तर नहीं दे पाता तब बही हार्दिक बन्ता होती है। पर क्या किया जाय साचारी है।

इस छोट से लेख द्वारा मैं अपने म पत्र व्यवहार करने वाला से पशगी समा याचना किये लेता हूँ।

विनीत

बनारसीदास

सैनिक मे प्रकाशित प० श्रीराम शर्मा को लिखा हुआ पत्र

( २२१ )

[ हिंदी समाचार के संपादनामा पत्रकार और साहित्यसेवी प० बनारसीदास चतुर्वेदी ने निम्नांकित पत्र प० श्रीराम शर्मा का भेजा है। इस पत्र की प्रतिलिपि हमारे पास भी आई है। चूंकि प० श्रीराम शर्मा अभी सरकारी अफसर हैं और सरकारी नौकरी छोड़ देने पर भी उनका उम्मी कामद कानून की पाबन्दी करनी है जिसकी एक सरकारी अफसर काम करते हुए करता है इसलिये हम जानते हैं कि उनकी ओर से वह पत्र भुक्त हो रहा जायगा और हम यह भी जानते हैं कि इस पत्र के छपने से उन्हें खोश भी होगा। पर इसमें उनकी जिम्मेदारी क्या? हम तो समझते हैं कि उनके छुट्टी पर जान के मानी हैं कि उनकी बलम का चुप रहना और जवाब का न खुलना। जब इस पत्र की नकल

हमारे पास भद्र भी था तब हमें पता चला कि यह बात सच है और जाना पड़ता है कि वे मानवजन्तु हैं कि वे नान काई कुछ न मानेंगे।

यह विषय भी ज्ञान नहीं कि चतुर्वेदी जी पत्र विषय की वृत्ति में भी भाषा घासिया में अपना मानी नहीं रखते। पत्र विषय एक बात है और यह बात कि वे मानवजन्तु हैं कि वे नान काई कुछ न मानेंगे। यह ज्ञान हमें पता है कि पत्र-व्यवस्था की बात नहीं विषय का। निम्नांकित पत्र में लिखा कुछ स्पष्ट है, लिखने की भाषा काव्य है और लिखने का शब्द चुनने की बात है। यह प्रमाण पाठकों के पत्र के पत्र में मिल जायगा। हमें यह जानना है कि पत्र-व्यवस्था का चतुर्वेदी विषय में लिखने का भाव नहीं है और अतः मित्रों में भी वे अपनी स्वतंत्रता तथा व्यक्तिगत भावों में रहें—इस दृष्टि में यह पत्र और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। —मनिष शर्मा]

टीकमगढ़

३० द ३८

प्रिय श्रीराम जी,

मैं अनेक बार सबके साथ चुका है और सबके अधिक धन मुझे तब हुआ है जब मैंने पान का जगह के वृत्त में मैंने कुछ नया है, जब कि उसका द्वेन्दु पीछे रहने दिया गया था। अतः मैंने अपना अथवा पानीवान जा के मन्त्र-विषय में काम करने शुरू कर दिया। मन में बड़ी भाव उत्पन्न हुई। अन्त में मैंने लिखा मैंने बहुत नहीं कहा। क्या आप मुझे थोड़ा न दें ?

जी, यह बात तो पता कीजिए। क्या आपकी मन्त्र-विषय में पढ़ाई पर लिखें घम घमना बिह्वल हो गया है कि मुझे का पान न हो जाता कि उगता प्रमाण करने दिखते हैं ? या पानीवान जी के चतुर्वेदी के ग्राम मुद्रा विभाग की आत्मा निकल गई अतः आपका ज्ञान में हमारा हस्त भी चला गया। यह 'गाम-मुद्रा' का शब्द का माननीय पत्र की तथा आनन्दपुर कात्रू मादर शब्द-शब्द क्यों लिख दिखते हैं ? यह शब्द का शब्द में नाम ?

जिम काशी में मैंने पढ़ा है। वही पत्र विषय की शब्दों की। मात्रा-मात्रा शब्द, आनन्दपुर शब्द (यही शब्द कि लिखने का।) सब 'या' का 'या' मुद्रा है। यह शब्द माना जाता है। एक नाम ग्राम में लिखा शब्दों के विषय का प्रमाण पत्र-विषय का मन्त्र मादर शब्द-शब्द।

विनाय

बनारसाश्रम

## परिशिष्ट अ

### श्री वनारसीदास चतुर्वेदी और उनके पत्र

( श्री वृन्दावनदास )

प० वनारसीदास जी चतुर्वेदी को मैं बचपन से जानता हूँ। लगभग ४० वर्ष हुए एतद्द्वारा जब मैं आगरा बालक म विद्यार्थी था उनका बिसी छात्रावास में भाषण हुआ था। उस समय सबप्रथम मैंने उनके दशन क्रिय और भाषण भी सुना। उनकी विद्वत्ता और निरभिमानता से तो मैं उसी समय से प्रभावित हूँ। उसके बाद यहाँ बड़ा वे मधुरा भी आया करते थे। तब यद्यपि मुझे कभी-कभी उनके दशन हो आया करते थे उनसे व्यक्तिगत परिचय न हुआ था।

या तो मैं हिन्दी में चालीस वर्षों से लिखता रहा हूँ परन्तु चतुर्वेदी जी से व्यक्तिगत परिचय तो मुझे सन् १९६३ से ही हुआ है। सन् १९६३ में मैं अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल का काय बाहुक अध्यक्ष निर्वाचित हुआ था और सन् १९६४ से ब्रजभारती सम्पादक के रूप में हिन्दी की सेवा करता रहा हूँ। कदाचित् ब्रज साहित्य मण्डल से सम्बन्धित एक हिन्दी सेवी होने के नाते चतुर्वेदी जी ने मुझे अपने निकटस्थ और घनिष्ठ साहित्यिक परिचय तथा कृपा के लिये उपयुक्त समया। उसी समय से चतुर्वेदी जी जिस आत्मीयता और घनिष्टता से मेरे ऊपर कृपा करते रहे हैं उसका मैं आभारी हूँ।

चतुर्वेदी जी इस देश के उन महान् व्यक्तियों में से एक हैं जो पत्र व्यवहार द्वारा अपने मित्रों परिचितों और सामाजिक काय कर्त्ताओं को सतत प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं तथा क्या करणाय है इस दिशा की ओर सदैव इंगित करते रहते हैं। मैं चतुर्वेदी जी के उन आत्मीय परिचितों में से एक हूँ जिसका कभी कभी तो प्रतिदिन एक पत्र प्राप्त होता रहता है और जिसकी काय पूर्ति करना वह अपना अहोभाग्य समझता है।

चतुर्वेदी जी के पत्रों से उनका महान् प्रसिद्धि अनायास ही परिलक्षित होता है। ये पत्र उनकी ज्ञानीता, विद्वत्ता, नम्रता और सदाशयता को स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित करते हैं। भाई रामचरण जी हयारण मित्र ने ब्रजभारती के ज्येष्ठ अंक में चतुर्वेदी जी के पत्रों के विषय में अपने सम्पूर्ण लिखे थे। स्वयं चतुर्वेदी जी ने स्वयंवासी डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रों पर सम्मेलन

पत्रिका में एक विद्वत्तापूर्ण सम्मरणात्मक लेख लिखा है। मुझे भी एसा उगा मिला जिसमें स्वयं चतुर्वेदी जी के पत्रों का रूप में एक स्थायी साहित्यिक निधि का स्थापना है ताकि कभी न उनके पत्रों का सम्प्रदाय में एक गवयणापूर्ण एवं विचारादीपक निरन्तर लिपि डालूँ।

प० बनारसीदास जी चतुर्वेदी व्रज-साहित्य मन्त्रालय का गस्थापना में हैं। व्रज साहित्य मन्त्रालय की स्थापना सन् १८४० ई० में हुई थी। यह मन्त्रालय ब्रज नगरी है जहाँ मन्त्रालय का एक विस्तृत इतिवृत्त जाता है सम्पूर्ण आवगा जिनमें उमक दीप जीवन की एक उज्ज्वल झाली प्रस्तुत होगी। उस झाली में निम्नलिखित चतुर्वेदी जी का स्थापना अत्यन्त उच्च होगा।

व्रज साहित्य मण्डल में कुछ वर्षों तक गतिराध रहा। इधर जहाँ मैंने उमका काय भार सम्हाला और व्रजभाषा की पुनर्जागरिता किया तो चतुर्वेदी जी का रूप का ठिकाना पड़ा। उनका 'व्रज साहित्य मण्डल का पुनरुद्धार' शीघ्र एक समय अनन्त गमाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। उम समय की एक प्रति उद्घाटन मर पाग भी भेजी तथा व्रज-साहित्य मण्डल की स्थापना में सम्प्रतिगत समस्त उस पत्र व्यवहार की प्रतिलिपियाँ भी भेजी जा उनका तथा स्थानीय साहित्य गविया का मध्य हुआ था। तद्विषयक अथ पत्रों का अतिरिक्त कुछ महत्वपूर्ण पत्रों का ही यहाँ उद्धृत किया जाता है।

२३६६

प्रियवर,

हम व्रजमण्डल का साधन सम्मान निवासियों में करिया तथा लम्पना का प्रसन्न का मालिना में और पत्रकारों में अपन काय में महायता लना चाहिये। यन् में जाता है कि शायद दस बीसवीं व्यक्ति भी सहायता न देंगे, फिर भी प्रयत्न तो करना ही है। समन्त कथा यह अनन्तर है कि कोई प्रेमाध्ययन सत्यनारायण कविरत्न का दश भक्त हारणस पुन छाप द। उमम में तो रूप का भी ध्यय ल होगा। व्रजभाषा की परीक्षाएँ यदि कभी आयूँ हूँ तो पाठ्य पुस्तकें स्वयं मण्डल का ही छापनी चाहिये। जो भी महानुभावा अथ तुष्ट बट हों उनका अनुनय विनय करके उन्हें पुन मण्डल में लाना है। व्रज का यन्मान कविया के नाम तथा पत्र आप अपन यहाँ रखिये।

विनीत

बनारसीदास

उम पत्र में चतुर्वेदी जी ने मण्डल का लिए अनन्त सहायता का परपत्र का है तथा एतदर्थ गुस्ताव भी प्रस्तुत किया है परन्तु वास्तविक स्थिति

से पूणतया भिन हाते हुए अपना सन्देश भी प्रगट कर दिया है। कविरत्न सत्यनारायण रचित देश भक्त होरेशस के प्रनाशन के लिए उनके मन में कितनी व्याकुलता है? मन्त्र के पुनर्निर्माण के लिए उनके सुझाव कितने हृदयग्राही एवं आश्चमयी भावना से प्रेरित हैं? इस सम्बन्ध में ता० १६ ३ ६६ को पुनः एक पत्र प्राप्त हुआ।

प्रिय श्री घृदायनदास जी,

धन्य है। ब्रजभारती के तृतीय अंक लिए आपका कृतज्ञ हूँ। आपने मुझे जिन शब्दों में याद किया है तन्मय धन्यवाद।

कल के मन्त्रिक ने पता कि ब्रज प्रदेश के लिए मथुरा में आन्दोलन शुरू हो गया है। मेरा ख्याल है कि पहले हमें साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आधार तैयार कर लेना चाहिये। केवल राजनैतिक विभाजन से काम नहीं चलेगा। अधिस्तर लिप्ता पत्तोलुपता, राजनैतिक निरुद्धम, गुटबन्दी, उपसाम्प्रदायिकता या जातिवाद की बीमारियाँ हमारे जीवन रूपा शरीर में बुरी तरह घेर कर गई हैं और वे अच्छे से अच्छे यज्ञों का विनाश कर सकती हैं। कुछ मन्त्रियों, उपमन्त्रियों और सचिवों के बड़ जाने से ब्रजमण्डल का उद्धार कल्पित न होगा। क्या हमारे राजनैतिक नेताओं में ब्रजभूमि के प्रति उसके साहित्य तथा संस्कृति के प्रति सच्ची लगन है? यदि साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आधार शिला दृढतापूर्वक रखी जा सके तो यह आदोलन कल्याणकारी बन सकता है। आपकी क्या राय है? विस्तार से फिर लिखूंगा।

बनारसीदास

चतुर्वेदी जी ब्रजप्रांत निर्माण के समर्थक हैं परन्तु उनका यह समयन ब्रजप्रांत के साहित्यिक और सांस्कृतिक अनुयन के हेतु ही है। यह तो स्पष्ट है कि ब्रज-साहित्य और संस्कृति के प्रति वर्तमान राज्यस्तर पर जो उपेक्षा और उदासीनता है उसी से छिन और उद्विग्न होकर लोग ब्रजप्रदेश के निर्माण की आवाज उठाते हैं। इस सम्बन्ध में चतुर्वेदी जी का दृष्टिकोण उनके पत्रों से पूणतया विन्ति हो जाता है। कुछ और पत्र भी उद्धृत करना उपयुक्त होगा।

फीरोजाबाद

५ ७ ६७

प्रिय श्री घृदायनदास जी,

वन्दे। एक विचारार्त्तक सरक्यूलर लटर भिन्न भिन्न व्यक्तियों को भेजन की जरूरत है—ब्रजप्रांत निर्माण के विषय में—जिसमें प्रेरित हाकर वे लोग अपनी सम्मति उस बारे में लिख भेजें।



प्रातः या या न वन पर चचा चनान म कुछ ज्ञाप्ति ता आवगी ही ।  
वस्तुन मरी रवि जिनी माहिरिय नया माहिरिय जागरण म है उनना  
राजनिय पुनगठन ॥ नही ।

एक दूसरा लग माहिरिय जगत की एन वाक्यरत्ना— छुम्भया रा  
प्राप्तात्न इन विषय पर भी विमना चाहता है । मन् १८२८ म याना विज्ञान  
भारत व प्रारम्भ म तो इन जिना म काम करता रहा है और आज हि नी  
जगत म जा चीन व नया या बवि है उनम कुछ विज्ञान भारत व काफी  
अज्ञा है ।

विनीन

बनारसादास

उपरोक्त पत्र म ब्रजप्रान्त निर्माण व विषय व अतिरिक्त एन और  
विषय की चचा चतुर्वेदी जी न का है और व है उपरि माहिरिय वस्तुना  
वा प्राप्तात्न न की । वन्ना न हागा य विषय चतुर्वेदी जी का अत्यन्त प्रिय  
है । वास्तव म इसका और जनीन व आद का ता उन्होंने अपन जीवन का  
ध्या ही बना रक्खा है । इन लाना क्षत्र म चतुर्वेदी जी न जा महान् काय  
रिया है वद् अविम्वरणाय है और समाज उनका चिर अणी रत्ना । चतुर्वेदी  
जी म जिम फान म काइ मरा परिवय न था और व वनरत्न म विज्ञान  
भारत व सम्पादक व मैन एक ला लेख उह विज्ञान भारत म प्रमाणनाथ  
भेज । उन्होंने न वन उहें छापा वरन् उन पर पुस्तकार स्वयं कुछ रुपया  
भी मनीआहर म भेजा । वन्ना न हागा वि विज्ञान भारत व मोत्र य स  
अनका व्यक्ति साहित्यिक क्षत्र म वद् और इसका श्रेय उग पत्र और उमर  
याम्बी सम्पादक श्री चतुर्वेदी जी का है । अब हम ब्रज प्रान्त व निर्माण  
सम्बन्धी विषय पर चतुर्वेदी जी व कुछ और पत्र भी यहाँ देना चाहत हैं ।

प्रिय श्री सुदानन्दास जी,

वन् । जब तब कि दो बार व्यक्ति भा एम न हा जा ब्रजमण्डल व  
निण जी जान स प्रयत्न करन को उद्यत हा जावें तब तब ब्रजप्रान्त की चर्चा  
उठाना सबया निरयक हागा । एन अग्रेजा कविना है If you give all and  
life retain I say that all your gift is in vain, वस्तुस्थिति यह है कि  
ब्रजभूमि म एम वस्तुना आमाग्य करन वाला सागा का अभाव है । फिर  
भा हम निराश नहीं हागा है । जा कुछ अपना सामित शक्ति व अनुमान कर  
सकें करन रहना चाहिए । भविष्य म काइ न काई त्यागी युवक उत्पन्न हाग ।

२१ ता० को मथुरा रेडियो ने बुलाया है। मैं यात्रा कर नहीं पाता। करना चाहता भी नहीं। 'शहीदों का श्राद्ध' बस एक ही काम न रखता है। उसी के लिये शेष दिन अर्पित हैं।

विनीत  
बनारसीदास

फारोजाबाद  
३० ६ ६७

प्रिय श्री बृन्दावनदास जी,

ब्रजभारती का ६४ पृष्ठ का एक विरोधात्मक ब्रजप्रांत निर्माण के विषय में निकालिये, जिसमें पक्ष तथा विपक्ष दोनों के लेख रहें। मथुरा का मैं बुन्देलखण्ड प्रांत निर्माण अंक निकाला था, उसमें आलोचना में पर्याप्त सहायता मिली।

ब्रजभारती के प्रकाशन में काफी व्यय होता होगा। उसका प्रबंध आप किस प्रकार करते हैं ?

डा० सत्यद्व प्रांत निर्माण के पक्षपाती है। मेरी चिट्ठियाँ मिली होंगी, बम्बई से आपके पत्र मिले थे।

विनीत  
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी ने ब्रजप्रांत के निर्माण पर और भी अपने अनेक पत्रों में चर्चा की है। विस्तार भय से उन सब पत्रों का उद्धृत करना सम्भव नहीं है। सारांश यह कि ब्रजप्रांत के निर्माण में चतुर्वेदी जी का आशय ब्रा की सर्वांगीण उन्नति से है। उसके साहित्यिक और सांस्कृतिक मुनस्त्वान से हैं। वे इस आन्दोलन के द्वारा इस जनपद में एक चेतना एक जाग्रति पैदा करना चाहते हैं जो स्तुर्य है।

प्रयासोचना

चतुर्वेदी जी इस बात के पक्षपाती हैं कि अच्छी पुस्तकों की विधिवत् विस्तृत आलोचना होनी चाहिए। उन्होंने अपनी पुस्तक 'साहित्य सौरभ' एक बार मुझे गान मण्डल काशी में भिजवाई थी और मुझे उसकी आलोचना करने का लिखा था। मैं उस पुस्तक पर अपनी तीन पृष्ठ की आलोचना ब्रजभारती में छाप दी थी। बाबू दयामुन्दर जी छात्रा वसुधत्ते बाला का तो वह बहुत

ही पत्र आरंभ तथा चतुर्वेदी जी ने भी मुझे लिखा था, 'आपकी सहृदयतापूर्ण आत्माचला क निय बन्त-बहुत वृत्तन है ।'

चतुर्वेदी जी ने मुझे एक बार पत्र लिख कर डाक्टर मत्स्यद्वारा निम्न ब्रजभाषा-साहित्य का इतिहास नामक ग्रन्थ की आत्माचला करने का भा आशा किया था । उन्होंने लिखा था 'चूँकि मत्स्यद्वारा जी अपने प्रतिष्ठित कायकर्ता हैं उनका पुस्तक की विधिवत् विमृष्ट आलोचना होना ही चाहिये ।'

इसी प्रकार एक अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ था प्रभुत्यान मीतल रचित 'ज का साम्प्रतिक इतिहास का आत्माचला करने की बात भी उन्होंने मुझसे कही थी । इस प्रसंग में उन्होंने श्री मीतल जी का भी लिखा कि अपना पुस्तक की श्रुतिवा किमी में लिखवा भेजें । उन्होंने इस बात का एक प्रकार का प्राप्तिपत्र ममदा और यही उनका लिख दिया । इस पर चतुर्वेदी जी ने जो पत्र मातल जी का लिखा उस हम उत्पन्न करने हैं ।

शिव भाई मीतल जी

बन् । आप प्राप्तिपत्र या प्रचार में जना करने क्यों हैं ? यदि बाद जानकारी व्यक्ति आपकी पुस्तक की श्रुतिवा मप्रमाण लिखने और मैं स्वमान कर जका उपयोग करूँगा तो इसमें अनतिक्रान्ताता का है नहीं ।

आपका 'प्राप्ति' पत्रा न हो, चरित्र क पाम छ महायक नीकर ध जो सम्पूर्ण सम्प्रगण ममाला तैयार कर रहे थे । तभी वे जना ममान ग्रन्थ लिख सकें ।

७५ बी वष में मुझे केवल एक आश पर जार डारकर लिखना पन्ना है । जब बाद महायक नहीं क्या किमी दूसरे में इस प्रकार की मन्थना मागा में बाद अनौचित्य है ? इसके विषय में जका की त्रा उस जेष्ठ की वार्ते उत्पन्न नहीं कर दूँगा अपना अकल में भी काम दूँगा ।

स्वर्गीय पश्चि जवाहरलाल जी ने आचार्य नरद्वारा जी में अपनी पुस्तक ( शायद Discovery of India ) में मन्त्रा था थी । जमाने में या जमय का आग्रह लेकर किया हुआ प्रचार-काय निम्ननाय है पर मवधा मद्भाव में जो जमानकारी म विज हुए प्रचार काय में बाद त्रा जरगिज नहीं ।

आर आपका ग्रन्थ साधारण कात्ति का होना तो मैं उसका चर्चा जरगिज न करता—चाह किनमें भी प्रतामन क्या न कि ज्ञात पर बट एक जनाप्रारण कृति है और मर उत्प्रेष की पूर्ति में मन्थक भा । स्मृतिय दूसरा में मन्त्र लेकर (यही पत्र लिखने का मन्त्र) मैं उस पर लिखना चाहता हूँ मैं ब्रजभूमि में

पूरे ५१ वर्ष ( १९१३ से १९६४ तक ) दूर हो रहा, इसके सिवाय मुझे ब्रज-भाषा या ब्रजभूमि के अध्ययन करने का मौका ही नहीं मिला । उमका शास्त्रीय ज्ञान मुझे है ही नहीं । उन सज्जनों के आप मुझे नाम तथा पत्र बतला दे, जो आपके ग्रंथ के बारे में कुछ अधिकार पूर्वक लिख सकें हैं । इससे अधिक आपकी कोई जिम्मेदारी नहीं ।

आपके ग्रंथ में यदि कुछ त्रुटियाँ मुझे दीख पड़ीं तो उन्हें भी निस्स्वार्थ प्रकट कर दूँगा, आप निश्चित रहें ।

विनीत  
बनारसीदास

पुनश्च—

आप मरे जिज्जमान हैं तो मथुरा पहुँचने पर यदिया पेड़े लेने का मुझे जन्मसिद्ध अधिकार है । उससे अधिक कुछ नहीं चाहता । नवीन जी की वह कविता मैं प्रायः गुनगुनाया करता हूँ ।

अरे ! सतत अपण ही अपण, यह जीवन का क्रम है ।

और ग्रहण में मृत्यु निहित है, प्रतिफल केवल भ्रम है ॥'

वास्तव में हम चतुर्वेदी जी से पूणतया सहमत हैं कि अच्छी पुस्तकों की ममालोचना होनी ही चाहिये । आलोचना द्वारा पुस्तक को अपेक्षित प्रचार प्राप्त होता है जिससे उस उद्देश्य की पूर्ति अनायास ही हो जाती है जिसमें प्रेरित होकर पुस्तक लिखी गई थी । भीतल जी का ग्रंथ न ब्रजक्षेत्र के इतिहास साहित्य की दिशा में एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति की है । मुझे उनके महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ के इतिहास खण्ड का अवलोकन करने का अवसर मिला है । उन्होंने ब्रज के मिस्र में समस्त भारतीय इतिहास को ही बड़ी जोड़पूण और प्रवाहमयी भाषा में लिख डाला है । उन्होंने इस इतिहास में इतनी नवीन मनोरंजक सामग्री का समावेश कर दिया है कि ग्रंथ को पढ़ने के लिए हाथ में लेने के बाद छाड़ने को जी नहीं चाहता । भीतल जी के इतिहास में हमें बहुत सी बातें इसलिये नई मालूम होती हैं चूँकि वे अन्य इतिहास ग्रंथों में सर्वसाधारण उपलब्ध नहीं हैं, परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वे घटनाक्रम कल्पना के आधार पर लिखे गये हैं । भीतल जी ने अपने द्वारा प्रस्तुत किये हुए तथ्यों को आधार और साम्य समर्पित किया है । भीतल जी का ग्रंथ उनके कई दशकों के धर्म और खोज का सुफल है । उन्होंने अपने इस ग्रंथ के द्वारा ब्रजक्षेत्र की जनता का जो उपकार किया है उससे वह सदा के लिये ऋणी रहेगी ।

## चतुर्वेदी जी का मतनेदों के प्रति उदारभाव

मैंने 'हिन्दी भवन निमाण यात्रा' शीर्षक के अलग-अलग वृत्तभाषी के मतानुसार तब से अपने विचार प्रकट किए थे। आत्मसाध चतुर्वेदी जी ने तब पर एक समीक्षामय तथा अमर उद्देश्य का निष्ठा। उन ज्ञाना यत्रा का यही निष्ठात्मक म न्ना सम्भव रहा है। इसी आवश्यकता भा न्ना है। इस प्रसंग में एक विषय उल्लेखनीय बात ही प्रस्तुत करना अभीष्ट है। बात यह थी कि मर 'तब' का सामान्यतया समर्थन करने हुए चतुर्वेदी जी ने कुछ एक तथ्य भी प्रस्तुत किए थे जिनसे मरी प्रस्तावित यात्रा की उपाययता में उनका मन्त्र स्पष्ट प्रभाव पड़ा था। मैंने उनके तथ्यों का विवेक भाषा में प्रकट करने का प्रयत्न स्वयं एक तब समय उद्देश्य में प्रकाशित कराया। 'तब' का अमर उद्देश्य में भजन के पूर्व मुझे मन्नाच ता हुआ कि एक दिन का आ-गुप्तुल्य हृत्पातु मित्र का बात काटना ठीक नहीं परन्तु चतुर्वेदी जी का निश्चयक उपायता का ध्यान करते उस भेद ही मिया। मन्त्रागत चतुर्वेदी जी ने जा पत्र निष्ठा उसमें उनका महिमागुता और गानानता बाध हुआ है। वह पत्र इस प्रकार है।

कीर्तनाश्रम

१६ २ ६७

प्रिय भाई वृत्तचरणाम जी,

बन् । आज के अमर उद्देश्य में आपका मुन्त्र 'तब' पड़ा। 'वा' वात् जायत स्वर्वाध 'म' नाति के अनुसार 'म' 'रागा' के वात् विचार में कुछ नाम ही होंगे। मर हृत्प में मन्त्रागत तब पूरा सम्मान है और मन्त्र रन्गा। 'म' 'मन्त्री' वृत्त के भजन हैं वृत्तभाषा के भा—यद् अद् मन्त्र है। वन्त्र सम्भव है कि अगले रविवार का मैं भादृ हृत्पाक जी के साथ वृत्तचरण ही यात्रा करूँ। भादृ हृत्पाक 'ता' के आश्रम में मैं अद्म प्रभुत्त वृत्तचरण जी के ज्ञान करने का जाना चाहता हूँ। अमर उद्देश्य में एक 'तब' वृत्तचरण 'म' निमाण के विषय में भेजा है। मन्त्रागत तब पर अपने विचार प्रकट काजिन्ता।

बनारसाश्रम

## चतुर्वेदी जी की गुणग्राहिणी प्रतिभा और आत्मोपना

इन तृप्त हृत्पों के प्रतीक कुछ एक पत्र भी उद्धृत करने योग्य हैं।

प्रिय भाई वृत्तचरणाम जी

आपसे मिलकर बन्त्र हृत्पों दृष्ट और दृष्ट स्यात् आमा कि हम लोग का वन्त्र पत्रि ही मिलना चाहिये था। अब तो ७/४ वय में मर पाय

समय ही कम रह गया है। फिर भी जो कुछ वष, महीने, दिन या क्षण बचे हैं उनका भरपूर सदुपयोग कर लेना चाहता हूँ।

अगर उजाला के ५ ता० के एक म मेरा लेख छप गया है कृपया उसे पत्रकर सक्षप में लिखिय भी। चर्चा चलने से कुछ लाभ ही होगा। सस्थाओं में तो मेरा विश्वास रहा नहीं। समानशील और परस्परपूरक व्यक्तियों को मिल कर काम करना चाहिये। भाई श्रीराम शर्मा का निधन वस्तुतः एक महान दुःखटना है। उन पर एक लेख सनिव में भेजा है। यदि ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी ब्रजभूमि के लिये कुछ कर सकें तो बड़ा बात हो।

विनीत

बनारसीदास

३० ५ ६७

फीरोजाबाद

२१ ६ ६३

प्रियवर, जय जमुना मया की।

ब्रजभारती मुझे बराबर मिल रही है और उसके लिये मैं आपका कृतज्ञ हूँ। क्या ही अच्छा हो यदि आप इस पत्रिका में ब्रज के अर्थ के द्वा की साहित्यिक प्रवृत्ति पर भी कुछ प्रकाश डालें। पत्रिका को अधिकाधिक शास्त्रीय बना देने से उसकी उपयोगिता कुछ कम हो जायगी। ब्रज जनपद की बहुमुखी उन्नति ही हमारा लक्ष्य होना चाहिये। क्या पृथिवी-पुत्र (स्व० अग्रवाल कृत) आपके पास है अग्रवाल जी इस विषय के आचार्य थे। कल ही उनके १०० पत्र टाइप हाक दिल्ली से मथुरा आये हैं १८३ पृष्ठा में। ८०) रुपये से ऊपर टाइपिंग में ही लच हो गया। खैर, यह तो श्राद्धकर्म है और हम तो करना ही थे। स्व० अग्रवाल जी ने ब्रज के लिये बहुत कार्य किया था। ब्रजभारती में उनके बारे में विस्तार से लिखा जाना चाहिये। उनका वृहत् कार चित्र तो मण्डल में होना ही चाहिये।

विनीत

बनारसीदास

फीरोजाबाद

५ ६ ६७

प्रिय श्री शृदावनन्दान जी

आपके दोनों वृत्तापत्र मिले। डाक्टर श्री चन्द्रमान जी रावत वाली मोटिंग में आपने जा कुछ कहा उसमें मैं अश्वरथ महमत हूँ। ब्रज साहित्य-मण्डल

व पुनर्निर्माण व नियम इस प्रकार की गारणियाँ निम्नान्न आवश्यक हैं। हम ब्रज का मशीनान् उन्नति करनी है। आप डाक्टर वागुन्वकरण अग्रवाल का पुस्तक गृधिवी-पुत्र का बार-बार पढ़िये। उसकी आलोचना भी करिये। वह हमारी आदर्श है। निम्नान्न हम अपनी पूरी शक्ति से राष्ट्रभाषा के लिए काम करेंगे परन्तु इसमें हमारे मातृ भाषा प्रेम में बाधा न आना चाहिये। आप लगन से काम करने परीणाम की बिना न करें। 'कर्मवदवा धिक्काम्ना मा फलपु क्काम्ना' यह बात किसी शत्रुवादी न होना चाहिए।

बनारसीदास

### हिन्दी सम्प्रदायी योजना

चतुर्वेदी जी का ब्रज भाषा की माध्यम से बनारस हूँ हमारी सम्प्रदायी योजना का आशीर्वाद प्राप्त है। उनकी कृपा से हम सितन ही हम मन्त्रना से सम्प्रदायी स्थापित कर चुके हैं जो इस विषय के जाना है तथा सम्प्रदायी गहन हैं। लगभग तीस आनाम वष पहिले डाक्टर वागुन्वकरण जी अग्रवाल ने इस योजना का जननीय आशीर्वाद का नाम से परिचित बनारसीदास जी के माध्यम से ही कराया था। उन्होंने चतुर्वेदी जी का सम्प्रदायी पर लगभग १०० ऐतिहासिक पत्र लिखे थे जिनमें से कुछ डा० अग्रवाल गहन पुस्तक गृधिवी-पुत्र में निकल चुके हैं और कुछ का स्वयं चतुर्वेदी जी ने संग्रह करके सम्प्रदायी पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित कराया है। इस विषय पर चतुर्वेदी जी का हमारे पास आया हुआ पत्र इस प्रकार है।

४ १० ६६

प्रिय श्री कृष्णदास जी, जे जमुना मया की।

आपका कृपापत्र मिला। उसमें नियम बहुत बहुत कृपण हैं। आपने जननीय आशीर्वाद की जिन्ही सम्प्रदायी योजना के नाम से आगे बढ़ाने का जो शुभ मकसद किया है उसमें नियम में आपको शक्ति बर्धा है। 'मधुर' के कुछ पुराने श्रवण भी प्राप्त हैं। उन्हें संग्रहित करके भिजवा दूंगा। जननीय अनाम अब किन्तु अप्राप्य हो गया है। सम्प्रदायी के एक विद्वान् ने भी उनकी माँग की थी।

बनारसीदास

### देशभक्त होरेदास

स्वर्गवासी मदनारायण कविगुरु कृत देशभक्त गीतिका का आवरण चतुर्वेदी जी के पत्र में बिक्री का चित्र है। उनका फिर एक पत्र दण्ड सम्प्रदायी में आया जो इस प्रकार था।

२५ ए ६६

प्रियवर,

प्रणाम ! सत्यनारायण कविरत्न कृत देशभक्त होरशस टाइप किया हुए २८ पृष्ठा में आया है। टाइप दूर-दूर है। क्या ब्रज भारती के दो अकों में उसे छापा जा सकता है ? वह पुस्तिका अब अप्राप्य हो गई है। सत्यनारायण विषयक सारा सामान कोई प्रयाग के सम्मेलन की सत्यनारायण कुटीर से उठा ले गया। अब एक महिला उन पर शोध कर रही है। आगरा विश्वविद्यालय से उन्हें अनुमति भी मिल गई है।

आप अपनी सुविधानुसार जम भी मुतासिब ममत्तें करें। यदि लम्बी चीजों से ब्रज भारती के पाठकों का मन उल्टा जाने की आशंका है तो न छापें। बस कविरत्न की कीर्तिरक्षा के लिए जो कुछ हम कर सकते हैं हमें करना ही चाहिये।

विनीत

बनारसीदास

प्राचीन कविता की कीर्तिरक्षा, उपक्षितों और छुटभट्टों की यत्किंचित सेवा और शहीदा का श्राद्ध ये तीनों विषय ही ऐम हैं जिनके ऊपर चिन्तन करने, लिखने पढ़ने और चेष्टा करने में ही आजकल चतुर्वेदी जी का सारा समय व्यतीत हो जाता है। वे ७५ वें वर्ष में भी इस सम्बन्ध में इतना परिश्रम कर रहे हैं कि अच्छे से अच्छे कमठ नवयुवक को भी वह प्रेरणा का विषय हो सकता है। हमने चतुर्वेदी जी की इच्छानुसार देशभक्त होरशस की पुस्तक के रूप में मुद्रित कर प्रकाशित कर लिया है।

चतुर्वेदी जी साहित्यिक क्षेत्र में भी विकेन्द्रीकरण के पक्षपाती हैं। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित पत्र महत्वपूर्ण है।

फोरोजाबाद

६ ७ ६७

प्रिय श्री गृन्दावनदास जी,

वन्दे ! वेद का एक मन्त्र है— 'केवलाधी भवति केवलादी' यानी जो अकेला खाता है वह पाप खाता है। मैंने चतुर्वेदी होते हुए वेद नहीं पढ़े, पर अगर वेद के इस मन्त्र का ही जीवन में उपयोग कर सकूँ तो उन महान् ग्रन्थों को पढ़ने की आवश्यकता भी नहीं।



इस समय जा ईप्सा हिन्दी जगत् में फैली हुई है उसका एक कारण यह भी हो सकता है कि हमारे चाटी के लोग तथा नव आत्मसन्निध हो गये हैं—मित्र बाँट कर ध्यान की नीति में उनका यकीन नहीं रहा। उसी आलाचना करने की जरूरत नहीं स्वयं हम योग अपने का दीन माग पर रखें, वम इतना ही पर्याप्त है। ब्रजप्रान्त बन या न बन पर ब्रज जनपद ना बना ही रहा और उसकी सर्वांगीण उत्पत्ति के त्रय हम सबका मित्रवर काम करना है। पारस्परिक ईप्सा विद्वेष से ब्रज-भाहित्य मण्डल का जो भाग हुआ उसमें हम सबका धना है।

विनात

बनारसीनास

धनुर्वेदी जी ने मुझे अनक पत्रा में उन विद्वानों के नाम के पत्र लिखकर भेजे जिनमें मुझ मठान और हिन्दी के हित में गम्भीर स्थापित करना उद्धान अभीष्ट समझा। मैं उनका प्रेरणा में अनक एक विद्वानों में परमव्यवहार किया जो बड़े महत्त्व व्यक्ति थे और हिन्दी सेवा के प्रति जिसरी जगत् में नीय थी कुछ लाभ तो इनमें धनुर्वेदी जी के अन्य भक्त और बहुर समर्थक में और उद्धान अपने पत्रा में धनुर्वेदी जी की महत्त्वता, मनस्विता और मन्तायना की मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी। पंडित पत्रमिह समान ने ठाकुरा के पत्रा में कि धनुर्वेदी जी का दीनप्रभुता और परम श्रवातरता जगत्प्रसिद्ध है।

धनुर्वेदी जी का पत्र-भाहित्य अगाध है। यह अभी और बढ़गा। हम सागर में अनगिनत बह्मूय मांगी हैं। यदि वे किसी पारसी द्वारा मच्छित और सप्रहीत हो गये तो निम्नस्थ के साहित्य की एक बह्मूय निधि के रूप में मान जावेग।

स्वर्गीय बापू के बाद कायकनाथा में मोनाद स्थापित करने उनमें काम लेने वाला मैं भी बनारमानाम धनुर्वेदी का नाम अवगण्य है। यदि श्रद्धेय बापू ने अपने जीवनकाल में राजनीतिक कायकनाथा की मना तयार कर दी तो धनुर्वेदी जी ने अनक साहित्यिक का मनन प्रेरणा में प्रामाणिक किया और उनमें पारम्परिक मोहा की भी स्थापना की। धनुर्वेदी जी ने प्रशंसा प्राप्त साहित्यिकों का एक विशाल परिवार हिन्दी के क्षेत्र में अनुकरणीय मना कर रहा है।

धनुर्वेदी जी महामना हैं, उनमें मन्ता के स गुण हैं। वे मात्मसन्निध निर्वैर, पर दुष्कातर एवं सहयोगात्मक जीवन की ओर कायकनाथा का उत्प्रेरित करते हैं। वे इतने सरल निरमिमानी एक मन्ता हैं कि उन्हें व्यक्ति

गत रूप में इस बात का शिचिन् भी आभास नहीं कि अपन जीवन के ७५ वें वष में शारीरिक शक्तियाँ के स्वाभाविक ह्रास की दशा में व फीरोजाबाद के अपन भवन में बैठे हुए भी एक ऐसा स्वस्थ नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम हो रहे हैं जिसमें न बबल हिन्दी के हित साधन अपितु अनक मानवीय गुणा के प्रतिष्ठापन में बड़ा योगदान मिल रहा है।

चतुर्वेदी जी की साहित्य साधना एक पगीय न हाकर बट्टमुप्पी है। चतुर्वेदी जी की साहित्यिकता में साहित्य के साथ मानव जीवन में चहुँओर का पानावरण जैसे पशु पक्षी, घन, उपवन नगर नागरिकों की नतिक सामाजिक एवं आर्थिक दशा आदि भी सम्मिलित हैं। व स्वयं इन सब विषयाँ पर अत्यन्त मौलिकता पूर्ण लेख लिखकर साहित्यिकों को इस सम्बन्ध में एक दिशावाघ करा रहे हैं। वे साहित्यिका से अपेक्षा रखत हैं कि वे लोग साहित्य के अतिरिक्त अपने चारा ओर के फले बातावरण पर भी अपनी दृष्टि रखें और उस पर अपनी लेखनी उठावें।

( ब्रजभारती भक ३ सम्बत् २०२४ में प्रकाशित )

### परिशिष्ट व

## ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण चतुर्वेदी जी की दृष्टि में

( श्री कृदावनवास )

ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण श्रद्धेय प० बनारसीनाथ जी चतुर्वेदी का सुख स्वप्न है। वह इसके लिए सतत प्रयत्नशील हैं। उन्होंने अनक लेखा तथा अपने मित्रा और प्रशंसका को लिखे पत्रा में उसकी समय समय पर रूप रेखा खींची है। उनके अनेक भाषणा में भी यह तत्व मुख्य रूप से विद्यमान है।

इस सम्बन्ध में वह प्रचार काय बडे असें से कर रहे हैं। कदाचित्त तब ही से जब स उन्होंने बल्लभ उठाई है। आज ७७ वष की अवस्था में भी वह फीरोजाबाद के अपने अध्ययन-कक्ष में बैठ इस निशा में जो महत्वपूर्ण कार्य कर रह हैं उसके परिणामस्वरूप अनेक साहित्यिक बघुओं का पुष्कल प्रेरणा मिली है और वह ब्रजभूमि के उद्धार में लग पडे हैं। कदाचित्त सह्य सोचय स आपूरित अपन स्वभाव के कारण चतुर्वेदी जी का यह भान भी नहीं है कि वह इस प्रकार एक महान अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं।

ब्रजभूमि के पुनर्निर्माण में चतुर्वेदी जी का आशय क्या है यह बताने के लिय हम ब्रजभूमि व पुनर्निर्माण की कहानी चतुर्वेदी जी की जुबानी ही

मुनातो पत्नी । मय प्रथममात्रिय एव उद्दण जो ब्रजराजिन १० मयनारायण  
वविग्रह अद्व गताया समारा क अवसर पर चतुर्वेदी जो व अष्टमीव भाषण  
म किया गया है ।

ब्रजभूमि गताया तब भारत का मासृनिव कट रहा है और  
ब्रजभाषा अतिव भारतीय भाषा, फिर भी उमरी एक निवा मसृनि गी है ।  
अन जनता का विपत्ताया का रणा करने हुए विग्रह का मासृनिव घाग म  
उमरा मय मित्राव करने म ही समाग कस्याण है आज म उमरा माठ वष  
पहिल मयनारायण जो न 'धमर दून म वना था ।

पहिल व तो अद्व न निहारो यह वृदावन,  
याव चारों ओर भय बहु विधि परिचिनन ।  
वन छत चोरम नये बाटि घन वन-कृज  
रघुन को बस रहि मय निग्रहन मेयाकृज ।  
कहाँ चरिहैं गरु ?

ब्रज का अर्थ है व गी भरी भूमि जहाँ गरु चरती हैं । ब्रज के  
हर भर वन का कायम स्थाना और यहाँ गामधन्या का निर्माण करना है—  
पट्टीन मय्यता व आक्रमणा नया अनाचारा म उम वधान गग ।

उपरांत उद्दण चतुर्वेदी जो व प्रकृति प्रथ का ता घानर है हा मय  
उमरा ब्रजभूमि व विषय म एक लमी भूमि का कपना का भा वना बनता है,  
जा मुदा वन वचना सं पूण गीरा व प्रावय म पुन आ गी भरी मय  
श्यामता हो ।

चतुर्वेदी जो जनी वृतागवण-वर्गों और वनमय-मवा का मयवन करने  
रहत हैं और कना करने है कि उद्याना और बाग-बगीचा व स्वामिया तथा  
निमात्राया की धनमुख म प्रामा का जानी चानि, वहाँ उठे वृता क अनयन  
काट जान म घरी वना जानी है । उमा अष्ट गी भाषण म व अयत्र  
कहन है

'मो ननों न अनी राजधाना माया का समार का मयम गी भरी  
राजधानी वनान का निश्चय किया था और उद्युनि उम निगा म काफा मयवता  
प्राप्त की है । इधर हम साग विन्तुन ज्यो निगा म चर रह है । मुन यह  
वान वही गजरा व माय स्वीकार करती पहनी है कि ब्रज का रणिमान  
वनान म हमार नगर पागत्राया का ववन्त गृथ है । साया मन मकरी  
फीराजाया के कागत्राया म कायन की जमह जननी रही है और ए मी वग

मील के घेरे में वृक्षा का क्लेशग्राम होता रहता है। मैंने तो यहाँ तक सुना है कि देहरादून तक के जंगल फीरोजाबाद के कारखानों की बलिवेदिया पर कुचान हो गये। चक्कन्नी के बागून की बजह से भी सहस्रांशों पेड़ कट गये। सड़क के किनार के वृक्षा पर निरंतर बाघात होते रहते हैं। इन सब कारवाइयों को रोकना है और व्रज का रेगिस्तान बनने से बचाना है।”

जिते प्रकार शरीर के बिना आत्मा रह ही नहीं सकती उसी प्रकार चतुर्वेदी जी की दृष्टि में व्रजभूमि की सस्कृति की रम्याय व्रज के भौतिक शरीर की रम्या तथा उसका पोषण तो किया ही जाना चाहिए। व्रज की ओर बढ़ने हुए रेगिस्तान को रोकने का कार्य उनकी दृष्टि में किसी साहित्यिक आयोजन से कम महत्व का नहीं है।

व्रज सस्कृति और व्रज-जीवन के जीते जागत चित्र को आचार्य विनोबा भावे के निम्नलिखित शब्दों में चित्रित करते हैं।

“गोपाल कृष्ण ने गाँवों का धम्मक बढ़ाया गाँवों की सेवा की गाँवों पर प्रेम किया। गाँव ही उनका देवता था। आगे चलकर वह द्वारिकाधीश बने। लेकिन फिर भी गोकुल में आते थे फिर गाँवों चराते थे, गोबर में हाथ डालते थे, गोशाला बुहारते थे—बनमान् पहिन्ते थे बशी बजाते थे लड़का के साथ—गाँव बालों के साथ खेलते थे। व्रजकिशोर उनका प्यारा नाम था। उहाँ गोकुल में असीम आनन्द और सुख पैदा किया।”

हम दहातों को हरा भरा गोकुल बनाना है—स्वाश्रयी, स्वावलम्बी, आरोग्य सम्पन्न, उद्यानशील और प्रेमपूर्ण। ईश्वर का कोल्हू चल रहा है चरखा चल रहा है धुनियाँ घुम रहा है, तेल का कोल्हू चर चर बोल रहा है कुएँ पर मोट चल रही है चमार जूता बना रहा है और बशी बजा रहा है—ऐसा गाँव बनने दो। अपनी गलती में हमने गाँवों को भरघट बना दिया। आइये उनके गोकुल बनावें।”

यह है चतुर्वेदी जी की कल्पना का व्रज और उसका जीवन जिसे वह आचार्य विनोबा के शब्दों में हमारे सम्मुख रखते हैं।

एक बार एक सज्जन ने चतुर्वेदी जी से पूछा—‘बुदेलेखण्ड है कहीं?’ यह बात उस समय की है जब चतुर्वेदी जी बुदेलेखण्ड का एक पृथक् प्रांत के रूप में निमाण चाहते थे और उसके लिए अपने पत्र ‘मधुकर’ में आंदोलन चला रहे थे। चतुर्वेदी जी ने उत्तर दिया, ‘बुदेलेखण्ड है इस प्रांत के लागा साधारण स्त्री-मुरुषों के हृदयों में, किसानों मजदूरों की भुजाओं में, इस प्रांत

नन्वियों और मगवरीयों के तब मुख्य हैं, जिन पर स्वाध्यायात्मक बन हों, जहाँ गदकों पर शान और मोक्षिता के वृत्त और अनन्त गुणाव के ग्रन्थ हैं।

प्रश्न यह है क्या चतुर्वेदी जी की इन कल्पनाओं का हवाई मालूम का माला लेकर इनका उद्देश्याय समझा जाय ? नहीं, बल्कि नहीं। यदि हमारे मुखका में एक दृष्टि पति है हमारे मगवरीय और कविता के हृदय मगवरीय और मन्त्रिक विरहित है हमारे मगवरीय माला के ग्रन्थ में है मन्त्र में यह एक अनन्त म व्यावहारिक विचार करने है तो चतुर्वेदी जी कल्पना का माकार करना कोई कठिन कार्य नहीं है। चतुर्वेदी जी के ही हस्ता में आज एक ही एक व्यक्ति का आवश्यकता है जो वह कि मैं स्वयं ही कहूँ जिसके जीवन और विचार में वह रहा है। वह व्यावहारिक सामान्य के एक प्रसंग

‘अथ हि नका नगरी स्वयमव व्यवसय (हृदय) मैं स्वयं ही नका नगरी है) की बड़ा मुन्दर व्याख्या करने है। उसका निष्कर्ष यह कि समस्त ब्रह्मभूमि में कम से कम एक तो ऐसा व्यक्ति है, जो दुःखानुभव कह सके कि ‘मैं ब्रह्म हूँ।’

चतुर्वेदी जी का कथन है कि ब्रह्मभूमि का पुनर्निर्माण व्याख्याता रहिया वार्ताओं और आयोजनाओं का व्यवस्था करने में न होगा। वह कहता है कि उनका मगवरीय उनका कि नियम अपने जीवन अपने प्राण अर्पित करने का न व्यक्ति जब तक हम भूमि में उत्पन्न नहीं जान सके तब यह स्वयं अधूरा हो रहा है। एक अग्रणी कवि की निम्नादिन उक्ति यह है

It you give all and life retain

I say all your gift is invain

यह अपना मन प्रकट करने है कि चाहे आप अपना मगवरीय दान पर अपने जीवन, अपने प्राण का बचाव करें तो मैं कहूँगा आपका दान निरर्थक ही गया। ‘ब्रह्म माहिय मन्त्र’ के मृगभूष अर्थात् स्वर्गीय या बादशाह जमा नवीन का पत्र।

जरे समुद्र अपना ही अपना यह जीवन का क्रम है।

और ग्रहण में मृगु निहित है प्रतिबन्ध बचल अम है ॥

चतुर्वेदी जी ब्रह्म के प्रत्येक कार्यकलाप के नियम व्याख्या करके के रूप में मानते हैं।

‘ब्रह्माहिय मन्त्र’ की व्याख्या मुख्यतया चतुर्वेदी जी के मन्त्रिक की उपर है। जिस समय टीकमगढ़ में वह ‘मधुकर’ के मगवरीय का कार्य कर

छाड़कर एक ढाली भी इस वन में से न काटी जायगी। प्राकृतिक और कृत्रिम मो-दय का यहा अनुपम मेल पाया जाता है।

गोधूली के समय यह वन बड़ा रम्य प्रतीत होता है। जित्ने पचास वष पहले गाय बैन देखे थे उनकी आँखें आज कं गाय बैन देखकर चौंधिया जायेंगी। तुलना के लिए उनके चित्र संग्रहालय में दख जा सकते हैं। कहीं छटाक भर दूध देने वाली, सूख धन और रुख बदन वाली चित्रलिखित गाय और वहाँ यह सामन खटो हुई गया, यमुना बतवा और जामनर नामक गामाताएँ और उनके घड़ा भर दूध दन वाल स्तन। धी अब ढाई सेर का बिकता है और दूध बीस सर का। बुन्देलखण्ड अब भारतवष का उपवन है। इस प्रांत में सरोवरा और उपवना की भरमार है। यहाँ के नामी अमरुदा, आडूआ और नामगिया न आम पाम के बाजारा का पाट दिया है।

यहाँ उपवनों में नदियों और सरोवरा के तट पर ग्राम विद्यालय हैं। यहाँ आप ग्रामगीत सुन सकते हैं और ग्रामनृत्य देख सकते हैं। यहाँ विद्यार्थियों का व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है जिसका ग्राम वन से घनिष्ट सम्बन्ध है। यहा कुर्जे, मडक की दोना और लगे मौलिथी के वृक्ष और गुताव के खेत दर्शनीय हैं। यहा के उपवना के नाम उन महापुरुषों के नाम पर हैं, जिहान उनकी उन्नति में योगदान दिया है। प्रान्तीय साहित्य सघ का कार्यालय और उसके साथ चित्रशाळा दृष्टव्य हैं, उसमें प्रान्त के सभी साहित्यिका की कृतियाँ और उनके चित्र संग्रहीत हैं।

इतिहास परिपद भी इसी सस्था से सम्बद्ध है। भूतिया का संग्रहालय बनन में है। राज्य के सभी महाराजाआ के जीवन चरित छप चुके हैं और उस संग्रहालय में विद्यमान हैं। ऋतुआ के उत्सव होन है जिनमें स्त्री पुरुष आबाल वृद्ध सभी भाग लेते हैं।”

यही धतुर्वेदी जी की कल्पना अथवा उनके मुख-स्वप्न व्रजभूमि के सर्वांगीण विकास के लिये भी है। उनका हृदय उस व्रज के लिए अधीर है जिसमें दूध बीस सर और धी ढाई सेर का बिके, जिसकी गायों के स्तनों से दूध घटा-भर निकले, जिसके ग्रामीण विद्यालयों में विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा मिले जिसका ग्रामीण जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध हो, जिसमें ऋतुआ के उत्सव मनाय जाते हों, जहाँ महापुरुषों का सम्मान हो जहाँ साहित्यिक और साम्प्रतिक चेतना प्रबुद्ध रूप से विद्यमान हो, जहाँ रमणीक वन और उपवन हों जहाँ की अनावश्यक वृक्षा को छाड़कर एक ढाली भी काटने पर निषेध हो जहाँ की

व अग्रार्थ तथा कर्मों की भावनाओं में युग्म। तथा युग्मों का आकांक्षा  
 म। बुद्धिमान है, मानस, मनुष्य और बापू व रचयिताओं के हृदय में।  
 और यदि भीतर जगत् की बातें हैं तो बुद्धिमान है वही व मनुष्य-निर्माण, नती  
 जगत्-मार्गदर्शक। तीर प्रमाणों में, जगत्-दर्शक, वही उभयता में, वही व जगत् में,  
 वही व बापू में और हम भूमि व जगत् में।' यदि कोई व्यक्ति चतुर्वेदी का  
 म जगत् व विषय में पूछे कि वह वही है तो भावना उत्तर कुछ हद-तक व  
 भावना प्रमाणों का होगा। वास्तव में एक प्रमाणों का मूल गुण और  
 वास्तविक चित्र वही है जो वही व समाज का भाव और प्राकृतिक गीत का  
 मूल अर्थों में प्रस्तुत करता है। प्रमाणों का एक मूल चित्र उभय भाव व मूल  
 है जिसमें जगत् की सामान्य जनता और उभय भावों का वातावरण प्रति-  
 बिम्बित होता है।

मन् १८८३ में एक बार चतुर्वेदी जी ने '२००० ईस्वी का बुद्धिमान' नामक एक लेख मधुकर में लिखकर प्रकाशित कर बापू बुद्धिमान की जिम्मे-  
 दारी का कर्त्तव्य की भी उम्मा प्रमाण बना दिया है। बुद्धिमान व बापू  
 जगत्-मूल वही है जो 'बापू', हमका अनुमान चतुर्वेदी जी की उभय कर्त्तव्यता में  
 होगा मूल है जो उन्होंने २००० ई० में बुद्धिमान में की थी। उन्होंने कर्त्तव्यता  
 की है कि मन् २००० ई० में एक यात्रा-लेख बंगाल श्रम में प्रकाशित तब ही  
 यात्रा व विषय लिखता है। हम सब में विज्ञान वगैरह और जगत्-मूल  
 वान वस्तुओं युक्त का एक टांग है जिसमें भाव जगत्-मूल प्रीति अर्थ भा है।  
 हम-मूल मूल राज बंगाल का जगत् नियम है। दूसरी जगत्-मूल भाव  
 का और बीदा जगत्-मूल व तब पर प्रमाण रखी। दूसरी विज्ञानों में पुष्पा  
 श्रम-कर्त्तव्य (अथवा बंगाल श्रम में छात्रों का स्कूल की बंगाली-भाषा में उभय  
 मूलों) छात्र किया है। बंगाल श्रम में पाँच गणों की छुट्टियाँ हुआ करती  
 हैं। जगत् श्रम में बंगाल-वास्तविकता का प्रकाश होता है। हमारा जगत्-मूल  
 जगत्-मूल व्यावहारिक जगत् व स्कूल में भाव मूल में प्राप्त नहीं कर पाते उभय  
 अधिक ई मूलों व प्रमाण में प्राप्त कर पाते हैं।

य यात्रा-लेख आरंभ के अर्थ मन्-विज्ञान में जगत्-निर्माण करने हैं।  
 अर्थ मन्-विज्ञान व भाव वही पर सामान्य वास्तविकता का दर्शन स्कूल भा  
 है। मुगल-मूल में प्राप्त का मूल वही भावों का निर्माण हो गया है। जिस  
 वन में जगत्-मूल वनवा मूल दृष्टा है जगत्-मूल वास्तविकता (मनीषा-मूल) बना  
 किया गया है। हम विज्ञान में यात्री जगत्-मूल जगत्-मूल है। आज में जगत्-मूल  
 वर्ष पहले ही भाव न यत् निश्चय कर दिया था कि जगत्-मूल जगत्-मूल का

छोड़कर एक डाली भी इस वन में से न काटी जायगी। प्राकृतिक और कृत्रिम सौंदर्य का यहाँ अनुपम मेल पाया जाता है।

गोधूली के समय यह वन बड़ा रम्य प्रतीत होता है। जिहान पचास वर्ष पहले गाय बँल देखे थे उनकी आँखें आज के गाय बँल देखकर चौंधिया जायेंगी। तुलना के लिए उनके चित्र संग्रहालय में देखे जा सकते हैं। वहाँ छटाक भर दूध देने वाली, सूखे थन और सूखे बदन वाली चित्रलिखित गाय और कहाँ यह सामन खड़ी हुई गगा यमुना, बतवा और जामनेर नामक गोमाताएँ और उनके घड़ा भर दूध देने वाले स्तन। धी अब ढाई सेर का बिकता है और दूध बीस सेर का। बुंदेलखण्ड अब भारतवर्ष का उपवन है। इस प्रांत में सरोवरा और उपवनो की भरमार है। यहाँ क आमो अमरूतो, आड़ुआ और नारंगिया न जास-पास के बाजारों का पाट दिया है।

यहाँ उपवनो में नदियों और सरोवरों के तट पर ग्राम विद्यालय हैं। यहाँ आप ग्रामगीत सुन सकते हैं और ग्रामतृप्त्य देख सकते हैं। यहाँ विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है, जिसका ग्राम वन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। यहाँ कुर्जें, मडक की दाना और लगे मौलिथ्री के वृक्ष और गुलाब के खेत दृश्य हैं। यहाँ के उपवनों का नाम उन महापुरुषों के नाम पर हैं, जिन्होंने उनकी उन्नति में योगदान दिया है। प्रांतीय साहित्य सच का कार्यालय और उसके साथ चित्रशाला दृश्य है उसमें प्रांत के सभी साहित्यिकों की कृतियाँ और उनके चित्र संगृहीत हैं।

इतिहास परिपद भी इसी संस्था से सम्बद्ध है। मूर्तियाँ का संग्रहालय अलग से है। राज्य के सभी महाराजाओं के जीवन चरित छप चुके हैं और इस संग्रहालय में विद्यमान हैं। ऋतुजा के उत्सव होते हैं, जिनमें स्त्री पुरुष आबाल वृद्ध सभी भाग लेते हैं।”

यही चतुर्वेदी जी की कल्पना अथवा उनका सुख-स्वप्न वनभूमि के सर्वांगीण विकास के लिये भी है। उनका हृदय उस वन के लिए अधीर है जिसमें दूध बीस सेर और धी ढाई सेर का बिके, जिसकी गायों के स्तनों से दूध घड़ा भर निकले जिसके ग्रामीण विद्यालयों में विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा मिले जिसका ग्रामीण जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध हो जिसमें ऋतुजा के उत्सव मनाये जाते हों, जहाँ महापुरुषों का सम्मान हो जहाँ साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना प्रबुद्ध रूप से विद्यमान हो जहाँ रमणीय वन और उपवन हो जहाँ अनावश्यक वृक्षा को छोड़कर एक डाली भी काटने पर निषेध हो, जहाँ की



नदियों और मरोवरों व तट सुरम्य हैं, जिन पर स्वास्थ्यागार बने हों, जहाँ सड़क पर दोना और मौलियाँ व वृक्ष और अनक गुलाब व गन्ध हैं।

प्रश्न यह है क्या चतुर्वेदी जी की इन कल्पनाओं का हवाइ महम की मना देकर इनका उपयोग सम्भवा जाय ? नहीं, क्योंकि नहीं। यदि हमारे युवकों में हृदय इच्छा शक्ति है, हमारे उद्यम और कविता व हृदय गरम और मन्त्रित विकसित है हमारे राजनीतिज्ञ सत्ता व धन में हा मन्त्र न रह कर जनहित में व्यावहारिक चिन्तन करते हैं तो चतुर्वेदी जी कल्पना का माकार करना बार्क बटिन काय नहीं है। चतुर्वेदी जी व ही जन्मा में आज तक हैं। तब व्यक्ति की आवश्यकता है जो वह कि मैं स्वयं ही ब्रज हूँ जिसका जीवन और चिन्तन में ब्रज रहा है। वह साम्प्रतिक सामाज्य के एक प्रसंग

‘अब हि सदा नगरी स्वयमन्त्र प्लवगम (हृदय वन्त्र। मैं स्वयं ही नका नगरी हूँ) की बनी मुन्त्र व्याख्या करन है। उसका निरूपण यह कि समस्त ब्रजभूमि में कम से कम एक तो ऐसा व्यक्ति हो, जो दृष्टानुवक कह सक कि ‘मैं ब्रज हूँ।’

चतुर्वेदी जी का कथन है कि ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण व्याख्याना रेडियो वार्ताओं और आयोजना की व्यवस्था करने में न होगा। वह कहते हैं कि उसका सर्वांगीण उत्थिति के नियम अपने जीवन अपने प्राण अर्पित करने का व्यक्ति जब तक इस भूमि में उत्पन्न नहीं हान तब तक यह स्वप्न अधूरा हो रहेगा। एक अंग्रेजी कवि की निम्नांकित उक्ति स्मृष्ट

It you give all and life retain

I say all your gift is invain

वह अपना मत प्रकट करते हैं कि चाह आप अपना सर्वस्व दें, पर अपने जीवन, अपने प्राणों का बचाव रखें तो मैं कहूँगा आपका दान निरर्थक हो गया। ब्रज माहिय मन्त्र के भूतपूर्व अध्ययन स्वीय श्री धानदृष्टि गमा ‘नवीन का पत्र।

अरे समुद्र अपना ही अपना यह जीवन का क्रम है।

और ग्रहण में वृष्टि निहित है प्रतिजन केवल भ्रम है॥

चतुर्वेदी जी ब्रज के प्रत्येक वाक्यता के लिए आत्म वाक्य के रूप में मानते हैं।

ब्रजमाहिय मन्त्र की स्थापना मुम्भितया चतुर्वेदी जी व मन्त्रिक की उपर है। जिस समय टीकमगढ़ में वह ‘मनुकर’ के मन्त्र का वाक्य कर

रहे थे उसी समय उन्होंने क्षेत्रीय अथवा प्रादेशिक स्तर पर साहित्यिक मण्डल की स्थापना का एक मौलिक विचार प्रस्तुत किया था। विद्वानों का ध्यान उस सुझाव की ओर आकृष्ट हुआ और परिणाम स्वरूप 'ब्रजसाहित्य मण्डल' की स्थापना सन् १९४० ई० में हुई।

चतुर्वेदी जी मण्डल की स्थापना के समय उसके संस्थापकों के लिए मुख्य परामर्शदाता के रूप में समझ जाते थे। चतुर्वेदी जी ब्रजसाहित्य मण्डल के अध्यक्ष और उनसे सम्बद्ध संस्था साहित्य परिषद के भी अध्यक्ष रहे। उन्होंने अपनी अध्यक्षता के काल में मण्डल को एक प्रौढ़ नृत्य प्रदान किया।

चतुर्वेदी जी के हृदय में ब्रजभाषा के लिए बड़ा मृदुल स्थान है। वह ठीक ही कहते हैं कि किसी समय ब्रजभाषा समस्त उत्तर भारत के बोलचाल की भाषा थी। वह उस भाषा की उन्नति चाहते हैं। उनका दृढ़ मत है कि ब्रजभाषा का हितसम्बद्धन करने से उसका संरक्षण-सम्बद्धन और उन्नयन करने से हिंदी का जिसके कि वह स्वयं एक अनन्य सेवक और साधक रहें हैं और जिसमें उनका एक अत्यंत उच्च आसन सुरक्षित है, कोई अहित नहीं। चतुर्वेदी जी का मत है कि ब्रजभाषा हिंदी के साहित्य की भाषा है। ब्रजभाषा हिंदी से अलग हो ही नहीं सकती। ब्रजभाषा के कार्यकर्ता हिंदी के अनिवार्यतः कार्यकर्ता हैं। ब्रजभाषा का पक्ष समर्थन कर हम हिंदी की उन्नति करने की दिशा में ही अग्रसर होंगे हैं। यहां पर यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि चतुर्वेदी जी का हिंदी की अन्य उपभाषाओं के प्रति, जैसे भोजपुरी, अवधी, बुंदेली राजस्थानी मगधी, बघेली मैथिली आदि के प्रति—भी यही दृष्टिकोण है। वह चाहते हैं कि इन सभी उपभाषाओं अथवा बोलियों के कार्यकर्ता अपने अपने क्षेत्र में इनका विकास करें, इनकी उन्नति की याचना बनाएं, इनके साहित्यिक पक्ष को परिष्कृत और उन्नत बनाएं तो इससे हिंदी के अहित की कोई बात नहीं, अपितु इससे तो हिंदी की समृद्धिशालिता बढ़ेगी। चतुर्वेदी जी के दृष्टिकोण में सदैव व्यापकता और एकरूपता रहती है। हमने उन्हें कभी सकीन दायरी में सावते नहीं देखा।

एक बार हमने समाचार पत्रों के माध्यम से ब्रजभाषा भाषियों को सम्बोधित करते हुए उनसे जनगणना के अवसर पर अपनी भाषा ब्रजभाषा (हिंदी) लिखाने का आह्वान किया था। हमारे कुछ मित्रों ने इस पर आपत्ति की और इस कर्म का हिंदी के हित के विरुद्ध बताया। हम स्वयं अपने का हिंदी का विभिन्न कार्यकर्ता पहले और ब्रजभाषा का पीछे मानते हैं। हम उस आपत्ति पर कुछ आश्चर्य हुआ। हमने आपत्तिकर्ताओं को समाचार पत्र में

नर्तियों और मगावरीं व तट मुरम्य हा, जिन पर स्वाभ्यागार बन हों, जहाँ सड़का पर दाना और मोलियों व घृण और अनक गुताव व घन हा ।

प्रश्न यह है क्या चतुर्वेदी जी की इन कल्पनाओं का हवादा मर्म की गथा लेकर इनका उद्देश्यीय समझा जाय ? नहीं, कल्पि नहीं । यदि हमारे मुखवा म दृढ़ इच्छा शक्ति है, हमारे लग्नरा और कविया व हृदय मर्म और मस्तिष्क विकसित है हमारे राजनीतिज्ञ मत्ता व घन म हा मर्म न रह वर जनश्रुति म व्यावहारिक चिंतन करने है ता चतुर्वेदी जी कल्पना का मासार करना कोई कठिन कार्य नहीं है । चतुर्वेदी जी व ही शब्दा म आज एक हा एक व्यक्ति का आविष्कार है जो वर कि मैं स्वय ही ब्रज हूँ जिसका जीवन और चिंतन म ब्रज रहा हा । वह वास्मीकि रामायण व एक प्रमग

‘अथ हि उवा नगरा स्वयमव प्लवगम (ह वर ॥ मैं स्वय हा लका नगरी हूँ) की बड़ी गुत्तर व्याख्या करने हैं । उसका निष्कर्ष यह कि समस्त ब्रजभूमि में कम म कम एक ता समा व्यक्ति हा, जो दृढ़तापूर्वक कह सक कि ‘मैं ब्रज हूँ ।’

चतुर्वेदी जी का क्या है कि ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण व्याख्याता रक्षिया वार्ताओं और आयोजना की व्यवस्था करने म न हागा । वर कहन हैं कि उसका सर्वांगीण उत्पत्ति क निय अपने जीवन अपने प्राण अर्पित करने वान व्यक्ति जब तक हम भूमि म उत्पन्न नहीं हान तब तक यर स्वप्न अधूरा हा रगा । एक अंग्रेजी कवि की निम्नांकित उक्ति नरु

It you give all and life retain

I say all your gift is invain

वह अपना मन प्रकट करने हैं कि चाहे आप अपना गरम्ब द है, पर अपने जीवन, अपने प्राण का बचाव रखें ता मैं कहूँगा आपका दान निरर्थक ही गया । ब्रज माहिम मण्डन क भूतपूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय श्री वानकृष्ण शर्मा नवीन का पय ।

अरे समुद्र अर्पण ही अपना यह जीवन का क्रम है ।

और प्रहण में मृत्यु निहित है प्रनिश्चन कवल भ्रम है ॥

चतुर्वेदी जी ब्रज व प्रत्येक कार्यकर्ता क निष्ठा आत्मा वाक्य के रूप में मानते हैं ।

‘ब्रजमाहिम मण्डन’ की स्थापना मुख्यतया चतुर्वेदी जी व मस्तिष्क की उपज है । जिस समय टोकमण्ड में वह ‘मधुकर व सगादन का कार्य कर

रहे थे उसी समय उन्होंने क्षेत्रीय अथवा प्रादेशिक स्तर पर साहित्यिक मण्डलों की स्थापना का एक मौलिक विचार प्रस्तुत किया था। विद्वानों का ध्यान उस सुझाव की ओर आकृष्ट हुआ और परिणाम स्वरूप 'ब्रजसाहित्य मण्डल' की स्थापना सन् १८४० ई० में हुई।

चतुर्वेदी जी मण्डल की स्थापना के समय उसके संस्थापकों के लिए मुख्य परामर्शदाता के रूप में समझ जाते थे। चतुर्वेदी जी ब्रजसाहित्य मण्डल के अध्यक्ष और उसमें सम्बद्ध संस्था साहित्य परिषद के भी अध्यक्ष रहे। उन्होंने अपनी अध्यक्षता के काल में मण्डल को एक प्रौढ़ नेतृत्व प्रदान किया।

चतुर्वेदी जी के हृदय में ब्रजभाषा के लिए बड़ा मृदुल स्थान है। वह ठीक ही कहते हैं कि किसी समय ब्रजभाषा समस्त उत्तर भारत के बोलचाल की भाषा थी। वह उस भाषा की उन्नति चाहते हैं। उनका दृढ़ मत है कि ब्रजभाषा का हितसम्बन्धन करने से उसका संरक्षण-सम्बन्धन और उत्थान करने में हिन्दी का जिसके कि वह स्वयं एक अनन्य सेवक और साधक रहे हैं और जिसमें उनका एक अत्यन्त उच्च आसन सुरक्षित है, कोई अहित नहीं। चतुर्वेदी जी का मत है कि ब्रजभाषा हिन्दी के साहित्य की भाषा है। ब्रजभाषा हिन्दी से अलग हो ही नहीं सकती। ब्रजभाषा के वाचकता हिन्दी का अनिवार्यतः वाचकता हैं। ब्रजभाषा का पक्ष समर्थन कर हम हिन्दी की उन्नति करने की दिशा में ही अग्रसर होते हैं। यहाँ पर यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि चतुर्वेदी जी का हिन्दी की अन्य उपभाषाओं के प्रति, जैसे भोजपुरी, अवधी, मुन्देशी, राजस्थानी, मगधी, बघेली, मैथिली आदि के प्रति—भी यही दृष्टिकोण है। वह चाहते हैं कि इन सभी उपभाषाओं अथवा बोलियों के वाचकता अपने अपने क्षेत्र में इनका विकास करें इनकी उन्नति की योजना बनायें इनके साहित्यिक पक्ष का परिष्कृत और उन्नत बनायें तो इससे हिन्दी के अहित की कोई बात नहीं अपितु दमसे तो हिन्दी की समृद्धिशालिता बढ़ेगी। चतुर्वेदी जी के दृष्टिकोण में मन्द व्यापकता और एकरूपता रहती है। हमने उन्हें कभी मकीर्ण दायगो में सोचते नहीं देखा।

एक बार हमने समाचार पत्र के माध्यम से ब्रजभाषा भाषियों को सम्बोधित करते हुए उनसे जनगणना के अवसर पर अपनी भाषा ब्रजभाषा (हिन्दी) लिखाने का आह्वान किया था। हमारे कुछ मित्रों ने इस पर आपत्ति की और इस कर्म का हिन्दी के हित के विरुद्ध बताया। हम स्वयं अपने को हिन्दी का विश्व वाचकता पहले और ब्रजभाषा का पीछे मानते हैं। हम उस आपत्ति पर कुछ आश्चर्य हुआ। हमने आपत्तिवर्त्ताओं को समाचार पत्र में

हा मनुष्य उतर-ऊँचा था और हमारे पास एक विद्वाना न अपना मत प्रगट किया था। चतुर्वेदी जी ने भी हम इस प्रकार लिखा "ब्रजभाषा का विषय मैं तो कुछ जानने मिमा है, उसमें मैं पूछनया सम्मत हूँ। उठूँ अरुंधी, मांजुरा तथा कुन्तलगणी के लिए भी हमारा मण्डन भरपूर प्रयत्न कर, क्योंकि ब्रजभाषा सब का बड़ा बहिन है, उठूँ का तो माना भा।

बुढ़ बिगिया ब्रजभाषा की हूँ लिखी उठूँ गुंजर नार।

जैठो मरुन म है बढो लहुरी बढी जाइ बजार ॥

मातृभाषा ब्रजभाषा अवश्य-अवश्य लिखा जाय। इसमें हर किम बात का है। आखिर मुँहा जान उन का दूसरा उपाय है की क्या? इस पवित्र कल्प में मकोच किम जान का? इसमें मातृभाषा लिखी का कोई नानि न। पढ़ें-कता। कायक म (लिखी) लिखाई जा सकती है।

जा नाग ब्रजभाषा का मातृभाषा लिखन म हरन है। यह मकोच रत्न है उनका भाटी अवन पर मुझे लग्न आता है। व अर्थ का भूत मना करन है। ब्रजभाषा तो स्वयं जाना की मौ है। उस मीन ममप्रता अवन नम्रर का लागमनी है। आपरा पत्र मना प्रयत्न है कि उसका विवर निरिखन है। (ता० १/६६८ का पत्र)

चतुर्वेदीजी सांस्कृतिक सम्पदा का जगता निजी प्रयास का रूप में ब्रज मण्डानया का निमाण का पत्र म है। उनका आकाशा है कि प्राभूमि का प्रत्यक्ष वायव्यता का निवास स्थान एक छात्र-भाषा ब्रज मण्डानय का रूप हा प्रदूष कर न। उन्होंने मुझे लिखा, "आप अपने घर पर एक ब्रज-मण्डानय का नींव डालें, तो अनुमत्त हा। आपका भवन कभी ब्रजवागमिया का विषय सीध बन सकता है। यहाँ बान आप या बानकृष्ण जा गुप्त म रत्न मवन है। जा भा सामग्री भर पास है उमकी भवन आपर मण्डानय म रत्ना हा गान्धि, यह कोई बहुत व्ययमात्र्य काम भा रहा है।

विद्या का पूरा-पूरा मण्ड आका रत्ना हा है। श्री जगन्नाथ 'वहृय' म मीन फोगाजाना मण्डानय की नाव डनवा न है। मन्वारी मण्डानय म तो चांगी हाँती रहनी है मन्विष्ट में धरतू मण्डानय का प्रयत्न पणपानी बन गया है।"

चतुर्वेदी जी नवीन मित्र बनान का वर ममधक है। उन्होंने श्री उरुन म मगा अनर साहित्यिक वस्तुना म पत्र-व्यवहार द्वारा परिचय करवाया। उनका विश्वास है कि इस प्रकार सत्यागात्मक कार्यकर्ताओं म ब्रजभूमि का पुनर्निमाण म

सुगमता होगी। उन्होंने लिखा, "सबसे अधिक आवश्यक काय है लोकमग्नह। सुप्रसिद्ध अंग्रेजी समालोचक डा० जॉनसन ने कहा था

"Sir, I consider that day lost in which I do not make a new acquaintance"

अर्थात् श्रीमान, मैं उस दिन को व्यर्थ मया ही मानता हूँ जिसमें मैं कोई नई जान-पहचान नहीं करता।' सो हम नवीन मित्र बनाते रहना है जो हमारे काय का पूरक हो।"

'यदि ब्रजभूमि की डाइरेक्टरी जाप बना सकें तो वह बड़े काम की चीज होगी। व्यापारिक दृष्टि से भी वह सफल होगी। ब्रज का सर्वांगीण रूप तो हमारे सामने आना ही चाहिए। युगधर्म का यही तकाजा है। ब्रजभूमि का हम पुनर्निर्माण करना है। इस रेगिस्तान में जहाँ कहा भी हम हरियाली दीख पड़े उसकी रक्षा करनी है फिर चाहे वह साहित्यिक हरियानी हो या कृषि सम्बन्धी। छुत्तभइया को प्रोत्साहन सबसे प्रथम मिलना चाहिए।

सम्पूर्ण ब्रज का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सर्वेक्षण हो जाना चाहिए। पर उसके साथ कृषि, व्यापार तथा उद्योग घाघा को भी हमें नहीं भूलना है। जिस किसी क्षेत्र में जो कुछ अच्छा काम हो रहा है उसकी कद्र होनी चाहिए।

यदि ब्रज की डाइरेक्टरी तयार कर दी जाय तो भविष्य में यह बड़े काम की चीज होगी। मैं जान कितने व्यक्तियों की कीर्तिरक्षा उससे हो जायगी और कितनों का मार्ग प्रशसन होगा।" (ता० २४ १ ६६ का पन्ना)

ब्रजमण्डल के जनपदीय सर्वेक्षण के लिए एक समिति तुरन्त स्थापित कीजिये।

ग्राम विभाग में डा० सत्येन्द्र  
आधुनिक काय विभाग में सर्वश्री अमृतलाल चतुर्वेदी, डा० राजेश्वरप्रसाद  
चतुर्वेदी

कीर्तिरक्षा विभाग में सर्वश्री प्रभुलाल भीमल जवाहरलाल चतुर्वेदी  
तथा मेरी (श्री बनारसीदास चतुर्वेदी) सेवाएँ भी आप से सक्त हैं।

वन, उपवन, स्वास्थ्य विभाग में आप (वृन्दावनदास)  
अखाड़े का सचिव वृत्त आना ही चाहिए। औद्योगिक विभाग श्री बालकृष्ण  
मुक्त के अधीन रहे। यमुना जो तथा अन्य छोटी माटी नदियों पर लेख रहने  
चाहिए आप इस सर्वेक्षण के मुख्य सचिव रह—उसकी चलती फिरती आत्मा  
के रूप में।" (ता० २१ ७ ६८ का पन्ना)



इन तीर्थों की झलक दिखात हुए वह लिखते हैं हमन इन तीर्थों (ति) एक अघूरी झलक ही यहाँ दिखलाई है—अघूरी इसलिए कि उसमें न तो नदी माताओं का उल्लेख हुआ है न सरोवरा का और न पहाड़िया का। आशा है कि दूसरे ब्रजवासी भी अपने-अपने प्रिय स्थानों पर लिखेंगे।

इस जनपद में स्वस्थान प्रेम को विकसित करने की आवश्यकता है। यदि हम अपने-अपने स्थान का सुन्दर बना सकें तो हमारा जनपद अत्यन्त रमणीय बन सकता है। देव का भविष्य जनपदों के सर्वांगीण दृष्टि से रचनात्मक पुनर्निर्माण पर निर्भर है। ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण ही हमारा मुख्य उद्देश्य है।'

चतुर्वेदी जी जनपदीय आंदोलन के नेता रहें हैं। उनका विश्वास है कि जनपदीय बोलियाँ अमर बाणियाँ हैं उनके आश्रय से हम अपना निरक्त समृद्ध बना सकते हैं। वह स्वर्गीय डा० बामुन्वशरण अप्रवाल को इस आन्दोलन का प्रवक्ता मानते हैं तथा उनकी पुस्तक 'पृथिवी-पुत्र' को जनपदीय आंदोलन की बाइबिल। उन्होंने लिखा, 'आचार्य बामुन्वशरण अप्रवाल की पुस्तक 'पृथिवी-पुत्र' हमारी बाइबिल है और उसे साथ लेकर और उसका द्वारा प्ररूपात भाग का अनुसरण करते हुए हमे अपने लक्ष्य की ओर आग बढ़ना है।

रक्त-हीनता के कारण पैरों में सूजन आ गई थी इसलिए कुछ दिनों के लिए टहलना बन्द हो गया था। परन्तु चतुर्वेदी जी पड़े-पड़े ब्रजभूमि का ही चिन्तन करते रहे। उन्होंने हम लिखा, इस बीच में आप लोग का चिन्तन करता रहा। इस वसंत ऋतु को ब्रजमण्डल के लिए चिरस्मरणीय बनाना है। वसंत पंचमी से रामनवमी तक का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम बना लेना चाहिए। कवल मपुरा में ही नहीं, फीरोजाबाद एटा, मैनपुरी इटावा अलीगढ़ इत्यादि में साहित्यिक उत्सव होने चाहिए। ये उत्सव कम से कम खूब में हों। ज्यादा खूब हम ब्रजवासी कर ही नहीं सकते

१ वसन्त याख्यानमाला

२ आसपास के सुन्दर स्थानों में गोष्ठियाँ

३ छोटे छोटे द्रैवडा का प्रकाशन

४ हस्तलिखित अभिनन्दन ग्रन्थों तथा स्मृति ग्रन्थों की तैयारी

५ खयालगा लोगा का संगठन

इत्यादि विषयों पर विचार कीजिये। सबसे जरूरी चीज लोक-संग्रह है। अच्छे कवि-कर्ताओं का जुटाना है। यज्ञमाना का भी संग्रह करना है।' (दिनांक १७ १ ६८ का पत्र)



पौरुष प्रथि क निष्ठा क शस्यश्रिया कराने क पूरा चतुर्वेदी जा धारणन की संकल्पना क प्रतिबोधान्तर है। यह उनकी दृढ़ इच्छा गति का ही एक अङ्गहरण है। परन्तु ब्रजभूमि क निष्ठा मार्मिक भावा का उद्घाटन करने का उद्देश्य निम्न था। ब्रजभूमि क निष्ठा आप तब प्रयत्नशील हैं कि हम आपका भावना क भाव है मैं परभाव-यात्रा करना चाहता हूँ। यदि कुछ समय और भी मिल जाय तो ब्रजभूमि का भ्रम म है उस विताऊंगा। ( ता० ४ ७ ६८ का पत्र )

चतुर्वेदी जी का आचरणन पूरा म मकर हुआ गया। उसके भावा कायम म निम्न ब्रजभूमि क पुनर्निर्माण का ही प्राथमिकता प्राप्त है। सब गतिमान म यही प्रायना है कि चतुर्वेदी जा विराग्य द्वा और म्मा प्रकार ब्रजभूमि क सवागीण विकास क प्रति भाव-गान करने हट्ट। ●

( श्री बनारसीदास चतुर्वेदी क्षमिन्-दन प्रथ म प्रकाशित )

